+91 8800141518 ,
011-41008973

THE CORE IAS

अस्त्र

प्रारंभिक परीक्षा में
निश्चित सफलता के लिए

COMPREHENSION

CSAT

UPSC COMPREHENSION के लिए संक्षिप्त एवं स्पष्ट नोट्स 90% सटीकता के साथ

MUKHARJEE NAGAR : 103, B-5/6 II FLOOR, HIMALIKA COMMERCIAL COMPLEX DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI 09

OLD RAJINDER NAGAR : 53/18, LOWER GROUND FLOOR ,NEAR POPULAR JUICE , BADA BAZAR ROAD, OLD RAJINDER NAGAR, N.D -110060

प्रस्तावना

THE CORE IAS का CSAT कॉम्प्रिहेंशन, UPSC परीक्षा के लिए आपकी तैयारी को बेहतर बनाने के लिए तैयार किया गया एक अनिवार्य संसाधन है। यह नोट्स सिविल सेवा योग्यता परीक्षा के एक महत्वपूर्ण घटक, 'कॉम्प्रिहेंशन' की जटिलताओं को उजागर करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किये गये है।

CSAT में कॉम्प्रिहेंशन के महत्व को समझते हुए, ये नोट्स आपको निम्नलिखित कौशल प्रदान करती हैं-

- **विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की व्यापक समझ**
- **रणनीतिक प्रश्न हल करने की तकनीकें**
- **प्रश्नों की मांग को समझना**
- **पढ़ने की गति में वृद्धि**
- **आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच**

वैचारिक समझ, व्यावहारिक युक्तियों और अभ्यास प्रश्नों के मिश्रण के साथ, इनका उद्देश्य आपको आत्मविश्वास के साथ समझ अनुभाग द्वारा उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए सशक्त बनाना है।

चाहे आप एक नौसिखिया हों जो एक मजबूत नींव बनाना चाह रहे हों या परिष्कृत होने का लक्ष्य रखने वाले एक अनुभवी अभ्यर्थी हों, ये एक व्यावहारिक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, जो महत्वपूर्ण सोच, विश्लेषणात्मक कौशल और सूक्ष्म व्याख्या में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। कॉम्प्रिहेंशन की विषय-वस्तु और प्रश्न-समाधान दोनों पर ध्यान देने के साथ, ये नोट्स UPSC के इस कठिन खंड की जटिलताओं को उजागर करने में आपका साथ देते हैं।

UPSC CSAT परीक्षा के लगातार विकसित हो रहे स्वरूप को देखते हुए, इसकी अप्रत्याशितता और तर्क और गणित खंडों (reasoning and mathematics sections) की बढ़ती जटिलता के कारण, कॉम्प्रिहेंशन को प्राथमिकता देने की दिशा में एक रणनीतिक बदलाव सर्वोपरि हो जाता है। कठोर तर्क और गणित खंडों द्वारा उत्पन्न चुनौतियाँ न केवल गैर-गणित पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों के लिए कठिन हैं, बल्कि गणित की पृष्ठभूमि वाले लोगों के लिए भी समान रूप से चुनौतीपूर्ण साबित होती हैं। यह स्पष्ट है कि गणितीय और तर्क खंडों पर अत्यधिक भरोसा करने से बड़ी संख्या में उम्मीदवारों को असफलता का सामना करना पड़ता है। इसे पहचानते हुए, ये नोट्स कॉम्प्रिहेंशन की व्याख्या करने पर बल देते हैं; जो एक ऐसा पहलू है, जिसे चुनौतीपूर्ण माना जाता है परंतु गणित और तर्कशक्ति के प्रश्नों की तुलना में यह एक सहज और सुरक्षित क्षेत्र भी है, जिसमें अच्छे अंक प्राप्त किये जा सकते हैं।

महत्वाकांक्षी सिविल सेवक अक्सर स्वयं को सेवा के दौरान कठिन मार्गों और जटिल प्रश्नों से गुजरते हुए पाते हैं, जिनके लिए न केवल गहरी समझ बल्कि कुशल समय प्रबंधन की भी आवश्यकता होती है। ये नोट्स इस यात्रा में आपका साथी बनने के लिए डिजाइन किये गये हैं, जो कॉम्प्रिहेंशन को समझने के कौशल में महारत हासिल करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

जैसे ही आप इसे सीखना प्रारंभ करते हैं, याद रखें कि कॉम्प्रिहेंशन का मतलब सिर्फ एक पृष्ठ पर शब्दों को समझना नहीं है; यह बारीकियों का भावार्थ निकालने, दिया गया निष्कर्ष निकालने और अंततः, आपके विश्लेषणात्मक कौशल को तेज करने के बारे में है। ये नोट्स आपकी उत्कृष्टता की खोज में एक उत्प्रेरक बन सकते हैं, जो आपको CSAT कॉम्प्रिहेंशन खंड में और अंततः UPSC परीक्षा में सफलता की ओर प्रेरित करेगी।

THE CORE IAS की ओर से शुभकामनाएँ!

विषयवस्तु

कॉम्प्रिहेंशन (अभिबोध) क्या है?.....2
कॉम्प्रिहेंशन CSAT का हिस्सा क्यों है?.....2
कॉम्प्रिहेंशन को हल करने में क्या चुनौतियाँ हैं?.....2
प्रश्नों को हल करने का तरीका.....3
कॉम्प्रिहेंशन के प्रकार.....4
प्रकार 1: धारणा आधारित.....4
प्रकार 2: सांख्यिकी आधारित.....10
प्रकार 3: अनुमान आधारित.....15
प्रकार 4: संदेश आधारित.....22
प्रकार 5: परिच्छेद में निहित.....24
प्रकार 6: परिणाम आधारित.....27
प्रकार 7: सार आधारित.....30
PYQ 2011-2023.....33
PYQ 2011-2023 उत्तर-माला.....169

THE CORE IAS

कॉम्प्रिहेंशन (अभिबोध) क्या है?

UPSC-CSAT (सिविल सेवा एप्टीट्यूड टेस्ट) परीक्षा में, कॉम्प्रिहेंशन का तात्पर्य उम्मीदवार की लिखित अनुच्छेदों या पाठों को समझने और व्याख्या करने की क्षमता से है। यह खंड पढ़ने और समझने के कौशल के साथ-साथ परिच्छेद में दी गयी जानकारी से तार्किक निष्कर्ष निकालने की क्षमता का आकलन करता है। आमतौर पर, CSAT परीक्षा में कई परिच्छेद प्रस्तुत किए जाते हैं जिसके बाद प्रश्नों की एक शृंखला होती है जो उम्मीदवार की विषय की समझ का परीक्षण करती है। यह CSAT परीक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक है और दी गयी जानकारी के आधार पर उम्मीदवारों की विश्लेषण, मूल्यांकन और प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता का आकलन करता है।

कॉम्प्रिहेंशन CSAT का हिस्सा क्यों है?

कॉम्प्रिहेंशन को कई कारणों से CSAT के एक भाग के रूप में शामिल किया गया है:

1. **पढ़ने के कौशल का मूल्यांकन:** कॉम्प्रिहेंशन उम्मीदवार की जटिल अनुच्छेदों को पढ़ने और समझने की क्षमता का परीक्षण करता है। यह कौशल विभिन्न प्रशासनिक भूमिकाओं में प्रभावी संचार, निर्णय लेने और समस्या-समाधान के लिए महत्वपूर्ण है।
2. **संचार कौशल:** सिविल सेवकों के पास मजबूत संचार कौशल होने की आवश्यकता है, क्योंकि उन्हें अक्सर जानकारी की सटीक व्याख्या और संप्रेषण करना होता है। कॉम्प्रिहेंशन उम्मीदवार की लिखित सामग्री के अर्थ को समझने की क्षमता का परीक्षण करता है, जो प्रभावी संचार के लिए आवश्यक है।
3. **आलोचनात्मक सोच:** कॉम्प्रिहेंशन संबंधी प्रश्नों के लिए अक्सर उम्मीदवारों को दिए गए पाठ से विश्लेषण, संश्लेषण और निष्कर्ष निकालने की आवश्यकता होती है। ये आलोचनात्मक सोच कौशल निर्णय लेने और नीति निर्माण के लिए मूल्यवान है, जो सिविल सेवा भूमिकाओं के अभिन्न अंग हैं।
4. **निर्णय लेना:** सिविल सेवकों को अक्सर जटिल दस्तावेजों और रिपोर्टों का सामना करना पड़ता है। कॉम्प्रिहेंशन कौशल उन्हें इन दस्तावेजों के आधार पर सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाता है, जो उनकी जिम्मेदारियों का एक बुनियादी पहलू है।
5. **समस्या-समाधान:** समस्या-समाधान के लिए लिखित जानकारी को समझना एक मौलिक कौशल है। सिविल सेवाओं में कई परिदृश्यों में जटिल मुद्दों को समझने और समाधान तैयार करने की आवश्यकता होती है।
6. **अनुकूलता:** सिविल सेवक विभिन्न क्षेत्रों और विषयों पर काम करते हैं। नयी और विविध जानकारी को शीघ्रता से समझने की क्षमता आवश्यक है, और कॉम्प्रिहेंशन कौशल इस अनुकूलन क्षमता को सुविधाजनक बनाते हैं।
7. **सामान्य योग्यता:** CSAT को उम्मीदवार की सामान्य योग्यता का आकलन करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें डोमेन-विशिष्ट ज्ञान से परे कौशल शामिल हैं। कॉम्प्रिहेंशन इन सामान्य योग्यता कौशलों में से एक है जो उम्मीदवार की समग्र क्षमताओं का मूल्यांकन करने में सहायता करता है।

CSAT में कॉम्प्रिहेंशन को शामिल करने का उद्देश्य उन उम्मीदवारों की पहचान करना है जिनके पास क्षेत्र-विशिष्ट ज्ञान से परे, प्रभावी और जिम्मेदार सिविल सेवा भूमिकाओं के लिए आवश्यक कौशल और क्षमताएं हैं।

कॉम्प्रिहेंशन को हल करने में क्या चुनौतियाँ हैं?

CSAT परीक्षा में बोधगम्य प्रश्नों को हल करना कई कारणों से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। यहां कुछ सामान्य चुनौतियाँ और उनसे पार पाने के सुझाव दिए गए हैं:

1. **जटिल परिच्छेद:** CSAT में अक्सर विविध विषयों पर बोधगम्य परिच्छेद लंबे और जटिल हो सकते हैं। इस चुनौती से निपटने के लिए, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और अकादमिक लेखों सहित विभिन्न प्रकार के पाठों को पढ़ने का अभ्यास करें।
2. **लंबे परिच्छेद:** कुछ परिच्छेद काफी लंबे हो सकते हैं, और उम्मीदवारों को सीमित समय में पूरे परिच्छेद को पढ़ने और समझने की कोशिश में समय प्रबंधन में कठिनाई हो सकती है।
3. **सीमित समय:** आपके पास परिच्छेद को पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए सीमित समय है। अपनी गति में सुधार के लिए अभ्यास सत्र के दौरान टाइमर सेट करके समय प्रबंधन का अभ्यास करें।
4. **शब्दावली:** कभी-कभी, अनुच्छेदों में अपरिचित शब्द हो सकते हैं। इस चुनौती से निपटने के लिए, नियमित रूप से पढ़कर और फ्लैशकार्ड का उपयोग करके अपनी शब्दावली का विस्तार करने पर काम करें।

5. **अनुमानात्मक प्रश्न:** CSAT में अक्सर ऐसे प्रश्न शामिल होते हैं जिनके लिए आपको ऐसी जानकारी का अनुमान लगाने की आवश्यकता होती है जो परिच्छेद में स्पष्ट रूप से नहीं बताई गयी है। अपने आलोचनात्मक सोच कौशल में सुधार करें और तार्किक निष्कर्ष निकालने का अभ्यास करें।
6. **गलत व्याख्या:** लेखक के इरादे या मुख्य विचार की गलत व्याख्या करना आसान है। सुनिश्चित करें कि आप परिच्छेद को ध्यान से पढ़ें और धारणाएँ बनाने से बचें।
7. **उत्तर विकल्प:** कुछ उत्तर विकल्पों को पेचीदा या भ्रामक बनाया जा सकता है, जिससे उम्मीदवारों के बीच भ्रम पैदा हो सकता है। अधिक कुशल बनने के लिए विभिन्न अनुच्छेदों और प्रश्नों पर काम करें।
8. **पढ़ने की गति:** यदि आप पाते हैं कि आप धीरे-धीरे पढ़ते हैं, तो आप गति से पढ़ने के लिए कॉम्प्रिहेंशन को छोड़ सकते हैं। इसके लिए कॉम्प्रिहेंशन का सार बनाए रखते हुए तेजी से पढ़ने का अभ्यास करें।
9. **एकाग्रता और फोकस:** CSAT परीक्षा की पूरी अवधि के दौरान एकाग्रता बनाए रखना, जो कि एक लंबा प्रश्नपत्र है, चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर जब कॉम्प्रिहेंशन के अंशों से निपटना हो।
10. **तनाव और चिंता:** परीक्षा के दबाव से तनाव और चिंता हो सकती है, जो अनुच्छेदों को समझने की आपकी क्षमता को खराब कर सकती है।
11. **पूर्वाग्रह:** किसी भी व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा से सावधान रहें जो परिच्छेद की आपकी व्याख्या को प्रभावित कर सकता है। प्रत्येक परिच्छेद को खुले दिमाग से समझने का प्रयास करें।

याद रखें कि आपके समझने के कौशल को सुधारने में समय और लगातार प्रयास लगता है। इन चुनौतियों से पार पाने के लिए, नियमित रूप से अभ्यास करना, अपनी पढ़ने की गति में सुधार करना, अपनी शब्दावली को बढ़ाना और आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करना आवश्यक है। मॉक टेस्ट और अभ्यास पेपर आपको CSAT कॉम्प्रिहेंशन अनुभाग के प्रारूप और समय के साथ अधिक सहज होने में सहायता कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, अनुच्छेदों को पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर देने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण विकसित करना लाभप्रद हो सकता है।

प्रश्नों को हल करने का तरीका:

प्रश्नों को हल करने के लिए निम्नलिखित दृष्टिकोण का उपयोग किया जा सकता है:

1. प्रश्न पढ़ें और यदि प्रश्न धारणा/अनुमान/समग्र निष्कर्ष आदि के बारे में पूछ रहा है तो उसके कीवर्ड पर गोला लगा दें।
2. **पाठ पढ़ते** हुए महत्वपूर्ण शब्दों/डेटा को रेखांकित करें।
3. परिच्छेद के विषय को समझें।
4. पूछे गए प्रश्न पर जायें और गलत कथनों को हटाने का प्रयास करें।
5. **प्रश्न में पूछे गए कीवर्ड के अनुसार बचे हुए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त विकल्प का चयन करें।**
6. **जानिए कब छोड़ना है प्रश्न** - जब विकल्प बहुत करीब हों और विकल्प में लगभग समान भाषा का प्रयोग किया गया हो।

कॉम्प्रिहेंशन के प्रकार

प्रकार 1: धारणा-आधारित

धारणा क्या है?

धारणा एक विश्वास, कथन या विचार है जिसे सत्य मान लिया जाता है। वे तर्क-वितर्क में मूलभूत तत्वों के रूप में कार्य करते हैं।

उदाहरण के लिए: बाहर बारिश हो रही है।

सही धारणा: मौसम बादलमय है

गलत धारणा: मौसम सुहावना है।

धारणाएँ मुख्यत: दो प्रकार की होती हैं:

- **निहित धारणाएँ** वे हैं जिन्हें स्पष्ट रूप से नहीं कहा जाता है या सचेत रूप से स्वीकार भी नहीं किया जाता है। वे अक्सर हमारे व्यक्तिगत अनुभवों और विश्वासों पर आधारित होती हैं।

उदाहरण के लिए, आप यह अंतर्निहित धारणा बना सकते हैं कि हर कोई कंप्यूटर का उपयोग करना जानता है।

- **स्पष्ट धारणाएँ** वे हैं जो बतायी गयी हैं या स्पष्ट की गयी हैं।

  उदाहरण के लिए, एक शिक्षक यह स्पष्ट धारणा बना सकता है कि सभी छात्रों ने बताया गया विषय पढ़ लिया है।

धारणा-आधारित कॉम्प्रिहेंशन पाठ, वार्तालाप, तर्क या संचार के किसी भी रूप में अंतर्निहित धारणाओं की पहचान और मूल्यांकन करके जानकारी को समझने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। जब आप धारणा-आधारित कॉम्प्रिहेंशन में संलग्न होते हैं, तो आप उन अंतर्निहित या स्पष्ट मान्यताओं की आलोचनात्मक रूप से जांच करते हैं जो आपके सामने प्रस्तुत की गयी जानकारी को रेखांकित करती हैं।

यह ऐसे काम करता है:

1. **धारणाओं की पहचान करना:** पहला कदम जानकारी के भीतर मान्यताओं की पहचान करना है। "ऐसा माना जाता है," "निश्चित रूप से," या "स्पष्ट रूप से," जैसे वाक्यांशों को ढूँढें, जो अक्सर अंतर्निहित धारणाओं को इंगित करते हैं।
2. **धारणाओं पर सवाल उठाना:** एक बार जब आप धारणाओं की पहचान कर लें, तो उन पर सवाल उठाएं। अपने आप से पूछें कि क्या ये धारणाएँ मान्य हैं, यदि वे परिच्छेद में साक्ष्य द्वारा समर्थित हैं।
3. **महत्वपूर्ण सोच:** धारणा-आधारित कॉम्प्रिहेंशन में आलोचनात्मक सोच शामिल है। जानकारी का विश्लेषण करें, न केवल स्पष्ट रूप से जो कहा गया है बल्कि अंतर्निहित धारणाओं के माध्यम से जो निहित है, उस पर भी विचार करें।
4. **निष्कर्ष निकालना:** मान्यताओं के अपने विश्लेषण के आधार पर, जानकारी के बारे में निष्कर्ष निकालें। निर्धारित करें कि क्या धारणाएँ उचित हैं और क्या वे मुख्य बिंदु या तर्क का समर्थन करती हैं।

उदाहरण:

सरकार ने हाल ही में वायु प्रदूषण को कम करने के उद्देश्य से एक नई नीति की घोषणा की है। नीति में वाहनों के लिए सख्त उत्सर्जन मानक और कुछ क्षेत्रों में जीवाश्म ईंधन जलाने पर प्रतिबंध जैसे उपाय शामिल हैं।

प्रश्न: निम्नलिखित में से कौन सी सरकार की नई नीति के पीछे एक धारणा है?

(a) वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या है।

(b) सरकार के पास वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने की शक्ति है।

(c) जनता वायु प्रदूषण को कम करने के सरकार के प्रयासों का समर्थन करेगी।

(d) सरकार की नीति वायु प्रदूषण को कम करने में कारगर होगी।

सही उत्तर (a) है। सरकार की नीति इस धारणा पर आधारित है कि वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या है। अन्य उत्तर विकल्प आवश्यक रूप से नीति में अंतर्निहित धारणाएँ नहीं हैं। उदाहरण के लिए, सरकार के पास वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने की शक्ति हो सकती है, भले ही वह यह न मानती हो कि वायु प्रदूषण एक गंभीर समस्या है।

परिच्छेद-1

यद्यपि आजकल उगायी जाने वाली अधिकतर आनुवंशिकत: रूपांतरित (जी० एम०) फसलें एकल लक्षण के लिए आनुवंशिकत: अभिरचित हैं, भविष्य में फसलों का एक से अधिक लक्षणों के लिए आनुवंशिकत: अभिरचित होना सामान्य मानक होगा । अत: कृषि में जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका और उसके नियमन को, अकेले जी० एम० फसलों की वर्तमान पीढ़ी के प्रसंग में नहीं समझा जा सकता। बल्कि विभिन्न पहलुओं को जिनमें सामाजिक-आर्थिक प्रभाव सम्मिलित हैं, ध्यान में रखते हुए एक व्यापक अवलोकन की आवश्यकता है, ताकि नकारात्मक प्रभावों को न्यूनीकृत करते हुए प्रौद्योगिकी की क्षमता का उपयोग किया जा सके। उन किस्मों के विकास में, जो जलवायु परिवर्तन के प्रशमन और अनुकूलन में मददगार हैं, जैव प्रौद्योगिकी के महत्त्व के आलोक में, जलवायु परिवर्तन की कार्य-योजना के एक अंश के रूप में जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग न करना, एक विकल्प नहीं हो सकता। जैव प्रौद्योगिकी के घरेलू नियमन को व्यापार नीति और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संधियों तथा सम्मेलनों के अंतर्गत दायित्वों से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. जैव प्रौद्योगिकी नियमन एक विकासशील प्रक्रिया है।
2. जैव प्रौद्योगिकी नियमन के विषय में नीति निर्णय के लिए लोगों की भागीदारी की आवश्यकता है।

3. जैव प्रौद्योगिकी नियमन के निर्णयन में सामाजिक-आर्थिक पहलुओं को भी ध्यान में रखना चाहिए।
4. जैव प्रौद्योगिकी नियमन में राजनैतिक कार्यपालिका का व्यापक रूप में शामिल होना देश की व्यापार नीतियों और अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों को निपटाने की प्रभाविता में सुधार लाता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

(a) केवल 1, 2 और 4

(b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

समाधान :(b)

कथन 1: परिच्छेद में प्रमाणित - सामाजिक-आर्थिक, व्यापार, आईपीआर आदि।

कथन 2: परिच्छेद में उल्लिखित नहीं है।

एक चेतावनी; आप परिच्छेद को पढ़े बिना प्रयास नहीं कर सकते क्योंकि ऐसे तुच्छ कथन हम सभी मुख्य परीक्षाओं में लिखते हैं और परीक्षक यहां उस पर काम करते हैं।

कथन 3: हाँ, परिच्छेद में दिया गया है।

कथन 4: किसी भी बारे में बात नहीं की गयी; वास्तव में, ये वे लोग हैं जो नियम बनाते हैं... इससे सुधार होगा या नहीं, यह प्रमाणित नहीं होगा। यह बस एक ध्यान भटकाने वाली बात है।

परिच्छेद-2

निजी निवेश सामान्यत: चपल है। विदेशी निजी निवेश और भी अधिक चपल है क्योंकि उनके लिए उपलब्ध निवेश विकल्प काफी अधिक हैं (अर्थात्, समूचा संसार)। इसलिए रोजगार देने का दायित्व विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) पर नहीं छोड़ा जा सकता। सांप्रतिक FDI अंतर्वाह सभी समय और सभी सेक्टरों तथा क्षेत्रों के संदर्भ में चपल होता है, जो उनके अधिकतम प्रतिफल की तलाश का आवश्यक परिणाम है। अस्थिर रोजगार और आय एवं क्षेत्रीय असमानताओं का प्रबलन उसके दुष्परिणाम हैं। विदेशी निवेश का एक संभावित सकारात्मक परिणाम है नई प्रौद्योगिकी का अंतर्बहन और उसका अनुवर्ती विसरण। तथापि, प्रौद्योगिकी विसरण एकदम सुनिश्चित नहीं है, क्योंकि विसरण के लिए भारत में भौतिक एवं मानवीय पूँजी की वर्तमान स्थिति अपर्याप्त साबित हो सकती है।

THE CORE IAS

उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2020)

1. दीर्घकाल में विदेशी निवेश पर भरोसा करना आर्थिक रूप से एक सही नीति नहीं है।
2. ऐसी नीतियों को अपनाया जाना चाहिए जो विदेशी निजी निवेश में चपलता को कम कर सकें।
3. घरेलू निजी निवेश को सशक्त बनाने वाली नीतियाँ अपनायी जानी चाहिए।
4. निजी निवेश की अपेक्षा सार्वजनिक निवेश को अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए।
5. शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में पर्याप्त सार्वजनिक निवेश किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) 1, 2 और 4

(b) 1, 3 और 5

(c) 2, 4 और 5

(d) केवल 3

समाधान: (b)

कथन 1: हाँ, परिच्छेद में प्रमाणित होता है। "सामान्य तौर पर निजी निवेश अस्थिर है। विदेशी निजी निवेश अधिक अस्थिर है"।

कथन 2: "सामान्य तौर पर निजी निवेश अस्थिर है"। फिर नीति इसे कैसे कम कर सकती है, परिच्छेद में कुछ भी प्रमाणित नहीं होता है।

कथन 3: हाँ, क्योंकि विदेशी निवेश अधिक अस्थिर है, जैसा कि परिच्छेद में दिया गया है।

कथन 4: ऐसी कोई तुलना नहीं; केवल निजी बनाम विदेशी निजी दिया गया है।

कथन 5: हाँ, तकनीकी प्रसार के लाभों को प्राप्त करने के लिए "प्रौद्योगिकी प्रसार बिल्कुल निश्चित नहीं है क्योंकि भारत में भौतिक और मानव पूंजी की मौजूदा स्थिति प्रसार के लिए अपर्याप्त प्रमाणित हो सकती है"।

टिप्पणी: जब भी तुलना हो तो हमेशा इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि परिच्छेद में क्या तुलना दी गयी है और प्रश्न में कौन सी तुलना पूछी गयी है।

- ध्यान **सामान्य रूप से/लगभग/हमेशा/ निरपेक्ष नहीं** पर।

परिच्छेद-3

जब शिक्षा से मिलने वाले लाभ का उपयोग करने की आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी, तभी लोग शिक्षा में निवेश करेंगे। इस प्रत्यक्ष कारण की वजह से आर्थिक स्वतंत्रता के स्तर में वृद्धि के साथ ही शिक्षा से प्राप्त होने वाला लाभ भी बढ़ जाता है। निम्न कर दरों के कारण जब लोगों को शिक्षा के प्रत्येक बढ़ते स्तर से प्राप्त बढ़ी हुई आय के अधिकांश भाग को अपने पास रखने की अनुमति होती है तब शिक्षा में निवेश एक अच्छी सूझ-बूझ की बात होती है। दूसरी ओर जब सरकार शिक्षित व्यक्तियों की बढ़ी हुई आय पर और ऊँची दरों पर कर लगाने का निर्णय लेती है, तब स्वयं को अधिक शिक्षित करने में निवेश करना समझदारी की बात नहीं लगती। यही प्रोत्साहन उन अभिभावकों पर भी लागू होता है जिन्हें यह निर्णय लेना है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा पर निवेश करें या नहीं।

उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. किसी देश में निम्न कर दर निरपवाद रूप से उच्च शिक्षा में अधिक निवेश के लिए परिणत हो जाती हैं
2. बच्चों की शिक्षा में निवेश उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित करता है।
3. आर्थिक स्वतंत्रता का मानव पूँजी निर्माण पर सकारात्मक प्रभाव होता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) केवल 3

(d) 1, 2 और 3

समाधान:(c)

कथन 1: पूर्णत: नहीं; जब भी आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की गयी। कर द्वितीयक कारण है।

कथन 2: सामान्य अध्ययन के अनुसार सही हो सकता है; लेकिन दूसरी ओर, यह आर्थिक स्वतंत्रता है जो शिक्षा में उच्च निवेश सुनिश्चित करती है; कॉम्प्रिहेंशन में कारण-प्रभाव का आदान-प्रदान बहुत सामान्य है।

कथन 3: हाँ प्रमाणित; "जब भी लोगों को आर्थिक स्वतंत्रता दी जाएगी, वे शिक्षा में निवेश करेंगे।

टिप्पणी: UPSC अक्सर कारण-प्रभाव का आदान-प्रदान करता है। ऐसे कथनों पर हमेशा दो बार ध्यान केंद्रित करें।

आप परिच्छेद को तोड़ सकते हैं।

प्रसंग: शिक्षा में निवेश

कारण: आर्थिक स्वतंत्रता; और कम कर उस पर प्रभाव डाल रहे हैं।

यह परिच्छेद का दो-पंक्ति सारांश है, बाकी व्याख्या मात्र है, कि यह कैसे होता है।

परिच्छेद- 4

जब तक वित्तीयन तंत्र स्थापित न हो जाए तब तक हमारे शहरी निकाय संभवत: हमारे शहरों में जलापूर्ति की धारणीय व्यवस्था सुनिश्चित नहीं कर सकते । जलापूर्ति के लिए प्राकृतिक स्रोतों से जल संचित करने, उसे पीने योग्य बनाने की अभिक्रिया, तथा उपभोक्ताओं तक उसकी आपूर्ति करने के लिए पाइपों के जल- वितरण नेटवर्क बिछाने में भारी निवेश की आवश्यकता होती है। उसमें मल प्रबंधन अध: संरचना एवं मल जल अभिक्रिया संयंत्रों में भी निवेश की आवश्यकता होती है, जिससे मल-प्रणाल अपशिष्ट जल को इन संयंत्रों तक ले जा सकें और यह सुनिश्चित किया जा सके कि असंसाधित मल जल प्राकृतिक जल निकायों में बिलकुल ही नहीं छोड़ा जाए। यदि हमारे शहर इतने समृद्ध होते कि वो पूरी लागत को वहन कर सकते तो जल की नि:शुल्क पूर्ति की जा सकती है। वे ऐसे नहीं हैं।

उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. केवल धनी शहर ही जल की धारणीय आपूर्ति को सुनिश्चित कर सकते हैं।
2. शहरों में जल की धारणीय आपूर्ति का अर्थ कुटुम्बों को जल की आपूर्ति करने से कहीं अधिक है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

समाधान :(b)

कथन 1: "यदि हमारे शहर पूरी लागत को पूरा करने के लिए पर्याप्त समृद्ध होते, तो पानी मुफ्त दिया जा सकता था। वे नहीं हैं।" + "जब तक वित्तपोषण तंत्र स्थापित नहीं किया जाता" - अमीर शहरों के लिए नहीं।

कथन 2: हाँ, सीवेज और अन्य की आवश्यकता है।

नोट: मुफ्त और संधारणीयता को **पहचानें;** एक ही परिच्छेद में अमीर-गरीब। किस के साथ क्या जाता है। UPSC अक्सर इन्हें आपस में मिलाता है और नए-नए कथन देता है जो सच प्रतीत होते हैं।

परिच्छेद-5

भारतीय बच्चों में प्रवाहिका (डायरिया) से होने वाली मौतें मुख्यत: खाद्य और जल के संदूषित हो जाने के कारण होती हैं । कृषि में संदूषित भौमजल और असुरक्षित रसायनों का उपयोग, खाद्य-पदार्थों का भंडारण और रख-रखाव अस्वास्थ्यकर तरीकों से किए जाने से ले कर खाद्य पदार्थों के अस्वास्थ्यकर परिवेश में पकाए और वितरित किए जाने तक; ऐसे असंख्य कारक हैं जिनके विनियमन और मॉनीटरन की आवश्यकता है । लोगों को मिलावट के बारे में और संगत प्राधिकारियों को शिकायत करने के तरीकों के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है । खाद्य संक्रामक रोगों की निगरानी करने में अनेक सरकारी अधिकरण शामिल हैं और निरीक्षण कर्मियों के अच्छे प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इसका विचार करते हुए कि शहरी जनसंख्या का कितना भाग अपने दैनिक भोजन के लिए गली-नुक्कड़ पर बिकने वाले भोजन पर निर्भर है, गली-नुक्कड़ पर भोजन बेचने वालों के प्रशिक्षण और शिक्षण में निवेश करना बड़े महत्त्व का है।

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)

1. खाद्य सुरक्षा एक जटिल मुद्दा है जिसके अनेक विध समाधानों की आवश्यकता है।
2. निगरानी और प्रशिक्षण के लिए जनशक्ति बढ़ाने में भारी निवेश करने की आवश्यकता है।

3. भारत को खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को नियंत्रित करने हेतु पर्याप्त विधि-निर्माण करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध हैं / हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

समाधान:(a)

कथन 1: हाँ, परिच्छेद में प्रमाणित है। भूजल, रासायनिक स्वच्छता, मिलावट आदि।

कथन 2: हां, "खाद्य जनित बीमारियों की निगरानी में कई सरकारी एजेंसियां शामिल होती हैं और निरीक्षण कर्मचारियों का अच्छा प्रशिक्षण शामिल होता है।"

कथन 3: कानून के साथ दिए गए "विनियमन और निगरानी" को चतुराई से बदल दिया गया है - "ऐसे असंख्य कारक हैं जिनके लिए विनियमन और निगरानी की आवश्यकता है।"-स्पष्ट धारणा।

नियम: कारण-प्रभाव संबंधों पर प्रकाश डालें। ऐसी प्रवृत्ति है कि इन्हें चतुराई से आपस में बदल दिया जाता है।

परिच्छेद-6

असमानता न केवल दिखाई देती है, बल्कि अनेक उदाहरणों में सांख्यिकीय रूप से मापी जा सकती है, किंतु इसे संचालित करने वाली आर्थिक शक्ति न तो दिखाई देती है और न ही मापी जा सकती है । गुरुत्व बल की ही तरह, शक्ति असमानता का संघटक सिद्धांत है, चाहे वह आय, या संपत्ति, लिंग, वंश, धर्म और क्षेत्र, किसी की भी हो । इसके प्रभाव सभी क्षेत्रों में व्यापक रूप से दिखते हैं, किंतु जिन रीतियों से आर्थिक शक्ति दृश्यमान आर्थिक चरों को तोड़ती-मरोड़ती है वे अदृश्य रूप से अस्पष्ट बने रहते हैं ।

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ. बनाई गई हैं: (2019)

1. किसी समाज में असमानता के होने के लिए आर्थिक शक्ति ही एकमात्र कारण है ।
2. आय, संपत्ति, आदि विभिन्न प्रकार की असमानता शक्ति को सुदृढ़ करती है।
3. आर्थिक शक्ति को प्रत्यक्ष आनुभविक विधियों की अपेक्षा उसके प्रभावों के माध्यम से बेहतर विश्लेषित किया जा सकता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध हैं/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

समाधान:(b)

1. **कथन 1:** अदृश्य कारण और सबसे मजबूत; अंतिम पंक्ति- "लेकिन जिस तरह से आर्थिक शक्ति दृश्यमान आर्थिक चर को खींचती और झुकाती है वह अदृश्य रूप से अस्पष्ट रहता है।"
2. **कथन 2:** यह वह शक्ति है जो विभिन्न प्रकार की असमानताओं को पुष्ट करती है- "गुरुत्वाकर्षण बल की तरह, शक्ति असमानता का आयोजन सिद्धांत है, चाहे वह आय, या धन, लिंग, जाति, धर्म और क्षेत्र की हो। परस्पर कारण-प्रभाव।
3. **कथन 3:** हाँ प्रमाणित है - "लेकिन जो आर्थिक शक्ति इसे चलाती है वह अदृश्य है और मापने योग्य नहीं है"।

टिप्पणी: आपका सामान्य अध्ययन का ज्ञान हस्तक्षेप करेगा; परिच्छेद को पूरी तरह से पढ़े बिना प्रयास न करें; परीक्षक चतुर है।

सामान्य अध्ययन के अनुसार यह कथन-"विभिन्न प्रकार, आय, धन आदि की असमानता, शक्ति को सुदृढ़ करती है" सही लग सकता है लेकिन परिच्छेद के अनुसार यह सही नहीं है।

प्रकार 2: सांख्यिकी आधारित परिच्छेद

यहां, इस प्रकार के अनुच्छेदों में आपको परिच्छेद में आँकड़े दिए जाएंगे जबकि प्रश्नों में निरपेक्ष कथन दिए जाएंगे। आँकड़ों को रेखांकित करें और जानें कि यह क्या बताता है।

परिच्छेद - 1

सभी पुष्पधारी पौधों की जातियों में से लगभग 80 प्रतिशत में परागण प्राणियों द्वारा होता है, जिसमें पक्षी और स्तनधारी प्राणी शामिल हैं, किंतु कीट मुख्य परागणकारी हैं । परागण हमें पौधों से उत्पन्न कई औषधियों के साथ-साथ विविध प्रकार के खाद्य उपलब्ध कराने के लिए उत्तरदायी है । विश्व की कम-से-कम एक तिहाई कृषि फसलें परागण पर निर्भर हैं । परागण के लिए मक्षिका सर्वाधिक प्रभावी वर्ग हैं और ये चार सौ से भी अधिक फसलों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं । परागण एक ऐसी अनिवार्य व्यवस्था है जो पौधों और प्राणियों के बीच जटिल संबंधों का परिणाम है, और इनमें से किसी की भी कमी या ह्रास होने से दोनों का अस्तित्व प्रभावित होता है । प्रभावी परागण के लिए मूल प्राकृतिक वनस्पति के आश्रय जैसे संसाधनों की आवश्यकता है।

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2021)

1. परागणकारी प्राणियों की विविधता के बिना भारत के अनाज खाद्यान्न का संधारणीय उत्पादन संभव नहीं है।
2. उद्यान फसलों की एकधान्य कृषि, कीटों के अस्तित्व के लिए बाधक है ।
3. प्राकृतिक वनस्पति से विहीन कृषि क्षेत्रों में परागणकारियों की अत्यधिक कमी हो जाती है ।
4. कीटों में विविधता, पौधों में विविधता लाती।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं ?

(a)केवल 1

(b) केवल 2, 3 और 4

(c) केवल 1 और 2

(d) केवल 3 और 4

समाधान: (b)

परिच्छेद का विच्छेद:

सभी फूल वाले पौधों में से 80% जानवरों द्वारा परागित होते हैं

(परागण पर फसल का 1/3; 400 फसलों के लिए मधुमक्खियाँ सबसे प्रमुख वर्गक हैं।)

कथन 1: कृषि फसल पर गलत मधुमक्खियों का प्रभुत्व, वह भी परागण पर केवल 1/3।

कथन 2: हाँ, सामान्य अध्ययन ऐसा कहता है लेकिन कहीं भी यह प्रमाणित नहीं हुआ कि एकल-शस्यन इसमें बाधा डाल रहा है; किसी भी परिच्छेद में यह उल्लेख नहीं है कि दुनिया एकल-शस्यन की ओर जा रही है; परिच्छेद में परागणकों के महत्व को दर्शाया गया है, विशेष रूप से कृषि प्रथाओं के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया है।

कथन 3: हाँ प्रमाणित; प्राकृतिक वनस्पति की आवश्यकता है।

कथन 4: हाँ, परागण पर भोजन की किस्में और 80 प्रतिशत फूल वाले पौधे। अलग-अलग कीट, मधुमक्खियाँ आदि अलग-अलग परागण करते हैं; यहां आपको विश्लेषणात्मक होने की आवश्यकता है।

परिच्छेद - 2

भारत में, अभी भी लगभग पचास प्रतिशत कामगार कृषि में विनियोजित हैं, तथा लगभग 85 प्रतिशत खेत छोटे और सीमांत हैं। चीन और वियतनाम की तुलना में, जहाँ तेज गति से संरचनात्मक और ग्रामीण परिवर्तन हुए, भारत की कहानी धीमे परिवर्तन

की है। परिणामस्वरूप भारत में गरीबी - ह्रास, चीन और वियतनाम की तुलना में, 1988-2014 के बीच बहुत धीमी गति का था। भारत का गरीबी-हास 1988-2005 के बीच धीमा था, परंतु 2005-2012 के दौरान यह नाटकीय गति से बढ़ा - पूर्व के काल की तुलना में तीन गुना तेज गति से । इस काल में भारत ने क्या किया? शोध से पता चलता है कि सापेक्ष कीमतों का दृश्यलेख, बढ़ती वैश्विक कीमतों के परिणामस्वरूप, कृषि के पक्ष में महत्त्वपूर्ण ढंग से परिवर्तित हुआ है (50% से भी अधिक)। इससे कृषि में निजी निवेश 50% से भी अधिक बढ़ा। परिणामस्वरूप, कृषि - जी० डी० पी० की वृद्धि ने 2002-2007 के 2.4% के मुकाबले 2007-2012 में 4.1% के स्तर को छुआ । कृषि - व्यापार के निवल अधिशेष ने 2013-2014 में +25 बिलियन के स्तर को छुआ; वास्तविक कृषि मजदूरी 7% प्रति वर्ष की दर से बढ़ी। इन सबके कारण गरीबी में अभूतपूर्व गिरावट आई।

उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. जब कृषि जोत मूलत: छोटे और सीमांत हों तब संरचनात्मक और ग्रामीण परिवर्तन असंभव है।
2. अच्छी कीमत प्रोत्साहन कृषि में निवेश को प्रेरित कर सकती है।
3. भारत के लिए उच्च मूल्य के कृषि उत्पादों, जैसे कि पशुधन और बागवानी, के लिए मूल्य श्रृंखलाओं (value chains) को बनाने की आवश्यकता है।
4. कृषि - माल की उच्च वैश्विक कीमतें भारत के गरीबी - ह्रास के लिए आवश्यक हैं।

उपर्युक्त में से कौन - सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

(a) 1 और 3

(b) 2 और 4

(c) 2 और 3

(d) 3 और 4

समाधान:(c)

कथन 1: गलत, 2007-12 की घटना ने प्रमाणित किया।

कथन 2: हाँ, परिच्छेद में दिया गया है "अनुसंधान से पता चलता है कि बढ़ती वैश्विक कीमतों के मद्देनजर कृषि के पक्ष में सापेक्ष मूल्य परिदृश्य में काफी बदलाव (50% से अधिक) हुआ है"।

कथन 3: उच्च मूल्य; परिच्छेद में प्रमाणित हुआ कि कीमतें बदल सकती हैं; यह अंतर्निहित धारणा है।

कथन 4: आवश्यक शब्द- केवल "उच्च कीमतें" आवश्यक हैं, विदेशी या घरेलू नहीं; दी गयी उच्च वैश्विक कीमतें कीमत ट्रिगर का एक उदाहरण मात्र थीं; यदि इसे "हो सकती हैं" से बदल दिया जाए तो कथन सही होगा।

- जैसा कि अंतिम कथन में दिया गया है, कभी-कभी आपको गुमराह किया जाता है। संपूर्ण परिच्छेद एक उदाहरण के माध्यम से प्रमाणित करता है कि कीमतें महत्वपूर्ण हैं लेकिन कथन में वैश्विक कीमतें दी गयी हैं।
- **नोट:** धीमी और स्थिर दौड़ सादृश्य रूप से जीतती है। यह स्थिरता ही है जिसने दौड़ जीती है, धीमापन नहीं। वास्तविक घटना/कारण पर ध्यान दें। कृपया निष्कर्ष निकालें!

परिच्छेद-3

खाद्य की किस्मों का पूरे विश्व में विलोपन हो रहा है और यह तेजी से हो रहा है। उदाहरण के लिए, उन्नीसवीं शताब्दी में उगाई जाने वाली सेब की 7,000 किस्मों में से 100 से भी कम बची हैं। फिलिपींस में कभी धान की हजारों किस्में फल-फूल रही थीं; किन्तु अब मुश्किल से सौ किस्में तक ही उपजायी जा रही हैं। चीन में मात्र एक शताब्दी पूर्व खेती में प्रयुक्त होने वाली गेहूँ की किस्मों में से 90 प्रतिशत किस्में विलुप्त हो चुकी हैं। विगत समय में किसानों ने बहुत परिश्रम से अपने स्थानीय जलवायु और पर्यावरण की विलक्षणताओं के काफी अनुरूप फसलों को उपजाया और विकसित किया। हाल के पिछले वर्षों में, कुछ थोड़ी सी भारी उपज वाली किस्मों पर और खाद्य के प्रौद्योगिकी-चालित उत्पादन तथा वितरण पर हमारी भारी निर्भरता के कारण खाद्य फसलों की विविधता में कमी हो रही है। यदि कोई उत्परिवर्तनकारी फसल रोग या भावी जलवायु परिवर्तन

उन कुछ फसल पादपों का संहार कर दे, जिन पर हम अपनी बढ़ती जनसंख्या का पेट भरने के लिए निर्भर हो चुके हैं, तो हमारे लिए उन कुछ किस्मों की घोर आवश्यकता हो सकती है, जिन्हें हमने विलुप्त हो जाने दिया।

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2019)

1. पादप जातियों के बड़े पैमाने पर विलोपन होने का प्रमुख कारण मनुष्य ही रहे हैं।
2. मुख्यत: स्थानीय रूप से उपजायी जा रही फसलों के उपभोग से फसल विविधता सुनिश्चित होती है।
3. खाद्य उत्पादन और वितरण की वर्तमान शैली अंततोगत्वा निकट भविष्य में खाद्य की कमी की समस्या की ओर ले जाएगी।
4. हमारी खाद्य सुरक्षा, स्थानीय रूप से उपजायी जा रही फसलों की किस्मों को बचाए रखने की हमारी योग्यता पर निर्भर हो सकती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

(a) 1 और 3

(b) 2 और 4

(c) 2 और 3

(d) 1 और 4

समाधान:(b)

परिच्छेद को तोडना = दोषपूर्ण उत्पादन के कारण किस्मों का विलुप्त होना + यदि जलवायु परिवर्तन और बीमारी के कारण कुछ फसलें विलुप्त हो जाएँगी।

कथन 1: प्रथम पंक्ति की खाद्य किस्में पौधे नहीं; UPSC बहुत ही चतुराई और बारीकी से शब्दों को बदल देता है।

कथन 2: "अतीत में किसान अपने स्थानीय जलवायु और पर्यावरण की विशिष्टताओं के अनुकूल बड़ी मेहनत से फसलें उगाते और विकसित करते थे। हाल के दिनों में, कुछ उच्च उपज देने वाली किस्मों और प्रौद्योगिकी-संचालित उत्पादन और भोजन के वितरण पर हमारी भारी निर्भरता खाद्य फसलों में विविधता में कमी का कारण बन रही है।

कथन 3: "कुछ परिवर्तनशील फसल रोग या भविष्य में जलवायु परिवर्तन नष्ट हो जाता है" तो अंतत: - निश्चितता से भोजन की कमी होगी। परिच्छेद से प्रमाणित है कि कब अभाव का सामना करना पड़ेगा।

परिच्छेद- 4

मृदा, जिसमें हमारे लगभग सभी खाद्य पदार्थ उगते हैं, एक जीवंत संसाधन है जिसके बनने में वर्षों लगते हैं । तथापि, यह मिनटों में नष्ट हो सकती है । प्रति वर्ष 75 अरब (बिलियन) टन उर्वर मृदा क्षरण के और कारण नष्ट हो जाती है। यह चिंताजनक है-केवल खाद्य उत्पादकों के लिए ही नहीं । मृदा विशाल मात्रा में कार्बन डाइ ऑक्साइड को कार्बनिक (ऑर्गेनिक) कार्बन के रूप में रोके रख सकती है और वायुमंडल में उन्मुक्त हो जाने से बचाए रख सकती है।

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)

1. बड़े पैमाने पर मृदा का क्षरण विश्व में व्यापक खाद्य असुरक्षा का प्रमुख कारण है।
2. मृदा का क्षरण मुख्यत: मानवोद्भविक (ऐंथ्रोपोजेनिक) है।
3. मृदा के धारणीय प्रबंधन से जलवायु परिवर्तन का सामना करने में मदद मिलती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं ?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3

(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

समाधान:(b)

13

कथन 1: परिच्छेद में वर्तमान में विश्व में खाद्य असुरक्षा की स्थिति के बारे में कुछ भी शामिल नहीं है। - यदि कथन को "बड़े पैमाने पर मृदा अपरदन भविष्य में दुनिया में व्यापक खाद्य असुरक्षा का एक प्रमुख कारण बन सकता है" से प्रतिस्थापित किया जाए, तो यह एक सही धारणा होगी।

कथन 2: परिच्छेद में मृदा अपरदन के किसी भी कारण का उल्लेख नहीं है।

कथन 3: हाँ प्रमाणित है - मृदा कार्बनिक कार्बन के रूप में भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड को रोक सकती है और इसे वायुमंडल में जाने से रोक सकती है।

नोट: एक अन्य श्रेणी- गलत उत्तर दिखाना: परिच्छेद में प्रश्न के प्रत्येक कथन की जांच करें कि वह क्या निष्कर्ष निकालता है।

परिच्छेद-5

अनेक किसान फसल को हानि पहुँचाने वाले कीटों को मारने के लिए संश्लेषित कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। कुछ विकसित देशों में तो कीटनाशकों की खपत 3000 ग्राम प्रति हेक्टेयर तक पहुँच रही है। दुर्भाग्यवश, ऐसी कई रिपोर्ट हैं कि ऐसे यौगिकों में अन्तर्निहित विषाक्तता होती है जो खेती करने वालों के, उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और पर्यावरण को खतरे में डालती है। संश्लेषित कीटनाशक सामान्यत: पर्यावरण में लगातार बने रहते हैं । खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर वे सूक्ष्मजैविक विविधता को नष्ट कर पारिस्थितिक (इकोलॉजिकल) असंतुलन उत्पन्न करते हैं। इनके अंधाधुंध उपयोग के परिणामस्वरूप कीटों में कीटनाशकों के विरुद्ध प्रतिरोध विकसित हुआ है, प्राकृतिक संतुलन में गड़बड़ी हुई है और जिन समष्टियों का उपचार किया जा चुका है वे फिर से बढ़ गई हैं। वानस्पतिक कीटनाशक का उपयोग कर प्राकृतिक पीड़क नियंत्रण करना इनके उपयोगकर्ताओं एवं पर्यावरण के लिए अपेक्षाकृत सुरक्षित होता है, क्योंकि वे सूर्य के प्रकाश की मौजूदगी में कुछ घंटों अथवा दिनों में ही हानिरहित यौगिकों में टूट जाते हैं। कीटनाशी विशेषताओं से युक्त पौधे लाखों वर्षों से, पारिस्थितिक तंत्र पर कोई खराब या प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, प्रकृति में मौजूद हैं। अधिकांश मृदाओं में आमतौर पर पाए जाने वाले अनेक सूक्ष्मजीव इन्हें सरलता से विघटित कर देते हैं। वे परभक्षियों की जैविक विविधता को बनाए रखने और पर्यावरणीय संदूषण तथा मनुष्यों के स्वास्थ्य संकटों को कम करने में सहायक हैं। पौधों से बनाए गए वानस्पतिक कीटनाशक जैव निम्नीकरणीय (बायोडिग्रेडेबल) होते हैं और फसल सुरक्षा में उनका उपयोग करना व्यावहारिक रूप से एक धारणीय विकल्प है।

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2017)

1. आधुनिक कृषि में, संश्लेषित कीटनाशकों का उपयोग कभी भी नहीं करना चाहिए।
2. धारणीय कृषि का एक उद्देश्य अल्पतम पारिस्थितिक असंतुलन को सुनिश्चित करना है।
3. वानस्पतिक कीटनाशक, संश्लेषित कीटनाशकों की तुलना में, अधिक प्रभावकारी होते हैं।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

समाधान: (b)

कथन 1: संपूर्ण परिच्छेद अत्यधिक उपयोग पर है और प्रतिरोध जैसे प्रभाव उत्पन्न करता है...पहली और दूसरी पंक्ति; विकसित में उपयोग और दुरुपयोग और फिर अति प्रयोग से प्रभाव।

कथन 2: हाँ, परिच्छेद ने इसे प्रमाणित कर दिया है।

कथन 3: "वे शिकारियों की जैविक विविधता को बनाए रखने में सहायता करते हैं", और अंतिम पंक्ति में वे टिकाऊ विकल्प हैं, प्रभावी नहीं। परिच्छेद में प्रभावशीलता की तुलना नहीं की गयी है, केवल संधारणीयता की तुलना की गयी है। यह तरीका गलत उत्तर दिखाना है।

नोट: मापदंडों पर तुलना के बिना भारत का नंबर वन ब्रांड;

परिच्छेद प्रभावशीलता के नहीं संधारणीयता के इर्द-गिर्द घूमता है।

परिच्छेद-6

इस अभिकथन में किंचित से कहीं अधिक सच्चाई है कि "सामयिक घटनाओं की बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्या के लिए प्राचीन इतिहास का कार्यसाधक ज्ञान होना आवश्यक है"। किन्तु जिस बुद्धिमान ने समझदारी के ये शब्द कहे थे, उसने विशेष रूप से इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाइयों के अध्ययन से होने वाले फायदों पर अवश्य ही कुछ-न-कुछ कहा होगा, क्योंकि इनमें हममें से उनके लिए सबक शामिल हैं जो नेतृत्व करते हैं या नेता बनने की अभिलाषा रखते हैं। इस तरह के अध्ययन से कुछ ऐसे गुण और विशेषताएँ उद्घाटित होंगी, जिनसे विजेताओं के लिए जीत परिचालित हुई और वे कतिपय कमियाँ भी, जिनके कारण हारने वालों की हार हुई और विद्यार्थी यह देखेगा कि यही प्रतिरूप सदियों से लगातार, बार-बार पुनर्घटित होता है।

उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई है : (2017)

1. इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाइयों का अध्ययन हमें आधुनिक युद्धस्थिति को समझने में सहायता करेगा।
2. जो भी नेतृत्व की इच्छा रखता है, उसके लिए इतिहास का अध्ययन अनिवार्य है।

इनमें से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/है?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

समाधान: (d)

1. परिच्छेद ने इस विचार को "विशेष रूप से इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाइयों का अध्ययन करने से उन शिक्षाओं के लिए जोड़ा है जो हममें से उन लोगों के लिए हैं जो नेतृत्व करते हैं या नेतृत्व की आकांक्षा रखते हैं"।
2. परिच्छेद में कहा गया है, "नेता बनने की इच्छा रखने वालों के लिए सबक"; नेता बनना जरूरी नहीं;

ध्यान दें: हमेशा/लगभग हमेशा/आवश्यक/लगभग सभी/संभवत: नहीं/सामान्य तौर पर से सावधान रहें।

परिच्छेद-7

भारत में अनेक लोगों का यह विचार है कि यदि हम शस्त्र-निर्माण पर अपने रक्षा व्यय को कम कर दें, तब हम अपने पड़ोसियों के साथ शांति का वातावरण बना सकते हैं, जिससे उत्तरोत्तर संघर्ष कम होगा अथवा युद्ध-मुक्त स्थिति बनेगी । जो लोग इस प्रकार के विचार घोषित करते हैं, वे या तो युद्ध पीड़ित हैं अथवा मिथ्या तर्क फैलाने वाले हैं।

उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सी एक सर्वाधिक वैध पूर्वधारणा (अजम्शन) है? (2015)

(a) हमारे शस्त्र - प्रणालियों के निर्माण से हमारे पड़ोसी हमारे विरुद्ध युद्ध के लिए उत्तेजित हुए हैं।

(b) हम शस्त्र निर्माण पर जितना अधिक व्यय करेंगे, हमारे पड़ोसियों के साथ सशस्त्र संघर्ष की संभावना उतनी ही कम होगी।

(c) राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि हमारे पास अत्याधुनिक शस्त्र-प्रणालियाँ हों।

(d) भारत में अनेक लोगों का विश्वास है कि हम शस्त्र निर्माण में अपने संसाधनों का अपव्यय कर रहे हैं।

समाधान: (b)

कथन1: यह सिर्फ एक भावना है और हम पर हुए हमलों का कोई सीधा संबंध नहीं बताया गया है।

कथन 2: अंतिम विचार; भावना उत्पीड़न या प्रचार से आती है, अनुसंधान से नहीं।

कथन 3: उनके बारे में चर्चा नहीं करता।

वक्तव्य 4: यहाँ पर झांसा दिया है...परिच्छेद में उनके बारे में कहा गया है "उन्हें लगता है कि यह संघर्ष को कम कर सकता है"; यह उल्लेख नहीं करता कि यह संसाधन की बर्बादी है"।

ध्यान दें: अक्सर सबसे छोटे परिच्छेद के लिए अग्रिम विश्लेषणात्मक कौशल की आवश्यकता होती है। उन्हें हल्के में न लें।

- **दावे/तथ्य/भावना/राय को अलग करें।** जल्दबाजी में हर बात को परिच्छेद में दिया गया तथ्य मान लिया जा सकता है।

प्रकार 3: अनुमान आधारित

अनुमान क्या है?

अनुमान उपलब्ध साक्ष्य, सूचना या तर्क के आधार पर निष्कर्ष निकालने, परिणाम निकालने या तार्किक निर्णय तक पहुंचने की प्रक्रिया है। इसमें किसी ऐसी चीज के बारे में शिक्षित अनुमान, भविष्यवाणियाँ या निर्णय लेने के लिए मौजूदा ज्ञान या डेटा का उपयोग करना शामिल है जो स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है या ज्ञात नहीं है।

अनुमान के प्रकार:

1. **निगमन** एक प्रकार का अनुमान है जिसमें निष्कर्ष आवश्यक रूप से सत्य होता है, बशर्ते कि परिसर सत्य हो। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित एक निगमनात्मक रूप से मान्य तर्क है:
   - सभी मनुष्य नश्वर हैं।
   - सुकरात एक इंसान हैं।
   - **अनुमान**-इसलिए, सुकरात नश्वर है।
   - इस तर्क में, निष्कर्ष आवश्यक रूप से सत्य है, यह देखते हुए कि आधार-वाक्य सत्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि निष्कर्ष आधार-वाक्य में निहित है।
2. **अनुगम** एक प्रकार का अनुमान है जिसमें निष्कर्ष आवश्यक रूप से सत्य नहीं है, लेकिन यदि आधार-वाक्य सत्य है तो इसके सत्य होने की अधिक संभावना है। उदाहरण के लिए-
   - मैंने जो हंस देखे हैं वे सभी सफेद हैं।
   - **अनुमान**-इसलिए, सभी हंस सफेद हैं।
   - आकाश में काले बादल देखकर यह अनुमान लगाना कि वर्षा होने वाली है।
   - किसी बच्चे का रोना सुनकर यह अनुमान लगाना कि वह भूखा है।

अनुमान-आधारित कॉम्प्रिहेंशन क्या है?

अनुमान-आधारित कॉम्प्रिहेंशन एक पढ़ने या समझने के कौशल को संदर्भित करती है जहां पाठक को किसी पाठ में प्रदान की गयी जानकारी के आधार पर निष्कर्ष निकालने या शिक्षित अनुमान लगाने की आवश्यकता होती है, भले ही पाठ स्पष्ट रूप से जानकारी नहीं बताता हो। इस प्रकार की कॉम्प्रिहेंशन पाठक की सतह-स्तर की जानकारी से परे जाने और पाठ के बारे में तार्किक निष्कर्ष निकालने की क्षमता का आकलन करती है।

अनुमान-आधारित कॉम्प्रिहेंशन प्रश्न अक्सर पाठक से पूछते हैं:

1. **अंदाजा लगाना:** भविष्यवाणी करें कि कहानी में आगे क्या हो सकता है या लेखक जो बता रहा है वह घटित होगा।
2. **परिणाम निकालना:** ऐसी जानकारी या परिणाम निर्धारित करें जो पाठ में स्पष्ट रूप से नहीं बताए गए हैं लेकिन प्रदान की गयी जानकारी से अनुमान लगाया जा सकता है।
3. **चरित्र लक्षणों को पहचानना:** उनके कार्यों और संवाद के आधार पर चरित्र लक्षणों, भावनाओं या प्रेरणाओं का अनुमान लगाएं।
4. **कारण और प्रभाव को समझना:** पाठ में घटनाओं के बीच कारण और प्रभाव संबंधों को पहचानें।
5. **आलंकारिक भाषा का विश्लेषण करना:** उनके इच्छित अर्थ को समझने के लिए रूपकों और उपमाओं जैसी आलंकारिक भाषा की व्याख्या करें।

6. **विषय पहचानें:** पाठ में अंतर्निहित विषयों या संदेशों को पहचानें।

उदाहरण

"एमिली सिर से पाँव तक भीगी हुई घर पहुँची। उसके कपड़े भीगे हुए थे और उसके बाल उसके चेहरे से चिपके हुए थे।" अनुमान-आधारित कॉम्प्रिहेंशन प्रश्न: "एमिली क्यों भीगी हुई थी?"

उत्तर: पाठ में दी गयी जानकारी के आधार पर, हम अनुमान लगा सकते हैं कि एमिली भीग गयी है क्योंकि वह बारिश में फँस गयी थी। हालाँकि पाठ में स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा गया है, "एमिली बारिश में फँस गयी थी," उसके भीगे हुए कपड़े और चिपके हुए बालों के बारे में विवरण हमें इस तार्किक निष्कर्ष पर ले जाते हैं। यह निष्कर्ष पाठ में प्रस्तुत साक्ष्यों से निकाला गया है।

गणित

कथन 1: a = b

कथन 2: b = c

अनुमान: a = c

नियम: जैसा कि दिखाया गया है, परिच्छेद को व्यापक कथनों में तोड़ने का प्रयास करें।

अनुमान-आधारित कॉम्प्रिहेंशन प्रश्नों को हल करने के चरण यहां दिए गए हैं:

1. **ध्यान से पढ़ना:** परिच्छेद या पाठ को ध्यान से पढ़कर शुरुआत करें। वर्णन, विवरण, चरित्र क्रियाओं और संवाद पर पूरा ध्यान दें।
2. **संकेतों को पहचानना:** पाठ के भीतर ऐसे संकेत या सबूत देखें जिससे कोई निष्कर्ष निकाला जा सके। ये संकेत स्पष्ट (स्पष्ट रूप से बताए गए) या अंतर्निहित (अंतर्निहित या सुझाए गए) हो सकते हैं।
3. **संदर्भ पर विचार करना:** परिच्छेद के संदर्भ पर विचार करें। इस बात पर विचार करें कि कहानी में क्या हो रहा है या वर्णित स्थिति क्या है।
4. **भविष्यवाणियाँ करना:** सुरागों और संदर्भ के आधार पर, भविष्यवाणियाँ करें कि आगे क्या हो सकता है, कोई पात्र एक निश्चित तरीके से व्यवहार क्यों कर रहा है, या लेखक क्या कहना चाह रहा है।
5. **गलत विकल्पों को हटाना:** यदि आप बहुविकल्पीय प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं, तो उन उत्तर विकल्पों को हटा दें जो तार्किक रूप से पाठ से मेल नहीं खाते हैं या आपके द्वारा पहचाने गए साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं हैं।
6. **सर्वश्रेष्ठ उत्तर चुनना:** उस उत्तर विकल्प का चयन करें जो आपके द्वारा पाठ से प्राप्त साक्ष्यों और अनुमानों के आधार पर सबसे उचित और तार्किक हो।
7. **दोबारा जाँचना:** यह सुनिश्चित करने के लिए अपने उत्तर की समीक्षा करें कि यह पाठ में दी गयी जानकारी के साथ संरेखित है और परिच्छेद के संदर्भ में समझ में आता है।

अभ्यास: अपने अनुमान-आधारित कॉम्प्रिहेंशन कौशल को बेहतर बनाने के लिए, विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री और प्रश्नों के साथ अभ्यास करें। इससे आपको सटीक अनुमान लगाने में अधिक कुशल बनने में सहायता मिलेगी।

परिच्छेद - 1

शोधकर्ताओं ने मटर के कीड़ों (पी-ऐफिड) और रस चूसने वाले कीड़ों से युक्त कृत्रिम तृण-भूखंडों को रात में स्ट्रीट लाइट के अनुरूप आलोकित किया । इन्हें दो अलग-अलग प्रकार के प्रकाश में रखा गया नवीनतर वाणिज्यिक LED प्रकाश के सदृश श्वेत प्रकाश और सोडियम स्ट्रीट लैंपों के सदृश एंबर प्रकाश । मटर कुल के जंगली पौधे जो कि तृणभूमि में मटर के कीड़ों के लिए खाद्य के स्रोत हैं इन पौधों पर निम्न तीव्रतायुक्त एंबर प्रकाश डालने पर यह देखा गया कि इससे पुष्पण प्रेरित होने की बजाय, बाधित होता है । प्रकाश के प्रभाव के अंतर्गत, सीमित मात्रा में खाद्य उपलब्ध होने के कारण कीड़ों (ऐफिड) की संख्या में भी उल्लेखनीय कमी आई।

17

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर प्रतिपादित, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है ? (2021)

(a) उच्च तीव्रतायुक्त प्रकाश की तुलना में निम्न तीव्रतायुक्त प्रकाश का पौधों पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(b) प्रकाश प्रदूषण का किसी पारिस्थितिक तंत्र पर स्थायी रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

(c) पौधों के पुष्पण के लिए अन्य रंगों के प्रकाश की तुलना में श्वेत रंग का प्रकाश बेहतर है।

(d) किसी पारिस्थितिक तंत्र में उपयुक्त तीव्रता का प्रकाश न केवल पौधों के लिए बल्कि प्राणियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।

समाधानः (b)

परिच्छेद को प्रमुख कथनों में तोड़ना।

कथन 1: घास के मैदान पर कृत्रिम प्रकाश अनुकरण।

कथन 2: घास पर निर्भर मटर-एफिड्स पर महत्वपूर्ण प्रभाव।

निष्कर्षः

कथन 1: परिच्छेद में दी गयी उच्च और निम्न तीव्रता के बीच कोई तुलना नहीं है-केवल गुमराह करने के लिए उपयोग किया जाता है- "कम तीव्रता वाले लाल प्रकाश को प्रेरित करने के बजाय बाधित करने के लिए दिखाया गया था"; सफेद प्रकाश के बारे में कुछ नहीं दिखाया गया; परिच्छेद को दोबारा ध्यानपूर्वक पढ़ें।

कथन 2: कथन1 और कथन2 पारिस्थितिकी तंत्र और कृत्रिम प्रकाश के साथ प्रयोग पर समान निर्भरता को दर्शाते हैं।

कथन 3: (a) के समान तर्क

कथन 4: प्रकाश का जानवरों पर कोई सीधा प्रभाव नहीं दिखाया गया; लेकिन परस्पर निर्भरता; प्रकाश-घासभूमि--निर्भर प्रजातियाँ; परिच्छेद कृत्रिम प्रकाश के बारे में बात करता है और यह दिखाने के लिए तीव्रता की कोई तुलना नहीं है कि उचित तीव्रता क्या है।

नोटः दो प्रकार के प्रकाश सिर्फ आपको गुमराह करने के लिए दिये गये हैं। दोनों के बीच कोई तुलना नहीं दी गयी। जब भी तुलना की जाती है तो दिए गए शब्दों की तरह पता लगाएं कि वास्तव में कोई तुलना दी भी गयी है कि नहीं और अगर दी गयी है तो किस आधार पर है; या इस परिच्छेद की तरह मन में भ्रम पैदा करने के लिए सिर्फ शब्दों का खेल है।

सीखः ऐसे परिच्छेद सरल लगते हैं लेकिन उन्हें हल करने के लिए आपको पूर्ण स्पष्टता की आवश्यकता होती है। सदैव प्रत्यक्ष कारण-प्रभाव को ढूँढें।

THE CORE IAS

परिच्छेद - 2

हमारे नगर, जनसंख्या के अधिक संकेन्द्रण और अपर्याप्त आधारिक संरचनाओं के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक सुभेद्य हैं। इसके अतिरिक्त, उनमें जनसंख्या घनत्व बढ़ रहा है, किंतु हमने जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के निराकरण के लिए अभी तक कोई प्रणाली विकसित नहीं की है। जी.डी.पी. में. हमारे नगरों का योगदान 65% है, किंतु उनमें जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त सुविधाएँ से संबंधित समस्याओं पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है, जो कि संधारणीय समाधान ढूँढ़ने के लिए अत्यावश्यक हैं। हमें नगर योजना बनाने के कार्य में नागरिकों को सम्मिलित करने की आवश्यकता है और ऐसे पारिस्थितिक तंत्र का सृजन करना होगा जो लोगों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर प्रतिपादित, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष हो सकता है? (2021)

(a) हमारे नगरों में पर्याप्त स्वायत्तता के साथ सुस्पष्ट प्रशासनिक व्यवस्था का होना आवश्यक है।

(b) निरंतर बढ़ता हुआ जनसंख्या घनत्व, संधारणीय विकास करने के हमारे प्रयासों में बाधक है।

(c) हमारे नगरों के रख-रखाव और विकास के लिए हमें संधारणीयता संबंधी हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है।

(d) भारत की आधारिक संरचना और संधारणीयता संबंधी समस्याओं के लिए विकास की सार्वजनिक-निजी भागीदारी पद्धति व्यवहार्य दीर्घावधि समाधान है।

समाधानः (c)

परिच्छेद को तोड़नाः

कथन 1: जनसंख्या और खराब बुनियादी ढांचे के कारण शहर जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील हैं।

कथन 2: बढ़ती आबादी से निपटने के लिए विकसित प्रणालियाँ नहीं हैं।

कथन 3: वायु गुणवत्ता, परिवहन आदि समस्याओं का स्थायी समाधान और इसके लिए लोगों को शामिल करने की आवश्यकता है।

निष्कर्षः

कथन 1: इसका कोई प्रमाण नहीं है कि इससे निपटने में सहायता मिलती है।

कथन 2: प्रणाली में कोई कमी नहीं है।

कथन 3: "हवा की गुणवत्ता, परिवहन आदि के मुद्दों को संबोधित करना महत्वपूर्ण है जो टिकाऊ समाधानों की पहचान करने के लिए महत्वपूर्ण हैं"।

कथन 4: कोई संकेत और साक्ष्य/तथ्य परिच्छेद में प्रस्तुत नहीं किया गया।

परिच्छेद-3

यह निश्चित है कि राजद्रोह, युद्ध, और विधि (लॉ) की अवहेलना अथवा उल्लंघन को प्रजा की अनैतिकता पर उतना नहीं मढ़ा जा सकता, जितना कि उस अधिराज्य (डोमिनियन) की बुरी स्थिति पर । क्योंकि, मनुष्य जन्मजात रूप से नागरिकता के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं, अपितु उन्हें नागरिकता के लिए उपयुक्त बनाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, मनुष्य में नैसर्गिक मनोभाव सर्वत्र समान होते हैं; और यदि अनैतिकता अधिक प्रबल होती है, और किसी राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ) में, दूसरे राष्ट्रमंडल की तुलना में अधिक अपराध होते हैं, तो यह निश्चित है कि पूर्ववर्ती राष्ट्रमंडल ने एकता के लक्ष्य के लिए पर्याप्त रूप से न तो प्रयास किया है, और न ही पूर्व-विचार करके अपनी विधि बनाई है; और इसीलिए, वह राष्ट्रमंडल के रूप में अपने अधिकार को बेहतर बनाने में विफल रहा है।

उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2021)

(a) प्रत्येक अधिराज्य में राजद्रोह, युद्ध और विधि के उल्लंघन अपरिहार्य हैं ।

(b) किसी अधिराज्य में सभी समस्याओं के लिए संप्रभु (सॉविन) उत्तरदायी होता है, न कि जनता।

(c) वह अधिराज्य सर्वोत्तम है जो एकता के लक्ष्य के लिए प्रयास करता है और जिसके पास सु-नागरिकता (गुड सिटिजनशिप) के लिए विधि (लॉ) है ।

(d) लोगों द्वारा अच्छा अधिराज्य स्थापित कर पाना असंभव है।

समाधानः(c)

नियमः कथन की सटीक व्याख्या करना।

परिच्छेद को तोड़नाः

कथन 1: राजद्रोह, युद्ध और कानूनों की अवमानना की तुलना में प्रभुत्व की खराब स्थिति अधिक समस्या है।

कथन 2: राष्ट्रमंडल की तुलना; ऐसी स्थिति क्यों?-"यह निश्चित है कि पहले ने न तो एकता के अंत का पर्याप्त प्रयास किया है, न ही पर्याप्त दूरदर्शिता के साथ अपने कानून बनाए हैं"

निष्कर्षः

कथन 1: मिश्रित पंक्तियाँ "यह निश्चित है, कि देशद्रोह युद्ध और अवमानना या कानूनों का उल्लंघन है"... जो निश्चित है वह देशद्रोह और युद्ध नहीं बल्कि उनके पीछे बुरे प्रभुत्व का कारण है।

कथन 2: परिच्छेद में दिए गए कारण दोनों हो सकते हैं।

कथन 3: हाँ "यह निश्चित है कि पहले ने न तो एकता के अंत का पर्याप्त प्रयास किया है, न ही पर्याप्त दूरदर्शिता के साथ अपने कानूनों को तैयार किया है; और इसलिए, यह राष्ट्रमंडल के रूप में अपने अधिकार को पूरा करने में विफल रहा है।"

कथन 4: समस्याओं में समाधान प्रदान किया गया-अच्छी नागरिकता के लिए एकता और कानून आवश्यक है।

परिच्छेद-4

दलहन की प्रजाति 'पूसा अरहर 16' को पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के धान उगाने वाले क्षेत्रों और अंतत: सम्पूर्ण भारत में उगाए जा सकने की संभावना है। उसकी उत्पादकता (लगभग 2000 कि० ग्रा० / हेक्टेयर) उपलब्ध प्रजातियों की तुलना में महत्त्वपूर्ण रूप से अधिक होगी और चूँकि उसके आकार में एकरूपता होगी, उसकी कटाई मशीनों से भी संभव होगी एवं उत्तरी भारत के उन कृषकों, जो आजकल इस तकनीक का प्रयोग धान के लिए करते हैं, के लिए एक आकर्षक विशेषता होगी। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि अरहर का पुआल, धान के पुआल के विपरीत, हरा होता है और उसे मृदा में वापस जोता जा सकता है। धान के पुआल में परेशानी यह है कि सेलखड़ी (silica) की मात्रा अधिक होती है जो आसानी से उसका अपघटन नहीं होने देती । अरहर में कंबाइन कटाई के बाद भी कृषक को बचे हुए पुआल को छोटे टुकड़ों में काटने के लिए केवल रोटोवेटर चलाने की आवश्यकता होती है जिन्हें वापस जोता जा सकता है और जो बहुत तेजी से अपघटित हो जाते हैं। यह कार्य धान के बचे हुए डंठलों के साथ कठिन है जिन्हें आसानी से निकाला या वापस नहीं जोता जा सकता। इसलिए, कृषक साधारणत: इसे जलाने का आसान रास्ता चुनते हैं।

निम्नलिखित में से कौन-से ऐसे सर्वाधिक तर्कसंगत निष्कर्ष हैं जो उपर्युक्त परिच्छेद से निकाले जा सकते हैं? (2020)

1. धान की तुलना में दलहन उगाने से कृषकों की आय अधिक होगी।
2. दलहन उगाना, धान उगाने की तुलना में कम प्रदूषण उत्पन्न करता है।
3. दलहन के पुआल का प्रयोग मृदा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए किया जा सकता है।
4. उत्तरी भारत की कृषि के संदर्भ में, धान के की कोई पुआल उपयोगिता नहीं है।
5. मशीनीकृत खेती ठूंठ जलाने का प्रमुख कारक है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 2, 3 और 5

(b) 1, 4 और 5

(c) केवल 2 और 3

(d) केवल 1 और 4

समाधान:(c)

परिच्छेद को तोड़ना

कथन 1: पूसा अरहर किस्म अन्य (दाल) की तुलना में अधिक उपज और धान के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक के अनुकूल होने का लाभ देती है।

कथन 2: आसानी से विघटित हो जाती है और धान के विपरीत मृदा के लिए उपयोगी है, जहाँ जलाना सबसे आसान विकल्प है।

निष्कर्ष:

कथन 1: उपज की तुलना धान से नहीं बल्कि दालों की अन्य किस्मों से की जाती है; धान की तुलना कटाई के बाद के अपघटन से की जाती है- "इसकी उपज (लगभग 2000 किलोग्राम/हेक्टेयर) मौजूदा किस्मों की तुलना में काफी अधिक होगी"।

कथन 2: हाँ, "धान के भूसे में, समस्या उच्च सिलिका सामग्री है, जो आसानी से विघटित होने की अनुमति नहीं देती है। + इसलिए, किसान इसे जलाने का सबसे आसान विकल्प चुनते हैं।

कथन 3: हाँ;

कथन 4: विकल्पों पर चर्चा नहीं की गयी, केवल सबसे आसान विकल्प अर्थात जलाना।

कथन 5: कोई सीधा संबंध नहीं बल्कि "बचे हुए धान के डंठल, जिन्हें आसानी से बचाया नहीं जा सकता" के साथ उच्च सिलिका सामग्री और आसान विकल्प की कमी।

नोट: धीमा और स्थिर, सादृश्य रूप से दौड़ जीतता है।

परिच्छेद में समस्या के कारण के विश्लेषण पर भी यही तर्क लागू होता है। यह मशीनीकृत कृषि नहीं है बल्कि धान की विशेषताएं और अन्य कारक हैं जो पराली जलाने का कारण बनती हैं।

अनुस्मारक: नियम: जब भी तुलना करें तो देखें कि किस चीज की तुलना की जा रही है और किन मापदंडों पर।

परिच्छेद 5

जनसंख्या वृद्धि के अनुमान के अनुसार 2050 में वैश्विक जनसंख्या 9.6 बिलियन और 2100 में 10.9 बिलियन हो जाएगी। यूरोप और उत्तरी अमेरिका के विपरीत, जहां केवल तीन से चार प्रतिशत आबादी कृषि में लगी हुई है, भारत की लगभग 47 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। भले ही भारत सेवा क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करता रहे और विनिर्माण क्षेत्र में तेजी आए, उम्मीद है कि 2030 के आसपास जब भारत दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश के रूप में चीन से आगे निकल जाएगा, तब भी भारत की लगभग 42 प्रतिशत आबादी मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर रहेगी।

उपरोक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन सा सबसे तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2018)

(a) कृषि क्षेत्र की समृद्धि भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(b) भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत हद तक अपनी कृषि पर निर्भर करती है।

(c) भारत को अपनी तीव्र जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए।

(d) भारत के कृषक समुदायों को अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए अन्य व्यवसायों की ओर रुख करना चाहिए।

समाधान: (a)

कथन 1: जनसंख्या वृद्धि और भारत की कृषि पर अत्यधिक निर्भरता।

कथन 2: सेवा और विनिर्माण क्षेत्र भले ही अच्छा प्रदर्शन करें, लेकिन भारत की बढ़ती आबादी को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं और 42% अभी भी कृषि पर निर्भर रहेंगे।

कथन 1: हाँ, क्योंकि अच्छी वृद्धि के बावजूद अभी भी कृषि पर 42% निर्भरता बनी रहेगी।

कथन 2: परिच्छेद में केवल भारतीय जनसंख्या की कृषि पर निर्भरता का प्रमाण शामिल है। आर्थिक निर्भरता यानी प्रतिशत जीडीपी का तथ्य नहीं है।

कथन 3: इस बात का कोई साक्ष्य प्रस्तुत/सुझाव नहीं दिया गया कि जनसंख्या भारी निर्भरता का कारण है। आपको सलाह दी जाती है कि परिच्छेद को पढ़े बिना प्रयास न करें।

कथन 4: परिच्छेद क्षेत्र की आर्थिक स्थितियों की तुलना नहीं करता है।

टिप्पणी: हमेशा इस बात को रेखांकित करें कि परिच्छेद किन मापदंडों के बारे में बात कर रहा है और किसकी तुलना कर रहा है। उपरोक्त परिच्छेद में जनसंख्या की कृषि पर निर्भरता लेकिन आर्थिक निर्भरता पर प्रश्न पूछे गए हैं।

#परिच्छेद में हमेशा साक्ष्य की तलाश करें। परीक्षक की प्रवृत्ति पहले की तरह शब्दों को बारीकी से बदलने की होती है।

निष्पादन- विधान

टिकाऊ - मुफ्त

जनसंख्या- आर्थिक निर्भरता आदि।

परिच्छेद 6

2020 तक, जब वैश्विक अर्थव्यवस्था में 56 मिलियन युवाओं की कमी होने की उम्मीद है, भारत, 47 मिलियन के युवा अधि शेष के साथ, इस अंतर को भर सकता है। इसी संदर्भ में श्रम सुधारों को अक्सर भारत में दोहरे अंक की वृद्धि को अनलॉक करने के तरीके के रूप में उद्धृत किया जाता है। 2014 में, भारत की श्रम शक्ति का अनुमान जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत था, लेकिन इस बल का 93 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में था। पिछले दशक में, रोजगार की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) 0.5 प्रतिशत तक धीमी हो गयी है, पिछले वर्ष के दौरान लगभग 14 मिलियन नौकरियां पैदा हुई, जब श्रम बल में लगभग 15 मिलियन की वृद्धि हुई।

स्वयं करें..परिच्छेद को तोड़ना..

कथन 1

कथन 2

उपरोक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन सा सबसे तर्कसंगत निष्कर्ष है? (2017)

(a) भारत को अपनी जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण रखना होगा ताकि उसकी बेरोजगारी दर कम हो सके।

(b) भारत में अपनी विशाल श्रम शक्ति का उत्पादक रूप से अधिकतम उपयोग करने के लिए श्रम सुधारों की आवश्यकता है।

(c) भारत जल्द ही दोहरे अंक की विकास दर हासिल करने के लिए तैयार है।

(d) भारत अन्य देशों को कुशल युवा आपूर्ति करने में सक्षम है।

समाधानः (b)

कथन 1: लिंकेज/साक्ष्य कि जनसंख्या वृद्धि बेरोजगारी का कारण है, इस पर परिच्छेद में चर्चा नहीं की गयी है। कारण–"रोजगार की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) धीमी होकर 0.5 प्रतिशत हो गयी है।"

कथन 2: इसी संदर्भ में अक्सर श्रम सुधारों का हवाला दिया जाता है।

कथन 3: केवल तभी, जब श्रम सुधार किए जाएं और रोजगार सृजित किया जाए।

कथन 4: अन्य देशों में श्रम का अंतर है लेकिन कुशल या अकुशल की कोई चर्चा नहीं हुई है।

नोटः विकल्प (a) के अनुसार समाधान से संबंधित दिए गए किसी भी कथन के लिए, जैसा कि ऊपर किया गया है, स्थिति के लिए कारण का पता लगाएं।

परिच्छेद 7

खुले में शौच तब विनाशकारी होता है जब यह बहुत घनी आबादी वाले क्षेत्रों में किया जाता है, जहां मानव मल को फसलों, कुओं, भोजन और बच्चों के हाथों से दूर रखना असंभव है। खुले में शौच से भूजल भी प्रदूषित होता है। बहुत से अंतर्ग्रहण कीटाणु और कीड़े बीमारियाँ फैलाते हैं। वे शरीर को कैलोरी और पोषक तत्वों को अवशोषित करने से रोकते हैं। भारत के लगभग आधे बच्चे कुपोषित रहते हैं। उनमें से लाखों लोग रोकथाम योग्य स्थितियों से मर जाते हैं। डायरिया के कारण भारतीयों का शरीर औसतन कुछ गरीब देशों के लोगों की तुलना में छोटा हो जाता है, जहां लोग कम कैलोरी खाते हैं। कम वजन वाली माताएं अविकसित बच्चों को जन्म देती हैं जो बीमारी की चपेट में आ जाते हैं और अपनी पूर्ण संज्ञानात्मक क्षमता विकसित करने में विफल हो सकते हैं। पर्यावरण में छोड़े गए रोगाणु अमीर और गरीब दोनों को समान रूप से नुकसान पहुंचाते हैं, यहां तक कि उन लोगों को भी जो शौचालय का उपयोग करते हैं।

THE CORE IAS

स्वयं करें..परिच्छेद को तोड़ना..

कथन 1

कथन 2

कथन 3

उपरोक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन सा सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2015)

(a) भारत में केंद्र और राज्य सरकारों के पास प्रत्येक घर के लिए शौचालय का खर्च उठाने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं।

(b) खुले में शौच भारत की सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है।

(c) खुले में शौच से भारत के कार्यबल की मानव पूंजी कम हो जाती है।

(d) सभी विकासशील देशों में खुले में शौच एक सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है।

समाधानः (c)

कथन 1: खुले में शौच के कारण का उल्लेख नहीं किया गया है, चर्चा नहीं की गयी है और कोई प्रमाण नहीं दिया गया है कि इसका कारण घरेलू स्तर पर शौचालयों के लिए संसाधनों की कमी है।

कथन 2: हमारे पास तुलना के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य की अन्य समस्याओं से संबंधित कोई डेटा नहीं है।

कथन 3: प्रभाव-अवरुद्ध, संज्ञानात्मक आदि।

कथन 4: "डायरिया के कारण भारतीयों का शरीर कुछ गरीब देशों के लोगों की तुलना में औसतन छोटा हो जाता है जहां लोग कम कैलोरी खाते हैं"; सभी नहीं; विकासशील बनाम विकसित की कोई तुलना नहीं, बल्कि खुले में शौच की समस्या और भारत का सिर्फ एक उदाहरण दिया गया है।

प्रकार 4: संदेश आधारित कॉम्प्रिहेंशन

संदेश क्या है?

संदेश सूचना का एक टुकड़ा है जो एक व्यक्ति या समूह से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाया जाता है। संदेश मौखिक या अशाब्दिक हो सकते हैं, और उन्हें विभिन्न माध्यमों, जैसे भाषण, लेखन, शारीरिक भाषा आदि के माध्यम से संप्रेषित किया जा सकता है।

- संदेश जानबूझकर या अनजाने में भेजे जा सकते हैं। साभिप्राय संदेश वे होते हैं जो प्रेषक द्वारा जानबूझकर भेजे जाते हैं। अनजाने संदेश वे होते हैं जो प्रेषक के सचेत इरादे के बिना भेजे जाते हैं।
- संदेश स्पष्ट या अंतर्निहित हो सकते हैं। स्पष्ट संदेश वे होते हैं जो सीधे तौर पर कहे जाते हैं। अंतर्निहित संदेश वे होते हैं जो संकेत, सुझाव या अशाब्दिक संकेतों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से संप्रेषित किए जाते हैं।
- संदेश सरल या जटिल हो सकते हैं। सरल संदेश वे होते हैं जो किसी एक जानकारी को संप्रेषित करते हैं। जटिल संदेश वे होते हैं जो जानकारी के कई टुकड़े संप्रेषित करते हैं या जिनका उद्देश्य प्राप्तकर्ता में एक विशेष प्रतिक्रिया उत्पन्न करना होता है।

संदेश-आधारित कॉम्प्रिहेंशन क्या है?

संदेश-आधारित कॉम्प्रिहेंशन किसी संदेश के अर्थ को समझने की क्षमता है, चाहे वह किसी भी माध्यम से भेजा गया हो। इसमें निम्न क्षमता शामिल है:

- संदेश के मुख्य विचार या उद्देश्य को पहचानना
- संदेश के मुख्य विवरण को समझना
- निहित या अघोषित जानकारी का **अर्थ निकालना**
- संदेश में दी गयी जानकारी के आधार पर निष्कर्ष निकालना
- **संदेश की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करना**
- प्रेषक के आशय को पहचानना

ध्यान देने योग्य बातें:

- **पाठ का पूर्वावलोकन करें;** इसमें मुख्य विचार और सहायक विवरण का सामान्य विचार प्राप्त करने के लिए पाठ पर दृष्टि डालना शामिल है।
- **विषय वाक्य को पहचानें;** विषय-वाक्य आमतौर पर परिच्छेद का पहला वाक्य होता है और यह परिच्छेद का मुख्य विचार बताता है।
- **सांकेतिक शब्दों पर ध्यान दें;** सांकेतिक शब्द ऐसे शब्द या वाक्यांश हैं जो दर्शाते हैं कि विचार कैसे संबंधित हैं। कुछ सामान्य संकेत शब्दों में "क्योंकि," "इसलिए," "हालांकि," और "इसके अतिरिक्त" शामिल हैं।
- **पाठ को सारांशित करें;** पाठ को अपने शब्दों में सारांशित करने से यह सुनिश्चित करने में सहायता मिल सकती है कि मुख्य विचार समझ लिया गया है।
- प्रश्न का सीधे उत्तर दें; सुनिश्चित करें कि आपका उत्तर परिच्छेद में प्रस्तुत जानकारी पर आधारित है। किसी भी बाहरी जानकारी का परिचय न दें।
- **सर्वश्रेष्ठ उत्तर का चयन करें;** सबसे अच्छा उत्तर वह है जो परिच्छेद में दी गयी जानकारी से सबसे अधिक समर्थित हो।

उदाहरण:

कॉम्प्रिहेंशन: आज होने वाली बैठक नहीं होगी।

संदेश: "बैठक रद्द कर दी गयी है।"

प्रश्न जो उत्तर तक पहुंचने में सहायता कर सकते हैं:

- **परिच्छेद में लेखक का मुख्य तर्क क्या है?**
- **परिच्छेद के विषय के प्रति लेखक का दृष्टिकोण क्या है?**
- **परिच्छेद का उद्देश्य क्या है?**
- **परिच्छेद में प्रस्तुत विचारों के बीच क्या संबंध है?**
- **परिच्छेद में लेखक का स्वर क्या है?**

उपरोक्त युक्तियों का पालन करके, आप संदेश कॉम्प्रिहेंशन प्रश्नों का सही उत्तर देने की संभावना बढ़ा सकते हैं।

परिच्छेद - 1

बहुत बड़ी संख्या में ऐसे भारतीय नागरिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं जिनके बैंक खाते नहीं हैं। ये वित्तीय और प्रकार्यात्मक (फंक्शनल) रूप से अशिक्षित हैं, और प्रौद्योगिकी के साथ इनका अनुभव नगण्य है। एक विशेष क्षेत्र में, जहाँ महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना (MGNREGS) के अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के रूप में मजदूरी सीधे निर्धनों को दी जानी होती है, एक अनुसंधानपरक अध्ययन किया गया। यह पाया गया कि मजदूरी प्राप्त करने वाले प्राय:यह मान लेते हैं कि इस प्रक्रिया में गाँव के नेता की मध्यस्थता आवश्यक है, जैसा कि पूर्व में कागजों पर आधारित व्यवस्था में होता था। इस अनुसंध ानपरक अध्ययन के अंतर्गत, कम-से-कम एक बैंक खाता रखने का दावा करने वाले परिवारों में से एक-तिहाई से अधिक परिवारों ने बताया कि वे अभी भी MGNREGS की मजदूरी नकद रूप में सीधे गाँव के नेता से प्राप्त कर रहे

उपर्युक्त परिच्छेद में निहित सर्वाधिक तार्किक,तर्कसंगत और महत्त्वपूर्ण सन्देश क्या है ? (2015)

(a) MGNREGS का प्रसार सिर्फ उन तक किया जाना चाहिए जिनके पास बैंक खाता है।

(b) वर्तमान परिदृश्य में कागजों पर आधारित भुगतान व्यवस्था इलेक्ट्रॉनिक भुगतान व्यवस्था से अधिक दक्ष है।

(c) मजदूरी के इलेक्ट्रॉनिक भुगतान का लक्ष्य गाँव के नेताओं की मध्यस्थता को समाप्त करना नहीं था

(d) ग्रामीण निर्धनों को वित्तीय साक्षरता उपलब्ध कराना आवश्यक है।

समाधान: (d)

कथन 1: यह पूर्णत: असत्य है।

कथन 2: तुलना में कुछ भी नहीं।

कथन 3: वास्तव में, यह था-"महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) में इलेक्ट्रॉनिक मजदूरी भुगतान सीधे गरीबों तक जाने के लिए है"।

कथन 4: हाँ, यह संदेश है-"बिना बैंक खातों के बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, वित्तीय और कार्यात्मक रूप से निरक्षर हैं, और प्रौद्योगिकी के साथ बहुत कम अनुभव रखते हैं"++"जिन्होंने कम से कम एक बैंक खाता होने का दावा किया है, एक तिहाई से अधिक लोगों ने बताया कि उन्हें अब भी गाँव के नेता से सीधे नकद में मनरेगा मजदूरी मिल रही है।"

परिच्छेद-2

भारत सतत उच्च मुद्रास्फीति से ग्रस्त रहा है। निर्देशित कीमतों में वृद्धि, माँग और पूर्ति में असंतुलन, रुपए के अवमूल्यन से बदतर हुई आयातित मुद्रास्फीति, और सट्टेबाजी इन सबने मिलकर उच्च मुद्रास्फीति को बनाए रखा है। यदि इन सभी में कोई एक समान तत्त्व है, तो वह यह है कि इनमें से कई आर्थिक सुधारों के परिणाम हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कधीमतों में बदलाव के प्रभावों के प्रति भारत की सुभेद्यता (वल्नरेबिलिटी) व्यापार उदारीकरण के साथ-साथ और बढ़ी है । उपदानों को कम करने के प्रयासों के कारण उन वस्तुओं की कधीमतों में निरन्तर वृद्धि हुई है जो निर्देशित हैं।

उपर्युक्त परिच्छेद में अन्तर्निहित सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और महत्त्वपूर्ण संदेश क्या है? (2015)

(a) मौजूदा परिस्थितियों में, भारत को पूरी तरह से व्यापार उदारीकरण की नीतियों एवं सभी उपदानों से बचना चाहिए।

(b) अपनी विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण, भारत अभी व्यापारिक उदारीकरण की प्रक्रिया के लिए तैयार नहीं है।

(c) निकट भविष्य में भारत में सतत निर्धनता एवं मुद्रास्फीति की समस्याओं का कोई समाधान नहीं दिखता।

(d) आर्थिक सुधार प्रायः उच्च मुद्रास्फीति वाली अर्थव्यवस्था उत्पन्न कर सकते हैं।

समाधानः (d)

स्वयं करें..

परिच्छेद-3

अधिकांश लोग, जो अपनी जरूरतों के लिए पर्याप्त धन संचित करने में असफल रहते हैं, सामान्य तौर पर दूसरों की राय से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। वे अपने लिए सोचने का काम समाचार-पत्रों और गपोड़िये पड़ोसियों पर छोड़े रहते हैं। राय पृथ्वी पर सबसे सस्ती वस्तु है। हर किसी के पास, किसी के भी चाहने पर देने के लिए, जो भी उन्हें मानने को तैयार हो, राय का जखीरा तैयार रहता है। जब आप किसी निर्णय पर पहुँचते समय लोगों की राय से प्रभावित होते हैं, तो आप किसी भी उपक्रम में सफल नहीं हो सकेंगे।

इस परिच्छेद से निम्नलिखित में से क्या उपलक्षित है? (2022)

(a) अधिकांश लोग अपनी जरूरतों के लिए धन संचित नहीं करते।

(b) अधिकांश लोग अपनी जरूरतों के लिए धन संचित करने में कभी असफल नहीं रहते।

(c) ऐसे लोग भी हैं जो अपनी जरूरतों के लिए धन संचित करने में असफल रह जाते हैं।

(d) धन संचित करने की कोई जरूरत नहीं है।

कथन 1: हम उस बहुमत के बारे में जानते हैं जो दूसरों की राय के कारण संचय करने में विफल रहते हैं; हमें नहीं मालूम कि वे सबसे अधिक हैं या नहीं - भाषा पर ध्यान दें।

कथन 2: हमारे पास उनके बारे में कोई संकेत नहीं है।

कथन 3: "अधिकांश लोग जो अपनी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त धन संचय करने में विफल रहते हैं, आम तौर पर, दूसरों की राय से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं।"

कथन 4: आवश्यकता के लिए है।

प्रकार 5: परिच्छेद में निहित

क्या निहित है?

निहित वह अर्थ है जो सुझाया या संकेत किया गया है, लेकिन स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है।

यह वह अर्थ है जिसे पाठक या श्रोता दुनिया के बारे में अपने ज्ञान, बातचीत के संदर्भ और वक्ता या लेखक के लहजे और शब्दों के चयन के आधार पर समझते हैं।

उदाहरण के लिए,

"मैं अच्छा महसूस नहीं कर रहा हूँ,"-इसका निहित अर्थ यह हो सकता है कि वे बीमार, थके हुए या परेशान हैं।

यहां निहित अर्थ के कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

- "मैं बस कह रहा हूं..." - इसका उपयोग अक्सर किसी ऐसे कथन की प्रस्तावना के लिए किया जाता है जो आलोचनात्मक या विवादास्पद होता है।

- "यदि आप जानते हैं कि मेरा क्या मतलब है..." - इसका उपयोग अक्सर किसी ऐसी बात की ओर संकेत करने के लिए किया जाता है जो सीधे तौर पर नहीं कही जा रही हो।
- "निस्संदेह..." - इसका उपयोग व्यंग्य या अविश्वास व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है।
- "मुझे यकीन नहीं है कि मुझे यह कहना चाहिए, लेकिन..." - इसका उपयोग अक्सर गपशप या अटकलें पेश करने के लिए किया जाता है।

निहित अर्थ से अवगत होकर, आप उन संदेशों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं जो आपको बताए जा रहे हैं।

कॉम्प्रिहेंशन में निहित अर्थ के आधार पर प्रश्नों को कैसे हल करें ?

- परिच्छेद को ध्यानपूर्वक और अच्छी तरह से पढ़ें। लेखक के बोलने के तरीके, शब्दों के चयन और समग्र तर्क पर ध्यान दें।
- परिच्छेद में प्रमुख अवधारणाओं और विचारों को पहचानें। लेखक क्या कहना चाह रहा है? मुख्य बिन्दु क्या बताए जा रहे हैं?
- परिच्छेद के संदर्भ पर विचार करें। वह ऐतिहासिक या सांस्कृतिक संदर्भ क्या है जिसमें यह परिच्छेद लिखा गया था।
- इस बारे में सोचें कि परिच्छेद में क्या स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है। लेखक के शब्दों से आप क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं? अंतर्निहित धारणाएँ या पूर्वाग्रह क्या हैं?
- अपने स्वयं के पूर्वाग्रहों और धारणाओं से अवगत रहें। आपका अपना परिप्रेक्ष्य इस परिच्छेद की व्याख्या कैसे कर सकता है?
- उन उत्तर विकल्पों को हटा दें जो स्पष्ट रूप से गलत हैं या परिच्छेद के विपरीत हैं।
- वह उत्तर विकल्प चुनें जो परिच्छेद के निहित अर्थ के साथ सबसे अधिक सुसंगत हो।

उदाहरण:

सरकार की नई आर्थिक नीति विकास को प्रोत्साहित करने के लिए बनायी गयी है। हालाँकि, आलोचकों का तर्क है कि इस नीति से मुद्रास्फीति बढ़ेगी।

प्रश्न:

सरकार की नई आर्थिक नीति के बारे में लेखक की निहित राय क्या है?

(a) लेखक नीति का समर्थन करता है क्योंकि यह विकास को प्रोत्साहित करेगा।

(b) लेखक इस नीति का विरोध करता है क्योंकि इससे मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिलेगा।

(c) लेखक नीति पर तटस्थ है।

(d) लेखक नीति के प्रभावों के बारे में अनिश्चित है।

सही जवाब (b) है। लेखक का तात्पर्य है कि यह नीति एक बुरा विचार है क्योंकि इससे मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिलेगा। लेखक इस राय को स्पष्ट रूप से नहीं बताता है, लेकिन इसका अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि लेखक बिना कोई प्रतिवाद पेश किए नीति के खिलाफ आलोचकों के तर्क प्रस्तुत करता है।

परिच्छेद - 1

दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (कोड) के अनुसार भारतीय बैंकों के दिवालिया मामलों का समाधान किया जाए, तो वह अनर्जक परिसंपत्ति (एन.पी.ए.) स्थिति को कुछ सीमा तक नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है । राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण द्वारा किए जाने वाले समाधानों की गति धीमी होने के बावजूद, यह संहिता भावी ऋण-चक्रों में बैंक बहियों को शोधित (क्लीन अप) करने में सहायक हो सकती है । सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का पुन: पूँजीकरण भी बैंकों के गुंजाइश पूँजी (कैपिटल कुशन) को बढ़ाने और उन्हें अधिक ऋण देने और आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करने में सहायक हो सकता है । किंतु, अशोध्य कर्ज का समाधान और पुन: पूँजीकरण, इस समाधान का एक अंगमात्र ही हैं, क्योंकि वे उस अनियंत्रित ऋण को रोकने में बहुत कम ही सहायक हो सकते हैं, जिसने भारतीय बैंकिंग प्रणाली को उसकी वर्तमान दयनीय अवस्था में ला खड़ा किया है। जब तक अधारणीय ऋण की समस्या के समाधान के लिए प्रणालीगत सुधार नहीं किए जाते हैं, तब तक भावी ऋण-चक्र बैंकिंग प्रणाली पर दबाव डालते रहेंगे।

उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और व्यावहारिक सुझाव को बेहतर दर्शाता है ? (2021)

(a) बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋण का सघन अनुवीक्षण (मॉनीटर) और सघन विनियमन केंद्र सरकार को करना चाहिए।

(b) ब्याज की दरें निम्न रखी जानी चाहिए, जिससे कि अधिक ऋण देने, ऋण वृद्धि को प्रोत्साहित करने और इसके जरिए आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए बैंकों को प्रेरित किया जा सके।

(c) कई बैंकों का कुछ बड़े बैंकों में विलय करना ही बैंकों को लाभकारी बनाने और उनके खराब निष्पादन को रोकने का दीर्घकालिक समाधान है।

(d) अशोध्य ऋण की समस्या के दीर्घकालिक समाधान के रूप में, भारतीय बैंकिंग प्रणाली में संरचनात्मक सुधार आवश्यक हैं।

समाधानः(d)

कथन 1: "जब तक ऐसे प्रणालीगत सुधार नहीं होते जो अस्थिर ऋण देने की समस्या का समाधान करते हैं, भविष्य के क्रेडिट चक्र बैंकिंग प्रणाली पर दबाव डालते रहेंगे।"-यह केवल निगरानी और विनियमन का मुद्दा नहीं है।

कथन 2: "लापरवाही से दिए जाने वाले ऋण पर लगाम लगाने के लिए बहुत कम किया जा सकता है, जिसने भारतीय बैंकिंग प्रणाली को उसकी वर्तमान खेदजनक स्थिति में धकेल दिया है"-यह ब्याज दर का मुद्दा नहीं है।

कथन 3: अन्य समस्याएँ भी हैं-खराब ऋण समाधान, लापरवाह ऋण देना आदि।

कथन 4: हां, इसमें निहित है-"जब तक प्रणालीगत सुधार नहीं होते हैं जो अस्थिर ऋण देने की समस्या का समाधान करते हैं, भविष्य के क्रेडिट चक्र बैंकिंग प्रणाली पर दबाव डालना जारी रखेंगे।"

परिच्छेद-2

भारत में, पिछले दशक अथवा उसके आसपास, श्रमिक कृषि से हट रहे हैं, परंतु वे केवल निर्माण तथा गैर पंजीकृत विनिर्माण में, जो कि स्पष्टत: बेहतर रोजगार अवसर नहीं है, जा रहे हैं। सेवाएँ, जहाँ श्रम की प्रवृत्ति अधिक उत्पादनकारी होती है, अतिरिक्त रोजगार अवसर उत्पन्न नहीं कर रही हैं जिनकी देश को आवश्यकता है। भारत को अगले दशक में लगभग 24 मिलियन नौकरियों की आवश्यकता होगी। नया सेक्टर, ई-व्यापार, रोजगार के अंतर को अधिक-से-अधिक आधा ही भर पाएगा। केवल वे सेक्टर, जो घरेलू माँग को बढ़ावा देते हैं, जैसे स्वास्थ्य तथा शिक्षा, शेष आधे भाग को सुगमतापूर्वक भर सकते हैं।

परिच्छेद में निम्नलिखित में से कौन-सा एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है? (2020)

(a) ग्रामीण से शहरी क्षेत्र में श्रमिकों का प्रवसन कम करने के लिए कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है।

(b) निर्माण तथा गैर पंजीकृत विनिर्माण में कार्य करने की स्थितियों में सुधार लाना चाहिए।

(c) सेवा सेक्टर बेरोजगारी की समस्या को कम करता रहा है।

(d) बड़े पैमाने पर रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए सामाजिक क्षेत्र में खर्च का बढ़ना आवश्यक है।

समाधानः(d)

कथन 1: "श्रम कृषि से हट रहा है, लेकिन केवल निर्माण और अपंजीकृत विनिर्माण की ओर जा रहा है...प्रस्थान प्रवासन से जुड़ा है...परिच्छेद बेहतर रोजगार सृजन के बारे में है"।

कथन 2: "लेकिन श्रम केवल निर्माण और अपंजीकृत विनिर्माण की ओर जा रहा है जो स्पष्ट रूप से बेहतर नौकरियां नहीं हैं+केवल वे क्षेत्र जो घरेलू मांग को बढ़ाते हैं जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा आराम से अन्य आधे को भर सकते हैं"-इन्हें अच्छे क्षेत्रों की ओर मोड़ने की जरूरत है।

कथन 3: सेवाएँ, जहाँ श्रम सबसे अधिक उत्पादक होता है, देश को आवश्यक अतिरिक्त नौकरियाँ पैदा नहीं कर रही हैं।

कथन 4: हाँ, इसके माध्यम से निहित है-केवल वे क्षेत्र जो घरेलू मांग को बढ़ाते हैं जैसे कि स्वास्थ्य और शिक्षा, बाकी आधे हिस्से को आराम से भर सकते हैं।

परिच्छेद - 3

कृषि पारिस्थितिकी के मूल में यह अवधारणा है कि कृषि पारिस्थितिक तंत्रों को प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों के जैव-विविधता स्तरों और कार्य-प्रणाली का अनुकरण करना चाहिए । ऐसी कृषि अनुकृतियाँ (मिमिक्स), अपने प्राकृतिक मॉडलों की तरह उत्पादक, पीड़क-प्रतिरोधी, पोषक-संरक्षक, तथा प्रघात और तनाव के प्रति समुत्थानशील (रिजिलिअंट) हो सकती हैं। पारिस्थितिक तंत्रों में कुछ भी 'व्यर्थ' नहीं जाता है, और पोषक तत्त्वों का अनंत काल तक पुनः चक्रण होता है। कृषि पारिस्थितिकी का उद्देश्य पोषक लूपों को बंद करना है, अर्थात, मिट्टी से निकल चुके सभी पोषक तत्त्वों को फार्मयार्ड खाद के अनुप्रयोग जैसे तरीकों के द्वारा मिट्टी में पुनः वापस पहुँचाना है। इसके अंतर्गत, प्राकृतिक प्रक्रियाओं का उपयोग पीड़क नियंत्रण के लिए तथा अंतर-सस्य कृषि (इंटर-क्रॉपिंग) के द्वारा मृदा को उर्वर बनाने के लिए भी किया जाता है। कृषि पारिस्थितिकी पद्धतियों में पशुधन और फसलों के साथ वृक्षों का एकीकरण शामिल है।

निम्नलिखित पर विचार कीजिए : (2021)

1. भूमि-संरक्षण-सस्य (कवर क्रॉप्स)
2. उर्वरक - सिंचाई (फर्टिगेशन)
3. जल संवर्धन
4. मिश्रित कृषि
5. बहु-सस्यन (पॉलीकल्चर)
6. ऊर्ध्वाधर कृषि (वर्टिकल फार्मिंग)

परिच्छेद के अनुसार, उपर्युक्त में से कौन-सी कृषि पद्धतियाँ कृषि पारिस्थितिकी के अनुकूल हो सकती हैं ?

(a) केवल 1, 4 और 5

(b) केवल 2, 3, 4 और 5

(c) केवल 1, 2, 3 और 6

(d) केवल 4 और 6

समाधानः(a)

स्वयं करें.. कारणों सहित..

प्रकार 6: परिणाम आधारित कॉम्प्रिहेंशन

परिणाम क्या है?

- **शब्दकोश की परिभाषा**-एक प्रस्ताव जो पहले से ही प्रमाणित प्रस्ताव का अनुसरण करता है (और अक्सर इसमें जोड़ा जाता है)।
- परिणाम एक ऐसा कथन है जो स्पष्ट रूप से सत्य है क्योंकि यह किसी अन्य कथन से आता है जिसे पहले से ही सत्य माना जाता है।
- गणित और तर्क में, एक परिणाम एक कथन है जो पिछले, अधिक उल्लेखनीय कथन, आमतौर पर एक प्रमेय से तार्किक रूप से अनुसरण करता है। एक परिणाम अक्सर एक विशेष मामला या प्रमेय का एक सरलीकृत संस्करण होता है, या यह एक कथन हो सकता है जिसे प्रमेय से आसानी से निकाला जा सकता है।

उदाहरण के लिए,

- **कथनः** सभी त्रिभुजों की तीन भुजाएँ होती हैं।
- **उपफलः** सभी समबाहु त्रिभुजों की तीन भुजाएँ होती हैं।

परिणाम आधारित कॉम्प्रिहेंशन प्रश्नों को हल करनाः

- परिच्छेद को ध्यान से पढ़ें और मुख्य कथन को पहचानें। यह वह कथन है जिसका परीक्षण किया जा रहा है।

- परिणाम को पहचानें। यह वह कथन है जिसे मुख्य कथन के परिणाम के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।
- परिच्छेद में प्रयुक्त भाषा पर ध्यान दें। ऐसे शब्दों और वाक्यांशों की तलाश करें जो कारण और प्रभाव को दर्शाते हैं, जैसे "इसलिए," "इसलिए," और "परिणामस्वरूप।"
- परिच्छेद के निहितार्थ पर विचार करें। प्रस्तुत की गयी जानकारी के तार्किक परिणाम क्या हैं?
- निर्धारित करें कि क्या परिणाम मुख्य कथन का वैध परिणाम है। ऐसा करने के लिए, अपने आप से पूछें कि क्या परिणाम सत्य है क्योंकि यह मुख्य कथन का तार्किक परिणाम है।
- वह उत्तर चुनें जो मुख्य कथन और परिणाम के बीच संबंध की आपकी कॉम्प्रिहेंशन को सबसे अच्छी तरह दर्शाता हो।

 # उदाहरण

- **कथन:** सभी लोकतंत्रों में प्रेस स्वतंत्र है।
- **परिणाम:** स्वतंत्र प्रेस वाले सभी देश लोकतंत्र हैं।

प्रश्न: क्या परिणाम मुख्य कथन का वैध परिणाम है?

उत्तर: नहीं, परिणाम मुख्य कथन का वैध परिणाम नहीं है। हालाँकि यह सच है कि सभी लोकतंत्रों में स्वतंत्र प्रेस है, लेकिन यह सच नहीं है कि स्वतंत्र प्रेस वाले सभी देश लोकतंत्र हैं। उदाहरण के लिए, सिंगापुर में स्वतंत्र प्रेस है, लेकिन यह लोकतंत्र नहीं है।

परिच्छेद - 1

वनों में बड़े झुण्डों में रहने वाले फ्लेमिंगो सामाजिक और अत्यंत निष्ठावान होते हैं। वे समूह संगम नृत्य करते हैं। नर और मादा पक्षी अपने चूजों से बहुत प्यार करते हैं, और जब नर और मादा दोनों भोजन की तलाश में दूर उड़ जाते हैं तब सुरक्षा के लिए उन चूजों को क्रेशों (creches) में एकत्र रख जाते हैं।

निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सबसे तर्कसंगत उपनिगमन (कोरोलरी) है ? (2015)

(a) सभी स्पीशीज के पक्षियों में सामूहिक नीड़न (मास नेस्टिंग) अनिवार्य है ताकि उनकी संततियाँ पूरी तरह जीवित बनी रहें।

(b) सिर्फ पक्षियों में सामाजिक व्यवहार विकसित करने की क्षमता होती है अत: वे अपने चूजों को सुरक्षापूर्वक पालने के लिए सामूहिक नीड़न अपना सकते हैं।

(c) कुछ स्पीशीज के पक्षियों में सामाजिक व्यवहार, असुरक्षित विश्व में जीवित बने रहने की विषमताओं को बढ़ा देता है।

(d) सभी स्पीशीज के पक्षी अपने चूजों को सामाजिक व्यवहार और निष्ठा सिखाने के लिए क्रेशों (बतध्बीमे) की स्थापना करते हैं।

THE CORE IAS

समाधान:(c)

कथन 1: परिच्छेद में केवल राजहंस के बारे में बताया गया है, अन्य पक्षियों के बारे में नहीं।

कथन 2: अपर्याप्त जानकारी।

कथन 3: हाँ, परिच्छेद से अनुसरण करते हुए।

कथन 4: अन्य प्रजातियों के बारे में कोई जानकारी नहीं।

परिच्छेद - 2

जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों की उपज में रुकावट और कधीमतों में वृद्धि होने की वजह से, पूरे विश्व में बहुत सारे लोग पहले से ही भुखमरी का शिकार हैं। और जलवायु परिवर्तन के कारण केवल खाद्य ही नहीं बल्कि पोषक तत्त्व भी अपर्याप्त होते जा रहे हैं। जैसे-जैसे फसलों की उपज और जीविका पर खध्तरे की स्थिति बन रही है, सबसे गरीब समुदायों को ही, भुखमरी और कुपोषण के बढ़ने के समेत, जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों से ग्रस्त होना पड़ेगा। दूसरी ओर, गरीबी जलवायु परिवर्तन की कारक है, क्योंकि निराशोन्मत्त समुदाय अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधनों के अधारणीय (अनसस्टेनबल) उपयोग का आश्रय लेते हैं।

29

निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है ? (2015)

(a) सरकार को गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के लिए अधिक निधियों का आबंटन करना चाहिए और निर्धन समुदायों को दिए जाने वाले खाद्य उपदानों (सब्सिडीज) में वृद्धि करनी चाहिए।

(b) निर्धनता तथा जलवायु के प्रभाव एक-दूसरे को बढ़ावा देते हैं और इसलिए हमें अपनी खाद्य प्रणालियों की पुनर्कल्पना करनी होगी।

(c) विश्व के सभी देशों को गरीबी और कुपोषण से लड़ने के लिए एकजुट होना ही चाहिए और गरीबी को एक सार्वभौम समस्या की भाँति देखना चाहिए।

(d) हमें तुरन्त अधारणीय (अनसस्टेनबल) कृषि पद्धतियों को बंद कर देना चाहिए और खाद्य कीमतों को नियंत्रित करना चाहिए।

समाधानः (b)

कथन 1: मुद्दा जलवायु परिवर्तन है, केवल भूख और गरीबी उन्मूलन के लिए धन आवंटित करने से समाधान नहीं होगा। इसी तरह का परिणाम यह हो सकता है- सरकार को कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए अधिक धन आवंटित करना चाहिए।

कथन 2: हाँ, "जलवायु परिवर्तन पहले से ही दुनिया भर में कई लोगों को भूखा बना रहा है, फसल की पैदावार में बाधा डाल रहा है और कीमतें बढ़ा रहा है"++"गरीबी जलवायु परिवर्तन का एक चालक है, क्योंकि हताश समुदाय संसाधनों के अस्थिर उपयोग का सहारा ले रहे हैं वर्तमान जरूरतों को पूरा करने के लिए"।

कथन 3: गलत; जलवायु परिवर्तन और कृषि पर प्रभाव से निपटना तार्किक है; "जलवायु परिवर्तन पहले से ही दुनिया भर में कई लोगों को भूखा बना रहा है" से लेते हुए।

कथन 4: कहीं भी इसका उल्लेख नहीं किया गया है कि इसका कारण पालन की जाने वाली अस्थिर कृषि पद्धतियाँ हैं।

परिच्छेद-3

खाद्य जात बीमारियाँ उत्पन्न करने वाले बहुत से रोगाणुओं के विषय में जानकारी नहीं है। खाद्य संक्रमण खेत से लेकर थाली तक किसी भी चरण में हो सकता है। चूँकि खाद्य विषाक्तीकरण की अनेकों घटनाएँ अप्रतिवेदित रह जाती हैं, वैश्विक खाद्य-जात बीमारियों का सही प्रसार अज्ञात है। अंतर्राष्ट्रीय परिवेक्षण में सुधार के कारण जन जागरूकता में बढ़ोतरी हुई है, तदपि खाद्य उत्पादन में तीव्र वैश्वीकरण से खाद्य को नियंत्रित करना तथा अनुरेखित करना कठिनतर होने के कारण उपभोक्ता की भेद्यता बढ़ गई है। डब्ल्यू०एच०ओ० के एक अधिकारी का कथन है, "विश्व हमारी प्लेट पर है।"

निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है? (2018)

(a) खाद्य के विकल्प अधिक होने के कारण जोखिम अधिक आते हैं।

(b) समस्त खाद्य जात बीमारियों का उद्गम खाद्य प्रसंस्करण है।

(c) हमें केवल स्थानीय उत्पादित खाद्य पर निर्भर रहना चाहिए।

(d) खाद्य उत्पादन के वैश्वीकरण में कटौती लानी चाहिए।

समाधानः(a)

स्वयं करें..

परिच्छेद - 4

भारत में, समष्टि आर्थिक नीति का उद्देश्य लोगों के आर्थिक कल्याण को बढ़ाना है, और ऐसी समष्टि आर्थिक नीति की किसी भी शाखा (विंग), मौद्रिक हो या राजकोषीय, दूसरी शाखा के सक्रिय समर्थन के बिना, स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर सकती।

30

निम्नलिखित में से कौन-सा कथन, उपर्युक्त परिच्छेद के उप-सिद्धांत को बेहतर दर्शाता है ? (2021)

(a) केंद्रीय बैंक सरकार से स्वतंत्र होकर कार्य नहीं कर सकता।

(b) सरकार को वित्तीय बाजारों और संस्थाओं का सघन विनियमन करना चाहिए।

(c) बाजार अर्थव्यवस्था सरकार की समाजवादी नीतियों के संगत नहीं है।

(d) लोगों के आर्थिक कल्याण को बढ़ाने के लिए वित्तीय क्षेत्र में सुधार आवश्यक हैं।

समाधान:(a)

स्वयं करें..

प्रकार 7: सार आधारित कॉम्प्रिहेंशन

किसी परिच्छेद का सार उसका केंद्रीय बिंदु, मुख्य विचार या आवश्यक तर्क है। यह परिच्छेद का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, और परिच्छेद में बाकी सब कुछ उस केंद्रीय बिंदु का समर्थन या विकास कर रहा है।

किसी परिच्छेद का सार एक वाक्य में बताया जा सकता है, या यह अधिक जटिल हो सकता है और समझाने के लिए कुछ वाक्यों की आवश्यकता होती है।

किसी परिच्छेद का सार ढूँढने के लिए, आप स्वयं से निम्नलिखित प्रश्न पूछ सकते हैं:

- वह मुख्य बिंदु क्या है जिसे लेखक कहना चाह रहा है?
- परिच्छेद का केंद्रीय तर्क या शोध-कथन क्या है?
- सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है जो लेखक पाठक को बताना चाहता है?

यहां परिच्छेदों के सार तत्वों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

- **जलवायु परिवर्तन के बारे में एक परिच्छेद का सार:** मानव गतिविधि के कारण पृथ्वी की जलवायु में अभूतपूर्व दर से परिवर्तन हो रहा है, और यह परिवर्तन पहले से ही ग्रह और उसके निवासियों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है।
- **शिक्षा के महत्व के बारे में एक परिच्छेद का सार:** व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। यह लोगों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने और अपने समुदायों की बेहतरी में योगदान करने के लिए सशक्त बनाता है।
- **पढ़ने के लाभों के बारे में एक परिच्छेद का सार:** पढ़ना एक मूल्यवान गतिविधि है जो संज्ञानात्मक कार्य में सुधार कर सकती है, शब्दावली का विस्तार कर सकती है और सहानुभूति बढ़ा सकती है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि किसी परिच्छेद का सार हमेशा स्पष्ट रूप से नहीं बताया जाता है। कभी-कभी, यह परिच्छेद द्वारा निहित या अनुमान लगाया जाता है।

कैसे हल करें:

किसी परिच्छेद के केंद्रीय बिंदु या मुख्य विचार की पहचान करने की उम्मीदवार की क्षमता का परीक्षण करने के लिए UPSC सिविल सेवा CSAT परीक्षा में मूल-आधारित कॉम्प्रिहेंशन वाले प्रश्न पूछे जाते हैं।

- परिच्छेद को ध्यान से पढ़ें। सार को पहचानने का प्रयास करने से पहले परिच्छेद को पूरी तरह से समझना महत्वपूर्ण है। अपना समय लें और यदि आवश्यक हो तो परिच्छेद को कई बार पढ़ें।
- परिच्छेद के मुख्य विषय को पहचानें। इस वाक्य मे क्या है? लेखक किस पर चर्चा करना चाह रहा है?
- सहायक तर्कों या साक्ष्यों को पहचानें। लेखक अपने मुख्य बिंदु के समर्थन में क्या प्रयोग करता है? वे क्या उदाहरण या साक्ष्य प्रदान करते हैं?
- परिच्छेद को अपने शब्दों में सारांशित करें। इससे आपको परिच्छेद के आवश्यक बिंदुओं को पहचानने और सार को समझने में सहायता मिलेगी।
- संक्षिप्तता से और मुद्दे पर बात करें। अनावश्यक फैलाव से बचें।
- अपने उत्तर को ध्यानपूर्वक पढकर संशोधित करें।

परिच्छेद 1

इंटरनेट ने हमारे संचार और सूचना उपभोग के तरीके में क्रांति ला दी है। इसका हमारे व्यापार करने के तरीके पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है।' अतीत में, व्यवसाय अपने स्थानीय बाजारों तक ही सीमित थे। हालाँकि, इंटरनेट ने व्यवसायों के लिए वैश्विक दर्शकों तक पहुँचना संभव बना दिया है। इससे प्रतिस्पर्धा और नवप्रवर्तन में वृद्धि हुई है।

परिच्छेद का सार: इंटरनेट ने व्यवसायों पर गहरा प्रभाव डाला है, जिससे उनके लिए वैश्विक दर्शकों तक पहुंचना संभव हो गया है और प्रतिस्पर्धा और नवाचार में वृद्धि हुई है।

- इस उदाहरण में, परिच्छेद का सार अंतिम वाक्य में स्पष्ट रूप से बताया गया है।
- हालाँकि, यह शेष परिच्छेद में भी निहित है। उदाहरण के लिए, परिच्छेद में चर्चा की गयी है कि कैसे इंटरनेट ने संचार और सूचना उपभोग में क्रांति ला दी है, जिससे व्यवसायों के लिए वैश्विक दर्शकों तक पहुंचना संभव हो गया है।

परिच्छेद 2

जलवायु परिवर्तन आज मानवता के सामने सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों के छोड़े जाने के कारण होता है, जो ऊष्मा को रोकती हैं और ग्रह को गर्म करती हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव दुनिया भर में पहले से ही अधिक चरम मौसम की घटनाओं, समुद्र के बढ़ते स्तर और पिघलते ग्लेशियरों के रूप में महसूस किए जा रहे हैं।

परिच्छेद का सार: जलवायु परिवर्तन आज मानवता के सामने एक गंभीर चुनौती है, और इसके प्रभावों को कम करने के लिए कार्रवाई करना महत्वपूर्ण है।

परिच्छेद-3

स्थिर आर्थिक संवृद्धि, उच्चतर साक्षरता और बढ़ते हुए कौशल स्तर के साथ भारतीय मध्यवर्गीय परिवारों की संख्या अत्यधिक तेजी से बढ़ी है। इस संपन्नता के सीधे परिणाम ये हुए हैं कि आहार प्रतिरूपों और ऊर्जा उपभोग स्तरों में बदलाव आए हैं। लोग दुग्ध उत्पाद, मछली और मांस जैसे उच्चतर प्रोटीन आधारित आहार लेने लगे हैं, जिन सभी के उत्पादन में अनाज- आधारित आहार के उत्पादन की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। इलेक्ट्रॉनिक और विद्युत् मशीनों / औजारों और मोटर वाहनों के बढ़ते हुए उपयोग के लिए अधिकाधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, और ऊर्जा के जनन के लिए जल की आवश्यकता होती है।

निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक इस परिच्छेद के मर्म को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिम्बित करता है? (2022)

(a) लोगों को मुख्यत: भारतीय पारम्परिक अनाज- आधारित आहारों को ही लेते रहने के लिए राजी किया जाना चाहिए।

(b) आने वाले वर्षों में भारत को कृषि उत्पादकता और अधिक ऊर्जा-जनन क्षमता विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

(c) आधुनिक प्रौद्योगिकीय विकास लोगों के सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवहार में बदलाव लाता है।

(d) आने वाले वर्षों में भारत में जल प्रबंधन प्रणालियों में नाटकीय बदलाव लाने की आवश्यकता है।

उत्तर: (d)

कथन (a): यह परिच्छेद आगे की राह के लिए कोई सुझाव नहीं देता है कि क्या आहार प्रतिरूप में बदलाव स्वास्थ्य के लिए अच्छा है या क्या लोगों को केवल इस तथ्य के कारण अनाज आधारित आहार पर वापस जाना चाहिए क्योंकि इसके उत्पादन के लिये अधिक पानी की आवश्यकता है।

कथन (b): पुन:, परिच्छेद केवल अनाज-आधारित आहार की तुलना में प्रोटीन-आधारित आहार उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले अधिक पानी के मुद्दे के बारे में बात करता है। यह आगे की राह के लिए कोई सुझाव नहीं देता।

कथन (c): परिच्छेद आर्थिक विकास और आहार प्रतिरूप पर इसके प्रभाव के बारे में बात करता है। हालाँकि, इसमें लोगों के सामाजिक व्यवहार पर बिल्कुल भी चर्चा नहीं की गयी है। अत: यह विकल्प गलत है।

कथन (d): हालाँकि, ष्नाटकीय रूप सेष् शब्द का उपयोग इस विकल्प को अतिवादी बनाता है, यह दिए गए विकल्पों में से सबसे अच्छा विकल्प है। लेखक ने आधुनिक समय में पानी की बढ़ती खपत को एक मुद्दा बताया है - उदाहरण के लिए, आहार प्रतिरूप और ऊर्जा उत्पादन दोनों के लिए पानी की आवश्यकता होती है। इसलिए, इसके सार में यह बताया गया है कि दोनों पहलुओं को बनाए रखने के लिए भारत में जल प्रबंधन प्रथाओं को आने वाले वर्षों में काफी (नाटकीय रूप से) बदलने की जरूरत है।

परिच्छेद - 4

अभिजातीय शासन स्वयं को उस दायरे में अत्यधिक रूप से सीमाबद्ध करके विनष्ट कर लेता है, जिस दायरे में सत्ता सीमित होती है; अल्पतंत्रीय शासन तात्कालिक धन प्राप्ति के लिए असावधानीपूर्वक संघर्ष कर स्वयं को विनष्ट करता है । यहाँ तक कि, लोकतंत्र के अतिरेक से लोकतंत्र भी स्वयं को विनष्ट करता है । इसका मूलभूत सिद्धांत यह है कि पद धारण करने और लोक नीति निर्धारण करने का सबको समान अधिकार है। प्रथम दृष्टि में, यह एक सुखद व्यवस्था है; किंतु यह विनाशकारी बन जाता है, क्योंकि लोग समुचित रूप से शिक्षित नहीं होते हैं कि वे उत्तम शासकों और सर्वाधिक विवेकपूर्ण मार्ग का चयन कर सकें। लोगों में समझ नहीं होती है और वे केवल वही दोहराते हैं जो उनके शासक उन्हें कहना पसंद करते हैं । ऐसा लोकतंत्र, निरंकुश शासन या स्वेच्छाचारी शासन होता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के मर्म को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है ? (2021)

(a) मानव समाज शासन के भिन्न-भिन्न रूपों के साथ प्रयोग करते हैं।

(b) अपने मूलभूत सिद्धांत के अतिरेक के कारण शासन के किसी भी रूप का अपकर्ष हो जाता है।

(c) सभी नागरिकों की शिक्षा ही पूर्ण, कार्यात्मक और धारणीय लोकतंत्र को सुनिश्चित करती है ।

(d) शासन का अस्तित्व एक अपरिहार्य बुराई है, क्योंकि शासन के सभी रूपों में निरंकुशता अंतर्निहित होती है।

समाधान:(b)

कथन (a): गलत है क्योंकि परिच्छेद विभिन्न प्रकार की सरकारों की बर्बादी के पीछे के कारणों के इर्द-गिर्द घूमता है।

कथन (b): सही है क्योंकि यह चर्चा की गयी हर प्रकार की सरकार की बर्बादी का सामान्य कारण है।

कथन (c): द्वितीयक तर्क-"लोगों को कोई समझ नहीं है और वे केवल वही दोहराते हैं जो उनके शासक उन्हें बताने में रूचि रखते हैं-यानी स्वतंत्र और निष्पक्ष जानकारी की आवश्यकता।"

कथन (d): आवश्यक नहीं-यदि इसका कोई मूल सिद्धांत है तो उसे अधिकता से बचाया जाए।

परिच्छेद- 3

तमिलनाडु की कावेरी नदी घाटी पर क्षेत्रीय जलवायु मॉडलों का उपयोग करते हुए जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर किए गए अध्ययन में अधिकतम और न्यूनतम तापमानों में वृद्धि की प्रवृत्ति और वर्षा के दिनों की संख्या में कमी देखी गई। इन जलवायवी परिवर्तनों का इस क्षेत्र के जलीय चक्रों पर प्रभाव पड़ेगा, परिणामस्वरूप अधिक मात्रा में जल बह जाएगा और जल के पुनर्भरण (रीचार्ज) में कमी आएगी, तथा भौमजल-स्तर प्रभावित होंगे। इसके अतिरिक्त, राज्य में सूखा पड़ने की बारंबारता में वृद्धि हुई है । इसके कारण, फसलें बचाने के लिए भौमजल संसाधनों पर किसानों की निर्भरता बढ़ी है।

निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के मूल भाव को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है ? (2021)

(a) क्षेत्रीय जलवायु मॉडलों का विकास जलवायु-अनुकूल (क्लाइमेट-स्मार्ट) कृषि पद्धतियों का चयन करने में सहायक है।

(b) शुष्क भूमि कृषि पद्धतियाँ अपनाकर भौमजल संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता को कम किया जा सकता है ।

(c) जलवायु परिवर्तन से जल संसाधनों का महत्त्व बढ़ा है, जबकि साथ ही साथ इन पर संकट भी बढ़ा है ।

(d) जलवायु परिवर्तन के कारण, किसानों को अधारणीय आजीविका और जोखिमपूर्ण साधक - रणनीतियाँ अपनानी पड़ती हैं।

समाधान:(c)

स्वयं करें..

PYQ = 2011-2023

2011

निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो लेखांशों में से प्रत्येक को पढ़िए और उनके उपरांत दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल लेखांशों पर ही आधारित होने चाहिए।

लेखांश-1

समावेशी संवृद्धि की प्राप्ति के लिए राज्य की भूमिका पर पुनर्विचार की गंभीर आवश्यकता है। सरकार के आकार के विषय में अर्थशास्त्रियों के बीच हुई आरंभिक बहस भ्रामक हो सकती है। समय की आवश्यकता है कि एक सामर्थ्यकारी सरकार हो। राज्य सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, यह भारत राष्ट्र के विशाल और जटिल स्वरूप को देखते हुए आसान नहीं है। सरकार सभी अनिवार्य वस्तुओं का उत्पादन करे, सभी आवश्यक नौकरियों का सृजन करे, और सभी वस्तुओं की कीमतों पर नियंत्रण रखे, ऐसी अपेक्षा विशाल बोझिल नौकरशाही और व्यापक भ्रष्टाचार की ओर ले जाएगी।

लक्ष्य यह होना चाहिए कि राष्ट्र के संस्थापकों ने जिस समावेशी संवृद्धि का उद्देश्य रखा था, हम उसके साथ बने रहें और साथ ही इसके प्रति एक अपेक्षाकृत अधिक आधुनिक दृष्टिकोण अपनाएँ कि राज्य यथार्थत: क्या प्रदान कर सकता है।

यही एक सामर्थ्यकारी राज्य के विचार की ओर ले जाता है, अर्थात, एक ऐसी सरकार जो नागरिकों को उनकी आवश्यकता की हर चीज की प्रत्यक्षत: पूर्ति करने का प्रयास नहीं करती। बल्कि, (1) वह बाजार के लिए एक सामर्थ्यकारी लोकाचार का सृजन करती है ताकि व्यष्टिक उद्यम फल-फूल सके, और नागरिक, अधिकांश भाग के लिए, एक-दूसरे की आवश्यकताओं के लिए प्रावधान कर सकें; और (2) वह ऐसे लोगों की मदद के लिए आगे आती है जो स्वयं अपनी बेहतरी नहीं कर पाते, क्योंकि कैसी भी व्यवस्था क्यों न हो, लोग कुछ हमेशा ऐसे होते हैं जिन्हें सहारे और मदद की आवश्यकता होती है। अत: हमें एक ऐसी सरकार की जरूरत है जो बाजार के मामले में प्रभावी, प्रोत्साहन - अनुकूल नियम स्थापित करे और न्यूनतम हस्तक्षेप करती हुई हाशिए पर बनी रहे, और साथ ही साथ, निर्धनों को शिक्षा और स्वास्थ्य की बुनियादी सुविधाएँ तथा पर्याप्त पोषण और आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए उनकी प्रत्यक्ष सहायता करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाए।

1. लेखांश के अनुसार : (2011)

   1. समावेशी संवृद्धि का उद्देश्य राष्ट्र के संस्थापकों द्वारा रखा गया था।
   2. समय की आवश्यकता है कि एक सामर्थ्यकारी सरकार हो।
   3. सरकार को बाजार की प्रक्रियाओं में अधिकतम हस्तक्षेप रखना चाहिए।
   4. आवश्यकता है कि सरकार के आकार में परिवर्तन हो।

   उपर्युक्त में से कौन-कौन से कथन सही हैं ?

   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 4
   (d) 1, 2, 3 और 4

2. लेखांश के अनुसार, निम्नलिखित में से किस एक द्य 4. पर संकेंद्रित कर के समावेशी संवृद्धि की कार्यनीति कार्यरूप में परिणत की जा सकती है? (2011)

   (a) देश के प्रत्येक नागरिक की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर
   (b) विनिर्माण क्षेत्र पर विनियमनों को बढ़ा कर
   (c) विनिर्मित वस्तुओं के वितरण को नियंत्रित कर
   (d) समाज के वंचित वर्गों को बुनियादी सेवाएँ प्रदान कर

3. सामर्थ्यकारी सरकार के संघटक क्या हैं ? (2011)

1. विशाल नौकरशाही।
2. प्रतिनिधियों के माध्यम से कल्याण कार्यक्रमों को लागू करना।
3. ऐसे लोकाचार का सृजन करना जिसमें व्यष्टिक उद्यम को मदद मिले।
4. उन्हें संसाधन उपलब्ध कराना जो अल्पसुविधाप्राप्त हैं।
5. निर्धनों को बुनियादी सेवाओं के सम्बन्ध में सीधे मदद देना।

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1, 2 और 3

(b) केवल 4 और 5

(c) केवल 3, 4 और 5

(d) 1, 2, 3, 4 और 5

4. राज्य क्यों "सभी आवश्यकताओं की पूर्ति" कर सकने में असमर्थ है? (2011)

1. उसके पास पर्याप्त नौकरशाही नहीं है।
2. वह समावेशी संवृद्धि को प्रोत्साहित नहीं करता।

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

5. इस लेखांश के लेखक द्वारा व्यक्त सारभूत संदेश क्या है? (2011)

(a) राष्ट्र के संस्थापकों के द्वारा अधिकथित समावेशी संवृद्धि के उद्देश्यों को याद रखना चाहिए।

(b) सरकार के लिए यह आवश्यक है कि वह अधिक स्कूल और स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराए।

(c) सरकार के लिए यह आवश्यक है कि वह समाज के निर्धन स्तरों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाजार और उद्योग स्थापित करे।

(d) समावेशी संवृद्धि की प्राप्ति के लिए राज्य की भूमिका पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

लेखांश-2

'सृजनशील समाज' की अवधारणा किसी समाज के विकास के उस चरण को निर्दिष्ट करती है जिसमें बड़ी संख्या में संभाव्य विरोधाभास मुखर और सक्रिय हो उठते हैं। यह उस समय सर्वाधिक सुस्पष्ट होता है जिस समय उत्पीड़ित सामाजिक समूह राजनीतिक स्तर पर संघटित हो जाते हैं और अपने अधिकारों की माँग करते हैं । विकासशील देशों में किसानों और जनजातियों का उमड़ कर उठना, क्षेत्रीय स्वायत्तता और आत्मनिर्णय के लिए आंदोलन, पर्यावरण आंदोलन और नारी आंदोलन समकालीन समय में सृजनशील समाज के आविर्भाव के लक्षण हैं । इन सामाजिक आंदोलनों के रूप और उनकी तीव्रता अलग-अलग देशों में और किसी एक देश के अलग-अलग हिस्सों में भिन्न-भिन्न हो सकती है । किन्तु समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक रूपान्तरण लाने के लिए इन आंदोलनों की उपस्थिति मात्र, देश में सृजनशील समाज के आविर्भाव को इंगित करती है।

6. "सृजनशील समाज" से लेखक का क्या निहितार्थ है? (2011)

1. एक समाज जहाँ विविध कलारूप और साहित्यिक लेखन प्रोत्साहन पाने का प्रयत्न करते हैं।
2. एक समाज जहाँ सामाजिक असमानताएँ मानक की तरह स्वीकृत हैं।
3. एक समाज जहाँ विशाल संख्या में अंतर्विरोध मान लिए जाते हैं।
4. एक समाज जहाँ शोषित और उत्पीड़ित समूहों में अपने मानवाधिकारों एवं उत्थान की चेतना विकसित होती है।

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए :

(a) 1, 2 और 3
(b) केवल 4
(c) 3 और 4
(d) 2 और 4

7. लेखांश के अनुसार सामाजिक आंदोलनों की अभिव्यक्तियाँ कौन-कौन सी हैं? (2011)

1. आक्रामकता और दाहक होना।
2. बाह्य बलों के द्वारा उकसाया जाना।
3. सामाजिक समानता और वैयक्तिक स्वतंत्रता की तलाश।
4. समाज के अवमानित वर्गों को विशेषाधिकार और आत्मसम्मान प्रदान करने का आग्रह।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए

(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 2 और 4
(c) केवल 3 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

8. लेखांश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2011)

1. सृजनशील समाज बनने के लिए, विविध प्रकार के सामाजिक आंदोलनों का होना अनिवार्य है।
2. सृजनशील समाज बनने के लिए, संभाव्य अंतर्विरोधों और संघर्षों का होना अत्यावश्यक है।

उपर्युक्त में से कौन-सा / कौन-से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

निम्नलिखित 6 (छः) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित दो लेखांशों में से प्रत्येक को पढ़िए और उनके उपरांत दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल लेखांशों पर ही आधारित होने चाहिए।

लेखांश-1

पारिस्थितिकी तंत्र लोगों को विविध प्रकार की वस्तुएँ एवं सेवाएँ प्रदान करते हैं: खाद्य, स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु, बाढ़ नियंत्रण, मृदा स्थिरीकरण, परागण, जलवायु विनियमन, आध्यात्मिक परितोष तथा सौंदर्यपरक आनंद, कुछ नाम गिनाए जा सकते हैं। इनमें से अधिकांश लाभ या तो अप्रतिस्थापनीय हैं या उनको प्रतिस्थापित करने वाली प्रौद्योगिकी प्रतिषेधक रूप से महँगी है।

उदाहरणार्थ, समुद्री जल का विलवणीकरण कर पेय अलवण जल उपलब्ध कराया जा सकता है, किन्तु यह अत्यधिक लागत पर ही संभव है।

तेजी से बढ़ती मानव जनसंख्या ने वस्तुओं और सेवाओं की, विशेषकर खाद्य, अलवण जल, इमारती लकड़ी, रेशों और ईंधन की, अपनी बढ़ी हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पृथ्वी पारिस्थितिकी तंत्रों को अत्यधिक बदल डाला है। इन आपरिवर्तनों ने मानव के कल्याण और आर्थिक विकास में भरपूर योगदान दिया है। ये लाभ समान रूप से वितरित नहीं हुए हैं। इन परिवर्तनों से कुछ लोगों की वस्तुतः हानि हुई है। इसके अतिरिक्त, पारिस्थितिकी तंत्र की कुछ वस्तुओं एवं सेवाओं की अल्पावधि वृद्धि, दूसरों के दीर्घावधि अवकर्षण की लागत पर हुई है। उदाहरणार्थ, खाद्य एवं रेशों के उत्पादन को बढ़ाने के प्रयासों से कुछ पारिस्थितिकी तंत्रों की निर्मल जल प्रदान करने, बाढ़ नियंत्रित करने तथा जैव-विविधता को आधार प्रदान करने की क्षमता में ह्रास हुआ है।

9. लेखांश के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए। (2011)

बढ़ती मानव जनसंख्या का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है

1. आध्यात्मिक परितोष पर
2. सौंदर्यपरक आनंद पर
3. पेय अलवण जल पर
4. खाद्य एवं रेशों के उत्पादन पर
5. जैव-विविधता पर

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(a) केवल 1, 2 और 3
(b) केवल 2, 4 और 5
(c) केवल 3 और 5
(d) 1, 2, 3, 4 और 5

10. लेखांश में उल्लेख है कि "इन परिवर्तनों से कुछ लोगों की वस्तुतः हानि हुई है।" इस कथन में क्या अंतर्निहित है? (2011)

1. जनसंख्या की तीव्र वृद्धि का कुछ लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
2. खाद्य एवं रेशों के उत्पादन में वृद्धि लाने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं हुए हैं।
3. पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्रों में आपरिवर्तनों से अल्पावधि में कुछ लोगों को चाहे क्षति पहुँच सकती है, किन्तु दीर्घावधि में सभी लोगों को लाभ पहुँचेगा।

उपर्युक्त में से कौन-सा / कौन-से कथन सही है/हैं ?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 3
(d) उपर्युक्त कथनों में से कोई भी नहीं

11. लेखांश के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2011)

1. मानव जाति के कल्याण के लिए पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्रों को आपरिवर्तित करना अत्यावश्यक है।
2. प्रौद्योगिकी कभी भी पारिस्थितिकी तंत्रों द्वारा प्रदत्त की जाने वाली सभी वस्तुओं एवं सेवाओं का स्थान नहीं ले सकती।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

लेखांश - 2

एक नैतिक कृत्य हमारा अपना कृत्य होना चाहिए: हमारे अपने संकल्प से प्रस्फुटित होना चाहिए। यदि हम यंत्रवत कार्य करते हैं, तो हमारे कृत्य में कोई नैतिक पुट नहीं होता । यह कृत्य तभी नैतिक होगा, यदि हम यंत्र की तरह कार्य करने को उचित समझें और उसी प्रकार कार्य करें। क्योंकि ऐसा करते हुए हम अपने विवेक का प्रयोग करते हैं। हमें अपने मन में यांत्रिक ढंग से कार्य करने और साभिप्राय कार्य करने के बीच विभेद रखना चाहिए। किसी राजा के लिए एक अपराधी को क्षमादान देना नैतिक हो सकता है। किन्तु इस क्षमादान के आदेश का पालन करने वाला दूत राजा के इस नैतिक कृत्य में केवल एक यांत्रिक भूमिका का ही निर्वाह करता है । किन्तु यह दूत राजा के आदेश का यदि अपना कर्तव्य समझकर निर्वाह करे, तो उसका कृत्य एक नैतिक कृत्य होगा । कोई ऐसा व्यक्ति जो अपनी बुद्धि और विचार शक्ति का प्रयोग नहीं करता, और स्वयं को धारा के प्रवाह के साथ लकड़ी के कुन्दे के समान बह जाने देता है, नैतिकता को भला कैसे समझ सकता है । व्यक्ति कभी-कभी परम कल्याण की दृष्टि से रूढ़ि की अवज्ञा कर स्वयं अपने निर्णय से कार्य करता है।

12. निम्नलिखित में से कौन - सा/कौन-से कथन लेखक के विचारों का सर्वोत्तम वर्णन करता है/करते हैं? (2011)

1. नैतिक कृत्य की पूर्ति के लिए अपने विवेक का प्रयोग आवश्यक है।
2. किसी स्थिति के प्रति मनुष्य को अविलंब प्रतिक्रिया करनी चाहिए।
3. मनुष्य को अपने कर्तव्य का पालन करना ही चाहिए।
4. नैतिक होने के लिए मनुष्य को रूदि की अवज्ञा करने में समर्थ होना चाहिए।

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए

(a) केवल 1
(b) 1 और 3
(c) 2 और 3
(d) 1 और 4

13. लेखक के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन नैतिक कृत्य की निकटतम परिभाषा है? (2011)

(a) यह वरिष्ठों के आधिकारिक आदेशों पर आधारित यांत्रिक कृत्य है ।
(b) यह अपने विवेक-बोध पर आधारित कृत्य है।
(c) यह उद्देश्य की सुस्पष्टता पर आधारित चतुर कृत्य है।
(d) यह समझ पर आधारित धार्मिक कृत्य है।

14. लेखांश में एक कथन है कि ष्स्वयं को धारा के प्रवाह के साथ लकड़ी के कुन्दे के समान बह जाने देता है ।ष निम्नलिखित में से कौन-सा / कौन-से कथन, इसका / इसके निकटतम अर्थ है / हैं? (2011)

1. व्यक्ति अपनी तर्कबुद्धि का प्रयोग नहीं करता।
2. वह प्रभाव/दबाव के प्रति अति प्रभाव्य है।
3. वह कठिनाइयों / चुनौतियों का सामना नहीं कर सकता।
4. वह लकड़ी के कुन्दे के समान है।

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1
(b) 1 और 2
(c) 2 और 3
(d) 1 और 4

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित लेखांश को पढ़िए और उसके उपरांत दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल लेखांश पर ही आधारित होने चाहिए।

लेखांश

जब कोई देश विदेशी प्रभुत्व के अधीन होता है, तब वह किसी विलुप्त युग के सपनों में वर्तमान से पलायन ढूँढ़ता है, और अपने बीते महान् कल की कल्पनाओं में सांत्वना पाता है। यह एक मूर्खतापूर्ण और खघ्तरनाक विनोद है, जिसमें हम में से अनेक मग्न रहते हैं। हम भारतीयों का यह आचरण भी उतना ही प्रश्नास्पद है कि हम अब भी यह सोचते हैं कि हम आध्यात्मिक दृष्टि से महान् हैं, जबकि हम अन्य विषयों में विश्व में नीचे आ चुके हैं। आध्यात्मिक या अन्य कोई महानता, स्वतंत्रता और अवसर के अभाव में या भुखमरी और दु:ख के रहते हुए संस्थापित नहीं की जा सकती। बहुत से पाश्चात्य लेखकों ने इस धारणा को बढ़ावा दिया है कि भारतीय परलोक-परायण हैं। मैं समझता हूँ कि हर देश में निर्धन और अभागे लोग, कुछ हद तक परलोक-परायण बन जाते हैं, जब तक कि वे क्रांतिकारी ही न बन जाएँ, क्योंकि यह लोक प्रत्यक्षत: उनके लिए नहीं है। पराधीन जनों की भी यही स्थिति होती है।

जैसे-जैसे विकसित होकर कोई व्यक्ति परिपक्व होता है, वैसे-वैसे वह बाहरी वस्तुपरक दुनिया में न तो पूर्णत: तल्लीन रहता है न ही उससे संतुष्ट होता है । वह कुछ आंतरिक अर्थ भी ढूँढ़ना चाहता है, कुछ मनोवैज्ञानिक और भौतिक संतोष भी तलाशना चाहता है । यही स्थिति जनों और सभ्यताओं की भी होती है जैसे-जैसे वे परिपक्व और विकसित होकर वयस्क होते हैं । प्रत्येक सभ्यता और प्रत्येक जन बाह्य जीवन और आंतरिक जीवन की इन समानांतर धाराओं को प्रदर्शित करते हैं। जब ये धाराएँ आपस में मिल जाती हैं या एक-दूसरे के सन्निकट रहती हैं, तब संतुलन और स्थिरता बनी रहती है। जब ये भिन्न दिशाओं में चली जाती हैं, संघर्ष उत्पन्न हो जाता है तथा मन और आत्मा को यंत्रणा देने वाली संकटावस्था उत्पन्न हो जाती है।

15. लेखांश में उल्लेख है कि "यह लोक प्रत्यक्षत: उनके लिए नहीं है।" यह उन लोगों को निर्दिष्ट करता है, जो (2011)

1. विदेशी प्रभुत्व से स्वतंत्रता चाहते हैं।
2. भुखमरी और दु:ख का जीवन जीते हैं।
3. क्रांतिकारी बन जाते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) केवल 2
(c) 2 और 3
(d) केवल 3

16. निम्नलिखित मान्यताओं पर विचार कीजिए: (2011)

1. विदेशी प्रभुत्व के अधीन एक देश आध्यात्मिक अनुसरण में मग्न नहीं हो सकता।
2. आध्यात्मिक अनुसरण में निर्धनता अवरोधक है।
3. पराधीन जन परलोक-परायण बन सकते हैं।

प्रस्तुत लेखांश के संदर्भ में, कौन-सी उपर्युक्त मान्यता/मान्यताएँ वैध है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) केवल 2
(c) 2 और 3
(d) केवल 3

THE CORE IAS

17. उपर्युक्त लेखांश की विषय-वस्तु निम्नलिखित में से किस पर केंद्रित है? (2011)

(a) उत्पीड़ित लोगों की मनोदशा पर

(b) भुखमरी और दु:ख पर

(c) सभ्यता के विकास पर

(d) सामान्य लोगों के तन, मन और आत्मा पर

18. लेखांश के अनुसार, मन और आत्मा की यंत्रणा का कारण क्या है? (2011)

(a) विदेशी प्रभुत्व का प्रभाव

(b) विदेशी प्रभुत्व से पलायन की इच्छा और बीते महान् कल की कल्पनाओं में सांत्वना ढूँढ़ना

(c) बाह्य जीवन और आंतरिक जीवन के बीच संतुलन का अभाव

(d) व्यक्ति की अक्षमता कि न तो वह क्रांतिकारी ही बन पाता है न ही परलोक-परायण

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित लेखांश को पढ़िए और उसके उपरांत दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल लेखांश पर ही आधारित होने चाहिए।

लेखांश

एक जाति जो किसी पारिस्थितिकी तंत्र में अपनी प्रचुरता के अनुपात से बढ़ कर प्रभाव डालती है, उसे कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति कहा जाता हैं। कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति, जाति की समुदायों की समृद्धि तथा पारिस्थितिकी तंत्रों में व्याप्त ऊर्जा और पदार्थों के प्रवाह को प्रभावित कर सकती है। समुद्री तारा पाइसैस्टर ओकरेसियस भी, जो उत्तरी अमेरिका के प्रशांत सागरीय तट पर चट्टानी अंतराज्वारीय पारिस्थितिकी तंत्रों में रहता है, कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति का एक उदाहरण है। इसका पसंदीदा शिकार मिटिलस केलिफोर्नियानस शंबु है। समुद्री ताराओं की अनुपस्थिति में, ये शंबु अंतराज्वारीय प्रदेश की विस्तृत पेटी में अपने अन्य प्रतियोगियों से संख्या में इतनी अधिक बढ़ जाती हैं कि उनके लिए स्थान नहीं छोड़तीं। समुद्री तारे इन शंबुओं को ग्रास बना इस पेटी में अनावृत स्थान उत्पन्न कर देते हैं जिसमें विविध प्रकार की अन्य जातियाँ अपने लिए स्थान बना लेती हैं।

वाशिंगटन विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाँच वर्ष की अवधि में अंतराज्वारीय प्रदेश के चयनित भागों से समुद्री तारों को बारंबार हटाकर जाति की समृद्धि पर पाइसैस्टर के प्रभाव को दर्शाया गया है। जिन क्षेत्रों से समुद्री तारों को हटाया गया था, उन क्षेत्रों में दो प्रमुख परिवर्तन घटित हुए। प्रथम, शंबु संस्तर का निचला किनारा अंतराज्वारीय क्षेत्र में और नीचे विस्तृत हो गया जिससे यह प्रकट होता है कि उन क्षेत्रों में जहाँ शंबु अपने अधिकांश समय जल - आच्छादित रहती हैं वहाँ समुद्री तारे उन्हें समूल नष्ट करने की क्षमता रखते हैं। दूसरा, जिस प्रदेश से समुद्री तारों को हटाया गया, वहाँ अचानक नाटकीय ढंग से समुद्री जंतुओं और शैवालों की 28 जातियाँ विलुप्त हो गईं। अंतत: उस पूरे अध:स्तर को उस क्षेत्र के प्रबल प्रतियोगी मिटिलस ने अकेले ही घेर लिया। पाइसैस्टर के परभक्षण से, प्रतियोगी सम्बन्धों पर पड़ने वाला प्रभाव ही यह अधिकांशत: सुनिश्चित करता है कि चट्टानी अंतराज्वारीय पारिस्थितिकी तंत्रों में कौन सी जातियों का जीवन बना रहता है।

19. लेखांश का मर्म क्या है? (2011)

(a) समुद्री तारे का अपना एक पसंदीदा शिकार होता है।

(b) कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति की उत्तरजीविता पसंदीदा शिकार से निर्धारित होती है।

(c) कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति, जाति की विविधता को सुनिश्चित करती है।

(d) उत्तरी अमेरिका के प्रशांत सागरीय तट पर समुद्री तारा एकमात्र कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति है।

20. लेखांश के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए : (2011)

1. शंबु सामान्यतया अंतराज्वारीय पारिस्थितिकी-तंत्रों की प्रबल जाति है।
2. समुद्री तारों की उत्तरजीविता सामान्यतया शंबुओं की बाहुल्यता से निर्धारित होती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

21. निम्नलिखित में से कौन-कौन सा/से आशय लेखांश द्वारा व्यक्त होता है/होते हैं? (2011)

1. शंबुएँ सदा समुद्री तारों की कठोर प्रतियोगी बनी रहती हैं।
2. प्रशांत सागरीय तट के समुद्री तारे विकास क्रम के चरम पर पहुँच चुके हैं।
3. समुद्री तारे अंतराज्वारीय पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा प्रवाह के महत्त्वपूर्ण संघटक हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) केवल 2
(c) 1 और 3
(d) केवल 3

22. निम्नलिखित मान्यताओं पर विचार कीजिए : (2011)

1. पारिस्थितिकी तंत्र में खाद्य श्रृंखलाएँ / खाद्य जाल, कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति से प्रभावित होते हैं।
2. कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति की उपस्थिति जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों की एक विशिष्ट विशेषता है।
3. यदि किसी पारिस्थितिकी तंत्र से कुंजीशिला (कीस्टोन) जाति को पूर्णत: हटा दिया जाए, तो इससे वह पारिस्थितिकी तंत्र बिल्कुल ध्वस्त हो जाएगा।

प्रस्तुत लेखांश के संदर्भ में, कौन-सी उपर्युक्त मान्यता / मान्यताएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

निम्नलिखित 5 (पाँच) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित लेखांश को पढ़िए और उसके उपरांत दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल लेखांश पर ही आधारित होने चाहिए।

लेखांश

अब जबकि भारत में बच्चों को न्यूनतम आठ वर्षों की शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त हो गया है, यह तकलीफ भरा प्रश्न है कि क्या यह अधिकार केवल कागज तक सीमित रहेगा अथवा वास्तविकता का रूप ले सकेगा । यह याद दिलाने की शायद ही जरूरत है कि यह अधिकार संविधान में प्रतिष्ठापित अन्य अधिकारों से अलग है, क्योंकि इसका लाभार्थी कोई छ: वर्षीय बच्चा / बच्ची न तो इसकी माँग कर सकता/ती है, न ही इस अधिकार से वंचित होने अथवा इसका उल्लंघन होने पर कानूनी लड़ाई लड़ सकता/ती है। सभी मामलों में, वह वयस्क समाज ही है जिसे बच्चे की ओर से कार्यवाही करनी होगी।

दूसरी विलक्षण बात यह है कि जब किसी बच्चे को शिक्षा के अधिकार से वंचित किया जाता है, तब बाद में दिया गया कोई भी मुआवजा न तो पर्याप्त न ही प्रासंगिक हो सकता है। ऐसा इसलिए है कि बाल्यावस्था बनी नहीं रहती। यदि किसी बच्चे की ओर से लड़ी गई कानूनी लड़ाई अंततः जीत भी ली जाती है, तब भी यह उस बालक या बालिका के लिए किसी काम की नहीं होती क्योंकि बाल्यावस्था में विद्यालय का जो अवसर खो चुका होता है, वह जीवन में बाद के वर्षों में उसी प्रयोजन के लिए काम नहीं आ सकता। यह दुखद रूप से बालिकाओं के लिए संभवतया अधिक सत्य है क्योंकि हमारे समाज के द्वारा उन्हें, यदि मिलती भी है, तो अल्प बाल्यावस्था ही मिलती है। भारतीय इतिहास में शिक्षा के अधिकार ने उस क्षण में विधि का रूप धारण किया है, जिस समय मादा शिशु हत्या की दारुण प्रथा भ्रूण हत्या के रूप में पुनः उभर कर आई है। यह समाज में गहनतर विक्षोभ का सूचक ष है जो बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली परंपरागत बाधाओं के साथ मिलकर उसे और बढ़ा रहा है। बालिकाओं की बौद्धिक क्षमता के विरुद्ध एक दुराग्रही पूर्वाग्रह हमारी पूरी सांस्कृतिक विविधता में व्याप्त है तथा शिक्षा प्रणाली इसे दूर कर पाने में असमर्थ रही हैं।

23. लेखांश के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिएः (2011)
    1. जब बच्चों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है, वयस्क समाज उनकी ओर से कोई कार्यवाही नहीं करता।
    2. देश में शिक्षा का अधिकार विधि के रूप में प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।

    उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं ?
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों
    (d) न तो 1 और न ही 2

24. लेखांश के अनुसार, बालिकाओं के शिक्षा प्राप्त करने में परंपरागत बाधाएँ क्या-क्या हैं? (2011)
    1. माता-पिता द्वारा, अपने बच्चों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखे जाने पर कानूनी लड़ाई लड़ने में असमर्थता।
    2. समाज में बालिकाओं की भूमिका के विषय में रूढ़िवादी सोच।
    3. बालिकाओं की बौद्धिक क्षमता के विरुद्ध पूर्वाग्रह।
    4. शिक्षा की अनुपयुक्त प्रणाली।

    नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए
    (a) केवल 1 और 2
    (b) केवल 2, 3 और 4
    (c) केवल 1 3 और 4
    (d) 1, 2, 3 और 4

25. लेखांश के आधार पर, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिएः (2011)
    1. शिक्षा का अधिकार विधिक अधिकार है, मूल अधिकार नहीं।
    2. सर्व शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, देश की शिक्षा प्रणाली को विकसित देशों की शिक्षा प्रणाली के समान बनाना आवश्यक है।

    उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/ हैं ?
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों
    (d) न तो 1 और न ही 2

THE CORE IAS

26. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस लेखांश के मूल संदेश को व्यक्त करता है? (2011)

(a) भारत ने यह घोषणा कर दी है कि देश के बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य है।

(b) वयस्क समाज शिक्षा के अधिकार को कार्यान्वित करने हेतु इच्छुक नहीं है।

(c) शिक्षा के अधिकार की, विशेषकर बालिकाओं हेतु, सुरक्षा करना आवश्यक है।

(d) शिक्षा प्रणाली को शिक्षा के अधिकार के मुद्दे के प्रति उन्मुख होना चाहिए।

27. निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन, कौन-सा एक कथन, इस लेखांश के निष्कर्ष को व्यक्त करता है? (2011)

(a) समाज बालिकाओं की बौद्धिक क्षमता के प्रति एक दुराग्रही पूर्वाग्रह से ग्रस्त है।

(b) बच्चों के शिक्षा के अधिकार के लिए संघर्ष हेतु वयस्कों पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

(c) बच्चों को शिक्षा दिलाने हेतु कानूनी लड़ाई बहुधा लंबी और निषेधक होती है।

(d) बाल्यावस्था में प्राप्त होने वाली शिक्षा का कोई भी पर्याप्त प्रतिस्थापन नहीं है।

2012

निम्नलिखित 15 (पन्द्रह) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित कपम परिच्छेदों को पढ़िए और उसके उपरांत प्रत्येक परिच्छेद के आधार पर दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए / इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए /

परिच्छेद-1

शिक्षा का निस्संदेह, एक महत्त्वपूर्ण कार्यपरक, नैमित्तिक तथा उपयोगितावादी आयाम होता है। यह तब उद्घाटित होता हैं जब कोई इस तरह के प्रश्न पूछें, जैसे कि षशिक्षा का प्रयोजन क्या है? । बहुधा इसके उत्तर होते हैं, 'रोजगार/ ऊर्द्धमामी गतिशीलता के लिए अर्हताएँ अर्जित करना', 'और व्यापक / उच्चतर (आय के संदर्भ 'अवसर प्राप्त करना', राष्ट्रीय विकास हेतु विविध क्षेत्रों में प्रशिक्षित जन-शक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करना । परंतु अपने गहनतम अर्थ में शिक्षा नैमित्तिक नहीं है। कहने का आशय यह है, कि इसका स्वयंमात्र से परे औचित्य नहीं बताया जा सकता, क्योंकि यह औपचारिक कौशलों या कतिपय निश्चित वांछित मनोवैज्ञानिक सामाजिक गुणों के अर्जन की ओर ले जाती हैं। यह स्वयं में ही समादरणीय है। इस तरह शिक्षा कोई वस्तु नहीं है जिसे अर्जित कर, या जिससे स्वयं को सम्पन्न कर, तत्पश्चात् उसका इस्तेमाल किया: जाए, बल्कि यह व्यक्तियों तथा समाज के लिए अपरिमित महत्त्व रखने वाली प्रक्रिया हैं, यद्यपि इसमें अपार उपयोग- मूल्य हो सकता है और होता है। अतएव शिक्षा विस्तारण एवं रूपांतरण की प्रक्रिया है, विद्यार्थियों को इंजीनियरों या डॉक्टरों में बदलने के अर्थ में नहीं, बल्कि मन को विस्तारण एवं परिवर्तन सृजन, पोषण एवं आत्म-विवेचनात्मक बोध का विकास तथा विचार की स्वतंत्रता प्रदान करने के अर्थ में। यह नैतिक- बौद्धिक विकास की आंतरिक प्रक्रिया है।

1. आप शिक्षा के 'नैमित्तिक दृष्टिकोण से क्या समझते हैं? (2012)

(a) शिक्षा अपने प्रयोजनों में कार्यपरक व उपयोगितावादी हैं।

(b) शिक्षा का उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति है।

(c) शिक्षा का प्रयोजन मानव बुद्धि को प्रशिक्षित करना है।

(d) शिक्षा का उद्देश्य नैतिक विकास की प्राप्ति है।

2. परिच्छेद के अनुसार, शिक्षा को स्वयंमात्र में समादरणीय क्यों होना ही चाहिए? (2012)

(a) क्योंकि यह रोजगार के लिए अर्हताओं के अर्जन में सहायक होती है।

(b) क्योंकि यह ऊर्ध्वगामी गतिशीलता व सामाजिक स्तर प्राप्त करने में सहायक होती है।

(c) क्योंकि यह नैतिक व बौद्धिक विकास की आंतरिक प्रक्रिया है।

(d) इस संदर्भ में उपरिलिखित सभी (a), (b) व (c) सही हैं।

3. शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसमें (2012)

(a) विद्यार्थियों को प्रशिक्षित वृत्तिकों के रूप में बदला जाता है।

(b) उच्च आय के अवसरों का सृजन होता है।

(c) व्यक्तियों में आत्म-विवेचनात्मक बोध और विचार की स्वतंत्रता का विकास होता है।

(d) ऊर्ध्वगामी गतिशीलता के लिए अर्हताओं का अर्जन होता है।

परिच्छेद-2

यदि कीट प्रतिरोधकता विकसित कर लें तो रासायनिक कीटनाशक धारणीय कृषि में अपना महत्त्व गँवा देते हैं। कीटनाशक प्रतिरोधकता का विकास मात्र प्राकृतिक वरण की क्रिया है! जब आनुवंशिकत:- वैविध्य जनसंख्या की बहुत बड़ी संख्या नष्ट हो जाती है, तब इसका घटित होना लगभग सुनिश्चित है। एक अथवा कुछ कीट असामान्य रूप से प्रतिरोधी हो सकते हैं (यह संभवत: इसलिए कि उनमें एक ऐसा एन्जाइम होता है 'जो कीटनाशक को निराविधकारी बना सकता है)। यदि यह कीटनाशक बार-बार प्रयोग किया जाता है, तो कीट की हर उत्तरोतर पीढ़ी में प्रतिरोधी कीटों का अनुपात बढ़ता जाता है। कीटों की आन्तर प्रजनन दर टेक रूप से बहुत अधिक होती है, अत: एक पीढ़ी के कुछ ही कीट अपनी अगली पीढ़ी में सैंकड़ों या हजारों कीटों को जन्म दे सकते हैं, और इससे कीटों की आबादी में प्रतिरोधकता बहुत तेजी से फैल जाती हैं।

पूर्व समय में इस समस्या की प्राय: अवहेलना होती रही, यद्यपि DDT (डाइक्लोरोडाइफिनाइलट्राइक्लोरोएथेन) प्रतिरोधकता के पहले मामले की सूचना 1946 में ही प्राप्त हो गई थी। ऐसे अकशेरुकी जीवों की संख्या जिनमें प्रतिरोधकता का विकास हुआ है तथा ऐसे कीटनाशकों की संख्या जिनके विरुद्ध प्रतिरोधकता का विकास हुआ हैं, में घातांकी वृद्धि हुई हैं। संधिपाद कीटों के प्रत्येक कुल (जिनमें द्विपंखी जैसे कि मच्छर-मक्खियाँ तथा भृंग, शलभ, ततैया, पिस्सू, जूँ और कुटकी सम्मिलित हैं) में और उनके साथ-साथ अपतण तथा वनस्पति रोगाणुओं में प्रतिरोधकता दर्ज हुई है । कपास के शलभ कीट, एलाबामा पर्ण कृमि का ही उदाहरण लें। विश्व के एक या अधिक क्षेत्रों में उसमें ऐल्ड्रिन DDT, डील्ड्रिन, ऐन्ड्रिन, लिन्डेन और टॉक्साफीन के प्रति प्रतिरोधकता विकसित हो गई है।

यदि रासायनिक कीटनाशक केवल समस्याओं के उत्प्रेरक होते यदि उनका प्रयोग मूलत: और घोर रूप से अधारणीय होता... ...तब उनका व्यापक प्रयोग कब का बंद हो चुका होता। ऐसा नहीं हुआ। इसके विपरीत, उनकी उत्पादन दर तेजी से बढ़ी है?। किसी कृषि उत्पादक के लिए आज भी लागत-लाभ का अनुपात कीटनाशकों के प्रयोग के पक्ष में ही बना हुआ है। USA में कीटनाशकों से कृषि उत्पादों को प्रति $1 लागत मिलने वाला अनुमानित लाभ $5 है।

इसके अतिरिक्त, बहुत से गरीब देशों में सन्निकट सामूहिक भुखमरी, अथवा ज्ञानपदिक रोग के आसार इतने भयावह हैं कि कीटनाशक प्रयोग करने की सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी लागत की अवहेलना करनी पड़ती है। कीटनाशकों के प्रयोग को साधारणतया शकितने जीवन बच सकें, खाद्य उत्पादन की आर्थिक दक्षताश और श्कुल खाद्य उत्पादन जैसे यथार्थ मापों के आधार पर न्यायसंगत ठहराया जाता है। इन बिल्कुल मूलभूत अर्थों में उनके प्रयोग को धारणीय माना जा सकता है। आचरण में, धारणीयता निरंतर ऐसे नए कीटनाशकों को विकसित करने पर निर्भर करती है जो कीटों से कम-से-कम एक कदम आगे रहें कीटनाशक जो अल्प स्थायी हों, जैवनिम्नीकरणीय (बायोडिग्रेडेबल) हो और कीटों पर अधिक सधा हुआ लक्ष्य बाँध सकें।

4. "कीटनाशक प्रतिरोधकता का विकास प्राकृतिक वरण की क्रिया हैं।" इसका वास्तविक तात्पर्य क्या है? (2012)

(a) बहुत से जीवों में कीटनाशक प्रतिरोधकता होना बिल्कुल प्राकृतिक है।

(b) जीवों में कीटनाशक प्रतिरोधकता होना एक विश्वव्यापी तथ्य हैं।

(c) कीटनाशकों के प्रयोग के पश्चात् किसी एक आबादी में कुछ जीव प्रतिरोधकता दर्शाते हैं।

(d) उपर्युक्त (a), (b) तथा (c) में से कोई भी कथन सही नहीं हैं।

5. परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2012)
   1. विश्व के सभी गरीब देशों में रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग अनिवार्य हो गया है।
   2. रासायनिक कीटनाशकों की धारणीय कृषि में कोई भूमिका नहीं होनी चाहिए।
   3. एक कीट बहुत से कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोधकता विकसित कर सकता है।

   उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

6. यद्यपि रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से सम्बद्ध: समस्याएँ लंबे समय से जानी जाती रही हैं, तथापि उनका व्यापक प्रयोग समय के साथ कम नहीं हुआ है क्यों? (2012)
   (a) रासायनिक कीटनाशकों के कोई विकल्प विद्यमान नहीं है।
   (b) नए कीटनाशकों का आविष्कार ही नहीं होता।
   (c) कीटनाशक जैवनिग्नीकरणीय (बायोडिग्रेडेबल) होते हैं।
   (d) उपर्युक्त (a), (b) तथा (c) में से कोई भी कथन सही नहीं है।

7. कीटनाशक किसी कोट आबादी में प्रतिरोधक जीवों के वरण के अभिकर्ता के रूप में कैसे कार्य करते हैं? (2012)
   1. संभव हैं कि किसी कीट आबादी में कुछ विशिष्ट कीटों का व्यवहार उनकी अपनी आनुवंशिक (जैनेटिक) संरचना के कारण दूसरों से भिन्न होता है।
   2. कीटों में कीटनाशकों को निराविषकारी बना सकने का सामर्थ्य होता है।
   3. कीटनाशक प्रतिरोधकता का विकास कीट आबादी में समान रूप से वितरित होता हैं।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/ है ?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 3
   (d) 1, 2 और 3

THE CORE IAS

8. रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग को सामान्यत: गरीब और विकासशील देशों का उदाहरण देकर न्यायसंगत क्यों ठहराया जाता है? (2012)
   1. विकसित देश जैव-कृषि का अनुकूलन कर कीटनाशकों के प्रयोग से मुक्त होने का सामर्थ्य रखते हैं, किंतु गरीब और विकासशील देशों के लिए रासायनिक कीटनाशक का प्रयोग अनिवार्य हैं।
   2. गरीब और विकासशील देशों में, कीटनाशकों के प्रयोग से फसलों के जानपदिक रोगों की समस्या का समाधान हो जाता हैं और खाद्य समस्या कुछ हद तक दूर की जा सकती हैं।
   3. गरीब और विकासशील देशों में प्राय: कीटनाशक प्रयोग करने को सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी लागत की अवहेलना कर दी जाती है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 2
   (d) 1, 2 और 3

9. इस परिच्छेद का क्या तात्पर्य हैं? (2012)

(a) रासायनिक कीटनाशकों के विकल्पों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

(b) रसायनों का अत्यधिक प्रयोग पारिस्थितिक तंत्र के लिए अच्छा नहीं हैं।

(c) कीटनाशकों में सुधार और उनके प्रयोग को धारणीय बनाने की कोई गुंजाइश नहीं हैं।

(d) उपर्युक्त कथन (a) तथा (b) दोनों सही हैं।

परिच्छेद-3

अमेरिका जैसे विकसित देशों के बीते समय की आय के स्तर पर वर्तमान विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ प्रति व्यक्ति कहीं कम ऊर्जा की खपत कर रही हैं, जिससे यह संभावना प्रबल होती है कि कार्बन वृद्धि पर अंकुश रखते हुए भी विकास किया जा सकता है। एक ऐसी जलवायु अनुकूल विकास रणनीति बनाने की आवश्यकता है जिसमें अनुकूलनशीलता तथा अल्पीकरण, समन्वित हो और उससे समुत्थानशक्ति का विकास हो, वैश्विक तपन के गहराते संकट की आशंका में कमी हो और विकास परिणाम में सुधार लाया जा सके। अनुकूलनशीलता तथा अल्पीकरण उपाय अपनाने से विकास को बढ़ावा मिल सकता है, और आर्थिक समृद्धता आने से आय बढ़ सकती हैं और बेहतर संस्थाओं को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। बेहतर निर्मित घरों में रह रही एक स्वस्थ जनसंख्या जिसे सामाजिक सुरक्षा और बैंक ऋण लेने की सुविधा प्राप्त है बदलती जलवायु और उसके प्रभावों से निपटने के लिए बेहतर सज्जित होती हैं। आज समुत्थानशील संतुलित विकास नीतियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जो अनुकूलनशीलता को प्रोत्साहित करें क्योंकि प्रारंभ हो चुके जलवायु परिवर्तन अल्प अवधि में ही बढ़ने वाले हैं।

आर्थिक समृद्धता का प्रसार सदा से परिवर्तनशील पारिस्थितिकीय परिस्थितियों के साथ अनुकूलनशीलता से गुथा रहा है। किन्तु वृद्धि ने जैसे-जैसे पर्यावरण को परिवर्तित किया है और पर्यावरणीय परिवर्तन जैसे-जैसे त्वरित हुआ हैं, वृद्धि और अनुकूलनशीलता को कायम रखने के लिए हमारे पर्यावरण को समझने की बेहतर क्षमता तथा नई अनुकूलनशील प्रौद्योगिकियाँ और आचरण विकसित करने और उन्हें व्यापक रूप से विसरित करने की आवश्यकता है । जैसी कि आर्थिक इतिहासकारों ने व्याख्या की है, मनुष्य जाति की अधिकांश सृजनात्मक अंत:शक्ति परिवर्तनशील दुनिया के प्रति अनुकूलनशील बने रहने की ओर उन्मुख रही हैं। किंतु यह अनुकूलनशीलता जलवायु परिवर्तन के सभी संघाटों का सामना करने में समर्थ नहीं है, विशेषकर: जब दीर्घ अवधि में अधिक विस्तृत परिवर्तन सामने आएँगे।

देश इस परिवर्तनशील जलवायु से सामंजस्य रखते हुए उतनी तेजी से इस क्षति के मार्ग से मुक्त नहीं हो सकते। वृद्धि की कुछ रणनीतियाँ, चाहे वे सरकार या बाजार द्वारा संचालित हों, भी इस भेद्यता को बढ़ा सकती हैं, विशेषकर यदि वे प्राकृतिक संसाधनों का अतिशोषण करती हैं। सोवियत विकास योजना के अंतर्गत सिंचित कपास की खेती का विस्तार अल्प जलधारी मध्य एशिया में किया गया जिससे अरल सागर लुप्त प्राय हो गया, और मछुआरों, पशुपालकों और कृषकों की आजीविका संकट में पड़ गई। इसी प्रकार सैंग्रोव जो तूफानी लहरों के विरुद्ध प्राकृतिक तटीय प्रतिरोधक हैं, का गहन कृषि या आवासीय विकास के लिए प्रयोग में लाना, तटीय बस्तियों की भौतिक भेद्यता को बढ़ाता है, फिर चाहे यह गिनि में या लूइजिआना में हो।

10. निम्नलिखित में से कौन-सी वृद्धि की परिस्थितियाँ भेद्यता बढ़ा सकती हैं? (2012)

1. जब वृद्धि के लिए खनिज संसाधनों और जंगलों का. अतिशोषण होता है।
2. जब वृद्धि मानव जाति की सृजनात्मक अंत:शक्ति में परिवर्तन लाती है।
3. जब वृद्धि की सोच केवल लोगों को आवास और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने तक सीमित होती हैं।
4. जब वृद्धि केवल कृषि पर जोर देने से मूर्त होती हैं।

नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए

(a) केवल 1

(b) केवल 2, 3 और 4

(c) केवल 1 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

11. वर्तमान संदर्भ में निम्न कार्बन-वृद्धि का तात्पर्य क्या है? (2012)
    1. ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों के उपयोग पर अधिक बल देना।
    2. विनिर्माण क्षेत्र पर क्रम बल देकर कृषि के क्षेत्र पर अधिक बल देना।
    3. एकधासस्यन पद्धति को त्याग कर मिश्रित कृषि अपनाना।
    4. वस्तुओं और सेवाओं की माँग में कमी लाना।

    नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए :
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2, 3 और 4
    (c) केवल 1 और 4
    (d) उपर्युक्त में से कोई भी निम्न कार्बन-वृद्धि का द्योतक नहीं है

12. निम्नलिखित में से कौन-सी परिस्थिति/परिस्थितियाँ धारणीय आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य है/हैं? (2012)
    1. आर्थिक समृद्धता का व्यापक प्रसार।
    2. अनुकूलनशील प्रौद्योगिकियों का व्यापक प्रसार/लोकप्रियकरण।
    3. अनुकूलनशील तथा अल्पीकरणशील प्रौद्योगिकियों के शोध में निवेश।

    नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3
    (d) 1, 2 और 3

13. इस परिच्छेद से निम्नलिखित में से क्या निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं? (2012)
    1. सिंचित क्षेत्रों में वर्षा प्रधान फसलों की खेती नहीं की जानी चाहिए।
    2. जल अभाव क्षेत्रों में खेती करना विकास रणनीति का अंग नहीं होना चाहिए।

    नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए:
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों
    (d) न तो 1, न ही 2

14. निम्नलिखित मान्यताओं पर विचार कीजिए :(2012)
    1. धारणीय आर्थिक विकास के लिए मनुष्य की सृजनात्मक अंत:शक्ति के प्रयोग की आवश्यकता है।
    2. गहन कृषि से पारिस्थितिकीय प्रतिक्षेप (बैकलैश) हो सकता है।
    3. आर्थिक समृद्धि का प्रसार पारिस्थितिकी तथा पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

    प्रस्तुत परिच्छेद के संदर्भ में, कौन-सी उपर्युक्त मान्यता / मान्यताएँ वैध हैं/हैं
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3
    (d) 1, 2 और 3

THE CORE IAS

15. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस परिच्छेद का मूल विषय इंगित करता है? (2012)

(a) आर्थिक रूप से अधिक समृद्ध देश जलवायु परिवर्तन के परिणामों से निपटने के लिए बेहतर सुसज्जित हैं।

(b) अनुकूलनशीलता तथा अल्पीकरण को विकास रणनीतियों में समन्वित होना चाहिए।

(c) विकसित और विकासशील दोनों ही प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं को तीव्र आर्थिक विकास के पीछे नहीं पड़ना चाहिए।

(d) कुछ देश तीव्र विकास की तलाश में प्राकृतिक संसाधनों के अतिशोषण का सहारा लेते हैं।

निम्नलिखित 11 (ग्यारह) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित तीन परिच्छेदों को पढ़िए और उसके उपसंत प्रत्येक परिच्छेद के आधार पर दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

नए भौगोलिक क्षेत्रों में कभी-कभी मानव हस्तक्षेप के बिना ही विदेशज जातियों का प्राकृतिक रूप से संक्रमण हो जाता है। तथापि मानव क्रिया-कलापों ने इसे अल्प से बृहद् संक्रमण में परिवर्तित कर दिया मानव जनित यह प्रवेश या तो मनुष्य के अप्रत्याशित आवागमन से अथवा समझ बूझ कर अवैधानिक रूप से किसी व्यक्तिगत उद्देश्य की पूर्ति करते हुए अथवा वैधानिक रूप से सर्वसाधारण के आशांकित लाभ हेतु, यथा किसी कीट को नियंत्रण में लाते हुए, नए कृषि उत्पादों को उत्पन्न करते हुए या मनोरंजन के नवीन साधन उपलब्ध कराते हुए हो सकते हैं। बहुत सी प्रवेशज्ञ जातियों बिना अधिक प्रत्यक्ष प्रभाव के समुदाय में समाहित हो जाती है। किन्तु उनमें से कुछ जातियाँ, देशज जातियों और प्राकृतिक समुदायों में नाटकीय परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होती हैं। उदाहरणार्थ, प्रशांत महासागर में बसे गुआम द्वीप में भूरे वृक्ष सर्प बोइगा इरेगुलेरिस के अप्रत्याशित प्रवेश और उसके द्वारा नीड़ परभक्षण करने से 10 देशज वन पक्षी जातियाँ विलोपन के कगार पर पहुँच गई हैं।

संसार में विद्यमान विशाल जैवविविधता को एक प्रमुख कारण है विशेषक्षेत्री केन्द्रों की उपस्थिति जिससे संसार के विभिन्न भागों में एक जैसे आवासों में भी अलग-अलग समूहों की जातियाँ विकसित हुई हैं। यदि प्रत्येक जाति संसार के हर हिस्से में प्राकृतिक रूप से प्रवेश कर पाती, तो हम यह अपेक्षा कर सकते थे कि कुछ चंद सफल जातियाँ ही प्रत्येक जीवोम में प्रबल बन जाती। यह समजातीयकरण जिस पैमाने पर प्राकृतिक रूप से हो सकता हैं, उस पर उन प्रकीर्णन के भौतिक अवरोधों के कारण अधि कांश जातियों की सीमित प्रकीर्णन शक्ति द्वारा रोक लगी हुई हैं। मानव द्वारा प्रदत्त आवागमन के अवसरों से ये प्राकृतिक अवरोध, अनवरत वृद्धि उन्मुख विदेशज जातियों द्वारा भंग क्रिए जा रहे हैं। इन प्रवेशणों के प्रभावस्वरूप विशाल वैविध्यपूर्ण स्थानीय सामुदायिक संयोजन, कहीं अधिक समजातीय संयोजनों में परिवर्तित हो गए हैं।

यह निष्कर्ष निकालना तथापि त्रुटिपूर्ण होगा कि किसी क्षेत्र में जातियों का प्रवेशण वहाँ की जातीय समृद्धता को अपरिहार्य रूप से क्षीण कर देता है। उदाहरणार्थ, यूरोपीय महाद्वीप में पौधों, अकशेरुकियों तथा कशेरुकियों की अनेक जातियाँ पाई जाती हैं जो ब्रिटिश द्वीपसमूह में नदारद हैं (क्योंकि उनमें से बहुत सी जातियाँ अंतिम हिमयुग के पश्चात् अब तक अपने को पुनर्निवेशन करने में विफल रही हैं । उनके प्रवेशण से ब्रिटिश द्वीपसमूह में जैवविविधता का संवर्धन हो सकता हैं । उपर्युक्त अर्थपूर्ण क्षतिकारक प्रभाव, तभी उपजता है जब आक्रामक जातियाँ उन देशज जीवजात के सम्मुख नई चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं जिनसे जूझने की क्षमता उनमें नहीं होती।

16. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है? (2012)

(a) नए भौगोलिक क्षेत्रों में विदेशज जातियों का प्रवेशण सदैव जैवविविधता को घटाता है।

(b) नष्ट क्षेत्रों में मानव द्वारा विदेशज जातियों को प्रवेश कराने से सदैव स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र में वृहत् परिवर्तन हुए हैं।

(c) मानव ही वह अकेला कारक है जिसने विशाल वैविध्यपूर्ण स्थानीय सामुदायिक संयोजनों को कहीं अधिक समजातीय संयोजनों में परिवर्तित कर डाला है।

(d) इस संदर्भ में उपर्युक्त (a), (b) एवं (c) कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

17. मानव नए भौगोलिक क्षेत्रों में विदेशज्ञ जातियों का क्यों प्रवेशण करता है? (2012)

1. स्थानीय जातियों के साथ विदेशज जातियों के प्रजनन के लिए।
2. कृषि उत्पादकता में वृद्धि लाने के लिए।
3. सौंदर्यीकरण और भूदृश्यन के लिए।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/ हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

18. प्राकृतिक परिस्थितियों में समजातीयकरण पर कैसे अंकुश लगा रहता है? (2012)

(a) स्थानीय आवासों के लिए विशिष्ट जाति समूहों के विकास से।
(b) समुद्री तथा पर्वतीय श्रेणियों की उपस्थिति से।
(c) जाति समूहों के स्थानीय भौतिक और जलवायविक परिस्थितियों के प्रति प्रबल अनुकूलन से।
(d) इस संदर्भ में उपर्युक्त सभी कथन (a), (b) और (c) सही हैं।

19. मानव ने जैवविविधता को कैसे प्रभावित किया है? (2012)

1. जीवित जीवों की तस्करी द्वारा।
2. राजमार्गों के निर्माण द्वारा।
3. पारिस्थितिक-तंत्र को संवेदनशील बनाकर जिससे कि नई जातियाँ उसमें प्रवेश न कर सकें।
4. यह सुनिश्चित करके किं नई जातियों का स्थानीय जातियों पर अधिक प्रभाव न पड़ सके।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(a) 1 और 2
(b) 2 और 3
(c) 1 और 3
(d) 2 और 4

20. विदेशज जातियों के संक्रमण का पारिस्थितिक-तंत्र' पर क्या प्रभाव हो सकता है? (2012)

1. देशज जातियों का क्षरण।
2. पारिस्थितिक तंत्र समुदाय के जाति संघटन में परिवर्तन।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न हो 2

THE CORE IAS

परिच्छेद-2

लोकतंत्र के अधिकांश हिमायती भी यह सुझाने में ब्रल्कि वाक्संयम बरतते रहे हैं कि लोकतंत्र स्वयं ही विकास को और समाज कल्याण संवृद्धि को बढ़ाता है उनकी प्रवृत्ति इन्हें अच्छे किंतु सुस्पष्टत: अलग और व्यापक रूप से स्वतंत्र लक्ष्यों के रूप में देखने की हुई है। दूसरी ओर, लोकतंत्र के निक्क जिसे लोकतंत्र और विकास के बीच गम्भीर तनावों के रूप में देखते हैं, उस पर अपना निदानात्मक विचार व्यक्त करने के लिए काफी इच्छुक प्रतीत हुए हैं। "मन बनाइए, आपको लोकतंत्र चाहिए, या इसकी जगह, आप विकास चाहते हैं" बहुधा इस व्यावहारिक विभाजन वाले सिद्धांतवादी, कम-से-कम प्रारम्भ में, पूर्वी एशियाई देशों से आएं, और 'जैसे-जैसे - 1970 व 1980 के दशकों के पूरे दौर में व बाद में भी ये अनेक देश लोकतंत्र का अनुसरण किए बगैर आर्थिक विकास के संवर्धन में अत्यधिक कामयाब होते गए, उनके इस मत का प्रभाव बढ़ता गया हैं।

इन मुद्दों के सम्बन्ध में हमें खास ध्यान इन दोनों अंतर्विषयों पर देना पड़ेगा कि विकास किसे कहा जा सकता है और लोकतंत्र की व्याख्या क्या है (विशेषकर मतदान और जन-विवेक की अपनी-अपनी भूमिकाओं के. संदर्भ में)। विकास का मूल्यांकन, लोग जो जीवन जी. पाते हैं और जिस वास्तविक स्वतंत्रता का वे उपभोग करते हैं, उससे पृथक नहीं किया जा सकता। विकास, विरले ही सुविधा की निर्जीव वस्तुओं की संवृद्धि के आधार पर देखा जा सकता है, जैसे कि GNP (या व्यक्तिगत आमदनी), या औद्योगीकरण में वृद्धि-चाहे ये वास्तविक लक्ष्यों के साधनों के रूप में कितने ही महत्त्वपूर्ण हो। इनका मूल्य इस बात पर निर्भर करता है कि ये सम्बन्धित लोगों की जिंदगियों व उनकी स्वतंत्रता पर क्या प्रभाव डालते हैं, जो कि विकास के विचार का केंद्रबिन्दु होना ही चाहिए।

यदि विकास को अपेक्षाकृत अधिक व्यापक इंग से, मनुष्य की जिदगियों पर संकेंद्रित कर समझा जाए, तो यह तत्काल स्पष्ट हो जाता है कि विकास व लोकतंत्र के बीच के सम्बन्ध को अंशत: उनके मूलभूत संयोजन के आधार पर देखा जाना चाहिए न कि मात्र उनके ब्राह्य सम्पर्कों के द्वारा। यद्यपि अक्सर यह सवाल भी पूछा जाता रहा है कि क्या राजनैतिक स्वतंत्रता षविकास में सहायक होती हैं, फिर भी हमें इस निर्णायक पहचान को नहीं भूलना चाहिए कि राजनैतिक स्वतंत्रताएँ एवं लोकतांत्रिक अधिकार विकास के "संघटक अवयवों" में से हैं। विकास हेतु इनकी प्रासंगिकता अप्रत्यक्षत: GNP की अभिवृद्धि में उनके योगदान के द्वारा प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं होती।

21. परिच्छेद के अनुसार, लोकतंत्र के निद्रक लोकतंत्र व विकास के मध्य क्यों एक गम्भीर तनाव समझते हैं? (2012)
    (a) लोकतंत्र व विकास सुस्पष्ट और पृथक लक्ष्य हैं।
    (b) आर्थिक अभिवृद्धि को शासन की लोकतंत्रीय प्रणाली का अनुसरण किए बगैर भी सफलतापूर्वक उन्नत किया जा सकता है।
    (c) गैर-लोकतांत्रिक शासन-प्रणालियाँ आर्थिक अभिवृद्धि को, लोकतांत्रिक शासन प्रणालियों की तुलना में अधिक तीव्र गति से तथा अधिक सफलतापूर्वक प्रदान करती हैं।
    (d) ऊपर दिए गए सभी (a), (b) व (c) कथन इस संदर्भ में सही हैं।

22. परिच्छेद के अनुसार, विकास का अन्तिम मूल्यांकन / लक्ष्य/ दृष्टि: क्या होना चाहिए? (2012)
    (a) प्रति व्यक्ति आय व औद्योगिक संवृद्धि दरों में वृद्धि।
    (b) मानव विकास सूचकांक तथा GNP में सुधार।
    (c) बचतों व उपभोग प्रवृत्तियों में वृद्धि।
    (d) उस वास्तविक स्वतंत्रता का विस्तार जिसका नागरिक उपभोग करते हैं।

23. लोकतंत्र व विकास के मध्य "मूलभूत" संयोजन का क्या निहितार्थ है? (2012)
    (a) इनके मध्य सम्बन्ध को बाह्य संपर्कों के माध्यम से देखा जाना चाहिए।
    (b) केवल राजनैतिक व नागरिक अधिकार ही आर्थिक विकास की और ले जा सकते हैं।
    (c) राजनैतिक स्वतंत्रताएँ एवं लोकतांत्रिक अधिकार विकास के सारभूत तत्त्व हैं।
    (d) ऊपर दिए गए कथन (a), (b) व (c) में से कोई भी कथन इस संदर्भ में सही नहीं है।

परिच्छेद-3

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के उदारीकरण के साथ प्रतियोगिता नियम की आवश्यकता और संपुष्ट हो जाती है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रभाव सदैव प्रतियोगिता के पक्ष में नहीं होता। बहुधा, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, किसी घरेलू प्रतिष्ठान का अधिग्रहण कर अथवा किसी प्रतिष्ठान के साथ संयुक्त उद्यम की स्थापना कर, एक विदेशी निगम का रूप ले लेता है। इस प्रकार का अधिग्रहण करने से विदेशी निवेशक प्रतियोगिता को पर्याप्त रूप से कम कर सकता है और संगत बाजार में प्रबल स्थान हासिल कर सकता है और इस प्रकार ऊँची कीमतें प्रभारित कर सकता है। दूसरा वह दृश्य हैं जहाँ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के उदारीकरण के अनुगमन में दो भिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियों (MNCs) के संबद्ध पक्ष एक विशेष विकासशील अर्थव्यवस्था में एक दूसरे के साथ प्रतियोगिता में स्थापित हुए हों। बाद में, जनक कम्पनियों का, जो विदेश में हैं, विलय हो जाता है। जब कंपनियों के संबद्ध पक्ष स्वतंत्र नहीं रह जाते, मेजबान देश में प्रतियोगिता वास्तव में समाप्त हो सकती हैं और उत्पादों की कीमतों में कृत्रिम स्फीति आ सकती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किए गए अधिग्रहणों और विलयनों के इन अधिकांश विपरीत परिणामों को काफी हद तक एक प्रभावी प्रतियोगिता नियम को ला कर टाला जा सकता है। साथ ही एक ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसने एक प्रभावी प्रतियोगिता नियम को कार्यान्वित किया हो, इसे कार्यान्वित न करने वाली अर्थव्यवस्था की तुलना में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित कर पाने के लिए बेहतर स्थिति में होती हैं । ऐसा केवल इसलिए नहीं है कि ज्यादातर बहुराष्ट्रीय कंपनियों से अपने गृह देश में इस प्रकार के नियम के प्रचालन के अभ्यस्त हो जाने और इस प्रकार के मामलों से निबटने में सक्षम होने की प्रत्याशा की जाती है, अपितु इसलिए भी कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी प्रतियोगिता के प्राधिकरणों से यह प्रत्याशा रखती हैं कि वे घरेलू और विदेशी प्रतिष्ठानों के बीच समस्तरीय दशाओं पर प्रतियोगिता सुनिश्चित करेंगे।

24. इस परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।(2012)

1. यह वांछनीय है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रभाव प्रतियोगिता के पक्ष में हो।
2. विदेशी निवेशकों के प्रवेश से आवश्यक रूप से, घरेलू बाजारों की कीमतों में स्फीति आती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

THE CORE IAS

25. इस परिच्छेद के अनुसार, किस प्रकार एक विदेशी निर्देशक संगत घरेलू बाजार पर प्रबलता स्थापित कर लेता है? (2012)

1. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ घरेलू नियमों की अभ्यस्त हो जाती हैं।
2. विदेशी कंपनियाँ, घरेलू कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम स्थापित कर लेती हैं।
3. एक विशेष बाजार/क्षेत्रक के संबद्ध पक्ष अपनी स्वतंत्रता खो देते हैं क्योंकि उनकी विदेश स्थित जनक कंपनियाँ आपस में विलय कर लेती हैं।
4. विदेशी कंपनियों अपने उत्पादों की लागत को घरेलू कंपनियों के उत्पादों की लागत की तुलना में घटा देती हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1, 2 और 3
(d) 1, 2, 3 और 4

26. इस परिच्छेद का क्या निष्कर्ष है? (2012)

(a) विदेशी निवेशक और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ घरेलू बाजार पर सदैव प्रबलता स्थापित कर लेती हैं।

(b) कंपनियों का विलय होने देना घरेलू अर्थव्यवस्था के सर्वश्रेष्ठ हितों में से नहीं है।

(c) प्रतियोगिता नियम के द्वारा घरेलू और विदेशी प्रतिष्ठानों के बीच प्रतियोगिता हेतु समस्तरीय दशाएँ सुनिश्चित करना सरल हो जाता है।

(d) खुली अर्थव्यवस्था वाले देशों के लिए, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश विकास हेतु आवश्यक है।

निम्नलिखित 6 (छ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और उसके नपद प्रत्येक रिच्छेद के आधार पर दिए गए प्रश्नांशी के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

निर्धनों को खासकर बाजार अर्थव्यवस्थाओं में, उस क्षमता की आवश्यकता होती है, जिसे समूहन, उनके सामाजिक-आर्थिक कल्याण और अभिव्यक्ति के संवर्धन के लिए तथा मुक्त बाजार व्यक्तिवाद के विरुद्ध एक संरक्षण के रूप में, अपने लिए अधिक आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक अवसर सृजित करने के लिए प्रदान करते हैं। यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि कृषि का समूह उपागम, विशेषत: ऊर्ध्वगामी कृषि उत्पाद समूहनों के रूप में, कृषि उत्पादकता वृद्धि के साथ-साथ निर्धनता उन्मूलन तथा निर्धनों के सशक्तीकरण के महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। तथापि, इस सम्भावना को साकार करने हेतु आवश्यक होगा कि समूह की प्रकृति स्वैच्छिक आकार छोटा, निर्णयन में सहभागिता तथा कार्य आबंटन और लाभ -संवितरण में साम्यमूलकता हो। विविध संदर्भों में, जैसे संक्रमण अर्थव्यवस्थाओं में ऐसे समूहनों के अनेक उल्लेखनीय उदाहरण हैं। ये सभी निश्चित परिस्थितियों में सफल सहभागिता की सम्भावनाओं के साक्ष्य वहन करते हैं । और यद्यपि संक्रमण अर्थव्यवस्थाओं परिवार सहकारिताओं का लिंग प्रभाव अनिश्चित हैं, किन्तु महिला मात्र आधारित समूह कृषि के भारतीय उदाहरण महिलाओं को लाभान्वित करने की पर्याप्त सम्भावनाओं को बताते हैं।

27. कृषि समूहन, जैसे कि समूह आधारित कृषि, ग्रामीण निर्धनों को (2012)

1. सशक्तीकरण प्रदान कर सकते हैं।
2. वर्धित कृषि उत्पादकता प्रदान कर सकते हैं।
3. शोषणपरक बाजारों के विरुद्ध सुरक्षण प्रदान कर सकते हैं।
4. कृषि वस्तुओं का अतिरेक उत्पादन प्रदान कर सकते हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

(a) 1, 2, 3 और 4

(b) केवल 1, 2 और 3

(c) केवल 2 और 4

(d) केवल 1 3 और 4

28. "लिंग प्रभाव" से लेखक का क्या तात्पर्य है? (2012)

(a) महिलाएँ सहकारिताओं में संदेहास्पद सहभागी है।

(b) परिवार सहकारिताओं में महिलाएँ सम्मिलित नहीं भी हो सकती है।

(c) समूह कृषि से लाभान्वित होती महिलाएँ।

(d) संक्रमण अर्थव्यवस्थाओं में महिलाओं की भूमिका अत्यंत प्रतिबंधात्मक है।

29. निम्नलिखित धारणाओं पर विचार कीजिए: (2012)

1. संक्रमण अर्थव्यवस्थाओं में कृषि समूहनों का होना अनिवार्य है।
2. कृषि के प्रति समूह उपागम से कृषि उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।

उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में इन धारणाओं में से कौन-सा/से वैध है / है ?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद-2

विशिष्ट पश्चिमी उदारवादी संदर्भ में, लोकतंत्र का और गहरा होना श्उदारवादी मूल्यों के समेकन की ओर ले जाता है। भारतीय संदर्भ में, लोकतंत्रीकरण लोगों की वृहत्तर भागीदारी में परिणत होता है, जिसमें लोग 'व्यक्तियों के रूप में नहीं, जो कि उदारवादी चिंतन का मुख्य विषय हैं, बल्कि समुदायों या समूहों के रूप में शामिल होते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में व्यक्ति 'व्यष्टिक' व्यक्तियों के रूप में नहीं, बल्कि धर्म या जाति की पहचान के आधार पर बने आद्य समुदायों के सदस्यों के रूप में शामिल हो रहे हैं। सामुदायिक पहचान एक नियंत्रक बल होती प्रतीत होती है। अत: यह आश्चर्यजनक नहीं है, किं तथा कथित परिधीय समूह राजनैतिक प्रक्रियाओं में शामिल होते समय अपनी पहचानों को सामाजिक समूहों (जाति, धर्म या पंथ) से, जिनके वे सदस्य हैं, जोड़ कर बनाए रखना जारी रखते हैं, यद्यपि उन सभी के राजनैतिक लक्ष्य न्यूनाधिक समान बने रहते हैं। भारत में लोकतंत्र ने उपांतीय लोगों की राजनैतिक आवाज को सुस्पष्ट करने में सहायता कर सामाजिक निकोचों को शिथिल करने की ओर प्रेरित किया है और उपांतीय लोगों को यह शक्ति प्रदान की है कि वे जिन सामाजिक-आर्थिक दशाओं में हैं उन्हें सुधारने की अपनी योग्यता के बारे में आश्वस्त हों। यह एक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक प्रक्रिया है जो, लोक-शासन के लोकतांत्रिक ढांचे के अंदर उच्चतर जाति के अभिजनों से विभिन्न उपाश्रित समूहों में सार्थक शक्ति हस्तांतरण करने के माध्यम से एक मूक क्रांति का कारण बनी थी।

30. पश्चिमी संदर्भ में, लोकतंत्र के और गहरे होने से क्या आशय हैं? (2012)

(a) समूह एवं वर्ग पहचानों का समेकन।

(b) लोगों की वृहत्तर भागीदारी में परिणत लोकतंत्रीकरण।

(c) सार्वजनिक क्षेत्र में व्यक्तियों की 'व्यष्टिक' रूप में वृहत्तर भागीदारी के रूप में लोकतंत्रीकरण।

(d) इस सन्दर्भ में उपर्युक्त कथनों (a), (b) और (c) में से कोई भी सही नहीं हैं।

31. भारत में वृहत्तर लोकतंत्रीकरण किसका अनिवार्य रूप से कारण नहीं बना हैं? (2012)

(a) सार्वजनिक क्षेत्र में जाति एवं सामुदायिक पहचानों का मंद होना।

(b) भारतीय राजनीति में नियंत्रक बल के रूप में समुदाय पहचान का असंगत होना।

(c) समाज में अभिजन समूहों का उपांतीय होना।

(d) वर्ग पहचानों के ऊपर वंशागत पहचानों की सापेक्ष महत्त्वहीनता होना।

32. वह "मूक क्रांति" क्या है जो भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया में घटित हुई है? (2012)

(a) राजनीतिक प्रक्रियाओं में जाति एवं वर्ष सोपानों की असंगतता।

(b) मतदान व्यवहार एवं प्रतिरूपों में सामाजिक निकोंचों का ढीला होना।

(c) उच्चतर जाति अभिजन से उपाश्रित समूहों में शक्ति हस्तांतरण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन।

(d) इस संदर्भ में सभी उपर्युक्त कथन (a), (b) और (c) सही हैं।

2013

निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित **चार परिच्छेदों** को पढ़िए और उसके उपरांत प्रत्येक परिच्छेद के आधार पर दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

हाल के वर्षों में, लोकतंत्र के विषय को लेकर उसके आस-पास जिस प्रकार से शब्दाडंबर प्रयुक्त हुए हैं, उसके फलस्वरूप यह विषय अत्यंत संभ्रमपूर्ण हो गया है। गैर-पश्चिमी विश्व के देशों पर लोकतंत्र 'अधिरोपित' करने के समर्थकों (वस्तुतः इन देशों के 'स्वहित' में ही), और ऐसे 'अधिरोपण' के विरोधियों (उन देशों के 'अपने तौर-तरीकों' के लिए समादर होने के कारण) के बीच एक बढ़ता हुआ, विचित्र रूप से भ्रांत द्विभाजन बन गया है। किंतु, इन दोनों ही पक्षों के द्वारा प्रयुक्त 'अधिरोपण' की पूरी भाषा असाधारण रूप से असंगत है, क्योंकि इससे यह अस्पष्ट धारणा बनती है कि लोकतंत्र अनन्य रूप से पश्चिमी देशों से ही सम्बन्ध रखता है, यह मानते हुए, कि यह सर्वोत्कृष्टता से 'पश्चिमी' विचार है जो केवल पश्चिम में ही जन्मा और फला-फूला।

किंतु इस अभिधारणा को, और इससे विश्व में लोकतांत्रिक प्रथा की सम्भावना के बारे में जनित निराशावाद को, औचित्यपूर्ण ठहराना बहुत कठिन होगा। प्राचीन भारत में स्थानीय लोकतंत्र के अनेक प्रयोग किए गए हैं। सचमुच, विश्व में लोकतंत्र की जड़ों को समझने के लिए हमें विश्व के विभिन्न भागों में हुई जन-सहभागिता और लोक-विवेचन के इतिहास में रुचि लेनी होगी। यूरोपीय और अमेरिकी क्रमविकास के आधार पर हमें मात्र लोकतंत्र के विचारण के परे देखना होगा। यदि हम लोकतंत्र को पश्चिम का एक प्रकार तो अरस्तू का विशेषीकृत सांस्कृतिक उत्पाद मान लें, तो अरस्तू ने दूरगामी अंतर्दृष्टि के साथ सहभागी जीवन की जिन व्यापक माँगों के विषय में बात की थी, उन्हें समझने में हम असफल हो जाएँगे।

वास्तव में इस पर संदेह नहीं किया जा सकता कि लोकतंत्र की समकालीन प्रथा का सांस्थानिक ढाँचा अधिकांश रूप में यूरोप और अमेरिका के गत कुछ शताब्दियों में हुए अनुभवों की देन है। इसे पहचानना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि सांस्थानिक प्ररूपों में ये विकास अत्यधिक नवपरिवर्तनशील और अंततः प्रभावी हुए। इसमें कोई संशय नहीं हो सकता कि यहाँ एक प्रमुख 'पश्चिमी' उपलब्धि है।

1. उपर्युक्त परिच्छेद में यथा-उल्लिखित, निम्नलिखित में से कौन-सा, लोकतंत्र के दृष्टिकोण के सर्वाधिक निकट है ? (2013)
   (a) लोकतंत्र का विषय, इसे गैर-पश्चिमी देशों के लिए 'अन्यदेशीय', पश्चिमी अवधारणा के रूप में चित्रित करने की इच्छा के कारण संभ्रमपूर्ण है।
   (b) लोकतंत्र के अधिरोपण की भाषा अनुपयुक्त है। तथापि, इस अवधारणा पर गैर-पश्चिमी समाज के 'अपने तौर-तरीकों' के सांस्कृतिक पृष्ठपट पर विचार करने की आवश्यकता है।
   (c) यद्यपि लोकतंत्र अनन्य रूप से पश्चिम से जुड़ा, मूलतः पश्चिमी विचार नहीं है, फिर भी, प्रचलित लोकतांत्रिक प्रथाओं की संस्थागत संरचना उन्हीं का योगदान है।
   (d) उपर्युक्त (a), (b) और (c) में से कोई भी कथन सही नहीं है।

2. परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित धारणाएँ बनाई गई हैं: (2013)
   1. अनेक गैर-पश्चिमी देश लोकतंत्र लाने में असफल रहे हैं, क्योंकि वे लोकतंत्र को पश्चिम का विशिष्ट सांस्कृतिक उत्पाद होने के रूप में देखते हैं।
   2. पश्चिमी देश हमेशा गैर-पश्चिमी देशों पर लोकतंत्र अधिरोपित करने का प्रयास करते हैं।

   कौन-सी उपर्युक्त धारणा/धारणाएँ वैध हैं/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

परिच्छेद - 2

निगमित अभिशासन कुछ सिद्धांतों पर आधारित होता है, जैसे कि, समस्त निष्ठा और निष्पक्षता से कारबार का संचालन करना, सभी संव्यवहारों में पारदर्शी होना, सभी आवश्यक प्रकटनों और निर्णयों को करना, देश के सभी कानूनों का अनुपालन करना, पणधारियों के प्रति जवाबदेह और जिम्मेदार होना तथा नैतिक रीति से कारोबार के संचालन की प्रतिबद्धता रखना। निगमित अभिशासन के विषय में जिस दूसरी बात पर विशेष बल दिया गया है, वह है, कम्पनी का प्रबंधन करते समय नियंत्रण करने वालों द्वारा व्यक्तिगत एवम् निगमित निधियों के बीच भेद करने की क्षमता।

मूलत:, जो कम्पनी अच्छे निगमित अभिशासन के लिए जानी जाती है, उसके साथ विश्वास का एक स्तर जुड़ा होता है। बोर्ड में स्वतंत्र निदेशकों के एक सक्रिय समूह का होना बाजार में विश्वास सुनिश्चित करने में बहुत बड़ा योगदान करता है। निगमित अभिशासन को उस एक मानदण्ड के रूप में जाना जाता है, जिस पर विदेशी संस्थागत निवेशक, यह निर्णय करते समय कि किन कम्पनियों में निवेश किया जाए, अधिकाधिक निर्भर होते जा रहे हैं। इसे उस कम्पनी की शेयर कीमतों पर सकारात्मक प्रभाव रखने वाले के रूप में भी जाना जाता है। निगमित अभिशासन के मोरचे पर स्वच्छ छवि का रखना कम्पनियों के लिए अपेक्षाकृत अधिक उचित लागतों पर पूँजी उद्गम करने को भी सुगमतर बना सकता है। दुर्भाग्यवश, निगमित अभिशासन बहुधा किसी बड़े घोटाले के प्रकटन के बाद ही चर्चा के केंद्र में आता है।

3. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा/से, अच्छे निगमित अभिशासन का/के व्यवहार होना/होने चाहिए? (2013)
   1. कम्पनियों को हमेशा देश के श्रम व कर कानूनों का अनुपालन करना चाहिए।
   2. देश की प्रत्येक कम्पनी के बोर्ड में, पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु, स्वतंत्र निदेशकों में से एक, सरकारी प्रतिनिधि होना चाहिए।
   3. कम्पनी के प्रबंधक को अपनी व्यक्तिगत निधियों का कम्पनी में कभी भी निवेश नहीं करना चाहिए।

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

4. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से, अच्छे निगमित अभिशासन का/के प्रमुख लाभ क्या है/हैं? (2013)
   1. अच्छा निगमित अभिशासन कम्पनी की शेयर कीमत में वृद्धि कर देता है।
   2. अच्छा निगमित अभिशासन युक्त कम्पनी हमेशा अपने व्यवसाय आवर्त में तेजी से वृद्धि करती है।
   3. अच्छा निगमित अभिशासन, विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा कम्पनी खरीदने में निर्णय लेने हेतु, प्रमुख मानदण्ड होता है।

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद - 3

कुपोषण छह माह से दो साल की आयु के बीच होना सर्वाधिक आम है। बड़े बच्चे की तुलना में छोटे बच्चे की भोजन की आवश्यकता कम होने के बावजूद ऐसा होता है। बहुधा कुपोषण का कारण गरीबी मानी जाती है, परन्तु यह पाया गया है कि ऐसे परिवारों में भी जहाँ वयस्क पर्याप्त मात्रा में भोजन ग्रहण करते हैं, पाँच वर्ष से कम आयु के 50 प्रतिशत से अधिक बच्चे पर्याप्त आहार नहीं लेते। किसी और द्वारा खाना खिलाने हेतु बच्चे की निर्भरता कुपोषण के लिए प्राथमिक रूप से उत्तरदायी है। बहुधा माँ कामकाजी होती है और छोटे बच्चे को खाना खिलाने की जिम्मेदारी उसके बड़े भाई-बहन पर छोड़ दी जाती है। इसलिए, बच्चे की खाद्य आवश्यकताओं के, और उन्हें कैसे पूरा किया जाए, इसके सम्बन्ध में जागरूकता को बढ़ाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

5. परिच्छेद के अनुसार, बच्चों में कुपोषण कैसे घटाया जा सकता है? (2013)

(a) यदि बच्चे भोजन की नियमित खुराक ग्रहण करें।

(b) जब वे पाँच वर्ष की आयु पूरी कर लें।

(c) यदि छोटे बच्चों की खाद्य आवश्यकताएँ ज्ञात हो।

(d) यदि छोटे बच्चों को भोजन कराने की जिम्मेदारी वयस्कों को दे दी जाए।

6. लेखक के अनुसार, कुपोषण का मुख्य कारण गरीबी नहीं है, बल्कि यह तथ्य कि (2013)

1. छोटे बच्चों की देखरेख करना कामकाजी माताओं की प्राथमिकता नहीं होती।

2. लोक स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा पोषण सम्बन्धी जरूरतों की जानकारी का प्रचार नहीं किया जाता।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 न ही 2

परिच्छेद - 4

अनेक आनुभविक अध्ययनों से पता चलता है कि कृषक जोखिम उठाने के अनिच्छुक होते हैं, यद्यपि अनेक मामलों में ऐसा मामूली रूप से पाया जाता है । यह दर्शाने के भी प्रमाण हैं कि कृषकों की जोखिम उठाने की अनिच्छुकता ऐसे फसल प्रतिरूपों और निविष्टि उपयोग में परिणत होती है, जो आय को अधिकतम करने के स्थान पर जोखिम को कम करने हेतु अभिकल्पित हैं। कृषक, कृषिगत जोखिमों को संभालने और उनका सामना करने के लिए अनेक रणनीतियाँ अपनाते हैं। इनके अंतर्गत, फसल एवं जोतों का विविधीकरण, गैर-कृषि रोजगार, माल का भंडारण एवं परिवार के सदस्यों का रणनीतिक प्रवास, इत्यादि पद्धतियाँ सम्मिलित हैं । बँटाई काश्तकारी से लेकर नातेदारी, विस्तारित परिवार तथा अनौपचारिक ऋण अभिकरण जैसी संस्थाएँ भी हैं। कृषकों द्वारा जोखिम उठाने में एक प्रमुख बाधा यह है कि एक ही प्रकार के जोखिम उस क्षेत्र में बड़ी संख्या में किसानों को प्रभावित कर सकते हैं। आनुभविक अध्ययन यह दिखाते हैं कि परंपरागत तरीके पर्याप्त नहीं हैं। अत: नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक है, विशेषकर ऐसे उपाय जो विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में एकसमान कारगर हों।

नीतियों का उद्देश्य प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कृषिगत जोखिमों का मुकाबला करना हो सकता है । विशेषत: जोखिम को ध्यान में रखकर बनी नीतियों के उदाहरण हैं, फसलों का बीमा, कीमत स्थिरीकरण और ऐसी किस्मों का विकास जिनमें कीटों और बीमारियों के प्रति प्रतिरोधशक्ति हो। सिंचाई, आर्थिक सहायता प्राप्त ऋण एवं सूचना तक पहुँच ऐसी नीतियाँ हैं जो जोखिम को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। विशेषत: जोखिम पर ध्यान देने वाली ऐसी कोई अकेली नीति नहीं है जो इसे घटाने हेतु पर्याप्त हो और जिसके पार्श्व-प्रभाव न हों, जबकि ऐसी नीतियाँ जो विशेष तौर पर जोखिम से सम्बद्ध न हों, सामान्य स्थिति पर प्रभाव डालती हैं एवं जोखिमों को केवल अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। फसल बीमा पर, प्रत्यक्ष रूप से कृषिगत जोखिम को साधने के एक नीतिगत उपाय के रूप में, भारत एवं अन्य अनेक विकासशील देशों के संदर्भ में, सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है - क्योंकि बहुसंख्यक कृषक वर्षा सिंचित कृषि पर निर्भर हैं और अनेक क्षेत्रों में उनकी आय अस्थिरता का मुख्य कारण उपज में अस्थिरता है।

7. कृषि में जोखिम घटाने हेतु नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता इसलिए है, क्योंकि (2013)

(a) कृषक जोखिम उठाने के नितान्त अनिच्छुक होते हैं।

(b) कृषक यह नहीं जानते कि जोखिमों को किस प्रकार घटाया जाए।

(c) कृषकों द्वारा अपनाए गए तरीके और जोखिम में सहभागिता करने वाली वर्तमान संस्थाएँ पर्याप्त नहीं हैं।

(d) बहुसंख्यक कृषक वर्षा सिंचित कृषि पर निर्भर हैं।

8. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित प्रेक्षणों में से कौन-सा उभर कर सामने आता है? (2013)

(a) एक अकेली ऐसी नीति की पहचान की जा सकती है जो बिना किसी पार्श्व-प्रभाव के जोखिम को घटा सके।

(b) विशेषत: जोखिम को लेकर कोई ऐसी अकेली नीति नहीं हो सकती जो कृषिगत जोखिम को घटाने हेतु पर्याप्त हो।

(c) जोखिम को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाली नीतियाँ इसका निराकरण कर सकती हैं।

(d) सरकार का नीतिगत हस्तक्षेप कृषिगत जोखिमों को पूर्ण रूप से कम कर सकता है।

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़िए और आगे आने वाले चार प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर इस परिच्छेद पर ही आधारित होने चाहिए ।

परिच्छेद

पिछले कुछ वर्षों में भारत के वित्तीय बाजारों ने बृहत्तर गहनता और तरलता प्राप्त की है । 1991 से हुए सतत सुधारों ने विश्व अर्थव्यवस्था के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था और इसकी वित्तीय व्यवस्था के अंतर्सम्बन्धों और एकीकरण को आगे बढ़ाया है। इसीलिए अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में दुर्बल विश्व आर्थिक प्रत्याशाओं और अनवरत विद्यमान अनिश्चितताओं ने उभरती हुई बाजार अर्थव्यवस्थाओं पर स्पष्ट प्रभाव डाला है। सार्वभौम जोखिम से जुड़े सरोकारों ने, विशेषकर यूरो क्षेत्र में, ग्रीस की घोर ऋण समस्या की संक्रामकता से प्रभावित होकर, जो कि अस्थिरता के सामान्य से अधिक ऊँचे स्तर के रूप में भारत और अन्य अर्थव्यवस्थाओं में फैल रही है, पूरे वर्ष के बृहत्तर हिस्से में वित्तीय बाजारों को प्रभावित किया है।

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों की निधीयन बाधाएँ बैंकों और निगमों के लिए विदेशी निधीयन की उपलब्धता और लागत दोनों को प्रभावित कर सकती थीं। चूँकि, भारतीय वित्तीय तंत्र में बैंकों का प्रभुत्व है, बैंकों की तनाव को झेल पाने की क्षमता पूरी वित्तीय स्थिरता के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। हालांकि, भारतीय बैंक, हाल के वर्षों में पूँजी से जोखिम भारित परिसंपत्तियों के अनुपात में गिरावट और गैर-निष्पादन पूर्ण परिसंपत्तियों के स्तरों में वृद्धि के बावजूद मजबूत बन रहे हैं । पूँजी पर्याप्तता स्तर नियामक आवश्यकताओं से ऊपर बने हुए हैं । वित्तीय बाजार की आधारिक संरचना बिना किसी बड़ी रुकावट के परिचालित हो रही है । आगे वित्तीय तंत्र का और अधिक विश्वव्यापीकरण, संघटन, विनियंत्रण और विविधीकरण होने पर बैंकिंग कार्य और अधिक जटिल और जोखिमपूर्ण हो सकता है । इस परिप्रेक्ष्य में जोखिम और तरलता के प्रबंधन तथा कुशलता में वृद्धि जैसे मुद्दे और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं।

THE CORE IAS

9. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से किसके कारण हाल के वर्षों में वित्तीय बाजारों ने भारत सहित अन्य उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं पर अपना प्रतिकूल प्रभाव छोड़ा है? (2013)

1. दुर्बल वैश्विक आर्थिक प्रत्याशाएँ ।
2. अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों की अनिश्चितताएँ ।
3. यूरो क्षेत्रों में सार्वभौम जोखिम के सरोकार ।
4. खराब मानसून और फलस्वरूप फसल में हानि ।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1 और 2

(b) 1, 2 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) 2, 3 और 4

THE CORE IAS
DAKSH
PRELIMS MENTORSHIP PROGRAM
A RUN WAY TO MAINS
15th-27th Nov.
Online/Offline
(Hindi / English Medium)
(By: Amit Jain Sir)
011-41008973, 8800141518

THE CORE IAS
ENVIRONMENT & ECOLOGY-2024
(By: Amit Jain Sir)
Online/Offline
(Hindi / English Medium)
011-41008973, 8800141518

10. निम्नलिखित में से प्रमुखत: किसके कारण भारतीय वित्तीय बाजार विश्वव्यापी परिवर्तनों से प्रभावित हो रहे हैं? (2013)
    (a) विदेशों से प्रेषित राशि के बढ़े हुए अंतर्प्रवाह के कारण।
    (b) विदेशी मुद्रा रिजर्व में अत्यधिक वृद्धि के कारण।
    (c) बढ़े हुए विश्व अंतर्संबंधों और भारतीय वित्तीय बाजारों के एकीकरण के कारण।
    (d) ग्रीस की घोर ऋण समस्या के संक्रमण के कारण।

11. परिच्छेद के अनुसार, भारतीय वित्तीय तंत्र में, पूर्ण वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए बैंकों की तनाव झेलने की क्षमता महत्त्वपूर्ण है क्योंकि भारतीय वित्तीय तंत्र (2013)
    (a) भारत सरकार द्वारा नियंत्रित होता है।
    (b) बैंकों के साथ कम एकीकृत है।
    (c) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा नियंत्रित होता है।
    (d) पर बैंकों का प्रभुत्व है।

12. निम्नलिखित में से किसके कारण जोखिम और तरलता के प्रबंधन को भविष्य में भारतीय बैंकिंग तंत्र में अधिक महत्त्व मिल सकता है ? (2013)
    1. और अधिक विश्वव्यापीकरण ।
    2. वित्तीय तंत्र का और अधिक संघटन और विनियंत्रण।
    3. वित्तीय तंत्र का और अधिक विविधीकरण ।
    4. अर्थव्यवस्था में और अधिक वित्तीय समावेशन ।

    नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :
    (a) 1, 2 और 3
    (b) 2, 3 और 4
    (c) केवल 1 और 2
    (d) केवल 3 और 4

THE CORE IAS

निम्नलिखित 2 (दो) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़िए और आगे आने वाले दो प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर इस परिच्छेद पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद

कच्चा खनिज तेल जमीन से एक तीखी गंध के साथ गाढ़े काले या भूरे तरल के रूप में बाहर आता है। यह अनेक विभिन्न पदार्थों का, जिनके प्रत्येक के अपने विशिष्ट गुण हैं, जटिल मिश्रण है। उन पदार्थों में से अधिकांश विभिन्न अनुपातों में हाइड्रोजन और कार्बन के संयोग हैं। इस प्रकार के हाइड्रोकार्बन दूसरे रूपों, जैसे अलकतरा (राल), डामर तथा प्राकृतिक गैस के रूप में भी पाए जाते हैं। खनिज तेल समुद्र में रहने वाले लघु जीवों के मृतशरीरों तथा पौधों से उद्‌गमित होता है। लाखों वर्षों के दौरान, समुद्र तल में मृत जीवों का विशाल ढेर जमा हो जाता है; तथा समुद्री लहरें उन्हें बालू और गाद के आच्छादनों से ढक देती हैं । कड़ा होने के साथ यह खनिज अवसादी शैलों में बदल जाता है और प्रभावी रूप से ऑक्सीजन को बाहर रोक देता है, जिससे तल में इकट्ठा समुद्री जमावों का पूर्ण अपघटन निरुद्ध हो जाता है । अवसादी शैलों की परतें और मोटी तथा भारी हो जाती हैं। उनका दाब ऊष्मा उत्पन्न करता है, जो लघु मृतशरीरों को कच्चे तेल में परिवर्तित कर देता है, एक ऐसी प्रक्रिया के अंतर्गत जो आज भी जारी है।

13. समुद्र तल के खनिज तेल जमाव पूर्णतया अपघटित नहीं हो पाते हैं क्योंकि वे (2013)

(a) समुद्री तरंगों से निरन्तर धुलते जाते हैं।

(b) शैल बन जाते हैं और ऑक्सीजन को उनमें प्रवेश करने से रोक देते हैं।

(c) हाइड्रोजन और कार्बन का मिश्रण समाहित करते हैं ।

(d) लवणीय दशाओं में पड़े रहने वाले जीवों के मृतशरीर हैं।

14. अवसादी शैल तेल जमावों के निर्माण का कारण बनते हैं क्योंकि (2013)

(a) इसके नीचे कोई लवणीय दशाएँ नहीं होतीं ।

(b) ये अपने नीचे जमा मृत जैव पदार्थों में कुछ घुली हुई ऑक्सीजन जाने देते हैं ।

(c) उपरिशायी अवसादी परतों का भार ऊष्मा उत्पादित करता है ।

(d) इनमें ऐसे पदार्थ होते हैं जो मृत जीवों को तेल में परिवर्तित करने हेतु आवश्यक रासायनिक प्रतिक्रियाओं का उत्प्रेरण करते हैं।

निम्नलिखित 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों में से प्रत्येक को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के उपरांत दिए गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

विश्व के अनेक भागों में कानून कृषि-कर्दम (स्लरी) को जलमार्गों में छोड़ने को तेजी से प्रतिबंधित कर रहा है । सबसे सरल एवं प्राय: सबसे किफायती पद्धति पदार्थ को भूमि पर अर्ध- ठोस खाद अथवा छिड़काव योग्य कर्दम (स्लरी) के रूप में वापस कर देने की है । यह पर्यावरण में इसके गाढ़ापन को कम कर, जो एक अधिक आदिम एवं धारणीय प्रकार की कृषि में हो सकता था, प्रदूषक को उर्वरक में परिवर्तित कर देता है। मिट्टी के सूक्ष्मजीव गंदे पानी एवं कर्दम के जैविक संघटकों को अपघटित कर देते हैं और इस प्रकार अधिकतर खनिज पोषक तत्त्व वनस्पति द्वारा पुन: अवशोषित किए जाने हेतु उपलब्ध हो जाते हैं । कृषि-वाहित जल (और मानव मल जल) के माध्यम से नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस दोनों आधार वाले पोषकों के अधिक निवेश ने अनेक श्लाभप्रदश मित-पोषणी झीलों (जिनमें निम्न पोषक सान्द्रण, निम्न पादक उत्पादकता और अधिक जलीय खरपतवार एवं स्वच्छ जल विद्यमान होता है) को सुपोषी दशाओं में बदल दिया है, जहाँ उच्च पोषक निवेश से उच्च पादकप्लवक उत्पादकता (कभी-कभी फुल्लिका निर्मात्री विषैली जातियों की प्रधानता के साथ) परिणामित हुए हैं। इससे जल गंदला हो जाता है, बड़े पादप विलुप्त हो जाते हैं तथा सबसे खराब स्थिति में अनॉक्सिता होकर मछलियों की मृत्यु हो जाती है। यह तथाकथित संवर्धनी सुपोषण है। इस प्रकार वन्य-शिकार मछलियों की संभारण सेवाओं और मनोरंजन से सम्बन्धित सांस्कृतिक सेवाओं समेत, महत्त्वपूर्ण पारितंत्र सेवाएँ समाप्त हो जाती हैं। कुछ समय से, झीलों के संवर्धनी सुपोषण की प्रक्रिया समझी जा रही है। लेकिन वैज्ञानिकों का, महासागरों में नदियों के मुहाने के समीप विशाल श्मृत क्षेत्रों, विशेषकर उत्तरी अमेरिका में मिसीसीपी एवं चीन में यांग्सी जैसे विशाल जलग्रहण क्षेत्रों के अपवाह पर, हाल ही में ध्यान गया है। पोषण तत्त्वों से समृद्ध जल, धाराओं, नदियों और झीलों के माध्यम से प्रवाहित होता है एवं अंतत: मुहानों (एस्चुएरी) एवं महासागर में पहुँचता है जहाँ पारितंत्र प्रभाव बहुत अधिक हो सकता है; वस्तुत: 70,000 वर्ग किलोमीटर तक विस्तृत क्षेत्र में सभी अकशेरुकी एवं मछलियों की मृत्यु हो जाती है । अब सम्पूर्ण विश्व में 150 से अधिक समुद्री क्षेत्र, कृषि-वाहित उर्वरक और बड़े नगरों के मल-जल से विशेषत: नाइट्रोजन से समृद्ध होने से शैवाल पुंजों के अपघटित होने के परिणामस्वरूप लगातार ऑक्सीजन से वंचित हो रहे हैं । महासागरी मृत क्षेत्र औद्योगिक राष्ट्रों से विशेष रूप से सम्बद्ध हैं, तथा ये क्षेत्र प्राय: उन देशों से लगे हुए हैं जो किसानों को उत्पादकता बढ़ाने और अधिक उर्वरक के प्रयोग के लिए उनको कृषि हेतु आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहित करते हैं।

15. परिच्छेद के अनुसार, कृषि-कर्दम को जलमार्गों में छोड़ने पर क्यों प्रतिबन्ध लगाना चाहिए? (2013)

1. इस प्रकार से पोषकों की हानि आर्थिक दृष्टिकोण से अच्छी पद्धति नहीं है।
2. जलमार्गों में वे सूक्ष्मजीव नहीं होते जो कृषि-कर्दम के जैव तत्त्वों को अपघटित कर सकते हैं।
3. जलाशयों में कर्दम छोड़ने से उनके सुपोषण में वृद्धि हो सकती है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

16. परिच्छेद में संदर्भित "प्रदूषक से उर्वरक" में परिवर्तन के प्रसंग में प्रदूषक क्या है और उर्वरक क्या है ? (2013)

(a) कर्दम का अपघटित जैव तत्त्व प्रदूषक होता है और मिट्टी में सूक्ष्मजीव उर्वरक बनाते हैं ।
(b) छोड़ा गया कृषि कर्दम प्रदूषक है और मिट्टी में अपघटित कर्दम उर्वरक है।
(c) छिड़का गया कर्दम प्रदूषक है और जलमार्ग उर्वरक है।
(d) इस सन्दर्भ में उपर्युक्त में से कोई भी अभिव्यक्ति सही नहीं है।

17. परिच्छेद के अनुसार, उर्वरकों के अन्धाधुन्ध प्रयोग के प्रभाव क्या हैं ? (2013)

1. मिट्टी एवं जल में प्रदूषकों की वृद्धि।
2. मिट्टी में अपघटन करने वाले सूक्ष्मजीवों का विनाश।
3. जलाशयों में पोषकों का संवर्धन।
4. शैवाल पुंजों का बनना ।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1, 2 और 3
(b) केवल 1, 3 और 4
(c) केवल 2 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

18. संवर्धनी सुपोषण से युक्त जलाशय विशेषता/विशेषताएँ क्या है/हैं ? (2013)

1. पारिस्थितिक तन्त्र की सेवाओं की हानि
2. वनस्पति और प्राणिजात की हानि
3. खनिज पोषकों की हानि

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

THE CORE IAS

19. इस परिच्छेद में मूल विषय क्या है ? (2013)

(a) पर्यावरण की संरक्षा के लिए समुचित विधि-निर्माण अनिवार्य है।

(b) आधुनिक कृषि पर्यावरण के विनाश के लिए उत्तरदायी है।

(c) कृषि से अनुचित अपशिष्ट निस्तारण, जलीय पारितंत्र को विनष्ट कर सकता है।

(d) कृषि में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग अवांछनीय है।

परिच्छेद - 2

विश्व के दुखों को केवल भौतिक सहायता द्वारा मिटाया नहीं जा सकता । जब तक कि मनुष्य का स्वभाव न बदले, उसकी भौतिक आवश्यकताएँ सदैव बढ़ती रहेंगी, और दुखों को सदा अनुभव किया जाता रहेगा, और भौतिक सहायता की कोई भी मात्रा उन्हें पूर्णत: दूर नहीं कर सकेगी । समस्या का एकमात्र समाधान यह है कि मानव जाति को विशुद्ध बनाया जाए । अज्ञानता बुराई की जननी है, और उन सभी दुखों की भी, जिन्हें हम देखते हैं। मनुष्य को प्रकाश मिले, वे विशुद्ध और आत्मिक रूप से सशक्त एवं शिक्षित हों; केवल तभी दुनिया से दुख कम होंगे। हम देश के प्रत्येक घर को धर्मार्थ-शरणस्थल में बदल सकते हैं, हम धरती को अस्पतालों से भर सकते हैं, परन्तु जब तक मनुष्य का चरित्र परिवर्तित न होगा मानवीय दुख अनवरत बने रहेंगे।

20. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा, मनुष्य के दुखों के कारण के रूप में सर्वाधिक संभावित सत्य है? (2013)

(a) समाज में व्याप्त बुरी आर्थिक और सामाजिक दशाएँ।

(b) मनुष्य का अपना चरित्र परिवर्तित करने से इंकार।

(c) उसके समाज से भौतिक और सांसारिक सहायता की अनुपस्थिति।

(d) परिवर्तनशील सामाजिक संरचना के कारण अनवरत बढ़ती हुई भौतिक आवश्यकताएँ।

21. परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित धारणाएँ बनाई गई हैं : (2013)

1. लेखक मानवीय दुखों के उन्मूलन में भौतिक और सांसारिक सहायता को प्राथमिक महत्त्व देता है।

2. धर्मार्थ आवास, अस्पताल, इत्यादि मानवीय दुखों को एक बड़ी सीमा तक दूर कर सकते हैं।

इन धारणाओं में कौन-सा/से वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 न ही 2

निम्नलिखित 2 (दो) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़िए और आगे आने वाले दो प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर इस परिच्छेद पर ही आधारित होने चाहिए ।

परिच्छेद-3

सदी के आखिरी 25 वर्षों के दौरान किए गए पारिस्थितिक अनुसंधानों ने खनन, राजमार्ग निर्माण और वन प्रदेशों में की जाने वाली ऐसी अन्य अन्तर्वेधी गतिविधियों के कारण हुए आवास खण्डन के हानिकर प्रभावों को सिद्ध किया है । जब जंगलों का एक बड़ा खण्ड और छोटे टुकड़ों में विखण्डित हो जाता है, तो इन सभी टुकड़ों के कोर मानवीय क्रियाकलापों के संपर्क में आ जाते हैं और इसका परिणाम होता है संपूर्ण वन प्रदेश का अपकर्ष। वनाच्छादित भू-प्रदेशों और गलियारों का सातत्य भंग हो

जाता है जिससे वन्य-जीवन की अनेक विलोप प्रवण जातियाँ प्रभावित होती हैं । इस प्रकार जैव-विविधता संरक्षण को सबसे गंभीर खघ्तरा आवास-खण्डन से माना जाता है। खनन कम्पनियों को वन भूमि का तदर्थ अनुदान, साथ ही निरंकुश गैर-कानूनी खनन इस खघ्तरे को और बढ़ा रहे हैं।

22. इस परिच्छेद का केंद्र-बिन्दु क्या है ? (2013)

(a) वनों में गैर-कानूनी खनन

(b) वन्य-जीवन का विलोपन

(c) प्रकृति का संरक्षण

(d) आवास का विघटन

23. वनाच्छादित भू-प्रदेशों तथा गलियारों का सातत्य बनाए रखने का क्या प्रयोजन है? (2013)

1. जैव-विविधता का संरक्षण।
2. खनिज संसाधनों का प्रबंधन।
3. मानवीय क्रियाकलापों के लिए वन भूमि का अनुदान।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1

(b) 1 और 2

(c) 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

2014

निम्नलिखित 5 (पाँच) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के आगे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

हाल के वर्षों में, भारत न केवल खुद अपने अतीत की तुलना में, बल्कि अन्य देशों की तुलना में भी, तेजी से विकसित हुआ है। किन्तु इसमें किसी आत्मसंतोष की गुंजाइश नहीं हो सकती, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए इससे भी अधिक तीव्र विकास करना और इस संवृद्धि के लाभों को, अब तक जितना किया गया है उससे कहीं अधिक व्यापक रूप से, अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाना सम्भव है। उन सूक्ष्म संरचनात्मक परिवर्तनों के प्रकारों के ब्यौरों में जाने से पहले, जिनकी हमें संकल्पना करने और फिर उन्हें कार्यान्वित करने की जरूरत है, समावेशी संवृद्धि के विचार को विस्तार से देखना सार्थक होगा, जो कि इस सरकार की विभिन्न आर्थिक नीतियों और निर्णयों के पीछे एक निरूपक संकल्पना निर्मित करता है । समावेशी संवृद्धि में रुचि रखने वाला राष्ट्र इसी संवृद्धि को एक भिन्न रूप में देखता है जो इस पर आधारित है कि क्या संवृद्धि के लाभों का जनसंख्या के एक छोटे हिस्से पर ही अम्बार लगा दिया गया है या इनमें सभी लोगों की व्यापक रूप से साझेदारी है। अगर संवृद्धि के लाभों में व्यापक रूप से साझेदारी है तो यह खुशी की बात है, पर अगर संवृद्धि के लाभ एक हिस्से पर ही केंद्रित हैं, तो नहीं। दूसरे शब्दों में, संवृद्धि को अपने आप में एक साध्य की तरह नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे सभी तक संपन्नता पहुँचाने के एक साधन के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत के स्वयं के अतीत के अनुभव तथा दूसरे राष्ट्रों के अनुभव भी, यह सुझाते हैं कि संवृद्धि गरीबी के उन्मूलन के लिए आवश्यक तो है परन्तु यह एक पर्याप्त शर्त नहीं है। दूसरे शब्दों में, संवृद्धि को बढ़ाने की नीतियों को ऐसी और नीतियों से सम्पूरित किया जाना आवश्यक है जो यह सुनिश्चित करें कि अधिकाधिक लोग संवृद्धि की प्रक्रिया में शामिल हों, और यह भी, कि ऐसी क्रियाविधियाँ उपलब्ध हों जिनसे कुछ लाभ ऐसे लोगों में पुनर्वितरित किए जाएँ जो बाजार-प्रक्रिया में भागीदार होने में अक्षम हैं और इस कारण पीछे छूट जाते हैं।

समावेशी संवृद्धि के इस विचार को एक अधिक सुस्पष्ट रूप देने का एक सरल तरीका यह है कि किसी राष्ट्र की उन्नति को उसके सबसे गरीब हिस्से, उदाहरणार्थ, जनसंख्या के सबसे निचले 20%, की उन्नति के आधार पर मापा जाए। जनसंख्या के इस सबसे निचले पाँचवें हिस्से की प्रति व्यक्ति आय को मापा जा सकता है और आय की वृद्धि दर की गणना भी की जा सकती है; और सबसे गरीब हिस्से से सम्बन्धित इन मापकों के आधार पर हमारी आर्थिक सफलता का आकलन किया जा सकता है। यह दृष्टि आकर्षक है, क्योंकि यह संवृद्धि की उस तरह उपेक्षा नहीं करती जैसी कि कुछ पहले के परम्पराविरुद्ध मानदण्डों में की जाती थी। यह बस जनसंख्या के सबसे गरीब हिस्से की आय की वृद्धि को ही देखती है । यह इसे भी सुनिश्चित करती है कि ऐसे लोगों की भी उपेक्षा न हो जो इस निचले पाँचवें हिस्से से बाहर हैं। अगर ऐसा हो, तो पूरी सम्भावना है कि वे लोग भी इस निचले पाँचवें हिस्से में आ जाएँ और इस प्रकार अपने आप ही हमारी इन नीतियों का सीधा लक्ष्य बन जाएँ। इस प्रकार यहाँ सुझाए गए मानदण्ड समावेशी संवृद्धि के विचार का सांख्यिकीय समाकलन हैं जो परिणामत: दो उपसिद्धांतों की ओर ले जाते हैं : यह इच्छा करना कि आवश्यक रूप से भारत ऊँची संवृद्धि प्राप्त करने का प्रयास करे और हम इसे सुनिश्चित करने के लिए कार्य करें कि संवृद्धि से सबसे गरीब हिस्से लाभान्वित हों।

1. इस परिच्छेद में, लेखक की दृष्टि का केन्द्रबिन्दु क्या है ? (2014)
   (a) भारत की, न केवल इसके खुद के पूर्व के निष्पादन की तुलना में बल्कि अन्य राष्ट्रों की तुलना में भी, आर्थिक संवृद्धि की प्रशंसा करना।
   (b) आर्थिक संवृद्धि की आवश्यकता पर बल देना, जो देश की सम्पन्नता की एकमात्र निर्धारक है।
   (c) उस समावेशी संवृद्धि पर बल देना, जिसमें जनसंख्या व्यापक रूप से संवृद्धि के लाभों में सहभागी होती है।
   (d) उच्च संवृद्धि पर बल देना।

2. इस परिच्छेद में, लेखक उन नीतियों का समर्थन करता है, जो (2014)
   (a) आर्थिक संवृद्धि को बढ़ाने में सहायक होंगी ।
   (b) आय के बेहतर वितरण में सहायक होंगी, चाहे वृद्धि दर कुछ भी हो।
   (c) आर्थिक संवृद्धि बढ़ाने और आर्थिक उपलब्धियों को उनमें पुनर्वितरित करने में सहायक होंगी, जो पीछे छूट रहे हैं।
   (d) समाज के सबसे गरीब हिस्सों के विकास पर बल देने में सहायक होंगी।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2014)
   लेखक के अनुसार, भारत की अर्थव्यवस्था विकसित हुई है किन्तु यहाँ आत्मसंतोष के लिए कोई गुंजाइश नहीं है, क्योंकि
   1. संवृद्धि से गरीबी का उन्मूलन होता है।
   2. संवृद्धि सभी की सम्पन्नता में परिणमित हुई है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद-2

सरकार के लिए राज्य के स्वामित्व वाली कम्पनियों को प्राय: सहमति और अनदेखी से नियंत्रित करना आसान है। इसलिए पहले कंदम के रूप में वास्तव में यह करने की जरूरत है कि पेट्रोल के कीमत-निर्धारण को एक पारदर्शी सूत्र पर आधारित किया जाए-यदि कच्चे तेल की कीमत x और विनिमय दर y हो, तब हर महीने अथवा पखवाड़े पर, सरकार पेट्रोल की अधिकतम कीमत की घोषणा करे, तो उसे कोई भी व्यक्ति x और y के आधार पर परिकलित कर सकता है। यह सुनिश्चित करने हेतु नियम बनाया जाना चाहिए कि तेल का विपणन करने वाली कम्पनियाँ सामान्य रूप से, अपनी लागतें प्राप्त कर सकें। इसका

तात्पर्य यह है कि यदि कोई कम्पनी नवप्रवर्तनों से अपनी लागतों को कम कर ले, तो वह और अधिक लाभ प्राप्त करेगी। इस प्रकार, इस प्रणाली के अंतर्गत व्यावसायिक प्रतिष्ठान नवप्रवर्तनों की और अधिक प्रवृत्त और दक्ष हो जाएँगे। एक बार नियम की घोषणा हो जाए, तो सरकार की तरफ से फिर कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। यदि कुछ समय के लिए ऐसा कर दिया जाए, तो प्राइवेट कम्पनियाँ इस बाजार में पुनः प्रवेश करेंगी। और जब एक बार उनकी पर्याप्त संख्या बाजार में आ जाए, तो हम नियम-आधारित कीमत- निर्धारण को हटा सकते हैं और इसे वास्तविक रूप में बाजार पर छोड़ा जा सकता है (निश्चित रूप से सामान्य ऐंटि- ट्रस्ट (न्यास - विरोधी) विनियमों व अन्य प्रतिस्पर्धी कानूनों के अधीन रहते हुए)।

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2014)

परिच्छेद के अनुसार, कोई तेल कम्पनी और अधिक लाभ कमा सकती है, यदि पेट्रोल के कीमत निर्धारण हेतु एक पारदर्शी सूत्र प्रति पखवाड़े या माह घोषित किया जाए,

1. इसके विक्रय को बढ़ाकर।
2. नवप्रवर्तनों के द्वारा।
3. लागतों में कमी करके।
4. इसके ईक्विटी शेयरों को ऊँची कीमतों पर बेच कर।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा /से सही है/ हैं ?

(a) केवल 1
(b) 2 और 3
(c) 3 और 4
(d) 1, 2 और 4

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए : (2014)

परिच्छेद के अनुसार, प्राइवेट तेल कम्पनियाँ तेल उत्पादन के बाजार में पुनः प्रवेश करती हैं, यदि

1. एक पारदर्शी नियम-आधारित पेट्रोल का कीमत- निर्धारण अस्तित्व में हो।
2. तेल उत्पादन के बाजार में सरकार का कोई हस्तक्षेप न हो।
3. सरकार द्वारा उपदान दिए जाते हों।
4. ऐंटि- ट्रस्ट (न्यास-विरोधी) के विनियमों को हटा दिया गया हो।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) 1 और 2
(b) 2 और 3
(c) 3 और 4
(d) 2 और 4

निम्नलिखित 6 (छह) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के आगे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

जलवायु परिवर्तन, भारत की कृषि पर संभावित रूप से विध्वंसकारी प्रभाव रखता है। जबकि, जलवायु परिवर्तन के समग्र प्राचल वर्धमानतः स्वीकृत हैं अगले 30 वर्ष में 1°C की औसत ताप वृद्धि, इसी अवधि में 10 cm से कम की समुद्र तल वृद्धि, और क्षेत्रीय मानसून विचरण तथा संगत अनावृष्टि भारत में प्रभाव काफी स्थल एवं फसल विशिष्ट होने संभावित हैं। कुछ फसलें

परिवर्तनशील दशाओं के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया दे सकती हैं, दूसरी नहीं भी दे सकती हैं। इससे कृषि अनुसंधान को प्रोत्साहन देने और प्रणाली में अनुकूलन हो सके इस हेतु, अधिकतम नम्यता बनाने की आवश्यकता पर बल पड़ता है।

"अनावृष्टि रोधन" का मुख्य संघटक अंत: जलस्तर का प्रबंधित पुनर्भरण है। महत्त्वपूर्ण आधारिक फसलों (जैसे, गेहूँ) की लगातार उपज सुनिश्चित करने के लिए, ताप परिवर्तनों तथा जल उपलब्धता को देखते हुए इन फसलों की उगाई वाले स्थानों को बदलना भी आवश्यक हो सकता है। दीर्घावधि निवेश के निर्णय करने में जल उपलब्धता एक मुख्य कारक होगा।

उदाहरण के लिए, अगले 30 वर्षों में जैसे-जैसे हिमनद पिघलते जाते हैं, हिमालय क्षेत्र से जल के बहाव के बढ़ते जाने, और तदनंतर अत्यधिक घटते जाने का पूर्वानुमान किया गया है। कृषि-पारिस्थितिक दशाओं में बड़े पैमाने पर आने वाले इन बदलावों के लिए योजना बनाने हेतु प्रोत्साहन प्रदान करना निर्णायक होगा।

भारत के लिए कृषि अनुसंधान और विकास में दीर्घावधि निवेश करना आवश्यक है। यह संभावित है कि भारत को भविष्य में एक बदले हुए मौसम प्रतिरूप का सामना करना होगा।

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए : (2014)

जलवायु परिवर्तन वर्तमान फसलों के स्थानों में बदलाव लाने के लिए किस कारण से मजबूर करेंगे?

1. हिमनदों का पिघलना
2. दूसरे स्थानों पर जल उपलब्धता और ताप उपयुक्तता
3. फसलों की हीन उत्पादकता
4. सस्य पादपों की अपेक्षाकृत व्यापक अनुकूलता

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं ?

(a) 1, 2 और 3
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

7. इस परिच्छेद के अनुसार, भारत में कृषि अनुसंधान को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण क्यों है? (2014)

(a) मानसून प्रतिरूपों में विचरण का पूर्वानुमान करना और जल संसाधनों का प्रबंधन करना
(b) आर्थिक संवृद्धि के लिए दीर्घावधि निवेश के निर्णय करना
(c) फसलों की व्यापक अनुकूलता को सुकर बनाना
(d) अनावृष्टि दशाओं का पूर्वानुमान करना और अंत: जलस्तरों का पुनर्भरण करना

परिच्छेद - 2

यह परमावश्यक है कि हम ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन घटाएँ और इस तरह आगामी वर्षों और दशकों में होने वाले जलवायु परिवर्तन के कुछ बदतरीन प्रभावों से बचें। उत्सर्जन कम करने के लिए ऊर्जा के उत्पादन और उपभोग के हमारे तरीकों में एक बड़ा बदलाव अपेक्षित होगा। जीवाश्म ईंधनों पर अत्यधिक निर्भरता से हटना अतिविलम्बित है, किन्तु दुर्भाग्य से, प्रौद्योगिकीय विकास धीमा और अपर्याप्त रहा है, मोटे तौर पर इसलिए, कि तेल की अपेक्षाकृत निम्न कीमतों से जन्मी अदूरदर्शिता के कारण सरकारी नीतियाँ अनुसंधान और विकास में निवेश को प्रोत्साहन नहीं देती रही हैं । इसलिए अब राष्ट्रीय अनिवार्यता के रूप में वृहत् पैमाने पर नवीकरणीय ऊर्जा को काम में लाने के अवसर का लाभ उठाना भारत जैसे देश के लिए अत्यावश्यक है। यह देश ऊर्जा के सौर, वायु और जैवमात्रा स्रोतों से अत्यधिक सम्पन्न है। दुर्भाग्य से, जहाँ हम पीछे हैं, वह है इन स्रोतों को काम में लाने के लिए प्रौद्योगिकीय समाधान विकसित और सर्जित करने की हमारी क्षमता।

जलवायु परिवर्तन पर अंत:सरकारी पैनल (IPCC) द्वारा निर्धारित रूप में ग्रीनहाउस गैसों को सख्ती से कम करने के लिए एक विशिष्ट प्रक्षेप पथ स्पष्ट रूप से यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता को दिखाता है कि ग्रीनहाउस गैसों के भूमंडलीय उत्सर्जनों का चरम बिन्दु 2015 को पार न करे और उसके आगे तेजी से घटने लगे । ऐसे प्रक्षेप पथ के साथ संबद्ध लागत वस्तुत: मर्यादित है और इसकी राशि, IPCC के आकलन में, 2030 में विश्व GDP के 3 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी। दूसरे शब्दों में, सम्पन्नता के जिस स्तर पर विश्व बिना उत्सर्जन में कमी लाए पहुँच सकता, खराब से खघ्राब हालत में कुछ मास या अधिक-से-अधिक एक वर्ष तक टल जाएगी। स्पष्टत: यह, जलवायु परिवर्तन से जुड़े बदतरीन खघ्तरों से करोड़ों लोगों को बचाने के लिए चुकाई जाने वाली कोई बहुत बड़ी कीमत नहीं है । तथापि, ऐसे किसी प्रयास के लिए जीवन-शैलियों को भी उपयुक्त रूप से बदलना होगा। ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाना सिर्फ एक प्रौद्योगिकीय उपाय भर नहीं है, और इसके लिए स्पष्टत: जीवन - शैलियों में बदलाव और देश की आर्थिक संरचना में रूपांतरण अपेक्षित है, जिसके द्वारा, उत्सर्जन को प्रभावी रूप से कम किया जाए, जैसे कि जीव प्रोटीन के काफी कम मात्राओं में उपभोग के माध्यम से । खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने यह निर्धारित किया है कि पशुधन क्षेत्रक से उत्सर्जन कुल उत्सर्जन का 18 प्रतिशत होता है। इस स्रोत से हो रहे उत्सर्जन में कमी लाना पूरी तरह मनुष्यों के हाथ में है, जिन्होंने अपनी अधिक-से-अधिक जीव प्रोटीन के उपभोग की आहार-आदतों के कारण पड़ने वाले प्रभाव पर कभी कोई प्रश्न नहीं उठाया । वस्तुत: उत्सर्जन में कमी लाने के विशाल सह-सुलाभ हैं, जैसे अपेक्षाकृत कम वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी लाभ, उच्चतर ऊर्जा सुनिश्चितता तथा और अधिक रोजगार।

8. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने में सहायक होंगे? (2014)
   1. माँस के उपभोग में कमी लाना
   2. तीव्र आर्थिक उदारीकरण
   3. उपभोक्तावाद में कमी लाना
   4. पशुधन की आधुनिक प्रबंधन प्रक्रियाएँ

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

   (a) 1, 2 और 3 (b) 2, 3 और 4
   (c) केवल 1 और 3 (d) केवल 2 और 4

9. हम जीवाश्म ईंधनों पर अत्यधिक निर्भर क्यों बने हुए हैं? (2014)
   1. अपर्याप्त प्रौद्योगिकीय विकास
   2. अनुसंधान और विकास के लिए अपर्याप्त निधियाँ
   3. ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की अपर्याप्त उपलब्धता

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

   (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

10. परिच्छेद के अनुसार, ग्रीनहाउस गैसों में कमी लाना हमारे लिए किस तरह सहायक है? (2014)
    1. इससे लोक स्वास्थ्य पर व्यय घटता है
    2. इससे पशुधन पर निर्भरता घटती है
    3. इससे ऊर्जा आवश्यकताएँ घटती हैं
    4. इससे भूमंडलीय जलवायु परिवर्तन की दर घटती है

    नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

    (a) 1, 2 और 3 (b) 1, 3 और 4
    (c) 2, 3 और 4 (d) केवल 1 और 4

11. इस परिच्छेद का सारभूत संदेश क्या है ? (2014)

(a) हम जीवाश्म ईंधनों पर अत्यधिक निर्भर बने हुए हैं

(b) ग्रीनहाउस गैसों में कमी लाना अत्यावश्यक है

(c) हमें अनुसंधान और विकास में निवेश करना ही चाहिए

(d) लोगों को अपनी जीवन शैली बदलनी ही चाहिए

निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के आगे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

हिमालय का पारितंत्र भूवैज्ञानिक कारणों और जनसंख्या के बढ़े हुए बोझ, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और अन्य सम्बन्धित चुनौतियों से जन्य दबाव के कारण, क्षति के प्रति अत्यंत सुभेद्य है। सुभेद्यता के ये पहलू जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण उत्तेजित हो सकते हैं। यह सम्भव है कि जलवायु परिवर्तन हिमालय के पारितंत्र पर, बढ़े हुए तापमान, परिवर्तित वर्षण प्रतिरूप, अनावृष्टि की घटनाओं और जीवीय प्रभावों के माध्यम से, प्रतिकूल प्रभाव डाले। यह न केवल उच्चभूमियों में रहने वाले देशज समुदायों के पूरे निर्वाह पर, बल्कि सारे देश में और उसके परे अनुप्रवाह क्षेत्र में रहने वाले निवासियों के जीवन पर भी असर डालेगा। इसलिए, हिमालय के पारितंत्र की धारणीयता बनाए रखने के लिए विशेष ध्यान देने की तत्काल आवश्यकता है। इसके लिए सभी निरूपक प्रणालियों के संरक्षण के लिए सचेत प्रयत्न करने की आवश्यकता होगी।

आगे, इस पर बल देने की आवश्यकता है कि सीमित व्याप्ति वाले, और बहुधा विशेषीकृत आवासीय आवश्यकताओं. वाले विशेषक्षेत्री घटक सर्वाधिक सुभेद्य घटकों में से हैं । इस संदर्भ में, हिमालय का जैवविविधता वाला तप्तस्थल, जो विशेषक्षेत्री विविधता से संपन्न है, जलवायु परिवर्तन के प्रति सुभेद्य है। इसके खघ्तरों में, आनुवंशिक संसाधनों और जातियों, आवासों का सम्भावित क्षय और सहगामी रूप से, पारितंत्र के लाभों में कमी का आना शामिल है। इसलिए, इस क्षेत्र के लिए संरक्षण योजनाएँ बनाते समय, निरूपक पारितंत्रों / आवासों में विशेषक्षेत्री घटकों के संरक्षण का अत्यंत महत्त्व हो जाता है।

उपर्युक्त को हासिल करने की दिशा में, हमें समकालीन संरक्षण उपागमों की ओर ध्यान अंतरित करना होगा, जिसमें संरक्षित क्षेत्र-प्रणालियों के बीच दृश्यभूमि स्तर की अंतर्संयोजकता का प्रतिमान शामिल है। यह संकल्पना, जाति आवास पर ध्यान केंद्रित करने की जगह जैवभौगोलिक परास को विस्तारित करने पर समावेशी ध्यान-संकेंद्रण करने का पक्षसमर्थन करती है, ताकि जलवायु परिवर्तन के प्राकृतिक समंजन सीमित हुए बिना आगे बढ़ सकें।

12. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए : (2014)

परिच्छेद के अनुसार, पारितंत्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावस्वरूप

1. इसके वनस्पतिजात और प्राणिजात में से कुछ का स्थायी विलोपन हो सकता है।
2. स्वयं पारितंत्र का स्थायी विलोपन हो सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/ है?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

13. निम्नलिखित में से किस एक कथन का सबसे सटीक निहितार्थ यह है कि समकालीन संरक्षण उपागम की ओर ध्यान अंतरित करने की आवश्यकता है? (2014)

(a) प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हिमालय के पारितंत्र पर दबाव डालता है।

(b) जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षण प्रतिरूपों में बदलाव, अनावृष्टि की घटनाएँ और जीवीय हस्तक्षेप होता है।

(c) समृद्ध जैवविविधता, जिसमें विशेषक्षेत्री विविधता शामिल है, हिमालय क्षेत्र को एक जैवविविधता तप्तस्थल बनाता है।

(d) हिमालय के जैवभौगोलिक क्षेत्र को इस तरह समर्थ बनाना चाहिए कि वह अबाध रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल बनता रहे।

14. इस परिच्छेद द्वारा क्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संदेश दिया गया है? (2014)

(a) विशेषक्षेत्रीयता हिमालयी क्षेत्र की लाक्षणिक विशेषता है।

(b) संरक्षण प्रयासों का बल कतिपय जातियों या आवासों के स्थान पर जैवभौगोलिक परासों पर होना चाहिए।

(c) जलवायु परिवर्तन का हिमालय के पारितंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव हुआ है।

(d) हिमालय के पारितंत्र के अभाव में, उच्चभूमियों और अनुप्रवाह क्षेत्रों के समुदायों के जीवन का कोई धारण-आधार नहीं होगा।

15. परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2014)

1. प्राकृतिक पारितंत्र बनाए रखने के लिए, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का पूरी तरह परिहार किया जाना चाहिए।
2. पारितंत्र को, न केवल मानवोद्भविक, बल्कि प्राकृतिक कारण भी प्रतिकूलत: प्रभावित कर सकते हैं।
3. विशेषक्षेत्री विविधता के क्षय से पारितंत्र का विलोपन होता है।

उपर्युक्त धारणाओं में से कौन-सी सही है/हैं?

(a) 1 और 2

(b) केवल 2

(c) 2 और 3

(d) केवल 3

परिच्छेद-2

यह अक्सर भुला दिया जाता है कि विश्वव्यापीकरण केवल अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों और लेन-देन संबंधी नीतियों के बारे में ही नहीं है, बल्कि इसका सरोकार समान रूप से राष्ट्र की घरेलू नीतियों से भी है । अंतर्राष्ट्रीय रूप से (WTO आदि द्वारा) मुक्त व्यापार और निवेश प्रवाह संबंधी नियत दशाओं को पूरा करने हेतु किए गए आवश्यक नीतिगत परिवर्तन प्रत्यक्षत: घरेलू उत्पादकों तथा निवेशकों को प्रभावित करते हैं। किन्तु विश्वव्यापीकरण में अध:शायी आधारभूत दर्शन कीमतों, उत्पादन तथा वितरण प्रतिरूप के निर्धारण के लिए बाजारों की अबाध स्वतंत्रता पर बल देता है, तथा सरकारी हस्तक्षेपों को उन प्रक्रियाओं के रूप में देखता है जो विकृति उत्पन्न करती हैं तथा अदक्षता लाती हैं। अत: सार्वजनिक उद्यमों का विनिवेशों तथा विक्रयों द्वारा निजीकरण हो; और अभी तक जो क्षेत्र और कार्यकलाप सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित हैं, आवश्यक है कि उन्हें प्राइवेट क्षेत्र के लिए खोल दिया जाए। इस तर्क का विस्तार शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी सामाजिक सेवाओं तक है। कामगारों की छँटनी के माध्यम से श्रम बल का समायोजन करने पर लगे प्रतिबंध हटा लिए जाने चाहिए तथा तालाबंदी पर लगे प्रतिबंधों को हटाकर निर्गमन को अपेक्षाकृत आसान बनाया जाना चाहिए। रोजगार तथा वेतन बाजार शक्तियों की स्वतंत्र गतिविधियों द्वारा शासित होना चाहिए, क्योंकि उनको नियंत्रित करने में कोई भी उपाय निवेश को हतोत्साहित कर सकते हैं तथा उत्पादन में अदक्षता भी उत्पन्न कर सकते हैं । सर्वोपरि रूप से, राज्य की भूमिका में कमी लाने के समग्र दर्शन के अनुरूप, ऐसे राजकोषीय सुधार किए जाने चाहिए जिनसे आमतौर पर कराधान के स्तर निम्न हों तथा वित्तीय विवेक के सिद्धांत के पालन हेतु शासकीय खर्च न्यूनतम हो। ये सब घरेलू स्तर पर किए जाने वाले नीतिगत कार्य हैं तथा विश्वव्यापीकरण कार्यसूची के सारभाग विषयों, यथा, माल और वित्त के स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह से प्रत्यक्षत: संबंधित नहीं हैं।

16. इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वव्यापीकरण के अंतर्गत सरकारी हस्तक्षेपों को ऐसी प्रक्रियाओं के रूप में देखा जाता है, जिनके कारण (2014)
    (a) अर्थव्यवस्था में विकृतियाँ और अदक्षता आती है।
    (b) संसाधनों का इष्टतम उपयोग होता है।
    (c) उद्योगों को अपेक्षाकृत अधिक लाभप्रदता होती है।
    (d) उद्योगों के संबंध में बाजार शक्तियों की गतिविधि स्वतंत्र होती है।

17. इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वव्यापीकरण का आधारभूत दर्शन क्या है? (2014)
    (a) कीमतों और उत्पादन के निर्धारण के लिए उत्पादकों को पूर्ण स्वतंत्रता देना
    (b) वितरण प्रतिरूप विकसित करने हेतु उत्पादकों को स्वतंत्रता देना
    (c) कीमतों, उत्पादन और रोजगार के निर्धारण हेतु बाजारों को पूर्ण स्वतंत्रता देना
    (d) आयात और निर्यात के लिए उत्पादकों को स्वतंत्रता देना

18. इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वव्यापीकरण सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा / से आवश्यक है/हैं? (2014)
    1. सार्वजनिक उद्यमों का निजीकरण
    2. सार्वजनिक व्यय की विस्तार - नीति
    3. वेतन और रोजगार निर्धारित करने की बाजार शक्तियों की स्वतंत्र गतिविधि
    4. शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सामाजिक सेवाओं का निजीकरण

    नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए
    (a) केवल 1
    (b) केवल 2 और 3
    (c) 1, 3 और 4
    (d) 2, 3 और 4

19. इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वव्यापीकरण की प्रक्रिया में राज्य की भूमिका कैसी होनी चाहिए? (2014)
    (a) विस्तृत होती हुई
    (b) घटती हुई
    (c) सांविधिक
    (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

THE CORE IAS

निम्नलिखित 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के आगे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

अनेक राष्ट्र अब पूँजीवाद में विश्वास रखते हैं तथा सरकारें अपने लोगों के लिए सम्पत्ति सर्जित करने की रणनीति के रूप में इसे चुनती हैं। ब्राजील, चीन और भारत में उनकी अर्थव्यवस्थाओं के उदारीकरण के पश्चात् देखी गई भव्य आर्थिक संवृद्धि इसकी विशाल सम्भाव्यता और सफलता का प्रमाण है। तथापि, विश्वव्यापी बैंकिंग संकट तथा आर्थिक मंदी कइयों के लिए विस्मयकारी रहा है। चर्चाओं का केंद्रबिन्दु मुक्त बाजार संक्रियाओं और बलों, उनकी दक्षता और स्वयं सुधार करने की उनकी योग्यता की ओर हुआ है। विश्वव्यापी बैंकिंग प्रणाली की असफलता को दर्शाने हेतु न्याय, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के मुद्दों का वर्णन विरले ही किया जाता है। इस प्रणाली के समर्थक पूँजीवाद की सफलता का औचित्य ठहराते ही जाते हैं और उनका तर्क है कि वर्तमान संकट एक धक्का था।

उनके तर्क उनके विचारधारागत पूर्वग्रह को इस पूर्वधारणा के साथ प्रकट करते हैं कि अनियंत्रित बाजार न्यायोचित तथा समर्थ होता है, और निजी लालच का व्यवहार वृहत्तर लोकहित में होगा।

कुछ लोग पूँजीवाद और लालच के बीच द्विदिशिक सम्बन्ध होने की पहचान करते हैं; कि दोनों एक-दूसरे को परिपुष्ट करते हैं। निश्चित रूप से, इस व्यवस्था से लाभ पाने वाले धनाढ्य और सशक्त खिलाड़ियों के बीच हितों के टकराव, उनके झुकाव और विचारधाराओं के अपेक्षाकृत अधिक ईमानदार सम्प्रत्ययीकरण की आवश्यकता है; साथ ही सम्पत्ति सर्जन को केंद्रबिन्दु में रखने के साथ उसके परिणामस्वरूप जनित सकल असमानता को भी दर्शाया जाना चाहिए।

20. इस परिच्छेद के अनुसार, "मुक्त बाजार व्यवस्था" के समर्थक किसमें विश्वास करते हैं ? (2014)
(a) सरकारी प्राधिकारियों के नियंत्रण से रहित बाजार
(b) सरकारी संरक्षण से मुक्त बाजार
(c) बाजार की स्वयं के सुधार की क्षमता
(d) नि:शुल्क वस्तुओं व सेवाओं के लिए बाजार

21. "विचारधारागत पूर्वग्रह" के संदर्भ में, इस परिच्छेद का निहितार्थ क्या है ? (2014)
(a) मुक्त बाजार न्यायोचित होता है किंतु सक्षम नहीं
(b) मुक्त बाजार न्यायोचित नहीं होता किंतु सक्षम होता है
(c) मुक्त बाजार न्यायोचित और सक्षम होता है
(d) मुक्त बाजार न तो न्यायोचित होता है, न ही पूर्वग्रहयुक्त

22. इस परिच्छेद से "निजी लालंच का व्यवहार वृहत्तर लोकहित में होगा", (2014)
1. पूँजीवाद की झूठी विचारधारा को निर्दिष्ट करता है।
2. मुक्त बाजार के न्यायसंगत दावों को स्वीकार करता है।
3. पूँजीवाद के सद्भावपूर्ण चेहरे को दिखाता है।
4. परिणामी सकल असमानता की उपेक्षा करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं ?
(a) केवल 1
(b) 2 और 3
(c) 1 और 4
(d) केवल 4

परिच्छेद - 2

केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के निवल लाभ उनकी कुल परिसम्पत्तियों का मात्र 2.2% है, जो प्राइवेट निगम क्षेत्रक की तुलना में कम है। भले ही सार्वजनिक क्षेत्रक या राज्य-संचालित उद्यमवृत्ति ने भारत के औद्योगीकरण को प्रेरित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, तथापि, हमारी बढ़ती हुई विकास आवश्यकताएँ, सार्वजनिक क्षेत्रक उद्यमों के संतोषजनक से अपेक्षाकृत न्यून निष्पादन, हमारे प्राइवेट क्षेत्रक में आई परिपक्वता, उद्यमवृत्ति के प्रसार हेतु इस समय उपलब्ध कहीं अधिक व्यापक सामाजिक आधार और प्रतियोगिता नीतियों को लागू कर सकने के बढ़ते हुए सांस्थानिक सामर्थ्य यह सुझाते हैं कि सार्वजनिक क्षेत्रक की भूमिका के पुनरवलोकन का समय आ गया है।

सरकार का संविभाग-संघटन कैसा होना चाहिए? इसे सारे समय स्थिर नहीं बने रहना चाहिए । विमानन उद्योग पूर्णत: प्राइवेट मामलों की तरह भली-भाँति कार्य करता है। दूसरी तरफ, ग्रामीण सड़कों को, जिनका छुटपुट यातायात पथकर व्यवस्था को अव्यवहार्य बना देता है, राज्य के तुलन-पत्र पर होना चाहिए । यदि ग्रामीण सड़कें सरकार के स्वामित्व में न हों, तो उनका

अस्तित्व ही न रहेगा। उसी तरह, हमारे कसबों और नगरों में लोक स्वास्थ्य पूँजी का सार्वजनिक क्षेत्रक से आना जरूरी है। इसी प्रकार, वनाच्छादन के संरक्षण और संवर्धन को सार्वजनिक क्षेत्रक परिसम्पत्तियों की एक नई प्राथमिकता के रूप में होना चाहिए। इस्पात का ही उदाहरण लें। लगभग शून्य प्रशुल्क के साथ, भारत इस धातु के लिए एक सार्वभौम प्रतियोगी बाजार है। भारतीय व्यापार प्रतिष्ठान विश्व बाजार में इस्पात का निर्यात करते हैं, जिससे यह निदर्शित होता है कि प्रौद्योगिकी में कोई अंतराल नहीं है। भारतीय कम्पनियाँ विश्व की इस्पात कम्पनियों को खरीद रही हैं, जो यह दिखाता है कि पूँजी उपलब्धता में कोई अंतराल नहीं है। इन दशाओं में, प्राइवेट स्वामित्व उत्कृष्ट कार्य करता है।

विनियमित उद्योगों में, वित्त से लेकर आधारिक संरचना तक, प्राइवेट स्वामित्व साफ तौर पर वांछनीय है, जहाँ सरकारी अभिकरण विनियमन का कार्य निष्पन्न करे और बहुल प्रतियोगी व्यापार प्रतिष्ठान प्राइवेट क्षेत्रक में अवस्थित हों। यहाँ, सरल और स्पष्ट समाधान है सरकार का खेलपंच (अम्पायर) की तरह होना और प्राइवेट क्षेत्रक का खिलाड़ियों की तरह होना ही सबसे अच्छी तरह कार्य करता है । इनमें से अनेक उद्योगों में, सरकारी स्वामित्व की विरासत है, जहाँ उत्पादकता की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम रहने की ओर है, दिवालियेपन का भय मौजूद नहीं है, और करदाताओं से धन की माँग का जोखध्मि हमेशा बना हुआ है। इसमें सरकार के स्वामी होने और नियामक होने के बीच एक हित द्वन्द्व भी बना रहता है। यदि सरकारी कम्पनियाँ कार्यरत न हों, तो प्रतियोगिता नीति की रचना और कार्यान्वयन और भी सशक्त और निष्पक्ष होगा।

23. इस परिच्छेद के अनुसार, यह कहने का / के क्या कारण है/हैं कि सार्वजनिक क्षेत्रक की भूमिका के पुनरवलोकन का समय आ गया है? (2014)

1. औद्योगीकरण प्रक्रिया में अब सार्वजनिक क्षेत्रक ने अपनी प्रासंगिकता खो दी है।
2. सार्वजनिक क्षेत्रक संतोषजनक ढंग से निष्पादन नहीं करता।
3. प्राइवेट क्षेत्रक में उद्यमवृत्ति बढ़ रही है।
4. अब प्रभावकारी प्रतियोगी नीतियाँ उपलब्ध हैं।

दिए गए संदर्भ में, उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 2
(c) केवल 2, 3 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

THE CORE IAS

24. इस परिच्छेद के अनुसार, ग्रामीण सड़कों को सार्वजनिक क्षेत्रक के दायरे में ही होना चाहिए। क्यों? (2014)

(a) ग्रामीण विकास कार्य केवल सरकार का अधिकार क्षेत्र है।
(b) इसमें निजी क्षेत्रक को धन लाभ नहीं हो सकता।
(c) सरकार कर दाताओं से धन लेती है, अतः यह सरकार का ही दायित्व है।
(d) प्राइवेट क्षेत्रक की कोई सामाजिक जिम्मेदारी होना आवश्यक नहीं है।

25. सरकार का संविभाग-संघटन किसे निर्दिष्ट करता है? (2014)

(a) सार्वजनिक क्षेत्रक की परिसंपत्ति गुणता
(b) तरल परिसंपत्तियों में निवेश
(c) विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रकों में सरकारी निवेश का मिश्रण
(d) निवेश पर प्रतिफल देने वाली पूँजी परिसंपत्तियों का क्रय

26. लेखक सरकार को खेलपंच (अम्पायर) की तरह और प्राइवेट क्षेत्रक को खिलाड़ियों की तरह होना पसंद करता है, क्योंकि (2014)

(a) सरकार प्राइवेट क्षेत्रक के निष्पक्ष कार्य के लिए मानदण्ड विहित करती है।

(b) नीति की रचना के लिए सरकार ही अंतिम सत्ता है।

(c) सरकार का प्राइवेट क्षेत्रक में कार्य करने वालों पर कोई नियंत्रण नहीं होता।

(d) इस संदर्भ में उपर्युक्त कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

2015

निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित छह परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए ।

परिच्छेद - 1

मानव इतिहास ऐसे दावों और सिद्धान्तों से भरा पड़ा है, जो शासन करने का अधिकार केवल कुछ चुनिंदा नागरिकों तक सीमित करते हैं। अधिकांश लोगों को इसमें शामिल न करना इस आधार पर न्यायोचित ठहराया गया है कि मानव को, समाज की भलाई और राजनीतिक प्रक्रिया की व्यवहार्यता के लिए, न्यायसंगत रूप से पृथक्कृत किया जा सकता है।

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद में युक्ति (आर्ग्युमेंट) के एक अंश के रूप में न्यूनतम आवश्यक है? (2015)

(a) मानव, उसे प्रभावित करने वाली बाह्य वस्तुओं पर नियंत्रण पाने का प्रयास करता है ।

(b) समाज में, 'अधिमानव (सुपरह्यूमन)' और 'अवमानव (सबह्यूमन)' होते हैं ।

(c) सर्वजनीन नागरिक भागीदारी में अपवाद, पूरे तंत्र की क्षमता के लिए सहायक हैं।

(d) शासन करने में यह मान्यता निहित है कि अलग-अलग व्यक्तियों की क्षमताओं में असमानताएँ होती हैं।

परिच्छेद-2

वर्ष 2050 तक, पृथ्वी पर जनसंख्या संभावित रूप से सात अरब (बिलियन) से बढ़ कर नौ अरब हो चुकी होगी । उन सबका पेट भरने के लिए उपभोग के बदलते हुए प्रतिरूपों, जलवायु परिवर्तन, और कृषि योग्य भूमि तथा पेय जल की सीमित मात्रा को ध्यान में रखते हुए कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि खाद्य उत्पादन दुगुना करना पड़ेगा । हम इसे किस प्रकार उपलब्ध कर सकते हैं ? विशेषज्ञ कहते हैं कि अपेक्षाकृत अधिक उपज देने वाली फसलों की किस्में तथा कृषि के अपेक्षाकृत अधिक कुशल तरीके निर्णायक होंगे । इसी प्रकार संसाधनों को कम-से-कम व्यर्थ जाने देना भी निर्णायक होगा। विशेषज्ञों का आग्रह है कि नगरों की अपशिष्ट जलधाराओं (बेस्ट स्ट्रीम्स) से पोषक तत्त्वों और जल को पुनः प्राप्त किया जाए, एवम् कृषि भूमि का संरक्षण करें। वे कहते हैं कि निर्धन राष्ट्र अपने फसल भंडारण एवं पैकेजिंग में सुधार कर सकते हैं और समृद्ध राष्ट्र मांस जैसे संसाधन-सघन (रिसोर्स- इन्टेन्सिव) खाद्यों में कटौती कर सकते हैं।

2. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वोत्तम सारांश रूप प्रस्तुत करता है? (2015)

(a) विश्व की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है।

(b) खाद्य सुरक्षा केवल विकासशील देशों में ही एक चिरस्थायी समस्या है।

(c) खाद्य के सन्निकट अभाव को पूरा करने के लिए विश्व के पास पर्याप्त संसाधन नहीं हैं।

(d) खाद्य सुरक्षा एक लगातार बढ़ती हुई सामूहिक चुनौती है।

परिच्छेद-3

भारत में अनेक लोगों का यह विचार है कि यदि हम शस्त्र-निर्माण पर अपने रक्षा व्यय को कम कर दें, तब हम अपने पड़ोसियों के साथ शांति का वातावरण बना सकते हैं, जिससे उत्तरोत्तर संघर्ष कम होगा अथवा युद्ध-मुक्त स्थिति बनेगी । जो लोग इस प्रकार के विचार घोषित करते हैं, वे या तो युद्ध पीड़ित हैं अथवा मिथ्या तर्क फैलाने वाले हैं।

3. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सी एक सर्वाधिक वैध पूर्वधारणा (अजम्प्शन) है? (2015)

(a) हमारे शस्त्र - प्रणालियों के निर्माण से हमारे पड़ोसी हमारे विरुद्ध युद्ध के लिए उत्तेजित हुए हैं।

(b) हम शस्त्र निर्माण पर जितना अधिक व्यय करेंगे, हमारे पड़ोसियों के साथ सशस्त्र संघर्ष की संभावना उतनी ही कम होगी।

(c) राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि हमारे पास अत्याधुनिक शस्त्र-प्रणालियाँ हों।

(d) भारत में अनेक लोगों का विश्वास है कि हम शस्त्र निर्माण में अपने संसाधनों का अपव्यय कर रहे हैं।

परिच्छेद - 4

विश्व की बाल मृत्यु में लगभग पाँचवाँ भाग भारत का है। संख्या के आधार पर, यह दुनिया में सर्वाधिक बाल मृत्यु है लगभग 16 लाख प्रति वर्ष । इनमें से, आधे से अधिक की जीवन के प्रथम मास में ही मृत्यु हो जाती है। जैसा कि अधिकारियों का विश्वास है, इसका कारण यह है कि स्तनपान और और प्रतिरक्षीकरण (इम्यूनाइजेशन) से संबंधित आधारभूत स्वास्थ्य आचरणों के प्रसार के लिए कदम नहीं उठाए गए हैं। साथ ही, 2.6 करोड़ की विशाल गर्भधारण योग्य जनसंख्या गर्भावस्था तथा प्रसव-पश्चात् के संकटपूर्ण समय के दौरान देखभाल से वंचित भी बनी रहती है। इसमें बाल विवाहों का प्रचलन, युवतियों में अरक्तता (अनीमिया) तथा किशोरावस्था की स्वच्छता पर विशेष ध्यान न होना भी शामिल हैं, जो सभी बाल मृत्यु दरों को प्रभावित करते हैं।

4. उपर्युक्त परिच्छेद से, कौन-सा निर्णायक अनुमान (इनफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2015)

(a) बहुत से भारतीय निरक्षर हैं इसलिए आधारभूत स्वास्थ्य आचरणों का मूल्य नहीं पहचानते हैं।

(b) भारत की जनसंख्या अति विशाल है और केवल सरकार ही लोक स्वास्थ्य सेवाओं का प्रबंधन नहीं कर सकती।

(c) मातृ स्वास्थ्य तथा बाल स्वास्थ्य सेवाओं को एकीकृत करने और सबको सुलभ कराने से इस समस्या को प्रभावी रूप से हल किया जा सकता।

(d) गर्भधारण - योग्य महिलाओं का पोषण बाल मृत्यु दर को प्रभावित नहीं करता।

THE CORE IAS

परिच्छेद - 5

खाद्य पदार्थ, उनको खाने वाले मनुष्यों की अपेक्षा, अधिक यात्रा करते हैं। किराना भण्डार और सुपर बाजार परिरक्षित (प्रिजर्ड) और प्रसंस्कृत (प्रॉसेस्ड) खाद्य पदार्थों से भरे पड़े हैं। तथापि, प्रायः उससे पर्यावरणीय खष्तरे भी बढ़ते हैं, जैसे लम्बी दूरी तक खाद्य पदार्थों के परिवहन से होने वाला प्रदूषण तथा प्रसंस्करण एवं परिवहन के दौरान खाद्य पदार्थ का व्यर्थ जाना, वर्षा प्रचुर वनों का विनाश, पोषक अंश में कमी, परिरक्षण और पैकेजिंग की बढ़ी हुई माँग । खाद्य असुरक्षा भी बढ़ जाती है क्योंकि ये उत्पाद उन क्षेत्रों से आते हैं जो अपनी जनसंख्या को उपयुक्त खाद्य पदार्थ नहीं खिला पाते।

5. उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (2015)

1. क्षेत्रीय रूप से उगाए गए खाद्य पदार्थों का उपभोग करना और लंबी यात्रा से लाए गए खाद्य पदार्थों पर निर्भर न होना पर्यावरण अनुकूली व्यवहार का एक हिस्सा है।
2. खाद्य प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) उद्योग हमारे प्राकृतिक संसाधनों (रिसोर्सेज) पर बोझ डालता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद - 6

मैं पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि मेरे स्वाभाविक शर्मीलेपन के कारण, सिवाय यदा-कदा हास्य का पात्र बन जाने के, मेरा किसी भी तरह और कोई नुकसान नहीं हुआ। वास्तव में, आज मुझे लगता है, कि इसके विपरीत, मुझे कुछ फायदा ही हुआ। बोलने का जो संकोच मुझे पहले कष्टकर था, वह अब सुखकर है। इसका सबसे बड़ा लाभ तो यह हुआ कि इसने मुझे शब्दों की मितव्ययिता सिखाई। मुझे अपने विचारों पर काबू रखने की आदत सहज ही पड़ गई। और अब मैं खुद को यह प्रमाण-पत्र दे सकता हूँ कि मेरी जीभ या कलम से बिना विचारे शायद ही कोई शब्द निकलता हो। मुझे याद नहीं पड़ता कि अपने भाषण या लेख के किसी अंश के लिए मुझे कभी पछताना पड़ा हो। इस तरह मैं अनेक खघ्तरों से बचा हूँ और मेरा बहुत - सा समय बचा है द्य अनुभव ने मुझे यह सिखाया है कि सत्य के उपासक के लिए मौन उसके आध्यात्मिक अनुशासन का अंग है। मनुष्य की यह स्वाभाविक कमजोरी है कि वह जाने-अनजाने में अक्सर बढ़ा-चढ़ा कर बोलता है अथवा जो कहने योग्य है उसे छिपाता है या भिन्न रूप में कहता है। इस पर विजय पाने के लिए भी मौन आवश्यक है। कम बोलने वाला बिना विचारे न बोलेगा; अपने प्रत्येक शब्द को तौलेगा। हम देखते हैं कि बहुत से मनुष्य बोलने के लिए आतुर रहते हैं। किसी बैठक का ऐसा कोई सभापति न होगा जिसे बोलने की अनुमति माँगने वाली चिटों से परेशान न होना पड़ा हो। और जब भी बोलने का समय दिया जाता है तो वक्ता आमतौर पर समय-सीमा से आगे बढ़ जाता है, और अधिक समय की माँग करता है, और बिना इजाजत के भी बोलता रहता है। इस सारे बोलने से दुनिया का कोई लाभ हुआ हो ऐसा शायद ही कहा जा सकता है । यह समय का घोर अपव्यय है । मेरी लज्जाशीलता दरअसल मेरी ढाल और आड़ ही बनी रही। उससे मुझे परिपक्व होने का लाभ मिला। सत्य को पहचानने में मुझे उससे सहायता मिली।

6. लेखक कहता है कि उसकी जीभ या कलम से बिना विचारे शायद ही कोई शब्द निकलता हो। निम्नलिखित में से कौन-सा एक, इसका वैध कारण नहीं है? (2015)

(a) अपना समय बर्बाद करने का उसका कोई इरादा नहीं है।

(b) वह शब्दों की मितव्ययिता में विश्वास करता है।

(c) वह अपने विचारों पर काबू रखने में विश्वास करता है।

(d) उसे बोलने में संकोच होता है।

7. लेखक के अनेक खघ्तरों से बचे रहने का सर्वाधिक उपयुक्त कारण क्या है? (2015)

(a) वह बिना विचारे शायद ही कोई शब्द बोलता या लिखता है।

(b) वह अत्यंत धैर्यशाली व्यक्ति है।

(c) उसका विश्वास है कि वह एक आध्यात्मिक व्यक्ति है।

(d) वह सत्य का उपासक है।

8. लेखक के लिए, किस पर विजय पाने के लिए मौन आवश्यक है? (2015)

(a) स्वाभाविक शर्मीलापन

(b) बोलने में संकोच

(c) विचारों पर काबू रखना

(d) बढ़ा-चढ़ा कर बोलने की प्रवृत्ति

निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित सात परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए ।

परिच्छेद - 1

अपेक्षाकृत समृद्ध राज्यों की यह जिम्मेदारी बनती कि वे कार्बन उत्सर्जन को कम करें और स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में निवेश को प्रोत्साहित करें। ये वे राज्य हैं, जिनको बिजली उपलब्ध है, जिनका विकास अपेक्षाकृत तीव्र गति से हुआ है और जिनकी प्रति व्यक्ति आय अब उच्च है, जिस कारण वे भारत को पर्यावरण अनुकूली बनाने का भार वहन करने हेतु सक्षम हुए हैं। दिल्ली, उदाहरण के लिए, इस रूप में मदद कर सकती है कि वह छतों के ऊपर सौर पैनल के प्रयोग से अपने स्वयं के उपयोग की स्वच्छ बिजली उत्पादित करे या वह निर्धन राज्यों को उनकी स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण करके भी मदद कर सकती है। यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि राज्य विद्युत् बोर्ड, जो वितरण परिपथ-जाल (डिस्ट्रिब्यूशन नेटवर्क) के 95% भाग को नियंत्रित करते हैं, अत्यधिक गहरे घाटे में डूबे हुए हैं। ये घाटे आगे राज्य के सेवा प्रदाताओं (युटिलिटीज) को नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने से हतोत्साहित करते हैं क्योंकि नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाना जीवाश्मी ईंधनों को अपनाने से अधिक महँगा है।

9. निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक तार्किक और युक्तिसंगत पूर्वधारणा उपर्युक्त परिच्छेद से बनाई जा सकती है ? (2015)

(a) अपेक्षाकृत समृद्ध राज्यों को नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादित करने और अपनाने में अग्रणी होना चाहिए।

(b) निर्धन राज्यों को विद्युत् के लिए सदा समृद्ध राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता है।

(c) राज्य विद्युत् बोर्ड स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं को अपनाकर अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार ला सकते हैं।

(d) समृद्ध और निर्धन राज्यों के बीच अत्यधिक आर्थिक असमानता, भारत में अधिक कार्बन उत्सर्जन का प्रमुख कारण है।

परिच्छेद - 2

'स्टेंच ऑफ केरोसीन', ग्रामीण पृष्ठभूमि में सजाई गई, अनेक वर्षों से विवाहित किंतु निःसंतान दम्पति गुलेरी और मानक की कहानी है। मानक की माँ खघनदान के नाम को आगे जारी रखने हेतु एक पोता पाने के लिए तड़प रही है। अतः वह गुलेरी की गैर-मौजूदगी में मानक का पुनर्विवाह करा देती है। मानक को, जो अनिच्छुक और निष्क्रिय दर्शक सा बना रहता है, इस बीच उसका एक मित्र सूचित करता है कि गुलेरी ने पति के दूसरे विवाह की बात सुनकर अपने कपड़ों पर केरोसीन डाल कर आग लगा ली थी। इससे मानक का दिल टूट जाता है और वह एक मुर्दा इन्सान की तरह जीवन व्यतीत करने लगता है! जब उसकी दूसरी पत्नी एक पुत्र को जन्म देती है, तो मानक बच्चे को बहुत देर तक घूरता रहता है और फिर फूट पड़ता है, "इसे यहाँ से दूर करो! इससे केरोसीन की दुर्गंध आती है।"

10. यह संवेदनशील समस्या-आधारित कहानी पाठकों को किसके बारे में जागरूक करने का प्रयास करती है ? (2015)

(a) पुरुषवाद (मेल शोविनिज्म) और अन्यगमन (इनफिडेलिटी)

(b) प्यार और विश्वासघात

(c) महिलाओं के लिए विधिक संरक्षण की कमी

(d) पितृतंत्रात्मक मनोवृत्ति का प्रभाव

परिच्छेद - 3

सरकार का चरम लक्ष्य डराकर शासन करना या नियंत्रण करना नहीं है, और न ही आज्ञाकारिता की अपेक्षा रखना है, बल्कि उसके विपरीत, प्रत्येक व्यक्ति को डर से मुक्त करना है जिससे वह हर तरह से संभव सुरक्षित जीवन जी सके । दूसरे शब्दों में लोगों के, बिना खुद को या दूसरों को हानि पहुँचाए, अस्तित्व बनाए रखने और काम करने के नैसर्गिक अधिकार को सशक्त करना है । सरकार का उद्देश्य लोगों को विवेकशील व्यक्तियों से बदल कर उन्हें पशु या कठपुतलियाँ बनाना नहीं है। सरकार

को इस प्रकार सहायक होना चाहिए कि लोग सुरक्षित महसूस करते हुए अपनी बुद्धि और शरीर को विकसित करने और मुक्त हो कर अपने विवेक का प्रयोग करने में समर्थ बन सकें।

11. निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और युक्तिसंगत अनुमान (इनफेरेंस) उपर्युक्त परिच्छेद से निकाला जा सकता है? (2015)

(a) सरकार का वास्तविक लक्ष्य नागरिकों की सामाजिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता सुरक्षित करना है।

(b) सरकार का प्राथमिक सरोकार अपने सभी नागरिकों को पूर्ण सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना है।

(c) सर्वश्रेष्ठ सरकार वह है जो नागरिकों को जीवन के सभी विषयों में पूर्ण स्वतंत्रता देती है।

(d) सर्वश्रेष्ठ सरकार वह है जो देश के लोगों को पूर्ण शारीरिक सुरक्षा प्रदान करती है।

परिच्छेद - 4

हमारे नगर निगमों में कर्मचारियों की कमी है । कर्मचारियों के कौशलों और सक्षमताओं का मुद्दा और भी बड़ी चुनौती खड़ी करता है। शहरी सेवाओं के प्रदान किए जाने की और आधारिक संरचना की योजना बनाना और निष्पादित करना बहुत जटिल कार्य है। इनके लिए उच्च कोटि की विशेषज्ञता और वृत्ति - दक्षता (प्रोफेशनलिज्म) की आवश्यकता है। वर्तमान में जिस ढाँचे के अंतर्गत नगर निगमों में वरिष्ठ प्रबंधकों समेत कर्मचारियों की भरती की जा रही है, उसमें अपेक्षित तकनीकी और प्रबंधकीय सक्षमताओं के लिए पर्याप्त रूप से प्रावधान नहीं हैं। काडर और भरती नियम सिर्फ न्यूनतम शैक्षिक योग्यताओं का निर्धारण करते हैं। उनमें प्रबंधकीय या तकनीकी सक्षमताओं का, या संगत कार्य अनुभव का, कोई उल्लेख नहीं होता। अधिकांश नगर निगमों की यही स्थिति है। उनका संगठनीय अभिकल्प (डिजाइन) और संरचना भी कमजोर है।

12. निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक तार्किक और युक्तिसंगत पूर्वधारणा (अजम्प्शन) उपर्युक्त परिच्छेद से बनाई जा सकती है ? (2015)

(a) शहरी सेवाओं के प्रदान किए जाने का कार्य बहुत जटिल मुद्दा है, जिसके लिए पूरे देश में नगर निकायों के संगठन विस्तार की आवश्यकता है।

(b) हमारे शहर बेहतर गुणतायुक्त जीवन उपलब्ध करा सकते हैं यदि हमारे स्थानीय शासकीय निकायों के पास अपेक्षित कौशल और सक्षमताओं वाले यथेष्ट कर्मचारी हों।

(c) कौशलयुक्त कर्मचारियों की कमी ऐसी संस्थाओं के अभाव के कारण है जो नगर प्रबंधन में अपेक्षित कौशल प्रदान करें।

(d) हमारा देश तीव्रता से हो रहे शहरीकरण की समस्याओं के प्रबंधन के लिए जनांकिकीय लाभांश (डेमोग्राफिक डिविडेंड) का लाभ नहीं उठा रहा है।

परिच्छेद- 5

वनों में बड़े झुण्डों में रहने वाले फ्लेमिंगो सामाजिक और अत्यंत निष्ठावान होते हैं। वे समूह संगम नृत्य करते हैं। नर और मादा पक्षी अपने चूजों से बहुत प्यार करते हैं, और जब नर और मादा दोनों भोजन की तलाश में दूर उड़ जाते हैं तब सुरक्षा के लिए उन चूजों को क्रेशों (creches) में एकत्र रख जाते हैं।

13. निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सबसे तर्कसंगत उपनिगमन (कोरोलरी) है ? (2015)

(a) सभी स्पीशीज के पक्षियों में सामूहिक नीड़न (मास नेस्टिंग) अनिवार्य है ताकि उनकी संततियाँ पूरी तरह जीवित बनी रहें ।

(b) सिर्फ पक्षियों में सामाजिक व्यवहार विकसित करने की क्षमता होती है अत: वे अपने चूजों को सुरक्षापूर्वक पालने के लिए सामूहिक नीड़न अपना सकते हैं।

(c) कुछ स्पीशीज के पक्षियों में सामाजिक व्यवहार, असुरक्षित विश्व में जीवित बने रहने की विषमताओं को बढ़ा देता है।

(d) सभी स्पीशीज के पक्षी अपने चूजों को सामाजिक व्यवहार और निष्ठा सिखाने के लिए क्रेशों (बतध्बीमे) की स्थापना करते हैं।

परिच्छेद - 6

बहुत बड़ी संख्या में ऐसे भारतीय नागरिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं जिनके बैंक खाते नहीं हैं। ये वित्तीय और प्रकार्यात्मक (फंक्शनल) रूप से अशिक्षित हैं, और प्रौद्योगिकी के साथ इनका अनुभव नगण्य है। एक विशेष क्षेत्र में, जहाँ महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना (MGNREGS) के अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के रूप में मजदूरी सीधे निर्धनों को दी जानी होती है, एक अनुसंधानपरक अध्ययन किया गया। यह पाया गया कि मजदूरी प्राप्त करने वाले प्राय:यह मान लेते हैं कि इस प्रक्रिया में गाँव के नेता की मध्यस्थता आवश्यक है, जैसा कि पूर्व में कागजों पर आधारित व्यवस्था में होता था। इस अनुसंधानपरक अध्ययन के अंतर्गत, कम-से-कम एक बैंक खाता रखने का दावा करने वाले परिवारों में से एक-तिहाई से अधिक परिवारों ने बताया कि वे अभी भी MGNREGS की मजदूरी नकद रूप में सीधे गाँव के नेता से प्राप्त कर रहे

14. उपर्युक्त परिच्छेद में निहित सर्वाधिक तार्किक,तर्कसंगत और महत्त्वपूर्ण सन्देश क्या है ? (2015)

(a) MGNREGS का प्रसार सिर्फ उन तक किया जाना चाहिए जिनके पास बैंक खाता है।

(b) वर्तमान परिदृश्य में कागजों पर आधारित भुगतान व्यवस्था इलेक्ट्रॉनिक भुगतान व्यवस्था से अधिक दक्ष है।

(c) मजदूरी के इलेक्ट्रॉनिक भुगतान का लक्ष्य गाँव के नेताओं की मध्यस्थता को समाप्त करना नहीं था

(d) ग्रामीण निर्धनों को वित्तीय साक्षरता उपलब्ध कराना आवश्यक है।

परिच्छेद-7

मानव विकास को संवर्धित करने वाले व्यक्ति, समूह और नेता कड़ी संस्थागत, संरचनात्मक और राजनीतिक बाध्यताओं के अंतर्गत कार्य करते हैं जिनसे नीति के विकल्प प्रभावित होते हैं। किंतु अनुभव यह सुझाव देता है कि मानव विकास हेतु एक उपयुक्त कार्यसूची को आकार देने के लिए व्यापक सिद्धांतों की आवश्यकता होती है। अनेक दशकों के मानव विकास के अनुभव से इस एक महत्त्वपूर्ण बात का पता लगा है कि आर्थिक संवृद्धि पर ही अनन्य रूप से ध्यान केंद्रित करने से समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हमारे पास स्वास्थ्य और शिक्षा को उन्नत करने के तरीकों की अच्छी जानकारी तो है, लेकिन संवृद्धि किन कारणों से होती है इसे समझने में काफी कमी है और संवृद्धि प्राय: भ्रामक है। साथ ही, संवृद्धि पर असंतुलित रूप से बल देने से प्राय: पर्यावरण पर नकारात्मक परिणाम और वितरण में प्रतिकूल प्रभाव होते हैं। संवृद्धि के प्रभावशाली कीर्तिमान वाला चीन का अनुभव, इन व्यापक सरोकारों को प्रतिबिंबित करता हैं और मानव विकास के गैर-आय पहलुओं में निवेश को प्रमुखता देने वाले संतुलित दृष्टिकोणों के साथ आगे बढ़ने के महत्त्व पर बल देता है।

15. उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2015)

1. विकासशील देशों में, मानव विकास और नीति विकल्पों के लिए मजबूत संस्थागत संरचना ही एकमात्र आवश्यकता है।
2. मानव विकास और आर्थिक संवृद्धि सदैव सकारात्मक रूप से परस्पर संबंधित नहीं हैं।
3. केवल मानव विकास पर ही बल देना, आर्थिक संवृद्धि का लक्ष्य होना चाहिए।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा /से सही है/हैं ?

(a) केवल 1

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 2

(d) 1, 2 और 3

16. उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में, निम्नलिखित धारणाएँ बनाई गई हैं : (2015)

1. आर्थिक असमानता में कमी सुनिश्चित करने के लिए उच्चतर आर्थिक संवृद्धि अनिवार्य है।
2. पर्यावरण का निम्नीकरण, कभी-कभी आर्थिक संवृद्धि का ही परिणाम होता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी वैध धारणा / धारणाएँ है / हैं ?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

निम्नलिखित 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित छह परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों की उपज में रुकावट और कधीमतों में वृद्धि होने की वजह से, पूरे विश्व में बहुत सारे लोग पहले से ही भुखमरी का शिकार हैं। और जलवायु परिवर्तन के कारण केवल खाद्य ही नहीं बल्कि पोषक तत्त्व भी अपर्याप्त होते जा रहे हैं। जैसे-जैसे फसलों की उपज और जीविका पर खघ्तरे की स्थिति बन रही है, सबसे गरीब समुदायों को ही, भुखमरी और कुपोषण के बढ़ने के समेत, जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों से ग्रस्त होना पड़ेगा। दूसरी ओर, गरीबी जलवायु परिवर्तन की कारक है, क्योंकि निराशोन्मत्त समुदाय अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधनों के अधारणीय (अनसस्टेनबल) उपयोग का आश्रय लेते हैं।

17. निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है ? (2015)

(a) सरकार को गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के लिए अधिक निधियों का आबंटन करना चाहिए और निर्धन समुदायों को दिए जाने वाले खाद्य उपदानों (सब्सिडीज) में वृद्धि करनी चाहिए ।

(b) निर्धनता तथा जलवायु के प्रभाव एक-दूसरे को बढ़ावा देते हैं और इसलिए हमें अपनी खाद्य प्रणालियों की पुनर्कल्पना करनी होगी ।

(c) विश्व के सभी देशों को गरीबी और कुपोषण से लड़ने के लिए एकजुट होना ही चाहिए और गरीबी को एक सार्वभौम समस्या की भाँति देखना चाहिए।

(d) हमें तुरन्त अधारणीय (अनसस्टेनबल) कृषि पद्धतियों को बंद कर देना चाहिए और खाद्य कीमतों को नियंत्रित करना चाहिए।

परिच्छेद - 2

विश्व वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (ग्लोबल फाइनेंशियल स्टेबिलिटी रिपोर्ट) ने पाया है कि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से, उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के कुल ऋण और ईक्विटी निवेशों में किया गया पोर्टफोलियो निवेश का अंश पिछले दशक में दुगुना होकर 12 प्रतिशत हो गया है। इस घटना के भारतीय नीति निर्माताओं पर प्रभाव संभावित हैं क्योंकि ऋण तथा ईक्विटी बाजारों में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश बढ़ता रहा है । इस घटना को एक आशंका भी बताया जा रहा है कि यूनाइटेड स्टेट्स फेडरल रिजर्व की ष्मात्रात्मक ढील (क्वांटिटेटिव ईजिंग) नीति में आसन्न उत्क्रमण (इम्मिनेंट रिवर्सल) होने की दशा में, एक श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया के रूप में विश्व की वित्तीय स्थिरता खतरे में पड़ सकती है।

18. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक अनुमान (इनफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2015)

(a) उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के लिए विदेशी पोर्टफोलियो निवेश अच्छे नहीं हैं।

(b) उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ विश्व की वित्तीय स्थिरता को खोखला करती हैं।

(c) भारत को भविष्य में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश स्वीकार करने से बचना चाहिए।

(d) उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं को उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से मिलने वाले आघात का खतरा रहता है।

परिच्छेद- 3

खुले में मलत्याग अनर्थकारी हो सकता है, जब यह अति सघन आबादी वाले क्षेत्रों में व्यवहार में लाया जा रहा हो, जहाँ मानव मल को फसलों, कुओं, खाद्य सामग्रियों और बच्चों के हाथों से दूर रखना असंभव होता है। भौम जल (ग्राउन्डवाटर) भी खुले में किए गए मलत्याग से संदूषित हो जाता है। आहार में गए अनेक रोगाणु और कृमियाँ बीमारियाँ फैलाते हैं। वे शरीर को कैलोरियों और पोषक तत्त्वों का अवशोषण करने लायक नहीं रहने देते। भारत के लगभग आधे बच्चे कुपोषित बने रहते हैं । उनमें से लाखों, उन रोग-दशाओं से मर जाते हैं जिनसे बचाव सम्भव था । अतिसार (डायरिया) के कारण भारतीयों के शरीर औसत रूप से उन लोगों से छोटे हैं जो अपेक्षाकृत गरीब देशों के हैं, जहाँ लोग खाने में अपेक्षाकृत कम कैलोरियाँ लेते हैं । न्यून- भार (अंडरवेट) माताएँ ऐसे अविकसित (स्टंटेड) बच्चे पैदा करती हैं जो आसानी से बीमारी का शिकार हो सकते हैं और अपनी पूरी संज्ञानात्मक संभावनाओं (कोग्निटिव पोटेंशियल) को विकसित करने में असफल रह सकते हैं। जो रोगाणु पर्यावरण में निर्मुक्त हो जाते हैं वे न केवल अमीर और गरीब, बल्कि शौचालयों का प्रयोग करने वालों को भी, एकसमान हानि पहुँचाते हैं।

19. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा, सबसे निर्णायक अनुमान (इनफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2015)

(a) भारत की केंद्रीय और राज्य सरकारों के पास इतने पर्याप्त संसाधन नहीं हैं कि प्रत्येक घर के लिए एक शौचालय सुलभ करा सकें।

(b) खुले में मलत्याग भारत की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लोक स्वास्थ्य समस्या है।

(c) खुले में मलत्याग, भारत के कार्यबल (वर्क फोर्स) की मानव-पूँजी (ह्यूमन कैपिटल) में ह्रास लाता है।

(d) खुले में मलत्याग सभी विकासशील देशों की लोक स्वास्थ्य समस्या है।

Answer. c

THE CORE IAS

परिच्छेद - 4

हम सामान्यत: लोकतंत्र की बात करते हैं पर जब किसी विषय विशेष पर बात आती है, तो हम अपनी जाति या समुदाय या धर्म से सम्बन्ध रखना ज्यादा पसन्द करते हैं। जब तक हम इस तरह के प्रलोभन से ग्रस्त रहेंगे, हमारा लोकतंत्र एक बनावटी लोकतंत्र बना रहेगा। हमें इस स्थिति में होना चाहिए कि मनुष्य को मनुष्य की इज्जत मिले और विकास के अवसर उन तक पहुँचें जो उसके योग्य हैं न कि उन्हें जो अपने समुदाय या प्रजाति के हैं। हमारे देश में पक्षपात का यह तथ्य बहुत असंतोष और दुर्भावना के लिए उत्तरदायी रहा है।

20. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वोत्तम सारांश प्रस्तुत करता है? (2015)

(a) हमारे देश में अनेक जातियों, समुदायों और धर्मों की अत्यधिक विविधता है।

(b) सच्चा लोकतंत्र सभी को समान अवसर देकर ही स्थापित किया जा सकता है।

(c) अब तक हममें से कोई भी वास्तव में लोकतंत्र का अर्थ समझ नहीं सका है।

(d) हमारे लिए कभी सम्भव नहीं होगा कि हम अपने देश में सच्चा लोकतांत्रिक शासन स्थापित कर सकें।

परिच्छेद - 5

बचत संग्रहण हेतु, सुरक्षित, विश्वसनीय और वैकल्पिक वित्तीय साधन (फाइनेंशियल इन्स्ट्रूमेंट्स) प्रदान करने वाली औपचारिक वित्तीय संस्थाओं का होना/स्थापित किया जाना मूलभूत रूप से आवश्यक है। बचत करने के लिए, व्यक्तियों को बैंक जैसी सुरक्षित और विश्वसनीय वित्तीय संस्थाओं के सुलभ होने की, और उपयुक्त वित्तीय साधनों और पर्याप्त वित्तीय प्रोत्साहनों की आवश्यकता होती है। इस तरह की सुलभता भारत जैसे विकासशील देशों में, और उस पर भी ग्रामीण क्षेत्रों में, सभी लोगों को हमेशा उपलब्ध नहीं है। बचत से गरीब परिवारों को नकदी प्रवाह की अस्थिरता के प्रबंधन में मदद मिलती है, उपभोग में आसानी होती है, और कार्यशील पूँजी के निर्माण में मदद मिलती है। औपचारिक बचत तंत्र के सुलभ न होने से गरीब परिवारों में तुरन्त खर्च कर देने के प्रलोभनों को बढ़ावा मिलता है।

21. उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2015)

1. भारतीय वित्तीय संस्थाएँ ग्रामीण परिवारों को, अपनी बचत के संग्रहण के लिए कोई वित्तीय साधन उपलब्ध नहीं करातीं ।
2. गरीब परिवार, उपयुक्त वित्तीय साधनों के सुलभ न होने के कारण अपनी आय/बचत को व्यय करने की ओर प्रवृत्त होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं ?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

22. इस परिच्छेद के द्वारा क्या महत्त्वपूर्ण संदेश दिया गया है? (2015)

(a) अधिक बैंकों को स्थापित करना
(b) सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की संवृद्धि दर को बढ़ाना
(c) बैंक जमा (डिपॉजिट) पर ब्याज दर को बढ़ाना
(d) वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करना

परिच्छेद - 6

सरकारों को ऐसे कदम उठाने पड़ सकते हैं जो अन्यथा व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों का अतिलंघन करते हैं, जैसे किसी व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध उसकी भूमि का अधिग्रहण करना, या किसी भवन निर्माण की अनुमति देने से इनकार करना, किन्तु जिस बृहत्तर लोकहित के लिए ऐसा किया जाता है, उसे जनता (संसद्) द्वारा प्राधिकृत किया जाना आवश्यक है। प्रशासन के विवेकाधिकार को समाप्त किया जा सकता है। चूंकि, सरकार को अनेकों कार्य करने पड़ रहे हैं, इस अधिकार को सीमा में रखना निरन्तर कठिन होता जा रहा है। जहाँ विवेकाधिकार का प्रयोग करना होता है, वहाँ उस अधिकार के दुरुपयोग को रोकने के लिए नियम एवं रक्षोपाय अवश्य होने चाहिए। ऐसी व्यवस्था की युक्ति करनी होगी, जो विवेकाधिकारों के दुरुपयोग को, यदि रोक न सके, तो न्यूनतम ही कर सके। सरकारी कार्य मान्य नियमों और सिद्धान्तों के ढाँचे के अन्तर्गत ही किए जाने चाहिए, तथा निर्णय समान रूप तथा पूर्वानुमेय (प्रिडिक्टेबल) होने चाहिए।

23. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सी, सर्वाधिक तार्किक धारणा बनाई जा सकती है? (2015)

(a) सरकार को प्रशासन के सभी विषयों पर हमेशा विस्तृत विवेकाधिकार दिया जाना चाहिए।
(b) प्राधिकार के अनन्य विशेषाधिकार के प्रभावी होने की अपेक्षा, नियमों और रक्षोपायों की सर्वोच्चता अभिभावी होनी चाहिए।
(c) संसदीय लोकतंत्र तभी संभव है यदि सरकार को अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत विवेकाधिकार प्राप्त हों।
(d) उपर्युक्त में से कोई भी कथन ऐसी तार्किक धारणा नहीं है जो इस परिच्छेद से बनाई जा सके।

निम्नलिखित 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित चार परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

भारत सतत उच्च मुद्रास्फीति से ग्रस्त रहा है। निर्देशित कीमतों में वृद्धि, माँग और पूर्ति में असंतुलन, रुपए के अवमूल्यन से बदतर हुई आयातित मुद्रास्फीति, और सट्टेबाजी इन सबने मिलकर उच्च मुद्रास्फीति को बनाए रखा है। यदि इन सभी में कोई एक समान तत्त्व है, तो वह यह है कि इनमें से कई आर्थिक सुधारों के परिणाम हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कधीमतों में बदलाव के प्रभावों के प्रति भारत की सुभेद्यता (वल्नरेबिलिटी) व्यापार उदारीकरण के साथ-साथ और बढ़ी है । उपदानों को कम करने के प्रयासों के कारण उन वस्तुओं की कधीमतों में निरन्तर वृद्धि हुई है जो निर्देशित हैं।

24. उपर्युक्त परिच्छेद में अन्तर्निहित सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और महत्त्वपूर्ण संदेश क्या है? (2015)

(a) मौजूदा परिस्थितियों में, भारत को पूरी तरह से व्यापार उदारीकरण की नीतियों एवं सभी उपदानों से बचना चाहिए।

(b) अपनी विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण, भारत अभी व्यापारिक उदारीकरण की प्रक्रिया के लिए तैयार नहीं है।

(c) निकट भविष्य में भारत में सतत निर्धनता एवं मुद्रास्फीति की समस्याओं का कोई समाधान नहीं दिखता।

(d) आर्थिक सुधार प्रायः उच्च मुद्रास्फीति वाली अर्थव्यवस्था उत्पन्न कर सकते हैं।

परिच्छेद - 2

कोई भी अधिकार परम, अनन्य और अनुल्लंघनीय नहीं है। इसी तरह, व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार को उसकी कल्पित वैध ता के बृहत्तर सन्दर्भ में देखा जाना चाहिए। व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार में, स्वतंत्रता के सिद्धान्त का समता के सिद्धान्त के साथ, और इन दोनों का सहयोग के सिद्धान्त के साथ समन्वय होना चाहिए।

25. उपर्युक्त परिच्छेद में दिए गए तर्क के आलोक में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन सबसे अधिक विश्वासप्रद स्पष्टीकरण है? (2015)

(a) व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार, संविधियों और धर्मग्रन्थों द्वारा विधिवत समर्थित एक नैसर्गिक अधिकार है।

(b) व्यक्तिगत सम्पत्ति एक चोरी है तथा शोषण का उपकरण है। अतः व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार आर्थिक न्याय का उल्लंघन है।

(c) व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार वितरक न्याय का उल्लंघन है तथा सहयोग के सिद्धान्त को नकारता है।

(d) आर्थिक न्याय का व्यापक विचार इस बात की माँग करता है कि प्रत्येक व्यक्ति के सम्पत्ति अर्जन के अधिकार को, दूसरों के सम्पत्ति अर्जन के अधिकार के साथ सामंजस्यपूर्ण होना चाहिए।

परिच्छेद- 3

मानव एवं राज्य के मध्य संघर्ष उतना ही पुराना जितना कि राज्य का इतिहास। यद्यपि सदियों से राज्य एवं व्यक्ति के प्रतिस्पर्धी दावों के बीच तालमेल बनाने के प्रयास हुए हैं, किन्तु समाधान अभी भी दूर प्रतीत होता है । यह मुख्यतः इसलिए है क्योंकि मानव समाज की प्रकृति गतिशील है जिसमें पुराने मूल्यों और विचारों ने निरन्तर नए मूल्यों और विचारों को स्थान दिया है। यह स्पष्ट है कि यदि व्यक्तियों को बोलने और कार्य करने की निरपेक्ष स्वतन्त्रता दे दी गई, तो उसका परिणाम अव्यवस्था, विनाश एवं अराजकता में हो सकता है।

26. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, लेखक के दृष्टिकोण का सर्वोत्तम सारांश प्रस्तुत करता है? (2015)

(a) राज्य और व्यक्ति के दावों के बीच संघर्ष अनसुलझा बना रहता है।

(b) अराजकता और अव्यवस्था लोकतांत्रिक परम्पराओं के स्वाभाविक परिणाम हैं।

(c) मानव समाज की गतिशील प्रकृति के बावजूद प्राचीन मूल्य, विचार और परम्पराएँ बनी रहती हैं।

(d) वाक् स्वातंत्र्य (फ्रीडम ऑफ स्पीच) की संवैधानिक गारंटी समाज के हित में नहीं है।

परिच्छेद-4

जलवायु परिवर्तन एक ऐसा जटिल नीतिगत मुद्दा है जो वित्त पर व्यापक प्रभाव डालता है । जलवायु परिवर्तन से निपटने वाले हर प्रयास में अन्ततः लागत शामिल है। भारत जैसे देशों के लिए, अनुकूलन (अडैप्टेशन) तथा न्यूनीकरण (मिटिगेशन) की योजनाओं और परियोजनाओं के अभिकल्पन और कार्यान्वयन के लिए निधीयन (फंडिंग) अत्यावश्यक है। निधि का अभाव अनुकूलन योजनाओं के कार्यान्वयन में एक बड़ी बाधा है। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूनाइटेड नेशन्स फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज) (UNFCCC) के अन्तर्गत बहुस्तरीय वार्ताओं में, विकासशील देशों द्वारा उनके घरेलू न्यूनीकरण तथा अनुकूलन कार्यों के संवर्धन के लिए अपेक्षित वित्तीय सहायता का पैमाना तथा परिमाण सघन चर्चा के विषय हैं। यह सम्मेलन विकसित देशों पर, वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों (GHGs) के जमाव में उनके योगदान के आधार पर, वित्तीय सहायता का प्रावधान करने की समान रूप से जिम्मेदारी डालता है। इस कार्य की मात्रा तथा उसके लिए निधियों की आवश्यकता को देखते हुए, विकासशील देशों की मौजूदा तथा अनुमानित (प्रोजेक्टेड) आवश्यकताओं के लिए जरूरी घरेलू वित्तीय संसाधन कम पड़ने की संभावना है। इस सम्मेलन (कन्वेंशन) की बहुपक्षीय क्रियाविधि के माध्यम से किया गया वैश्विक निधीयन, न्यूनीकरण प्रयासों के वित्तपोषण के लिए उनकी घरेलू क्षमता की वृद्धि करेगा।

27. इस परिच्छेद के अनुसार, जलवायु परिवर्तन में विकासशील देशों की भूमिका के संदर्भ में UNFCCC के अन्तर्गत बहुपक्षीय वार्ताओं में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से, गहन चर्चा का/के विषय है/हैं? (2015)

1. अपेक्षित वित्तीय सहायता का पैमाना तथा परिमाण।
2. विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली उपज की हानि।
3. विकासशील देशों में न्यूनीकरण तथा अनुकूलन कार्यों का संवर्धन करना।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

28. इस परिच्छेद में, यह सम्मेलन विकसित देशों पर वित्तीय सहायता का प्रावधान करने की जिम्मेदारी किस कारण डालता है? (2015)

1. उनका प्रति व्यक्ति आय का उच्चतर स्तर।
2. उनकी GDP की अधिक मात्रा।
3. वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों (GHGs) के जमाव में उनका बृहत् योगदान।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1

(b) केवल 1 और 2

(c) केवल 3

(d) 1, 2 और 3

THE CORE IAS

29. विकासशील देशों के सम्बन्ध में, परिच्छेद से यह अनुमान निकाला जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन से उनके (2015)

1. घरेलू वित्त पर प्रभाव पड़ना संभावित है ।
2. बहुपक्षीय व्यापार की क्षमता पर प्रभाव पड़ना संभावित है ।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

30. इस परिच्छेद में, निम्नलिखित में से किस एक पर अनिवार्यत: विचार-विमर्श किया गया है? (2015)

(a) न्यूनीकरण हेतु सहायता देने के बारे में, विकसित और विकासशील देशों के बीच द्वन्द्व
(b) विकसित देशों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अतिशय दोहन के कारण जलवायु परिवर्तन का होना
(c) अनुकूलन योजनाओं को कार्यान्वित करने में सभी देशों की राजनीतिक इच्छाशक्ति में कमी
(d) जलवायु परिवर्तन के परिणाम के कारण, विकासशील देशों की शासन समस्याएँ

2016

आगे आने वाले 6 (छ), प्रश्नांशों के लिए निर्देश: निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िये तथा प्रत्येक परिच्छेद के पश्चात् आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर परिच्छेदों पर आधारित ही होने चाहिए।

परिच्छेद-1

शासन और लोक प्रशासन में कमियों के मूल में स्थित एक प्रमुख कारक, आमतौर से शासन में और मुख्य रूप से सिविल सेवाओं में जवाबदेही का होना या न होना है। जवाबदेही का एक प्रभावी ढांचा रूपांकित करना सुधार कार्यसूची का एक मुख्य तत्व रहा है। मूलभूत मुद्दा यह है कि क्या सिविल सेवाओं को तत्कालीन राजनीतिक कार्यपालिका के प्रति जवाबदेह होना चाहिए अथवा व्यापक रूप में समाज के प्रति दूसरे शब्दों में, आंतरिक और बाह्य जवाबदेही के बीच सामंजस्य कैसे स्थापित किया जाए ? आंतरिक जवाबदेही को आंतरिक निष्पादन के परिवीक्षण, केन्द्रीय सतर्कता आयोग एवं नियंत्रक – महालेखापरीक्षक जैसे निकायों के अधिकारिक निरीक्षण तथा अधिशासी निर्णयों के न्यायिक पुनर्विलोकन के द्वारा प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 311 और 312 सिविल सेवाओं, खास कर अखिल भारतीय सेवाओं में नौकरी की सुरक्षा एवं रक्षोपाय का उपबंध करते हैं। संविधान निर्माताओं ने यह ध्यान में रखा था कि इन संरक्षण उपबंधों के परिणामस्वरूप ऐसी सिविल सेवा बनेगी जो राजनीतिक कार्यपालिका की पूर्णत: अनुसेवी नहीं होगी वरन् उसमें वृहत्तर लोकहित में कार्य करने की शक्ति होगी। इस प्रकार संविधान में आंतरिक और बाह्य जवाबदेही के बीच संतुलन रखने की आवश्यकता सन्निहित है। प्रश्न यह है कि दोनों के बीच रेखा कहां खींची जाए। वर्षों बाद, सिविल सेवाओं की अधिकतर आंतरिक जवाबदेही का जोर तत्कालीन राजनीतिक नेताओं के पक्ष में अधिक झुका दिखाई देता है, जिनसे, बदले में, निर्वाचन प्रक्रिया के माध्यम से व्यापक समाज के प्रति बाह्य रूप से जवाबदेह होने की अपेक्षा की जाती है। समाज के प्रति जवाबदेही लाने के प्रयास करने की इस प्रणाली से कोई समाधान प्राप्त नहीं हुआ है, और इससे शासन के लिए अनेक प्रतिकूल परिणाम सामने आए हैं। सिविल सेवाओं में जवाबदेही के सुधार के लिए कुछ विशेष उपायों पर विचार किया जा सकता है। अनुच्छेद 311 और 312 के उपबंधों का पुनरीक्षण किया जाना चाहिए और सिविल सेवाओं की बाह्य जवाबदेही के लिए विधि एवं विनियम बनाए जाने चाहिए। प्रस्तावित सिविल सेवा विधेयक इनमें से कुछ आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है। वृत्तिक (प्रोफेशनल) सिविल सेवाओं और राजनीतिक कार्यपालिका की अपनी-अपनी भूमिकाएं परिभाषित की जानी चाहिए ताकि वृत्तिक प्रबंधकीय कार्य और सिविल सेवाओं के प्रबंधन का अराजनीतिकरण हो सके। इस प्रयोजन के लिए केंद्र और राज्यों में प्रभावी सांविधिक सिविल सेवा बोर्ड बनाए जाने चाहिए। शासन और निर्णयन को लोगों के अधिक समीप लाने हेतु सत्ता का विकेंद्रीकरण और अवक्रमण (डीवोल्यूशन) भी जवाबदेही के संवर्धन में सहायक होता है।

1. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में कौनसे कारक / कारकों के कारण शासन/लोक प्रशासन के लिए प्रतिकूल परिणाम सामने आए हैं ? (2016)

   1. आंतरिक एवं बाह्य जवाबदेहियों के बीच संतुलन बनाने में सिविल सेवाओं की अक्षमता
   2. अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों के लिए पर्याप्त वृत्तिक प्रशिक्षण का अभाव
   3. सिविल सेवाओं में उपयुक्त सेवा हितलाभों की कमी इस संदर्भ में राजनीतिक कार्यपालिका के, और उसकी तुलना में वृत्तिक सिविल सेवाओं के अपनी-अपनी भूमिकाओं को परिभाषित करने वाले सांविधानिक उपबंधों का अभाव

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 4
   (d) 2, 3 और 4

2. परिच्छेद का सन्दर्भ लेते हुए, निम्नलिखित पूर्वधारणाएं बनाई गई हैं. (2016)

   1. समाज के प्रति सिविल सेवाओं की जवाबदेही में राजनीतिक कार्यपालिका एक अवरोध है
   2. भारतीय राजनीति-व्यवस्था के वर्तमान ढांचे में राजनीतिक कार्यपालिका समाज के प्रति जवाबदेह नहीं रह गई है

   इन पूर्वधारणाओं में कौनसी वैध है/हैं ?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

3. निम्नलिखित में कौन-सा एक, इस परिच्छेद में अन्तर्निहित अनिवार्य संदेश है? (2016)

   (a) सिविल सेवाएं उस समाज के प्रति जवाबदेह नहीं हैं जिसकी सेवा वे कर रही हैं
   (b) शिक्षित तथा प्रबुद्ध व्यक्ति राजनीतिक नेतृत्व नहीं ले रहे हैं
   (c) संविधान निर्माताओं ने सिविल सेवाओं के समक्ष आने वाली समस्याओं का विचार नहीं किया
   (d) सिविल सेवाओं की जवाबदेही में संवर्धन हेतु सुधारों की आवश्यकता और गुंजाइश है

4. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में कौनसा एक सिविल सेवाओं की आंतरिक जवाबदेही के संवर्धन का साधन नहीं है? (2016)

   (a) बेहतर कार्य- सुरक्षा और रक्षोपाय
   (b) केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा निरीक्षण
   (c) अधिशाषी निर्णयों का न्यायिक पुनर्विलोकन
   (d) निर्णयन प्रक्रिया में लोगों की बढ़ी हुई सहभागिता द्वारा जवाबदेही खोजना

परिच्छेद-2

सामान्य रूप में, धार्मिक परम्पराएँ ईश्वर के या किसी सार्वभौम नैतिक सिद्धांत के प्रति हमारे कर्तव्य पर बल देती हैं। एक दूसरे के प्रति हमारे कर्त्तव्य इन्हीं से व्युत्पन्न होते हैं। अधिकारों की धार्मिक संकल्पना मुख्यत: इस देवत्व या सिद्धान्त के साथ हमारे संबंध से, और हमारे अन्य संबंधों पर पड़ने वाले इसके निहितार्थ से ही व्युत्पन्न हुई है। अधिकारों और कर्तव्यों के बीच यह संगतता न्याय के किसी उच्चतर बोध के लिए महत्वपूर्ण है। किन्तु न्याय को आचरण में लाने के लिए, सद्गुण, अधिकार और

कर्त्तव्य औपचारिक अमूर्त तत्व नहीं रह सकते। उन्हें सामान्य मिलन (कम्युनियन) के संवेदन से बंधे हुए समुदाय (सामान्य एकता) में उतारना परमावश्यक है। वैयक्तिक सद्गुण के रूप में भी यह एकात्मता, न्याय की साधना और बोध के लिए आवश्यक है।

5. परिच्छेद का सन्दर्भ लेते हुए, निम्नलिखित पूर्वधारणाएं बनाई गई हैं: (2016)

1. मानव संबंध उनकी धार्मिक परंपराओं से व्युत्पन्न होते हैं
2. मनुष्य कर्तव्य से तभी बंधे हो सकते हैं जब
3. वे ईश्वर में विश्वास करें न्याय की साधना और बोध के लिए धार्मिक परम्पराएँ आवश्यक हैं

इनमें से कौनसी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएं वैध है / हैं ?

(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

6. निम्नलिखित में कौनसा एक इस परिच्छेद का मर्म है? (2016)

(a) एक-दूसरे के प्रति हमारे कर्तव्य हमारी धार्मिक परम्पराओं से व्युत्पन्न होते हैं
(b) दिव्य सिद्धांत से संबंध रखना महान सद्गुण हैं
(c) अधिकारों और कर्तव्यों के बीच सन्तुलन समाज में न्याय दिलाने के लिए निर्णायक
(d) अधिकारों की धार्मिक संकल्पना मुख्यत: ईश्वर के साथ हमारे संबंध से व्युत्पन्न हुई है

आगे आने वाले 5 (पांच) प्रश्नांशों के लिए निर्देश: निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िये तथा प्रत्येक परिच्छेद के पश्चात् आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर परिच्छेदों पर आधारित ही होने चाहिए।

परिच्छेद-1

शक्ति, ऊष्मा और परिवहन के ईंधन के रूप में जैवमात्रा (बायोमास) की न्यूनीकरण समर्थता सभी नवीकरणीय स्रोतों से अधिक है। यह कृषि और वन अवशिष्टों, साथ ही ऊर्जा-फसलों से प्राप्त होती है। जैवमात्रा अवशिष्टों का उपयोग करने में सबसे बड़ी चुनौती शक्ति संयंत्रों में उचित लागत पर की जानेवाली उनकी विश्वसनीय दीर्घावधि पूर्ति ही है, मुख्य समस्याएं सुप्रचालनिक (लॉजिस्टिकल) अवरोध और ईंधन संग्रहण की लागत हैं। यदि ऊर्जा-फसलों का उचित रीति से प्रबंधन न हो तो, वे अन्न उत्पादन के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं और अन्न की कीमतों पर उनका अवांछित असर पड़ सकता है। जैवमात्रा का उत्पादन परिवर्तनशील जलवायु के भौतिक प्रभावों के प्रति भी संवेदनशील होता है। जब तक नव-प्रौद्योगिकियाँ उत्पादकता को सारभूत रूप में न बढ़ाएं, तब तक धारणीय जैवमात्रा पूर्ति की सीमाओं को देखते हुए, जैवमात्रा की भावी भूमिका का संभवत: वास्तविकता से अधिक अनुमान लगाया गया है। जलवायु-ऊर्जा प्रतिरूप यह प्रकल्पित करते हैं कि 2050 में बायोमास का उपयोग लगभग चारगुना बढ़ कर 150 200 एक्साजूल हो सकता है जो कि विश्व की प्राथमिक ऊर्जा या लगभग एक चौथाई है। परन्तु खाद्य एवं वन्य संसाधनों का कोई विनाश किए बिना, 2050 तक प्रतिवर्ष बायोमास संसाधनों की अधिकतम धारणीय तकनीकी क्षमता (अवशिष्ट और ऊर्जा फसल दोनों) 80 - 170 एक्साजूल के परिसर में होगी और इसका सिर्फ एक अंश वास्तविक और आर्थिक रूप से साध्य होगा। इसके अतिरिक्त कुछ जलवायु प्रतिरूप ऋणात्मक उत्सर्जन प्राप्त करने और शताब्दी के पूर्वार्ध में कुछ मुहलत जुटाने के लिए बायोमास आधारित कार्बन प्रग्रहण एवं संचयन पर जो कि एक अप्रमाणित प्रौद्योगिकी है, आश्रित है।

कुछ द्रव्य जैवईंधन जैसे मकई आधारित इथेनोल, प्रमुख रूप से परिवहन हेतु जीवन चक्र आधार पर कार्बन उत्सर्जनों में सुधार लाने की जगह उन्हें और बदतर कर सकते हैं। लिग्नो-सेलुलोसिक चारा आधारित दूसरी पीढ़ी के कुछ जैवईंधन जैसे कि पुआल, खोई, घास और काष्ठ ऐसे धारणीय उत्पादन की सम्भाव्यता रखते हैं जो उच्च उत्पादकता वाले हों तथा ग्रीनहाउस गैस के निम्न स्तर का उत्सर्जन करें, किन्तु वे अभी तक अनुसंधान और विश्लेषण के चरण में हैं।

7. शक्ति-जनन के लिए जैवमात्रा को ईंधन के रूप में इस्तेमाल करने में मौजूदा बाधा / बाधाएं क्या है/हैं? (2016)
   1. जैवमात्रा की धारणीय पूर्ति का अभाव
   2. जैवमात्रा उत्पादन अन्न उत्पादन के साथ प्रतिस्पर्धी हो जाता है
   3. जैव ऊर्जा, जीवन चक्र आधार पर सदैव निम्न कार्बन नहीं हो सकती

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3
   (d) 1, 2 और 3

8. निम्नलिखित में से किसके / किनके कारण खाद्य-सुरक्षा की समस्या हो सकती है ? (2016)
   1. शक्ति-जनन हेतु कृषि एवं वन अवशिष्टों का भरण- सामग्री (फीडस्टॉक) के रूप में उपयोग करना
   2. जैवमात्रा का कार्बन प्रग्रहण एवं संचयन के लिए उपयोग करना
   3. ऊर्जा-फसलों की कृषि को बढ़ावा देना

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3
   (d) 1, 2 और 3

9. जैवमात्रा के उपयोग के सन्दर्भ में निम्नलिखित में कौनसी / कौन-कौनसी जैव-ईंधन के धारणीय -उत्पादन की विशेषता / विशेषताएं है/हैं? (2016)
   1. 2050 तक शक्ति -जनन के ईंधन के रूप में जैवमात्रा से विश्व की सभी प्राथमिक ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है
   2. शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में जैवमात्रा स्वाद्य एवं वन संसाधनों का आवश्यक रूप से विनाश नहीं होता है
   3. कुछ उदीयमान प्रौद्योगिकियों की मान लें तो शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में जैवमात्रा, ऋणात्मक उत्सर्जन प्राप्त करने में सहायक हो सकती है

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

10. इस परिच्छेद के सन्दर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2016)
    1. कुछ जलवायु ऊर्जा प्रतिरूप यह सुझाते हैं कि शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में बायोमास का उपयोग ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जनों को कम करने में सहायक होता
    2. शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में बायोमास का उपयोग करना, खाद्य एवं वन संसाधनों को बाधित किए बिना संभव नहीं है

    इन पूर्वधारणाओं में कौनसी वैध है/हैं ?
    (a) केवल 1 (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद-2

हम अपनी खाद्य-पूर्ति में जैव-विविधता की खतरनाक कमी देख रहे हैं। हरित क्रांति एक मिला-जुला वरदान है। समय के साथ-साथ, किसानों की निर्भरता व्यापक रूप से अपनाई गई उच्च उपज वाली फसलों पर बहुत अधिक बढ़ती गई है और वे स्थानीय दशाओं से अनुकूलता रखने वाली किस्मों को छोड़ते गए हैं। विशाल खेतों में आनुवंशिकत: एकसमान (जेनेटिकली यूनिफॉर्म) बीजों की एक फसली खेती से बढ़ी हुई उपज प्राप्त करने और भूख की तात्कालिक जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलती है। तथापि, उच्च उपज वाली किस्में आनुवंशिकत: दुर्बल फसलें भी होती हैं जिनके लिए मँहगे रासायनिक उर्वरकों और विषाक्त कीटनाशकों की जरूरत होती है। उगाए जा रहे खाद्य पदार्थों की मात्रा बढ़ाने पर ही आज अपना ध्यान केंद्रित कर हम अनजाने में स्वयम् को भावी खाद्य अभाव होने के जोखिम में डाल चुके हैं।

11. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौनसा सबसे तर्कसंगत और निर्णायक निष्कर्ष (इनफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2016)

(a) अपनी कृषि पद्धतियों में हम केवल हरित क्रांति के कारण मँहगे रासायनिक उर्वरकों और विषाक्त कीटनाशकों पर अत्यधिक निर्भर हो गये हैं

(b) विशाल खेतों में उच्च उपज वाली किस्मों की एक फसली खेती हरित क्रांति के कारण संभव है

(c) उच्च उपज वाली किस्मों की एक फसली खेती करोड़ों लोगों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका है

(d) हरित क्रांति, दीर्घ काल में खाद्य-पूर्ति और खाद्य सुरक्षा में जैव-विविधता के लिए खतरा प्रस्तुत कर सकती है

आगे आने वाले 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश: निम्नलिखित आठ परिच्छेदों को पढ़िये तथा प्रत्येक परिच्छेद के पश्चात् आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर परिच्छेदों पर आधारित ही होने चाहिए।

परिच्छेद-1

पारदर्शिता और प्रतियोगिता को समाप्त करने से, क्रोनी-पूँजीवाद (कोनी - कैपिटलिज्म) मुक्त उद्यम अवसर और आर्थिक प्रगति के लिए हानिकारक है। क्रोनी-पूँजीवाद, जिसमें धनाढ्य और प्रभावशाली व्यक्तियों पर यह आरोप लगता है कि उन्होंने भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञों को घूस देकर जमीन और प्राकृतिक संसाधन तथा विभिन्न लाइसेन्स प्राप्त किए हैं, अब एक प्रमुख मुद्दा बन गया है जिससे निपटने की जरूरत है। भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की संवृद्धि के लिए एक बहुत बड़ा खतरा मध्य आय जाल (मिडिल इन्कम ट्रैप) है जहाँ क्रोनी-पूँजीवाद अल्पतंत्रों (ऑलिगार्कीज) को निर्मित करता है जो संवृद्धि को धीमा कर देते हैं।

12. उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) निम्नलिखित में से कौनसा है? (2016)

(a) अपेक्षाकृत अधिक कल्याणकारी स्कीमों को आरंभ करने और चालू स्कीमों के लिए अपेक्षाकृत अधिक वित्त आबंटित करने की तत्काल आवश्यकता है

(b) आर्थिक विकास को अन्य माध्यमों से प्रोत्साहित करने एवं निर्धनों को लाइसेंस जारी करने का प्रयास किया जाना चाहिए

(c) वर्तमान में सरकार की कार्य प्रणाली को और पारदर्शी तथा वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है

(d) हमें सेवा क्षेत्रक की जगह निर्माण क्षेत्रक का विकास करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए

परिच्छेद-2

जलवायु अनुकूलन अप्रभावी हो सकता है यदि दूसरे विकास संबंधी सरोकारों के सन्दर्भ में नीतियों को अभिकल्पित नहीं किया जाता। उदाहरण के तौर पर एक व्यापक रणनीति, जो जलवायु परिवर्तन के सन्दर्भ में खाद्य सुरक्षा की अभिवृद्धि करने का प्रयास करती है, कृषि प्रसार, फसल विविधता, एकीकृत जल एवं पीड़क प्रबंधन और कृषि सूचना सेवाओं से सम्बन्धित समन्वित उपायों के एक समुच्चय को सम्मिलित कर सकती है। इनमें से कुछ उपाय जलवायु परिवर्तन से और अन्य उपाय आर्थिक विकास से सम्बन्धित हो सकते हैं।

13. उपर्युक्त परिच्छेद से कौनसा सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक निष्कर्ष (इनफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2016)

(a) विकासशील देशों में जलवायु अनुकूलन जारी रखना कठिन है

(b) खाद्य सुरक्षा की अभिवृद्धि करना, जलवायु अनुकूलन की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल विषय

(c) प्रत्येक विकासात्मक क्रियाकलाप प्रत्यक्षत: या अप्रत्यक्षत: जलवायु अनुकूलन से जुड़ा हैं

(d) जलवायु अनुकूलन की दूसरे आर्थिक विकास विकल्पों के संबंध में परीक्षा की जानी चाहिए

परिच्छेद-3

जलीय चक्र में जैव-विविधता की भूमिका की समझ बेहतर नीति-निर्माण में सहायक होती है। जैव-विविधता शब्द अनेक किस्मों के पादपों, प्राणियों, सूक्ष्मजीवों को और उन पारितंत्रों को, जिसमें वे पाए जाते हैं, निर्दिष्ट करता है। जल और जैव-विविधता एक दूसरे पर निर्भर है। वास्तव में, जलीय चक्र से यह निश्चित होता है कि जैव-विविधता कैसे कार्य करती है। क्रम से, वनस्पति और मृदा जल के प्रवाह को निर्धारित करते हैं। हर एक गिलास जल जो हम पीते हैं, कम से कम उसका कोई अंश, मछलियों, वृक्षों, जीवाणुओं, मिट्टी और अन्य जीवों (ऑर्गेनिज्म्स) से होकर गुजरा होता है। इन पारितंत्रों से गुजरते हुए वह शुद्ध होता है और उपभोग के लिए उपयुक्त होता है। जल की पूर्ति एक महत्वपूर्ण सेवा है जो पर्यावरण प्रदान करता है।

14. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौनसा सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष (इनफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2016)

(a) जैव-विविधता, प्रकृति की जल के पुनर्चक्रण की सामर्थ्य बनाए रखती है

(b) जीवित जीवों (ऑर्गेनिज्म्स) के अस्तित्व के बिना हम पेय जल प्राप्त नहीं कर सकते

(c) पादप, प्राणी और सूक्ष्मजीव आपस में सतत अन्योन्यक्रिया करते रहते

(d) जलीय चक्र के बिना, जीवित जीव (ऑर्गेनिज्म्स) अस्तित्व में नहीं आये होते

परिच्छेद-4

पिछले दशक में, बैंकिंग क्षेत्र को मुख्यत: मध्यवर्ग और उच्च मध्यवर्ग समाज को सेवा प्रदान करने वाले उच्च कोटि के स्वचालन और उत्पादों से पुन: संरचित किया गया है। आज बैंकिंग और गैर-बैंकिंग वित्तीय सेवाओं के लिए ऐसे नए कार्यक्रम की आवश्यकता है जो आम आदमी की पहुंच से बाहर न हो।

15. उपर्युक्त परिच्छेद में निम्नलिखित में से कौनसा सन्देश अनिवार्यत: अंतर्निहित है? (2016)

(a) बैंकों के और अधिक स्वचालन और उत्पादों की आवश्यकता

(b) हमारी सम्पूर्ण लोक वित्त व्यवस्था की आमूल पुनर्संरचना की आवश्यकता

(c) बैंकिंग और गैर-बैंकिंग संस्थाओं का एकीकरण करने की आवश्यकता

(d) वित्तीय समावेशन को संवर्धित करने की आवश्यकता

परिच्छेद-5

मलिन बस्तियों में सुरक्षित तथा संधारणीय सफाई से महिलाओं और लड़कियों को उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा, निजता तथा सम्मान के रूप में असीमित लाभ मिलता है। तथापि शहरी सफाई पर बनने वाली अधिकतर योजनाओं और नीतियों में महिलाएं प्रतिलक्षित नहीं होतीं। यह तथ्य कि मैला ढोने की प्रथा आज भी अस्तित्व में है यह दिखाता है कि प्रवाही फ्लश शौचालयों को बढ़ावा देने तथा शुष्क शौचालयों को बंद करने को लेकर अभी तक बहुत कुछ नहीं किया गया है। स्वच्छता के अधिकार की दिशा में बहुत बड़े पैमाने पर अधिक स्थायी और मजबूत अभियान शुरू किया जाना चाहिए। यह मुख्य रूप से मैला ढोने के उन्मूलन पर ध्यान केन्द्रित करने वाला होना चाहिए।

16. उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: (2016)

1. शहरी सफाई समस्या का पूर्ण निराकरण केवल मैला ढोने के उन्मूलन से ही किया जा सकता है।
2. शहरी क्षेत्रों में सुरक्षित सफाई व्यवहार की जागरूकता को अधिक प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौनसा/से सही है/हैं ?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद-6

मानव के लिए उपयुक्त सरकार की प्रकृति और परिमाण को समझने के लिए यह आवश्यक है कि मानव के स्वभाव को समझा जाए। चूंकि प्रकृति ने उसे सामाजिक जीवन के लिए बनाया है, उसे उस स्थान के लिए भी युक्त किया है जिसे उसने नियत किया है। सभी परिस्थितियों में उसने उसकी नैसर्गिक आवश्यकताओं को उसकी व्यक्तिगत शक्तियों से बड़ा बनाया है। कोई भी एक व्यक्ति समाज की सहायता के बिना अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में सक्षम नहीं है; और वही आवश्यकताएं प्रत्येक व्यक्ति पर क्रियाशील होकर समग्र रूप से उनको एक समाज के रूप में रहने के लिए प्रेरित करती हैं।

17. निम्नलिखित में से कौनसा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इनफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2016)

(a) प्रकृति ने मानव समाज में भारी विविधता का निर्माण किया है

(b) किसी भी मानव समाज को सदा उसकी आवश्यकताओं से कम मिलता है

(c) सामाजिक जीवन मानव का विशिष्ट लक्षण है

(d) विविध प्राकृतिक आवश्यकताओं ने मानव को सामाजिक प्रणाली की ओर बाध्य किया है

परिच्छेद-7

किसी राज्य में कानूनी आदेशकों (इम्परेटिव्स) की प्रकृति उन प्रभावकारी मांगों के अनुरूप होती है जिनका राज्य को सामना करना पड़ता है, और यह कि अपने क्रम में ये सामान्य रूप से उस रीति पर आश्रित होती हैं जिसमें समाज में वह आर्थिक शक्ति वितरित होती है जिस पर राज्य नियंत्रण करता है।

18. यह कथन किसको निर्दिष्ट करता है? (2016)

(a) राजनीति और अर्थतंत्र के प्रतिवाद (एन्टिथीसिस) को

(b) राजनीति और अर्थतंत्र के पारस्परिक सम्बन्ध को

(c) राजनीति पर अर्थतंत्र की प्रधानता को

(d) अर्थतंत्र पर राजनीति की प्रधानता को

परिच्छेद-8

भूमंडलीय ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 15 प्रतिशत कृषि प्रक्रियाओं से आता है। इसमें उर्वरकों से निकले नाइट्रस ऑक्साइड पशुधन, चावल उत्पादन तथा खाद भण्डारण से निकली मेथेन तथा जैवमात्रा (बायोमास) को जलाने से निकली कार्बन डाईऑक्साइड (CO) सम्मिलित हैं, किन्तु मृदा प्रबंधन प्रक्रियाओं से, घास के मैदानों (सवाना) को जलाने से तथा वनोंमूलन से उत्सर्जित ब्ब, इसमें सम्मिलित नहीं है। वानिकी, भू-उपयोग तथा भू-उपयोग में परिवर्तन, प्रति वर्ष और अधिक 17 प्रतिशत ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं जिसका तीन चौथाई भाग उष्णकटिबंधीय वनोंमूलन से आता है। बचा हुआ उत्सर्जन

अधिकांशत: उष्णकटिबंधीय पीट- भूमि (पीटलैंड) के अपवहन तथा जलाने से निकलता है अमेजन (।इंवद) के वर्षा वन में जमा कार्बन की मात्रा के लगभग बराबर मात्रा विश्व की पीट- भूमियों में जमा है।

19. निम्नलिखित में कौनसा उपर्युक्त परिच्छेद से सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इनफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2016)

(a) संपूर्ण विश्व में यंत्र और रसायनों पर आधारित कृषि प्रथाओं के स्थान पर तत्काल जैव कृषि (ऑर्गेनिक फार्मिंग) अपनायी जानी चाहिए

(b) जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए हमारी भू-उपयोग प्रक्रियाओं में बदलाव लाना अनिवार्य है

(c) ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की समस्या के कोई प्रौद्योगिकीय समाधान नहीं हैं

(d) उष्णकटिबन्धीय क्षेत्र, कार्बन प्रच्छादन के मुख्य स्थान हैं

आगे आने वाले 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश: निम्नलिखित पांच परिच्छेदों को पढ़िये तथा प्रत्येक परिच्छेद के पश्चात् आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिये। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर परिच्छेदों पर आधारित ही होने चाहिए।

परिच्छेद-1

यदि हम 2050 की ओर देखें जब हमें दो अरब अधिक लोगों को आहार खिलाने की आवश्यकता होगी, तो यह प्रश्न कि कौन सा आहार सर्वोत्तम है, एक नई अत्यावश्यकता बन गया है। आने वाले दशकों में हम जिन खाद्य पदार्थों को खाने के लिए चुनेंगे, उनके इस ग्रह के लिए गम्भीर रूप से बहुशाखन होंगे। सामान्य रूप से कहें तो समूचे विकासशील देशों में खानपान की जो मांस और डेरी उत्पाद के आहार के गिर्द ही घूमते रहने वाली प्रवृत्ति बढ़ रही है, वह भूमंडलीय संसाधनों पर, अपरिष्कृत अनाज, गिरी, फलों और सब्जियों पर निर्भर करने वाली प्रवृत्ति की तुलना में अधिक दबाव डालेगी।

20. उपर्युक्त परिच्छेद से क्या निर्णायक सन्देश निकलता है? (2016)

(a) पशु आधारित खाद्य स्रोत की बढ़ती मांग हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर अपेक्षाकृत अधिक बोझ डालती है।

(b) अनाजों, गिरी, फलों और सब्जियों पर आधारित आहार विकासशील देशों में स्वास्थ्य के लिए सर्वाधिक सुयोग्य हैं

(c) मनुष्य स्वास्थ्य मामलों को बिना ध्यान में रखे, समय समय पर अपनी खाने की आदतों को बदलते हैं

(d) भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य में, हम अभी तक यह नहीं जानते कि कौनसा आहार हमारे लिए सर्वोत्तम है

THE CORE IAS

परिच्छेद-2

सभी मनुष्य शैशवावस्था में माँ के दूध को पचाते हैं, परन्तु 10,000 वर्ष पहले मवेशियों की पालन प्रणाली के आरम्भ होने तक शिशुओं को एक बार दूध छुड़ाने पर उनको दूध पचाने की आवश्यकता नहीं होती थी। इसके परिणामस्वरूप उनमें लैक्टेज एंजाइम का बनना बंद हो गया, जो लैक्टोज शर्करा को सरल शर्कराओं में तोड़ता है। मानव के मवेशी चराने की प्रणाली आरम्भ होने के बाद दूध को पचाना अत्याधिक लाभदायक हो गया और यूरोप, मध्यपूर्व (मिडिल ईस्ट) और अफ्रीका में मवेशी चराने वालों में स्वतन्त्र रूप से लैक्टोज सहन-शक्ति का विकास हुआ। चीनी और थाई लोग जो मवेशियों पर निर्भर नहीं थे, वे लैक्टोज असहनशील बने हुए हैं।

21. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौनसी सर्वाधिक तार्किक पूर्वधारणा प्राप्त की जा सकती है ? (2016)

(a) लगभग 10,000 वर्ष पहले विश्व के कुछ भागों में पशुपालन शुरू हुआ

(b) एक समुदाय में खाने की आदतों में स्थायी परिवर्तन, समुदाय के सदस्यों में आनुवंशिक परिवर्तन ला सकता

(c) केवल लैक्टोज सहनशील लोगों में ही अपने शरीरों में सरल शर्कराओं को पाने की क्षमता होती है

(d) जो लोग लैक्टोज सहनशील नहीं होते, वे किसी भी डेरी उत्पाद को नहीं पचा सकते

परिच्छेद-3

"अल्पविकसित और औद्योगीकृत देशों की राष्ट्रीय आर्यों के बीच तुलना करते समय आने वाली संकल्पनात्मक कठिनाइयाँ विशेष रूप से गंभीर होती हैं क्योंकि विभिन्न अल्पविकसित देशों में राष्ट्रीय उत्पाद के एक भाग का उत्पादन वाणिज्यिक माध्यमों से गुजरे बिना होता है।"

22. इस कथन से लेखक का तात्पर्य है कि : (2016)
(a) औद्योगीकृत देशों में उत्पादित और उपभुक्त समस्त राष्ट्रीय उत्पाद वाणिज्यिक माध्यमों में से गुजरता है
(b) विभिन्न अल्पविकसित देशों में अ-वाणिज्यीकृत क्षेत्रक का अस्तित्व देशों की राष्ट्रीय आयों की परस्पर तुलना को कठिन बना देता है
(c) राष्ट्रीय उत्पाद के किसी भाग का उत्पादन और उपभोग वाणिज्यिक माध्यमों से गुजरे बिना नहीं होना चाहिए
(d) राष्ट्रीय उत्पाद के एक भाग का उत्पादन और उपभोग वाणिज्यिक माध्यमों से गुजरे बिना होना अल्पविकास का चिह्न है

परिच्छेद-4

वायुमंडल में मानव निर्मित कार्बन डाईऑक्साइड के बढ़ने से पादपों और सूक्ष्मजीवों के बीच एक श्रृंखला अभिक्रिया प्रारंभ हो सकती है जो कि इस ग्रह पर कार्बन के सबसे बड़े भंडार मृदा को अव्यवस्थित कर सकती है। एक अध्ययन में यह पाया गया कि वह मृदा जिसमें कार्बन की मात्रा, सभी पादपों और पृथ्वी के वायुमंडल में उपस्थित कुल कार्बन की दुगुनी है, लोगों के द्वारा वायुमंडल में और अधिक कार्बन छोड़ते जाने पर वर्धमान रूप से अस्थिर होती जाएगी। ऐसा अधिकांशत: पादपवृद्धि में बढ़ोत्तरी के कारण होता है। यद्यपि कार्बन डाईऑक्साइड एक ग्रीनहाउस गैस और एक प्रदूषक है, यह पादपवृद्धि को प्रोत्साहित भी करती है। चूंकि वृक्ष और दूसरी वनस्पतियाँ भविष्य में होने वाली कार्बन डाईऑक्साइड की प्रचुरता में फलती-फूलती हैं, उनकी जड़ें मृदा में सूक्ष्मजीवों की क्रियाशीलता को प्रेरित कर सकती हैं जो परिणामस्वरूप मृदा कार्बन के अपघटन को और तेज कर वायुमण्डल में कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में वृद्धि कर सकती है।

23. निम्नलिखित में से कौन सा उपर्युक्त परिच्छेद का सबसे अधिक तर्कसंगत उपनिगमन (कोरोलरी) है ? (2016)
(a) सूक्ष्मजीवों और पादपों के अस्तित्व के लिए कार्बन डाईऑक्साइड परमावश्यक है
(b) वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड विमुक्त करने के लिए मनुष्य पूरी तरह उत्तरदायी है
(c) पादपवृद्धि की बढ़ोत्तरी के लिए मुख्य रूप से सूक्ष्मजीव और मृदा कार्बन उत्तरदायी हैं
(d) वर्धमान हरित आवरण मृदा में युक्त कार्बन की मोचन को प्रेरित कर सकता है

परिच्छेद-5

ऐतिहासिक रूप से, विश्व कृषि के सामने, खाद्य की मांग और पूर्ति के बीच संतुलन प्राप्त करना सबसे बड़ी चुनौती रही है। वैयक्तिक देशों के स्तर पर मांग- पूर्ति संतुलन बंद अर्थव्यवस्था के लिए एक निर्णायक नीतिगत मुद्दा हो सकता है, विशेषकर, यदि वह एक जनसंख्याबहुल अर्थव्यवस्था है और उसकी घरेलू कृषि, स्थायी आधार पर पर्याप्त खाद्य पूर्ति नहीं कर पा रही है। यह उस मुक्त और बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के लिए, जिसके पास विदेशों से खाद्य क्रय करने हेतु पर्याप्त विनिमय अधिशेष हैं, उतनी बड़ी, और न ही सदैव होने वाली बाध्यता है। विश्व के लिए समग्र रूप से मांग- पूर्ति संतुलन, भूख तथा भुखमरी से बचाव हेतु सदैव ही एक अपरिहार्य पूर्व शर्त है। तथापि, पर्याप्त पूर्ति की विश्वव्यापी उपलब्धता का आवश्यक रूप से यह मतलब नहीं है कि खाद्य स्वत: अधिशेष वाले देशों से उन अभावग्रस्त देशों की ओर, जिनके पास क्रय शक्ति का अभाव है, चला जाएगा। अत: विश्व स्तर पर भूख, भुखमरी, न्यून पोषण या कुपोषण आदि का असमान वितरण, खाली जेबों वाले भूखे लोगों की मौजूदगी की वजह से हैं, जो वृहद रूप में अविकसित अर्थव्यवस्थाओं तक सीमित हैं। जहाँ तक आधारभूत मानवीय अस्तित्व के लिए ष्दो वक्त का भरपेट भोजन ष का प्राथमिक महत्व है, उसमें खाद्य की विश्वव्यापी पूर्ति के मुद्दे को, हाल के वर्षों में, महत्व मिलता रहा है, क्योंकि मांग की मात्रा और संरचना दोनों में बड़े परिवर्तन हो रहे हैं, और क्योंकि हाल के वर्षों

में अलग-अलग देशों की खाद्य पूर्तियों की अबाधित श्रृंखला निर्मित करने की क्षमताओं में कमी आई है। खाद्य उत्पादन, विपणन और कीमतें, विशेषकर विकासशील विश्व में गरीबों द्वारा कीमत वहन करने की क्षमता, विश्वव्यापी मुद्दे बन गए हैं, जिनका विश्वव्यापी चिंतन और विश्वव्यापी समाधान आवश्यक है।

24. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार विश्व खाद्य सुरक्षा के लिए निम्नलिखित में कौन से मूलभूत हल हैं? (2016)
    1. अपेक्षाकृत अधिक कृषि आधारित उद्योग स्थापित करना
    2. गरीबों द्वारा कीमत वहन करने की क्षमता को सुधारना
    3. विपणन की दशाओं का नियमन करना
    4. हर एक को खाद्य सहायिकी प्रदान करना

    नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये :

    (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1, 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

25. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, विश्व कृषि के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती क्या है ? (2016)
    (a) कृषि हेतु पर्याप्त भूमि प्राप्त करना और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का विस्तार करना
    (b) अल्पविकसित देशों में भुखमरी का उन्मूलन करना
    (c) खाद्य एवं गैरखाद्य (नान फूड) वस्तुओं के उत्पादन के बीच संतुलन प्राप्त करना
    (d) खाद्य की मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन प्राप्त करना

26. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में भूख और भुखमरी घटाने में, निम्नलिखित में से किससे / किनसे सहायता मिलती है? (2016)
    1. खाद्य की मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन करना
    2. खाद्य आयात में वृद्धि करना
    3. निर्धनों की क्रयशक्ति में वृद्धि करना
    4. खाद्य उपभोग प्रतिमानों और प्रयासों में बदलाव लाना

    नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये :

    (a) केवल 1
    (b) केवल 2, 3 और 4
    (c) केवल 1 और 3
    (d) 1, 2, 3 और 4

27. विश्वव्यापी खाद्य पूर्ति के मुद्दे को मुख्यत: किसके / किनके कारण महत्व प्राप्त हुआ है? (2016)
    1. विश्वव्यापी रूप से जनसंख्या की अतिवृद्धि
    2. खाद्य उत्पादन के क्षेत्र में तीव्र गिरावट
    3. सतत खाद्यपूर्ति हेतु क्षमताओं में परिसीमन

    नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये

    (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
    (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

2017

निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित आठ परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

जलवायु परिवर्तन से एक चीज जो अकाट्य रूप से होती है, वह ऐसी घटनाओं का घटित होना या बढ़ना है जिनसे संसाधनों के कम होते जाने में और तेजी आती है। इन घटते जाते संसाधनों के ऊपर होने वाली प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप राजनीतिक या और भी हिंसक संघर्ष सामने आता है। संसाधन आधारित संघर्ष शायद ही कभी खुलेआम हुए हैं, इसलिए उन्हें विलग रूप में देखना कठिन होता है। इसके बजाय वे ऊपरी परतें ओढ़कर राजनीतिक रूप से कहीं अधिक स्वीकार्य रूप में सामने आते हैं। जल-जैसे संसाधनों के ऊपर होने वाले संघर्ष प्राय: पहचान या विचारधारा के वेश का लबावा ओढ़े रहते हैं।

1. उपर्युक्त परिच्छेद का निहितार्थ क्या है? (2017)

(a) संसाधन आधारित संघर्ष सदैव राजनीतिक रूप से प्रेरित होते हैं।

(b) पर्यावरणीय और संसाधन आधारित संघर्षों के समाधान के लिए कोई राजनीतिक हल नहीं होते।

(c) पर्यावरणीय मुद्दे ससाधन पर दबाव बनाए रखने और राजनीतिक संघर्ष में योगदान करते हैं।

(d) पहचान अथवा विचारधारा पर आधारित राजनीतिक संघर्ष का समाधान नहीं हो सकता।

परिच्छेद-2

जो व्यक्ति निरंतर इस हिचकिचाहट में रहता है कि दो चीजों में से किसे पहले करे, वह दोनों में से कोई भी नहीं करेगा। जो व्यक्ति संकल्प करता है, लेकिन उसकी काट में किसी मित्र द्वारा दिए गए पहले सुझाव पर ही अपने संकल्प को बदल देता हैख्नजो कभी एक राय कभी दूसरी राय के बीच आगा-पीछा करता रहता है और एक योजना से दूसरी योजना तक रुख बदलता रहता हैख्नवह किसी भी चीज को कभी पूरा नहीं कर सकता। ज्यादा से ज्यादा वह बस ठहरा रहेगा, और संभवत: सभी चीजों में पीछे हटता रहेगा। जो व्यक्ति पहले विवेकपूर्वक परामर्श करता है, फिर दृढ़ संकल्प करता है, और कमजोर मनोवृत्ति को भयभीत करने वाली तुच्छ कठिनाइयों से निर्भीक बने रहकर अटल दृढ़ता से अपने उद्देश्यों को पूरा करता हैख्नकेवल वही व्यक्ति किसी भी दिशा में उत्कर्ष की ओर आगे बढ़ सकता है।

THE CORE IAS

2. इस परिच्छेद से निकलने वाला मूलभाव क्या है? (2017)

(a) हमें पहले विवेकपूर्वक परामर्श करना चाहिए, फिर दृढ़ संकल्प करना चाहिए

(b) हमें मित्रों के सुझावों को नकार देना चाहिए और बिना बदले अपनी राय पर कायम रहना चाहिए

(c) हमें विचारों में सदैव उदार होना चाहिए

(d) हमें सदैव कृतसंकल्प और उपलब्धि अभिमुख होना चाहिए

परिच्छेद-3

आर्कटिक महासागर में ग्रीष्म ऋतु के दौरान समुद्री बर्फ अपेक्षाकृत अधिक पहले और तेजी से पिघल रही है, और शीत ऋतु की बर्फ के बनने में अधिक देरी लग रही है। पिछले तीन दशकों में, ग्रीष्म ऋतु की बर्फ का परिमाण लगभग 30 प्रतिशत तक घट गया है।

ग्रीष्म गलन की अवधि के लम्बे हो जाने से सम्पूर्ण आर्कटिक खाद्यजाल के, जिसमें ध्रुवीय भालू शीर्ष पर हैं, छिन्न-भिन्न हो जाने का संकट सामने आ गया है।

3. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक सन्देश व्यक्त होता है? (2017)

(a) जलवायु परिवर्तन के कारण, आर्कटिक ग्रीष्म ऋतु अल्पावधि की परन्तु उच्च तापमान वाली हो गई है।

(b) ध्रुवीय भालुओं की उत्तरजीविता को सुनिश्चित करने के लिए उन्हें दक्षिणी ध्रुव में स्थानांतरित किया जा सकता है।

(c) ध्रुवीय भालुओं के न होने से आर्कटिक क्षेत्र की खाद्य श्रृंखलाएँ लुप्त हो जाएँगी।

(d) जलवायु परिवर्तन से ध्रुवीय भालुओं की उत्तरजीविता के लिए संकट उत्पन्न हो गया है।

परिच्छेद -4

लोग क्यों खुले में शौच जाना ज्यादा पसंद करते हैं और शौचालय रखना नहीं चाहते, या जिनके पास शौचालय है वे उसका उपयोग कभी-कभी ही करते हैं? हाल के अनुसंधान से दो खास बातें सामने आई हैं: शुद्धता और प्रदूषण के विचार, और न चाहना कि गड्ढे या सेप्टिक टैंक भरें, क्योंकि उन्हें खाली करना होता है। ये वे मुद्दे हैं जिन पर कोई बात नहीं करना चाहता, लेकिन यदि हम खुले में शौच की प्रथा का उन्मूलन करना चाहते हैं, तो इन मुद्दों का सामना करना होगा और इनसे समुचित तरीके से निपटना होगा।

4. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक सन्देश व्यक्त होता है? (2017)

(a) शुद्धता और प्रदूषण के विचार इतने गहरे समाये हैं कि उन्हें लोगों के दिमाग से हटाया नहीं जा सकता।

(b) लोगों को समझना होगा कि शौचालय का उपयोग और गड्ढों का खाली किया जाना शुद्धता की बात है न कि अशुद्धता की।

(c) लोग अपनी पुरानी आदतों को बदल नहीं सकते।

(d) लोगों में न तो नागरिक बोध है और न ही एकांतता (प्राइवेसी) का बोध है।

परिच्छेद-5

पिछले दो दशकों में, विश्व के सकल घरेलू उत्पाद (ळक्च्) में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि समावेशी सम्पदा मात्र 6 प्रतिशत बढ़ी है। हाल के दशकों में, ळक्च् संचालित आर्थिक निष्पादन ने मानव पूँजी जैसी समावेशी सम्पदा को और जंगल, जमीन एवं जल जैसी प्राकृतिक सम्पदा को केवल क्षति ही पहुँचाई है। पिछले दो दशकों में, विश्व की मानव पूँजी, जो कुल समावेशी सम्पदा का 57 प्रतिशत है, केवल 8 प्रतिशत ही बढ़ी, जबकि प्राकृतिक सम्पदा में, जो कुल समावेशी सम्पदा का 23 प्रतिशत विश्वस्तर पर 30 प्रतिशत की गिरावट आई।

5. निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष (इन्फरेंस) है? (2017)

(a) प्राकृतिक सम्पदा के विकास पर और अधिक बल दिया जाना चाहिए।

(b) केवल GDP संचालित संवृद्धि न तो वांछनीय है, न ही धारणीय है।

(c) विश्व के देशों का आर्थिक निष्पादन संतोषजनक नहीं है।

(d) वर्तमान परिस्थितियों में विश्व को और अधिक मानव पूँजी की आवश्यकता है।

परिच्छेद-6

2020 तक, जब वैश्विक अर्थव्यवस्था में 56 करोड़ (56 मिलियन) युवाओं की कमी होने की आशंका है तब भारत अपने 4.7 करोड़ (47 मिलियन) अधिशेष युवाओं से इस कमी को पूरा कर सकता है। भारत में दो अंकों में विकास निर्मुक्त करने के एक मार्ग के रूप में श्रम सुधारों को इसी सन्दर्भ में प्राय: उद्धृत किया जाता है। 2014 में, भारत का श्रमबल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत होने का आकलन था, लेकिन इस बल का 93 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में था। विगत पूरे दशक में रोजगार की चक्रवृद्धि वार्षिक संवृद्धि दर [कम्पाउंड एनुअल ग्रोथ रेट (CAGR)] 0.5 प्रतिशत तक मन्द हो चुकी थी, जहाँ पिछले वर्ष के दौरान लगभग 1.4 करोड़ (14 मिलियन) नौकरियाँ सृजित हुई जबकि श्रमबल में लगभग 1.5 करोड़ (15 मिलियन) की वृद्धि हुई।

6. निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक निष्कर्ष (इन्फरेंस) है? (2017)

(a) भारत को अपनी जनसंख्या वृद्धि पर अवश्य ही नियंत्रण करना चाहिए, ताकि इसकी बेरोजगारी दर कम हो सके।

(b) भारत के विशाल श्रमबल का उत्पादक रूप से इष्टतम उपयोग करने के लिए भारत में श्रम सुधारों की आवश्यकता है।

(c) भारत अतिशीघ्र दो अंकों का विकास प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।

(d) भारत अन्य देशों को कौशल प्राप्त युवाओं की पूर्ति करने में सक्षम है।

परिच्छेद-7

सबसे पहला पाठ, जो हमें तब पढ़ाया जाना चाहिए जब हम उसे समझने के लिए पर्याप्त बड़े हो चुके हों, यह है कि कार्य करने की बाध्यता से पूरी स्वतंत्रता अप्राकृतिक है, और इसे गैर-कानूनी होना चाहिए, क्योंकि हम कार्य भार के अपने हिस्से से केवल तभी बच सकते हैं, जब हम इसे किसी दूसरे के कंधों पर डाल दें। प्रकृति ने यह विधान किया है कि मानव प्रजाति, यदि कार्य करना बंद कर दे, तो भुखमरी से नष्ट हो जाएगी। हम इस निरंकुशता से बच नहीं सकते हैं। हमें इस प्रश्न को सुलझाना पड़ेगा कि हम अपने आपको कितना अवकाश देने में समर्थ हो सकते हैं।

7. उपर्युक्त परिच्छेद का यह मुख्य विचार है कि (2017)

(a) मनुष्यों के लिए यह आवश्यक है कि वे काम करें

(b) कार्य एवं अवकाश के मध्य संतुलन होना चाहिए

(c) कार्य करना एक निरंकुशता है जिसका हमें सामना करना ही पड़ता है

(d) मनुष्य के लिए कार्य की प्रकृति को समझना आवश्यक है

परिच्छेद-8

आदतों का पालन करने में कोई हानि नहीं है, जब तक कि वे आदतें हानिकारक न हों। वास्तव में हममें से अधिकांश लोग, आदतों के पुलिंदे से शायद कुछ अधिक ही व्यवस्थित होते हैं। हम अपनी आदतों से मुक्त हो जायें तो जो बचेगा उस पर शायद ही कोई ध्यान देना चाहे हम इनके बिना नहीं चल सकते। वे जीवन की प्रक्रिया को सरल बनाती हैं। इनसे हम बहुत सी चीजें अपने- आप करने में समर्थ होते हैं, जिन्हें, यदि हम हर बार नया और मौलिक विचार देकर करना चाहें, तो अस्तित्व एक असंभव उलझन बन जाए।

THE CORE IAS

8. लेखक का सुझाव है कि आदतें (2017)

(a) हमारे जीवन को कठिन बनाती हैं

(b) हमारे जीवन में सटीकता लाती हैं

(c) हमारे लिए जीना आसान करती हैं.

(d) हमारे जीवन को मशीन बनाती हैं

निम्नलिखित 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित सात परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

हमारे सामने कठोर परिश्रम है। जब तक हम अपने प्रण को संपूर्णत: पूरा नहीं कर लेते, जब तक हम भारत के सभी लोगों को वह नहीं बना देते जो कि नियति चाहती है कि वे हों, तब तक हममें से किसी को आराम नहीं करना है। हम एक महान देश के नागरिक हैं, सुस्पष्ट प्रगति के कगार पर हैं, और हमें उन उच्च आदर्शों को जीवन में उतारना है। हम सभी, चाहे हम किसी

भी धर्म के हों, समान रूप से भारत की संतान हैं और हमारे अधिकार, विशेषाधिकार और दायित्व बराबर हैं। हम साम्प्रदायिकता अथवा मानसिक संकीर्णता को बढ़ावा नहीं दे सकते, क्योंकि कोई भी देश, जिसके लोग विचारों अथवा आचरण में संकीर्ण हों, महान नहीं हो सकता।

9. उपर्युक्त परिच्छेद का लेखक लोगों को क्या प्राप्त करने की चुनौती देता है? (2017)

(a) उच्च जीवन आदर्श, प्रगति और विशेषाधिकार

(b) समान विशेषाधिकार, नियति की पूर्णता और राजनीतिक सहिष्णुता

(c) साहसिक उत्साह और आर्थिक समानता

(d) कठोर परिश्रम, भाईचारा और राष्ट्रीय एकता

परिच्छेद-2

"रूसो के अनुसार, व्यक्ति अपनी सत्ता को और अपनी पूरी शक्ति को सम्मिलित रूप से समष्टि संकल्प (जेनरल विल) के सर्वोच्च निर्देश के अधीन रखता है, और हम अपनी समष्टिगत क्षमता में प्रत्येक सदस्य को सम्पूर्ण के अविच्छिन्न अंश के रूप में लेते हैं।"

10. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा समष्टि संकल्प के स्वरूप का सर्वोत्तम वर्णन है? (2017)

(a) व्यक्तियों की वैयक्तिक इच्छाओं का कुल योग

(b) व्यक्तियों के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा जो स्पष्ट कहा गया है

(c) सामूहिक कल्याण जो व्यक्तियों की वैयक्तिक इच्छाओं से भिन्न है

(d) समुदाय के वस्तुपरक (मेटीरियल) हित

परिच्छेद-3

लोकतांत्रिक राज्य में, जहाँ लोगों में उच्च कोटि की राजनीतिक परिपक्कता होती है, सर्वसत्ताधारी विधिनिर्माता निकाय के संकल्प और जनता के संगठित संकल्प में बिरले ही संघर्ष होता है।

11. उपर्युक्त परिच्छेद का क्या निहितार्थ है? (2017)

(a) लोकतंत्र में, संप्रभुता के वास्तविक पालन में, बल प्रमुख तथ्य होता है।

(b) परिपक लोकतंत्र में, संप्रभुता के वास्तविक पालन में, बल एक बड़ी सीमा तक प्रमुख तथ्य होता है।

(c) परिपक्क लोकतंत्र में, संप्रभुता के वास्तविक पालन में, बल का प्रयोग अप्रासंगिक है।

(d) परिपक्क लोकतंत्र में, संप्रभुता के वास्तविक पालन में, बल घटकर एक उपांतिक तथ्य (मार्जिनल फेनॉमिनॉन) रह जाता है।

परिच्छेद -4

सफल लोकतंत्र राजनीति में व्यापक रुचि एवं भागीदारी पर निर्भर करता है, जिसमें मतदान एक आवश्यक अंग है। जानबूझकर इस प्रकार की रुचि न रखना और मतदान न करना, एक प्रकार की अन्तर्निहित अराजकता है; यह स्वतंत्र राजनीतिक समाज के लाभों का उपभोग करते हुए अपने राजनीतिक दायित्व से मुख मोड़ना है।

12. यह परिच्छेद किससे सम्बन्धित है? (2017)

(a) मतदान का दायित्व (b) मतदान का अधिकार

(c) मतदान की स्वतंत्रता (d) राजनीति में भागीदारी का अधिकार

परिच्छेद-5

किसी स्वतंत्र देश में, नेता की स्थिति तक पहुँचने वाला व्यक्ति सामान्यत: उत्कृष्ट चरित्र और योग्यता वाला व्यक्ति होता है। इसके साथ ही, इसका पूर्वानुमान कर लेना भी सामान्यत: संभव होता कि वह इस स्थिति तक पहुँचेगा, क्योंकि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में ही उसके चारित्रिक गुणों को देखा जा सकता है। किन्तु किसी तानाशाह के मामले में यह हमेशा सत्य नहीं होता; वह प्राय: अपनी सत्ता की स्थिति तक संयोग से पहुँच जाता है, अनेक बार तो सिर्फ अपने देश की दुखद स्थिति के कारण ही।

13. इस परिच्छेद में यह सुझाया गया प्रतीत होता है कि (2017)

(a) नेता अपनी भावी स्थिति का पूर्वानुमान कर लेता है

(b) नेता सिर्फ किसी स्वतंत्र देश के द्वारा ही चुना जाता है

(c) किसी भी नेता को इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि उसका देश निराशा से मुक्त रहे

(d) किसी देश में बनी हुई निराशा की परिणति कभी-कभी तानाशाही में होती है

परिच्छेद-6

तकनीकी प्रगति में निहित मानव जाति के लिए सबसे बड़ा वरदान, निश्चित रूप से, भौतिक सम्पदा का संचय नहीं है। किसी व्यक्ति के द्वारा जीवन में इनकी जितनी मात्रा का वास्तविक रूप में उपभोग किया जा सकता है, वह बहुत अधिक नहीं है। किन्तु फुरसत के समय के उपभोग की संभावनाएँ उसी संकीर्ण सीमा तक सीमित नहीं है। जिन्होंने फुरसत के समय के उपहार के सदुपयोग का कभी अनुभव नहीं किया है, वे लोग इसका दुरुपयोग कर सकते हैं। फिर भी, समाजों की एक अल्पसंख्या द्वारा फुरसत के समय का रचनात्मक उपयोग किया जाना ही आदिम स्तर के बाद सभी मानव-प्रगति का मुख्य प्रेरणास्रोत रहा है।

14. उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ ज्व बनाई गई हैं (2017)

1. फुरसत के समय को लोग सदैव उपहार के रूप में देखते हैं तथा इसका उपयोग और अधिक भौतिक सम्पदा अर्जित करने के लिए करते हैं।
2. कुछ लोगों द्वारा फुरसत के समय का, नूतन और मौलिक चीजों के उत्पादन के लिए, उपयोग किया जाना ही मानव-प्रगति का मुख्य स्रोत रहा है।

इनमें से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/है?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद-7

इस अभिकथन में किंचित से कहीं अधिक सच्चाई है कि "सामयिक घटनाओं की बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्या के लिए प्राचीन इतिहास का कार्यसाधक ज्ञान होना आवश्यक है"। किन्तु जिस बुद्धिमान ने समझदारी के ये शब्द कहे थे, उसने विशेष रूप से इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाइयों के अध्ययन से होने वाले फायदों पर अवश्य ही कुछ-न-कुछ कहा होगा, क्योंकि इनमें हममें से उनके लिए सबक शामिल हैं जो नेतृत्व करते हैं या नेता बनने की अभिलाषा रखते हैं। इस तरह के अध्ययन से कुछ ऐसे गुण और विशेषताएँ उद्घाटित होंगी, जिनसे विजेताओं के लिए जीत परिचालित हुई और वे कतिपय कमियाँ भी, जिनके कारण हारने वालों की हार हुई और विद्यार्थी यह देखेगा कि यही प्रतिरूप सदियों से लगातार, बार-बार पुनर्घटित होता है।

15. उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई है : (2017)

1. इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाइयों का अध्ययन हमें आधुनिक युद्धस्थिति को समझने में सहायता करेगा।
2. जो भी नेतृत्व की इच्छा रखता है, उसके लिए इतिहास का अध्ययन अनिवार्य है।

इनमें से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/है?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित सात परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

परम्परागत संस्थाओं, पहचानों और निष्ठाओं के विघटन से दो-तरफा (ऐम्बिवैलेंट) स्थितियाँ उत्पन्न होने की सम्भावना होती है। यह सम्भव है कि कुछ लोग परम्परागत समूहों के साथ फिर से अपनी नई पहचान बनाएँ, जबकि अन्य लोग राजनीतिक विकास की प्रक्रियाओं से उत्पन्न होने वाले नए समूहों और प्रतीकों के साथ खुद को जोड़ लें। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक विकास की यह प्रवृत्ति होती है कि वह विविध वर्गों, जनजातियों, क्षेत्रों, कुलों, भाषाओं, धर्मों, व्यवसाय एवं अन्य समूहों की समूह चेतना का पोषण करती है।

16. निम्नलिखित में से कौन-सी एक उपर्युक्त परिच्छेद की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है? (2017)

(a) राजनीतिक विकास एक दिशा में चलने वाली प्रक्रिया नहीं है, क्योंकि इसमें संवृद्धि और हास दोनों शामिल होते हैं।

(b) परम्परागत समाज राजनीतिक विकास के सकारात्मक पक्षों का प्रतिरोध करने में सफल होते हैं।

(c) परम्परागत समाजों के लिए, लम्बे समय से बनी हुई निष्ठाओं से मुक्त हो पाना असम्भव है।

(d) परम्परागत निष्ठाओं को बनाए रखना राजनीतिक विकास में सहायक होता है।

परिच्छेद-2

पूरे विश्व में सरकार में प्रादेशिकता की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति रही है, जिसके परिणामस्वरूप 1990 के दशक से क्षेत्रों और समुदायों की ओर सत्ता का व्यापक अधोगामी हस्तांतरण होता रहा है। इस प्रक्रिया को, जिसके अन्तर्गत अवराष्ट्रीय (सब- नैशनल) स्तर पर नई राजनीतिक सत्ताएँ और निकाय बनते हैं तथा उनकी क्षमता और शक्ति में वृद्धि होती है, प्रति- विकास (डीवोल्यूशन) कहते हैं। प्रति विकास की विशेषता है कि यह तीन घटकों से मिलकर बनता है, वे घटक है- राजनीतिक वैधता, सत्ता का विकेन्द्रीकरण और संसाधनों का विकेन्द्रीकरण। यहाँ राजनीतिक वैधता से आशय है निचले जनसमुदाय से विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया के लिए उठने वाली माँग, जिसमें विकेन्द्रीकरण के लिए एक राजनीतिक बल निर्मित करने की क्षमता होती है। कई मामलों में, आधारिक स्तर पर इसके लिए पर्याप्त राजनीतिक संघटन हुए बिना ही सरकार के ऊपरी स्तर से विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी जाती है, और ऐसे मामलों में विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया प्रायः अपने उद्देश्य पूरे नहीं कर पाती।

17. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और विवेचनात्मक निष्कर्ष (इन्फरेंस) निकाला जा सकता है? (2017)

(a) अवराष्ट्रीय राजनीतिक सत्ताओं के निर्माण के लिए और इस तरह सफल प्रति विकास और विकेन्द्रीकरण सुनिश्चित करने के लिए शक्तिशाली जन नेताओं का उभरना अनिवार्य है।

(b) सरकार के ऊपरी स्तर से क्षेत्रीय समुदायों पर, कानून द्वारा या अन्यथा, प्रति विकास और विकेन्द्रीकरण को अधिरोपित किया जाना चाहिए।

(c) प्रति विकास को सफल होने के लिए ऐसे लोकतंत्र की अपेक्षा होती है, जिसमें निचले स्तर के लोगों की इच्छा की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हो और आधारिक स्तर पर उनकी सक्रिय भागीदारी हो।

(d) प्रति विकास होने के लिए जनता में क्षेत्रवाद की प्रबल भावना होनी आवश्यक है।

परिच्छेद-3

हम डिजिटल काल में रहते हैं। डिजिटल सिर्फ ऐसी कोई चीज नहीं है जिसका उपयोग कार्यनीतिक रूप से और विशिष्ट तौर पर कुछ कार्यों को पूरा करने के लिए किया जाता है। हमारा यह प्रत्यक्ष ज्ञान कि हम कौन हैं, और हमारे चारों ओर की दुनिया से हम किस प्रकार जुड़ते हैं, और वे तरीके जिनसे हम अपने जीवन, श्रम और भाषा के प्रभाव क्षेत्रों को परिभाषित करते हैं, बड़े पैमाने पर डिजिटल प्रौद्योगिकियों द्वारा ही संरचित हैं। डिजिटल हर जगह विद्यमान है और हवा की तरह अदृश्य है। हम डिजिटल व्यवस्थाओं के अंदर रहते हैं, हम अन्तरंग गैजेटों (ळंकहमजे) के साथ जीते हैं, हमारी पारस्परिक क्रियाएँ डिजिटल माध्यमों के द्वारा होती हैं, और डिजिटल की मौजूदगी तथा उसकी कल्पना ने हमारे जीवन को प्रभावशाली ढंग से पुनर्संरचित कर दिया है। डिजिटल, सिर्फ एक उपकरण मात्र होने से अधिक, वह दशा और सन्दर्भ है जो हमारे आत्म-बोध, समाज-बोध और शासन संरचना बोध के आकार और सीमाओं को परिभाषित करता है।

18. निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और सारभूत सन्देश है, जो उपर्युक्त परिच्छेद द्वारा व्यक्त किया गया है? (2017)
    (a) डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर शासन की सभी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
    (b) डिजिटल प्रौद्योगिकियों की बात करना हमारे जीवन और जीवनचर्या की बात करना है।
    (c) हमारी रचनात्मकता और कल्पना को डिजिटल माध्यमों के बिना अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।
    (d) डिजिटल तंत्रों का उपयोग भविष्य में मानव के अस्तित्व के लिए अत्यावश्यक है।

परिच्छेद 4

IMF ने ध्यान दिलाया है कि एशिया की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं के समक्ष मध्यम आय जाल (मिडिल इन्कम ट्रैप) में पड़ जाने का संकट बना हुआ है। इसका आशय यह है कि इन देशों की औसत आय, जो कि अब तक तेजी से बढ़ती रही है, एक बिन्दु से आगे बढ़ना बंद कर देगी - एक ऐसा बिन्दु जो कि विकसित पश्चिमी जगत् की आय से काफी कम है। प्डथ, आधारभूत संरचना से लेकर कमजोर संस्थाओं तक और अपर्याप्त रूप से अनुकूल समष्टि आर्थिक (मैक्रोइकॉनॉमिक) दशाओं तक, मध्यम आय जाल के कई कारणों की पहचान करता है- जिनमें से कोई भी आश्चर्यजनक नहीं है। परन्तु, IMF कहता है कि सर्वरूपेण कारण उत्पादकता की वृद्धि में गिरावट है।

19. उपर्युक्त गरिच्छेद से लिखित में से कौन सा सर्वाधिक तार्किक तर्कसंगत और विवेचनात्मक निष्कर्ष (इन्फरेंस) निकाला जा सकता है? (2017)
    (a) किसी देश के मध्यम आय अवस्था में पहुँच जाने से उसकी उत्पादकता में ह्रास होने का खतरा होता है, जिसके परिणामस्वरूप आय की वृद्धि रुक जाती है।
    (b) मध्यम आय जाल में फँसना तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्थाओं की एक सामान्य विशेषता है।
    (c) एशिया की उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के लिए वृद्धि की गति को बनाए रखने की कोई आशा नहीं है।
    (d) जहाँ तक उत्पादकता की वृद्धि का प्रश्न है, एशिया की अर्थव्यवस्थाओं का निष्पादन संतोषजनक नहीं है।

परिच्छेद-5

नवप्रवर्तनकारी (इन्नोवेटिव) भारत समावेशी होने के साथ-साथ प्रौद्योगिकी में भी उन्नत होगा जिससे सभी भारतीयों के जीवन में सुधार आयेगा। नवप्रवर्तन तथा R&D बढ़ती हुई सामाजिक असमानता को कम कर सकते हैं और द्रुत शहरीकरण से उत्पन्न होने वाले दबावों से मुक्त कर सकते हैं। कृषि और ज्ञान केन्द्रित (नॉलेज इंटेंसिव) निर्माण और सेवाओं के बीच उत्पादकता में बढ़ते हुए विभेद से, आय असमानता के बढ़ने का खतरा है। भारत की R&D प्रयोगशालाओं और विश्वविद्यालयों को गरीब लोगों की जरूरतों पर ध्यान रखने के लिए प्रोत्साहित कर तथा ज्ञान-अर्जन के लिए अनौपचारिक प्रतिष्ठानों की क्षमता में उन्नयन कर, एक नवप्रवर्तन और अनुसंधान कार्यक्रम इस प्रभाव का सामना कर सकता है। समावेशी नवप्रवर्तन वस्तु और सेवाओं की लागत को कम कर सकता है तथा गरीब लोगों के लिए आय-अर्जन के अवसर उत्पन्न कर सकता है।

20. निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक तार्किक और सर्कसंगत पूर्वधारणा है, जो कि उपर्युक्त परिच्छेद से बनाई जा सकती है? (2017)

(a) गाँवों से शहरों के प्रवसन को कम करने के लिए नवप्रवर्तन तथा R&D ही एकमात्र रास्ता है।

(b) तेजी से विकसित होने वाले प्रत्येक देश को कृषि और अन्य क्षेत्रों में उत्पादकता के बीच विभेद को न्यूनतम करने की आवश्यकता है।

(c) समावेशी नवप्रवर्तन तथा R&D एक समतावादी समाज बनाने में सहायता कर सकते हैं।

(d) द्रुत शहरीकरण केवल तभी होता है जब किसी देश की आर्थिक वृद्धि तीव्रगामी होती है।

परिच्छेद-6

यह संभावना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण बहुत बड़ी संख्या में लोग बढ़ते हुए पर्यावरणीय जोखिम में पड़ जाएँगे और फलस्वरूप प्रवसन के लिए विवश हो जाएँगे। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को प्रवासियों की इस नई श्रेणी की पहचान अभी करनी है। अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के अंतर्गत शरणार्थी शब्द का एक सुस्पष्ट अर्थ होने के कारण, जलवायु के कारण होने वाले शरणार्थियों की परिभाषा और स्थिति पर कोई सर्वसम्मति नहीं है। यह बात अभी भी समझ से बाहर है कि जलवायु परिवर्तन प्रवसन के मूल कारण के रूप में कैसे कार्य करेगा। यदि जलवायु के कारण होने वाले शरणार्थियों की पहचान हो, तब भी उन्हें संरक्षण कौन प्रदान करेगा? जलवायु परिवर्तन के कारण जो अंतर्राष्ट्रीय प्रवसन होता है, उस पर कहीं अधिक बल दिया गया है। परंतु आवश्यकता है कि जलवायु-प्रभावित लोगों के, देशों के अंदर में हुए प्रवसन की भी पहचान की जाए ताकि उनकी समस्याओं को उचित प्रकार से दूर किया जा सके।

21. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत निष्कर्ष (इन्फरंस) निकाला जा सफता है? (2017)

(a) विश्व, विशाल पैमाने पर जलवायु के कारण होने वाले शरणार्थियों के प्रवसन का सामना नहीं कर पाएगा।

(b) जलवायु परिवर्तन को और आगे बढ़ने से रोकने के लिए हमें तरीके और साधन ढूँढने चाहिए।

(c) भविष्य में जलवायु परिवर्तन लोगों के प्रवसन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारण होगा।

(d) जलवायु परिवर्तन और प्रवसन के बीच सम्बन्ध अभी भी सही रूप में समझा नहीं गया है।

परिच्छेद-7

अनेक किसान फसल को हानि पहुँचाने वाले कीटों को मारने के लिए संश्लेषित कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। कुछ विकसित देशों में तो कीटनाशकों की खपत 3000 ग्राम प्रति हेक्टेयर तक पहुँच रही है। दुर्भाग्यवश, ऐसी कई रिपोर्ट हैं कि ऐसे यौगिकों में अन्तर्निहित विषाक्तता होती है जो खेती करने वालों के, उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और पर्यावरण को खतरे में डालती है। संश्लेषित कीटनाशक सामान्यत: पर्यावरण में लगातार बने रहते हैं । खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर वे सूक्ष्मजैविक विविधता को नष्ट कर पारिस्थितिक (इकोलॉजिकल) असंतुलन उत्पन्न करते हैं। इनके अंधाधुंध उपयोग के परिणामस्वरूप कीटों में कीटनाशकों के विरुद्ध प्रतिरोध विकसित हुआ है, प्राकृतिक संतुलन में गड़बड़ी हुई है और जिन समष्टियों का उपचार किया जा चुका है वे फिर से बढ़ गई हैं। वानस्पतिक कीटनाशक का उपयोग कर प्राकृतिक पीड़क नियंत्रण करना इनके उपयोगकर्ताओं एवं पर्यावरण के लिए अपेक्षाकृत सुरक्षित होता है, क्योंकि वे सूर्य के प्रकाश की मौजूदगी में कुछ घंटों अथवा दिनों में ही हानिरहित यौगिकों में टूट जाते हैं। कीटनाशी विशेषताओं से युक्त पौधे लाखों वर्षों से, पारिस्थितिक तंत्र पर कोई खराब या प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, प्रकृति में मौजूद हैं। अधिकांश मृदाओं में आमतौर पर पाए जाने वाले अनेक सूक्ष्मजीव इन्हें सरलता से विघटित कर देते हैं। वे परभक्षियों की जैविक विविधता को बनाए रखने और पर्यावरणीय संदूषण तथा मनुष्यों के स्वास्थ्य संकटों को कम करने में सहायक हैं। पौधों से बनाए गए वानस्पतिक कीटनाशक जैव निम्नीकरणीय (बायोडिग्रेडेबल) होते हैं और फसल सुरक्षा में उनका उपयोग करना व्यावहारिक रूप से एक धारणीय विकल्प है।

22. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2017)

1. आधुनिक कृषि में, संश्लेषित कीटनाशकों का उपयोग कभी भी नहीं करना चाहिए।
2. धारणीय कृषि का एक उद्देश्य अल्पतम पारिस्थितिक असंतुलन को सुनिश्चित करना है।
3. वानस्पतिक कीटनाशक, संश्लेषित कीटनाशकों की तुलना में, अधिक प्रभावकारी होते हैं।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

23. जैव कीटनाशकों के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौन - सा /से सही है/हैं? (2017)

1. वे मानवीय स्वास्थ्य के लिए खतरनाक नहीं हैं।
2. वे पर्यावरण में लगातार बने रहते हैं।
3. वे किसी भी पारिस्थितिक तंत्र की जैव विविधता बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

निम्नलिखित 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित सात परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

वायु गुणता सूचकांक द्य एयर क्वॉलिटी इंडेक्स (AQI)] बहुत से वायु प्रदूपकों की माप को एफल संख्या अथवा अनुमतांक (रेटिंग) में जोड़कर दिखाने का एक तरीका है। आदर्श रूप में, इस सूचकांक को सतत रूप से अद्यतन (अपडेट) बनाए रखा जाता है और यह विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध रहता है। AQI सर्वाधिक उपयोगी तब होता है जब बहुत सारे प्रदूषण आँकड़े एकत्रित किए जा रहे हों, और जब प्रदूषण के स्तर, हमेशा तो नहीं, लेकिन आमतौर पर निम्न रहते हों। इन दशाओं में, यदि प्रदूषण स्तर कुछ दिनों के लिए अचानक बढ़ जाए, तो जनता वायु गुणता चेतावनी की प्रतिक्रिया में शीघ्रता से निरोधक कार्रवाई (जैसे कि घर के भीतर रहना) कर सकती है। दुर्भाग्य से, शहरी भारत की हालत ऐसी नहीं है। कई बड़े भारतीय शहरों में प्रदूषण स्तर इतने अधिक होते हैं कि वे वर्ष के ज्यादातर दिनों में स्वास्थ्य के मानकों अथवा नियामक मानकों से ऊपर बने रहते हैं। यदि हमारा सूचकांक दिन पर दिन श्लाल / खतरनाकश दायरे में बना रहता है, तो किसी के लिए भी ज्यादा कुछ करने लायक नहीं रहता सिवाय इसके कि इनकी उपेक्षा करने की आदत बना लें।

24. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इन्फरेंस) निकाला जा सकता है? (2017)

(a) हमारे शहरों को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए हमारी सरकारें पर्याप्त रूप से जिम्मेवार नहीं हैं।
(b) हमारे देश में वायु गुणता सूचकांकों की बिल्कुल ही आवश्यकता नहीं है।
(c) हमारे बड़े शहरों के बहुत से निवासियों के लिए वायु गुणता सूचकांक सहायक नहीं है।
(d) प्रत्येक शहर में, प्रदूषण सम्बन्धी समस्याओं के बारे में जन-जागरूकता बढ़नी चाहिए।

परिच्छेद-2

उत्पादक नौकरियाँ (जॉब) विकास के लिए महत्त्वपूर्ण हैं और अच्छी नौकरी सर्वोत्तम प्रकार का समावेशन है। हमारी आधी से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, परन्तु अन्य देशों के अनुभव से पता चलता है कि यदि कृषि में प्रति व्यक्ति आय पर्याप्त रूप में बढ़ानी है, तो कृषि पर निर्भर व्यक्तियों की संख्या में कमी लानी चाहिए। जहाँ एक ओर उद्योग में नौकरियाँ सृजित की जा रही हैं, वहीं असंगठित क्षेत्र में ऐसी बहुत सारी नौकरियाँ निम्न उत्पादकता वाली गैर-संविदागत नौकरियाँ होती हैं, जिनमें कम आय और न के बराबर सुरक्षा दी जाती है तथा कोई हितलाभ नहीं दिए जाते। इनकी तुलना में सेवा क्षेत्र की नौकरियाँ उच्च उत्पादकता वाली होती हैं, परन्तु सेवाओं में रोजगार वृद्धि हाल के वर्षों में धीमी रही है।

25. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इन्फरेंस) निकाला जा सकता है? (2017)

(a) रोजगार वृद्धि और समावेशन को सुनिश्चित करने के लिए हमें अत्यधिक उत्पादक सेवा क्षेत्र की नौकरियों के तीव्रतर विकास की परिस्थितियों को उत्पन्न करना आवश्यक है।

(b) आर्थिक वृद्धि और समावेशन को सुनिश्चित करने के लिए हमें खेतिहर कामगारों को अत्यधिक उत्पादक विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में स्थानांतरित करना आवश्यक है।

(c) हमें कृषि की उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ कृषि क्षेत्र से बाहर उत्पादक नौकरियों के तीव्रतर विकास की परिस्थितियों को उत्पन्न करना आवश्यक है।

(d) कृषि में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि लाने के लिए हमें उच्च उपज वाली संकर किस्मों और आनुवंशिकत: रूपांतरित (जेनेटिकली मॉडिफाइड) फसलों की खेती पर बल देना आवश्यक है।

परिच्छेद-3

भूमि उपयोग में दृश्यभूमि पैमाने के उपागम (अप्रोच) से, संरक्षित क्षेत्रों के बाहर और अधिक जैव विविधता को प्रोत्साहन मिल सकता है। वर्ष 1998 में प्रभंजन (हरिकन) शमिचश के दौरान, पर्यावरणीय कृषि पद्धतियों के उपयोग करने वाले फार्मों का, पारम्परिक तकनीकों के उपयोग करने वाले फार्मों की तुलना में, क्रमश: होंडुरास, निकारागुआ और ग्वाटेमाला में 58 प्रतिशत, 70 प्रतिशत और 99 प्रतिशत कम नुकसान हुआ। कोस्टारिका में, वानस्पतिक वात-रोधों (विडब्रेक्स) और बाड़ कतारों के उपयोग से, पक्षी - विविधता में वृद्धि के साथ-साथ, किसानों की चरागाह और कॉफी से होने वाली आय में अत्यधिक बढ़ोतरी हुई। प्राकृतिक अथवा अर्ध प्राकृतिक आवास के निकटतर कृषि भूमि होने पर मधुमक्खियों से होने वाला परागण अधिक प्रभावकारी होता है, यह निष्कर्ष महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि विश्व की 107 अग्रणी फसलों का 87 प्रतिशत परागण करने वाले जंतुओं पर निर्भर है। कोस्टारिका, निकारागुआ और कोलम्बिया में, वन पशुचारी (सिल्वोपास्टरल) प्रणालियाँ, जिनमें पेड़ चरागाह भूमियों के साथ एकीकृत हैं, पशु उत्पादन की धारणीयता में सुधार ला रही हैं और किसानों की आय में विविधता और वृद्धि ला रही हैं।

26. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इन्फरेंस) निकाला जा सकता है? (2017)

(a) जैव विविधता को बढ़ाने वाली कृषि पद्धतियाँ प्राय: फार्म उत्पादन में वृद्धि और आपदाओं के प्रति असुरक्षितता को कम करती हैं।

(b) विश्व के सभी देशों को पर्यावरणीय कृषि के स्थान पर पारम्परिक कृषि करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(c) संरक्षित क्षेत्रों में, वहाँ की जैव विविधता को नष्ट किए बिना, पर्यावरणीय कृषि की अनुमति दी जानी चाहिए।

(d) खाद्य फसलों की उपज तब अत्यधिक होगी, जब उनकी खेती में पर्यावरणीय कृषि पद्धतियाँ अपनायी जाए।

परिच्छेद-4

भारतीय विनिर्माण के लिए मध्यावधि चुनौती, निम्नतर से उच्चतर प्रौद्योगिक क्षेत्रों, निम्नतर से उच्चतर मूल्यवर्धित क्षेत्रों और निम्नतर से उच्चतर उत्पादकता क्षेत्रों की ओर बढ़ने की है। मध्यम प्रौद्योगिक उद्योगों में मुख्य रूप से अत्यधिक पूँजी लगी होती है और उनमें संसाधनों का प्रक्रमण होता है; और उच्च प्रौद्योगिक उद्योगों में मुख्य रूप से अत्यधिक पूँजी और प्रौद्योगिकी लगी होती है। सम्पूर्ण ळक्च् में विनिर्माण के हिस्से को प्रकल्पित 25 प्रतिशत तक बढ़ाने के लिए भारतीय विनिर्माण क्षेत्र को, विश्व बाजार के उन क्षेत्रों पर कब्जा करने की आवश्यकता है, जिनमें बढ़ती हुई माँग की प्रवृत्ति है। इन क्षेत्रों में अधिकांश रूप से उच्च प्रौद्योगिकी और पूँजी लगी होती है।

27. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इन्फरेंस) निकाला जा सकता है? (2017)

(a) मध्यम प्रौद्योगिक और संसाधनों का प्रक्रमण करने वाले उद्योगों में, भारत की GDP, उच्च मूल्य- वर्धित तथा उच्च उत्पादकता स्तरों को दर्शाती है।

(b) भारत में अत्यधिक पूँजी और प्रौद्योगिकी वाले विनिर्माण का संवर्धन करना सम्भव नहीं है।

(c) भारत को, अनुसंधान एवं विकास, प्रौद्योगिकी उन्नयन और कौशल विकास में, सरकारी निवेश बढ़ाना चाहिए और गैर-सरकारी निवेशों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

(d) भारत ने पहले से ही विश्व-बाजार के उन क्षेत्रों में बड़ा हिस्सा प्राप्त कर लिया है, जिनमें बढ़ती हुई माँग की प्रवृत्ति है।

परिच्छेद-5

पिछले दशक के दौरान भारतीय कृषि, खाद्यान्न व तिलहन का रिकॉर्ड उत्पादन करने के साथ, और अधिक सुदृढ़ हुई है। इसके परिणामस्वरूप बढ़ी हुई खरीद से भंडारगृहों में खाद्यान्न के स्टॉक में भारी बढ़ोतरी हुई है। भारत चावल, गेहूँ, दूध, फलों व सब्जियों के विश्व के शीर्ष उत्पादकों में से एक है। फिर भी विश्वभर के न्यूनपोषित लोगों का एक-चौथाई भाग भारत में है। औसत रूप से, देश के कुल परिवारों के लगभग आधे परिवारों में कुल व्यय का लगभग आधा व्यय भोजन पर होता है।

28. निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है? (2017)

(a) गरीबी और कुपोषण को कम करने के लिए खेत से थाली (फार्म-टु-फोर्क) तक की मूल्य श्रृंखला की दक्षता में बढ़ोतरी करना जरूरी है।

(b) कृषि उत्पादकता में बढ़ोतरी करने से भारत में स्वत: ही गरीबी और कुपोषण दूर हो जाएगा।

(c) भारत की कृषि उत्पादकता पहले से ही बहुत अधिक है और इसे और अधिक बढ़ाया जाना आवश्यक नहीं है।

(d) सामाजिक कल्याण और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के लिए अधिक निधि का आबंटन करने से भारत से गरीबी और कुपोषण का अन्तत: उन्मूलन हो जाएगा।

परिच्छेद-6

राज्य मोतियों के समान हैं तथा केन्द्र वह धागा है जो उन्हें हार में पिरोता है; यदि धागा टूट जाए, तो मोती बिखर जाते हैं।

29. निम्नलिखित विचारों में से कौन-सा एक उपर्युक्त कथन की संपुष्टि करता है? (2017)

(a) शक्तिशाली केन्द्र और शक्तिशाली राज्य, एक मजबूत संघ (फेडरेशन) बनाते हैं।

(b) शक्तिशाली केन्द्र, राष्ट्रीय अखण्डता हेतु एक बंधनकारी शक्ति है।

(c) शक्तिशाली केन्द्र, राज्य स्वायत्तता में बाधा है।

(d) राज्य की स्वायत्तता, संघ (फेडरेशन) के लिए पूर्वापेक्षा है।

परिच्छेद-7

वास्तव में, मेरा मानना है कि इंग्लैंड में निर्धनतम व्यक्ति को भी एक वैसा ही जीवन जीना है जैसा कि महानतम व्यक्ति को, और इसलिए सच में, मैं मानता हूँ कि यह स्पष्ट है कि हर उस व्यक्ति को, जिसे सरकार के अधीन रहना है, सबसे पहले अपनी सहमति से स्वयं को सरकार के अधीन कर देना चाहिए, और मेरा यह अवश्य मानना है कि इंग्लैंड का निर्धनतम व्यक्ति, सही अर्थ में ऐसी सरकार से कतई बंधा हुआ नहीं है जिसके अधीन स्वयं को करने में उसकी कोई राय नहीं रही हो।

30. उपर्युक्त कथन किसके समर्थन में तर्क प्रस्तुत करता है? (2017)

(a) सम्पति का सबको समान बितरण

(b) शासितों की सहमति के अनुसार शासन

(c) निर्धनों के हाथ में शासन

(d) धनिकों का स्वत्वहरण (एक्सप्रोप्रिएशन)

2018

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

नीचे दिए गए चार परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांर्शो के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

विश्व की जनसंख्या 1990 में 1.6 अरब के लगभग थी-आज यह 7.2 अरब के लगभग है और बढ़ रही है। जनसंख्या वृद्धि पर किए गए हाल के आकलनों से यह पूर्वानुमान होता है कि विश्व की जनसंख्या 2050 में 96 अरब और 2100 में 10.9 अरब हो जाएगी। यूरोप और उत्तरी अमेरिका के असदृश जहाँ केवल तीन से चार प्रतिशत जनसंख्या ही कृषि में लगी है, भारत की लगभग 47 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। यदि भारत सेवा क्षेत्र में लगातार प्रगति करता रहे और विनिर्माण क्षेत्र तेजी से बढ़ता रहे, तो भी यह संभावना की जाती है कि 2030 के आस-पास जब भारत चीन से आगे निकल कर विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश होगा, भारत की लगभग 42 प्रतिशत जनसंख्या प्रधान रूप से कृषि पर निर्भर होगी।

1. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2018)

(a) कृषि क्षेत्र की समृद्धता भारत के लिए क्रांतिक महत्त्व की है।

(b) भारतीय अर्थव्यवस्था प्रमुख रूप से इसकी कृषि पर निर्भर करती है।

(c) भारत को अपनी तेजी से बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए कठोर उपाय अपनाने चाहिए।

(d) भारत के कृषि समुदायों को अपनी आर्थिक दशाओं में सुधार लाने के लिए अन्य व्यवसायों को अपना लेना चाहिए।

परिच्छेद-2

खाद्य जात बीमारियाँ उत्पन्न करने वाले बहुत से रोगाणुओं के विषय में जानकारी नहीं है। खाद्य संक्रमण खेत से लेकर थाली तक किसी भी चरण में हो सकता है। चूँकि खाद्य विषाक्तीकरण की अनेकों घटनाएँ अप्रतिवेदित रह जाती हैं, वैश्विक खाद्य-जात बीमारियों का सही प्रसार अज्ञात है। अंतर्राष्ट्रीय परिवेक्षण में सुधार के कारण जन जागरूकता में बढ़ोतरी हुई है, तदपि खाद्य उत्पादन में तीव्र वैश्वीकरण से खाद्य को नियंत्रित करना तथा अनुरेखित करना कठिनतर होने के कारण उपभोक्ता की भेद्यता बढ़ गई है। डब्ल्यू० एच० ओ० के एक अधिकारी का कथन है, "विश्व हमारी प्लेट पर है।"

2. निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है? (2018)

(a) खाद्य के विकल्प अधिक होने के कारण जोखिम अधिक आते हैं।

(b) समस्त खाद्य जात बीमारियों का उद्‌गम खाद्य प्रसंस्करण है।

(c) हमें केवल स्थानीय उत्पादित खाद्य पर निर्भर रहना चाहिए।

(d) खाद्य उत्पादन के वैश्वीकरण में कटौती लानी चाहिए।

परिच्छेद-3

मैं वैज्ञानिक हूँ, मेरा सौभाग्य है कि मैं इस प्रकार का व्यक्ति हूँ जो विज्ञान के साधनों का उपयोग करके प्रकृति को समझ सकता है। लेकिन यह भी स्पष्ट है कि कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न सचमुच में ऐसे हैं, जिनका उत्तर वास्तव में विज्ञान नहीं दे सकता, जैसे कि कुछ भी न होने के स्थान पर कुछ क्यों है? हम यहाँ क्यों हैं? उन दायरों में मैंने पाया है कि आस्था इनके उत्तरों के लिए बेहतर मार्ग उपलब्ध कराती है। मैं इसको विषम रूप से कालदोषयुक्त पाता हूँ कि आज की संस्कृति में एक व्यापक धारणा प्रतीत होती है कि वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विचार असंगत हैं।

3. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2018)

(a) यह विज्ञान न होकर आस्था है जो अंततः मानव जाति की सभी समस्याओं को सुलझा सकती है।

(b) विज्ञान और आस्था आपस में संपूरक हो सकते हैं यदि उनके समुचित दायरों को समझ लिया जाए।

(c) कुछ ऐसे अत्यंत मूलभूत प्रश्न हैं जिनका उत्तर विज्ञान अथवा आस्था किसी से नहीं दे सकते हैं।

(d) आज की संस्कृति में वैज्ञानिक विचारों को, आध्यात्मिक विचारों की तुलना में अधिक महत्त्व दिया जा रहा है।

परिच्छेद -4

यद्यपि मैंने बहुत-सी पुरानी परम्पराओं एवं प्रथाओं को त्याग दिया है और मैं उत्सुक हूँ कि भारत स्वतः उन सभी बेड़ियों को उतार फेंके जो उसे बाँधती हैं, रोकती हैं और उसके लोगों को विभाजित करती हैं, और उनमें से अधिसंख्य लोगों का दमन करती हैं तथा शरीर एवं आत्मा के स्वतंत्र विकास को रोकती हैं। यद्यपि मैं ये सब चाहता हूँ फिर भी अपने आप को अतीत से पूरी तरह काटना नहीं चाहता। मुझे अपनी महान विरासत पर गर्व है जो हमारी रही है और है भी और मैं सचेत हूँ कि मैं भी, हम सभी की तरह, उस अटूट श्रृंखला की कड़ी हूँ जो इतिहास के उषाकाल के भारत के अविस्मरणीय अतीत से संबद्ध है।

4. लेखक चाहता है कि भारत अपने को अतीत के बंधनों से मुक्त करे, क्योंकि (2018)

(a) वह भूतकाल के औचित्य को नहीं समझ पा रहा है

(b) ऐसा कुछ नहीं है जिस पर गर्व किया जा सके

(c) उसकी भारत के इतिहास में रुचि नहीं है

(d) वे उसके भौतिक और आध्यात्मिक विकास को रोकते हैं

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए परिच्छेद को पढ़िए और परिच्छेद के नीचे आने वाले चार प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इस परिच्छेद पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद

अब शिक्षा की सार्वभौम पहुँच प्रदान करने की मात्र बात करना हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। विद्यालयी सुविधाएँ उपलब्ध कराना एक आवश्यक पूर्वापेक्षा तो है, किन्तु यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी बच्चे विद्यालय जाएँ और सीखने की प्रक्रिया में भाग लें, यह अपर्याप्त है। संभव है कि विद्यालय हो, किन्तु बच्चे न जाएँ या कुछ माह बाद विद्यालय छोड़ दें। विद्यालय और सामाजिक सुव्यवस्था (सोशल मैपिंग) द्वारा, हमें व्यापक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और अवश्य ही भाषाई और शैक्षिक मुद्दों को तथा उन कारकों को, जो कमजोर वर्गों और सुविधा- वंचित समूहों के बच्चों को, लड़कियों को भी नियमित विद्यालय जाने और प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने से रोकते हैं, सुलझाना चाहिए। हमारा ध्यान निर्धनतम और सबसे असुरक्षित वर्ग पर केन्द्रित होना चाहिए क्योंकि ये सर्वाधिक अशक्त हैं और इन्हीं को अपने शिक्षा के अधिकार का अतिक्रमण होने या उससे वंचित होने का सबसे अधिक जोखिम है।

शिक्षा के अधिकार का दायरा नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा से कहीं आगे तक है और इसमें सभी के लिए गुणतापूर्ण शिक्षा शामिल है। गुणता शिक्षा के अधिकार का अभिन्न अंग है। यदि शिक्षा प्रक्रिया में गुणता का अभाव है, तो बच्चों को उनके अधि कार से वंचित किया जा रहा है। बच्चों का नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम यह अधिकथित करता है कि पाठ्यक्रम में कार्यकलाप, अन्वेषण और खोज के माध्यम से शिक्षा प्राप्ति का प्रावधान होना चाहिए। इससे हम पर यह बाध्यता आती है कि बच्चों को विद्या के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में देखने का नजरिया बदला जाए और परीक्षाओं के आधार के रूप में पाठ्यपुस्तकों के उपयोग की परिपाटी से आगे बढ़ा जाए। शिक्षण और शिक्षा ग्रहण प्रणाली को तनावमुक्त होना ही चाहिए और शिक्षार्थी अनुकूली अधिगम प्रणाली की व्यवस्था के लिए पाठ्यक्रम सुधार का एक व्यापक कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिए जो अधिकाधिक संगत और सशक्तीकारक हो। शिक्षक उत्तरदायित्व-प्रणालियों और प्रक्रियाओं से यह अवश्य सुनिश्चित होना चाहिए कि बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और शिक्षार्थी अनुकूली वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने के उनके अधिकार का उल्लंघन नहीं हो रहा है। परीक्षण और मूल्यांकन प्रणालियों की पुनर्परीक्षा कर उन्हें इस रूप में पुन: अभिकल्पित किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो कि बच्चे विद्यालय और अनुशिक्षण (ट्यूशन) केन्द्रों के बीच संघर्ष करते-करते अपने बचपन से वंचित रह जाने को बाध्य न हों।

5. इस परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से किसका / किनका शिक्षा के अधिकार के अधीन सर्वोपरि महत्त्व है? (2018)

1. सभी माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को विद्यालय भेजा जाना
2. विद्यालयों में पर्याप्त भौतिक आधारभूत संरचना की व्यवस्था
3. शिक्षार्थी अनुकूली शिक्षा प्राप्ति प्रणाली विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम सुधार करना

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 3
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2018)

1. शिक्षा का अधिकार बच्चों की शिक्षा प्राप्ति प्रक्रिया के लिए शिक्षक का उत्तरदायित्व होने की गारंटी देता है।
2. शिक्षा का अधिकार विद्यालयों में बच्चों के 100% नामांकन होने की गारंटी देता है।
3. शिक्षा के अधिकार का आशय जनांकिकीय लाभांश का पूरा लाभ उठाने का है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

7. इस परिच्छेद के अनुसार, शिक्षा में गुणता लाने हेतु निम्नलिखित में से कौन-सा एक निर्णायक है? (2018)

(a) विद्यालय में बच्चों की और शिक्षकों की भी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना

(b) शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें आर्थिक लाभ प्रदान करना

(c) बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझना

(d) कार्यकलाप और खोज के माध्यम से शिक्षा प्राप्ति का अंतर्निवेशन (इन्कल्केटिंग लर्निंग)

8. इस परिच्छेद में सारभूत संदेश क्या है? (2018)

(a) शिक्षा का अधिकार अब मूल अधिकार है।

(b) शिक्षा का अधिकार समाज के निर्धन और दुर्बल वर्गों के बच्चों को विद्यालय जाने को समर्थ बनाता है।

(c) नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार में सभी के लिए गुणतापूर्ण शिक्षा शामिल होना चाहिए।

(a) सरकार को, और माता-पिता को भी, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी बच्चे विद्यालय जाएँ।

निम्नलिखित 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए चार परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

'मरुभवन (डेजर्टिफिकेशन)' किसी पारितंत्र की जैव उत्पादकता के ह्रास की उस प्रक्रिया की व्याख्या करने वाला शब्द है, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादकता की संपूर्ण हानि हो जाती है। यद्यपि यह घटना प्राय: शुष्क, अर्धशुष्क और अल्पार्द्र पारितंत्रों से जुड़ी हुई है, तथापि आर्द्र उष्णकटिबंधों में भी इसका प्रभाव अत्यंत नाटकीय हो सकता है। मानव-प्रभावित स्थलीय पारितंत्रों का दरिद्रण (इंपोवरिशमेंट) विविध रूपों में दिख सकता है त्वरित अपरदन, जैसा कि देश के पर्वतीय क्षेत्रों में है; भूमि का लवणीभवन, जैसा कि देश के अर्धशुष्क और शुष्क श्हरितक्रांतिश क्षेत्रों, उदाहरणार्थ हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है और स्थल गुणता हास, जो कि भारत के सभी मैदानों पर वनस्पति-आच्छादन के व्यापक हास और धान/गेहूँ की एकरस एकधान्य कृषि के कारण होने वाली एक आम घटना है। वनोन्मूलन का एक प्रमुख दुष्परिणाम जलविज्ञान में प्रतिकूल परिवर्तनों और संबंधि त मृदा और पोषकों की हानियों से संबंधित है। वनोन्मूलन के दुष्परिणाम निरपवाद रूप से अपरदनकारी हानियों के माध्यम से होने वाले स्थल अवक्रमण के कारण उत्पन्न होते हैं। उष्णकटिबंधीय एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में अपरदन उच्चतम स्तर पर हैं। उष्णकटिबंधों पर पहले से ही इसकी उच्च दरें वनोन्मूलन के, और वनों के नष्ट हो जाने के उपरांत किए जाने वाले बेमेल भूमि प्रबंधन प्रणालियों के कारण चिंताजनक दर से बढ़ रही हैं (उदाहरणार्थ, भारतीय संदर्भ में प्रमुख नदीतंत्रों गंगा और ब्रह्मपुत्र के माध्यम से)। पर्वत के संदर्भ में, पर्वतीय मृदा का कम होता जा रहा आर्द्रता धारण, हिमालयी क्षेत्र में अंतर्भीम झरनों और अपेक्षाकृत छोटी नदियों के सूखते जाने का श्रेय वन आच्छादन में आए उग्र परिवर्तनों को दिया जा सकता है। एक अप्रत्यक्ष परिणाम, जल के माध्यम से होने वाले उच्चभूमि- निम्नभूमि की अन्योन्यक्रिया में आया उग्र बदलाव है। असम के चायरोपण करने वालों की तात्कालिक चिंता ब्रह्मपुत्र के कछारों के साथ आने वाले बारम्बार आप्लावन के कारण चाय बागानों को होने वाली क्षति के बारे में है, एवं चाय बागान की क्षति और परिणामस्वरूप होने वाली चाय उत्पादकता की हानि, नदीतंत्र के बदलते मार्ग और गाद भराई (सिल्टेशन) के कारण नदी तल के बढ़ते जाते स्तर के कारण हैं। स्थल मरुभवन के अंतिम परिणाम : मृदा निम्नीकरण, उपलब्ध जल और उसकी गुणता में परिवर्तन, और इसके परिणामस्वरूप, ग्रामीण समुदाय के आर्थिक कल्याण के लिए आवश्यक खाद्य, चारा और ईंधन - काष्ठ उत्पादन में होने वाला ह्रास।

109

9. इस परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-से वन-आच्छादन में आए हास के परिणाम हैं? (2018)
   1. उपरिमृदा की हानि
   2. अपेक्षाकृत छोटी नदियों की हानि
   3. कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव
   4. भौमजल की हानि

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

   (a) केवल 1, 2 और 3
   (b) केवल 2, 3 और 4
   (c) केवल 1 और 4
   (d) 1, 2, 3 और 4

10. इस परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन सा/से सही निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है/निकाले जा सकते हैं? (2018)
   1. वनोन्मूलन के कारण नदियों के मार्ग में परिवर्तन हो सकता है।
   2. भूमि का लवणीभवन केवल मानवीय क्रियाकलाप के कारण होता है।
   3. मैदानों में गहन एकधान्य कृषि-प्रथा, उष्णकटिबंधीय एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में मरुभवन का प्रमुख कारण है।

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

   (a) केवल 1
   (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 2 और 3
   (d) उपर्युक्त में से कोई भी सही निष्कर्ष नहीं है

11. 'मरुभवन' के संदर्भ में, जैसा कि परिच्छेद में वर्णन किया गया है, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2018)
   1. मरुभवन, केवल उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की एक घटना है।
   2. बाढ़ और मरुभवन, वनोन्मूलन के अनिवार्य परिणाम है।

   उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद-2

जलवायु परिवर्तन का सामना करने और उत्पादक कृषि, वानिकी तथा मत्स्यपालन को सुनिश्चित करने के लिए प्राकृतिक परिसम्पत्तियों की विविधता की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, ऐसी फसल किस्मों की आवश्यकता है जो सूखा, गर्मी और बढ़ी हुई CO_2 के अंतर्गत अच्छा निष्पादन करें। लेकिन फसलों को चुनने के लिए निजी क्षेत्र और किसान प्रेरित प्रक्रिया अतीत अथवा वर्तमान दशाओं में अपनाई गई एकरूप किस्मों का समर्थन करती है न कि उन किस्मों का जो अपेक्षाकृत गर्म, आर्द्र अथवा शुष्क दशाओं में सतत उच्च उत्पादन देने में समर्थ हैं। वर्तमान फसलों, नस्लों और उनके वन्य संबंधियों के आनुवंशिक संसाधनों की अपेक्षाकृत व्यापक निकार्यों (पूल) को संरक्षित रखने के लिए त्वरित प्रजनन कार्यक्रमों की आवश्यकता

है। अपेक्षाकृत अक्षुण्ण पारितंत्रों, जैसे कि वनारोपित जलग्रहण क्षेत्र, मैंग्रोव आर्द्रभूमियाँ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को रोक सकते हैं। बदलती हुई जलवायु के अंतर्गत ये पारितंत्र स्वयं संकट में हैं और प्रबंधन उपागमों को अपेक्षाकृत अधिक पूर्व सक्रिय और अनुकूली बनाना होगा। प्राकृतिक क्षेत्रों के बीच के संयोजनों, जैसे कि प्रवासन गलियारों, की आवश्यकता जातियों की गतिशीलता सुकर बनाने के लिए होगी जिससे कि जलवायु परिवर्तन का सामना किया जा सके।

12. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से, जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए सहायक होंगे? (2018)

1. प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण
2. अपेक्षाकृत व्यापक जीन पूल का संरक्षण
3. विद्यमान फसल प्रबंधन पद्धतियाँ
4. प्रवासन गलियारे

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) केवल 1, 2 और 3
(b) केवल 1, 2 और 4
(c) केवल 3 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

13. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2018)

1. जीविका का विविधीकरण, जलवायु परिवर्तन का सामना करने की एक योजना के रूप में कार्य करता है।
2. एकधान्य फसल पद्धति को अपनाने से पादप किस्में और उनके वन्य संबंधी, समाप्ति की ओर अग्रसर होते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

THE CORE IAS

परिच्छेद-3

आज शीर्ष पर्यावरणीय चुनौती जन तथा इनकी आकांक्षाओं का समुच्चय है। यदि आकांक्षाएँ द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की किफायती प्रकार की हों, तब बहुत अधिक संभावनाएँ बनती हैं, उस दृष्टिकोण की तुलना में जो पृथ्वी को एक विशालकाय शॉपिंग मॉल की भाँति देखता है। हमें चमक-दमक के आकर्षण के परे जाना चाहिए तथा यह समझना चाहिए कि पृथ्वी एक जैविक तंत्र की भाँति कार्य करती है।

14. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक और तार्किक निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2018)

(a) पृथ्वी मानव की खाद्य वस्त्र तथा आश्रय की केवल आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है।
(b) पर्यावरणीय चुनौती का सामना करने का एकमेव मार्ग जनसंख्या को सीमित करना है।
(c) हमारे लिए उपभोक्तावाद को कम करना अपने ही हित में है।
(d) केवल जैविक तंत्रों का ज्ञान ही हमें पृथ्वी को बचाने में सहायक है।

परिच्छेद -4

कुछ लोगों का विश्वास है कि नेतृत्व एक ऐसा गुण है जो या तो जन्म से होता है या बिलकुल नहीं होता। यह सिद्धांत मिथ्या है, क्योंकि नेतृत्व की कला अर्जित की जा सकती है और अवश्य ही सिखाई जा सकती है। यह खोज युद्ध के समय में की गई है और प्राप्त परिणाम प्रशिक्षकों को भी आश्चर्य में डाल सकते हैं। बायें जाने या दायें जाने के विकल्पों का सामना होने पर, हर सैनिक जल्दी ही समझ जाता है कि किसी भी तरफ जाने का एक त्वरित निर्णय लेना अंतहीन चर्चा में लगे रहने से बेहतर है। किसी भी दिशा का एक दृढ़ चुनाव कर लें तो उसमें सहीं होने का तब भी संयोग हो सकता है जबकि कुछ न करना लगभग निश्चित तौर पर गलत है।

15. इस परिच्छेद के लेखक का यह मत है कि (2018)

(a) नेतृत्व को केवल युद्ध के अनुभव से ही सिखाया जा सकता है

(b) नेतृत्व को अर्जित भी किया जा सकता है साथ ही सिखाया भी जा सकता है

(c) प्रशिक्षण के परिणाम दिखाते हैं कि अपेक्षा से अधिक लोग नेतृत्व अर्जित कर लेते हैं

(a) कठिन प्रशिक्षण के बावजूद बहुत कम नेता बनते हैं

निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए आठ परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

जलवायु परिवर्तन का निवारण करने की सभी कार्यवाहियों में अंतत: लागत अंतर्निहित होती है। भारत जैसे देशों के लिए अनुकूलन तथा प्रशमन योजनाओं और परियोजनाओं को अभिकल्पित एवं कार्यान्वित करने के लिए वित्तपोषण उचित रूप से बहुत अहम है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए, जो कि जलवायु परिवर्तन की सर्वाधिक मार झेलनेवालों में से एक होगा, वित्तीय विकास की इसकी आवश्यकताओं को देखते हुए, यह समस्या और भी गंभीर है। अधिकतर देश निश्चित ही जलवायु परिवर्तन को वास्तविक खतरे के रूप में देखते हैं और अपने पास के सीमित संसाधनों को अधिक व्यापक और एकीकृत तरीके से प्रयोग कर इसके निवारण का प्रयास कर रहे हैं।

16. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2018)

1. जलवायु परिवर्तन, विकसित देशों के लिए चुनौती नहीं है।
2. अनेक देशों के लिए, जलवायु परिवर्तन एक जटिल नीतिगत मुद्दा है और एक विकास का मुद्दा भी।
3. वित्तीय तरीके और साधन खोजने होंगे ताकि विकासशील देश अपनी अनुकूलन क्षमता बढ़ा सकें।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 3

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-2

भारत में जैव मात्रा तथा कोयले से खाना पकाना स्वास्थ्य समस्याओं के प्रमुख कारक के रूप में स्वीकृत है तथा निर्धन जनसमुदाय की स्त्रियाँ तथा बच्चे सर्वाधिक जोखिम का सामना करते हैं। प्रति वर्ष इन घरों में 10 लाख से अधिक असामयिक मृत्यु घरेलू वायु प्रदूषण, जो कि खाना बनाने में प्रयुक्त प्रदूषक ईंधन से होता है, के कारण होती है तथा ऐसे ईंधन से देश में बाह्य वायु प्रदूषण के चलते 1.5 लाख अन्य मृत्यु होती हैं। यद्यपि स्वच्छ खाना बनाने के ईंधन, जैसे कि एल० पी० जी०, प्राकृतिक गैस

तथा बिजली का उपयोग करने वाले भारतीय जनसमुदाय का हिस्सा धीरे-धीरे बढ़ रहा है, प्रदूषक ठोस ईंधन को प्रमुख खाना बनाने वाले ईंधन के रूप में उपयोग में लाने वाली संख्या लगभग 30 वर्षों से 70 करोड़ पर स्थिर है।

17. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक और तार्किक निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2018)

(a) ग्रामीण जन, स्वास्थ्य खतरों के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण प्रदूषक ठोस ईंधन के उपयोग को त्याग रहे हैं।

(b) भारत में घर के अंदर के वायु प्रदूषण की समस्या का समाधान खाना बनाने के स्वच्छ ईंधन के उपयोग को आर्थिक सहायता देकर किया जा सकता है।

(c) भारत को प्राकृतिक गैस के आयात को बढ़ाना चाहिए तथा अधिक बिजली उत्पादन करना चाहिए।

(d) निर्धन घरों में खाना बनाने की गैस तक उनकी पहुँच बनाकर असामयिक मृत्यु को कम किया जा सकता है।

परिच्छेद-3

वैज्ञानिक ज्ञान के अपने संकट हैं लेकिन सभी बड़ी चीजों के साथ ऐसा ही है। उन संकटों के परे, जिनके द्वारा यह ज्ञान वर्तमान को डराता है, एक सम्भावित सुखी विश्व, जो कि गरीबी-रहित है, युद्ध-रहित है, रोगमुक्त है, का भविष्य निरूपण (विजन) करता जो और किसी से नहीं हो सकता। विज्ञान के चाहे कोई भी अप्रिय परिणाम हो सकते हों, वह अपनी विशेष प्रकृति में मुक्तिदाता है।

18. निम्नलिखित में से कौन-सा एक इस परिच्छेद का सबसे महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है ? (2018)

(a) सुखी विश्व विज्ञान का स्वप्न है।

(b) विज्ञान ही एक सुखी विश्व का निर्माण कर सकता है लेकिन यह अकेला बड़ा संकट भी है।

(c) विज्ञान के बिना सुखी विश्व संभव नहीं है।

(d) सुखी विश्व का होना बिलकुल संभव नहीं है, विज्ञान हो या न हो।

परिच्छेद- 4

आर्कटिक के जीवाश्म ईंधन, मत्स्य और खनिजों के विपुल भण्डार अब वर्ष में कहीं अधिक लम्बे समय तक सुलभ हैं। लेकिन अंटार्कटिका, जो कि शीत युद्ध (कोल्ड वार) के दौरान हुई अंटार्कटिक संधि के कारण शोषण से संरक्षित है और किसी भी देश द्वारा किए जाने वाले राज्यक्षेत्रीय दावों के अंतर्गत नहीं आता, के विपरीत आर्कटिक को उद्योगीकरण से सुरक्षित रखने के लिए कोई कानूनी व्यवस्था नहीं है, विशेषकर उस समय जब विश्व अधिक से अधिक संसाधनों के लिए लालायित है। हिम-मुक्त ग्रीष्म की सुस्पष्ट संभावना ने आर्कटिक तट वाले देशों को पिघलते सागर के बड़े खण्डों की छीना-झपटी के लिए उत्साहित किया है।

19. निम्नलिखित में से कौन-सा एक इस परिच्छेद का सबसे महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है ? (2018)

(a) भारत आर्कटिक प्रदेश में राज्यक्षेत्रीय दावे कर सकता है और उसके संसाधनों तक इसकी मुक्त पहुँच हो सकती है।

(b) आर्कटिक में ग्रीष्म हिम का पिघलना भू-राजनीति में परिवर्तनों का कारण बनता है।

(c) आर्कटिक क्षेत्र भविष्य में विश्व के संसाधनों की कमी की भारी समस्या को सुलझाएगा।

(d) आर्कटिक क्षेत्र में अंटार्कटिका से अधिक संसाधन

परिच्छेद-5

डब्ल्यू० टी० ओ० का सदस्य होने के कारण भारत उन समझौतों से बँधा हुआ है जिन पर भारत समेत इसके सदस्यों ने हस्ताक्षर किए हैं एवं अनुसमर्थन किया है। समझा जाता है कि कृषि समझौते के अनुच्छेद 6 के अनुसार कृषि उत्पादों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य उपलब्ध कराने से विकृति आएगी और इसे सीमाओं के अधीन रखा गया है। श्न्यूनतम समर्थनोंश से उत्पन्न आर्थिक सहायता विकासशील देशों के लिए कृषि उत्पादन के मूल्य के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती। भारत में पी० डी० एस० के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य और खाद्यान्न का सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग आवश्यक हैं। यह संभव है कि कुछ वर्षों में उत्पादकों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता कृषि उत्पादन के मूल्य के 10 प्रतिशत से अधिक बढ़ जाए।

20. उपर्युक्त परिच्छेद क्या निर्णायक संदेश देता है? (2018)

(a) भारत को अपने पी० डी० एस० को संशोधित करना चाहिए।

(b) भारत को डब्ल्यू० टी० ओ० का सदस्य नहीं होना चाहिए।

(c) भारत के लिए, खाद्य सुरक्षा व्यापार के साथ टकराव उत्पन्न करती है।

(d) भारत अपने गरीबों को खाद्य सुरक्षा देता है।

परिच्छेद- 6

भारत की शिक्षा प्रणाली उस व्यापक शिक्षा प्रणाली के नमूने पर बनी है जो यूरोप में 19वीं शताब्दी में विकसित हुई और बाद में विश्व में फैल गई। इस व्यवस्था का उद्देश्य है कि बच्चों को 'अच्छे' नागरिक और उत्पादक श्रमिक के रूप में अनुकूलित किया जाए। यह व्यवस्था औद्योगिक युग के लिए उपयुक्त थी जिसमें सीमित क्षमतावाले अनुपालनकर्ता श्रमिकों की लगातार पूर्ति की माँग थी। हमारे शिक्षण संस्थान ऐसे कारखानों की तरह हैं जिनमें घंटियाँ होती हैं, वर्दियाँ होती हैं और शिक्षार्थियों के जत्थे तैयार किए जाते हैं, ऐसे शिक्षार्थी जो अनुपालन के लिए ही बनाए जा रहे हैं। किन्तु, आर्थिक दृष्टिकोण से वर्तमान वातावरण पूर्णत: भिन्न है। यह एक जटिल, अस्थिर एवं भूमंडलीय रूप से अंत: संबंधित संसार है।

21. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2018)

1. भारत अपनी त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली के कारण तत्त्वत: विकासशील देश बना हुआ है।
2. आज के शिक्षार्थियों के लिए नए युग के कौशल - समूह प्राप्त करना आवश्यक है।
3. काफी संख्या में भारतीय शिक्षा प्राप्त करने के लिए कुछ विकसित देशों में जाते हैं क्योंकि वहाँ की शिक्षा प्रणालियाँ उन समाजों का पूर्ण प्रतिबिम्ब है जिनमें वे कार्य करती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 3

(b) केवल 2

(c) केवल 2 और 3

(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-7

आहार-नियंत्रण (डाइटिंग) का प्रचलन महामारी बन चुका है; हर कोई एक श्रेष्ठ शरीर प्राप्त करने के तरीके की तलाश में है। हम सभी संजातीयता, आनुवंशिकी, पारिवारिक इतिहास, लिंग, आयु, शारीरिक और मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य स्थिति, जीवनशैली एवं वरीयता के संदर्भ में भिन्न हैं। इस कारण से हम किस आहार को सहन कर सकते हैं या किस आहार के प्रति संवेदनशील हैं, इस मामले में भी भिन्न हैं। अत: हम वास्तव में अनेक जटिलताओं में कमी एक आहार या आहार पुस्तिका में नहीं ला सकते। यह विश्वभर में मोटापे पर नियंत्रण रखने में आहारों (डाइट) की विफलता को स्पष्ट करता है। जब तक वजन बढ़ने के कारणों को भली-भाँति समझा नहीं जाएगा और उन्हें दूर नहीं किया जाएगा और जब तक आदतों को स्थायी तौर पर बदला नहीं जाएगा, कोई भी आहार शायद सफल नहीं होगा।

22. उपर्युक्त परिच्छेद से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है? (2018)

(a) मोटापा विश्वभर में एक महामारी बन गया है।

(b) बहुत से लोग श्रेष्ठ शरीर प्राप्त करने की धुन में लगे हैं।

(c) मोटापा तत्त्वत: एक असाध्य रोग है।

(d) मोटापे के लिए कोई पूर्ण आहार अथवा एक समाधान नहीं है।

परिच्छेद-8

एकधान्य कृषि करने में बड़े जोखिम हैं। कोई एकमात्र रोग या पीड़क विश्वभर के खाद्य उत्पादन की कतारों का समूल नाश कर सकता है, एक भयप्रद सम्भावना यह है कि इसकी बढ़ती हुई और अपेक्षाकृत धनाढ्य जनसंख्या 2050 तक 70% और अधिक खाद्य का उपभोग करेगी। परिवर्तित होती जलवायु से ये जोखिम और अधिक बढ़ गए हैं। जैसे-जैसे ग्रह गर्म होगा और मानसून वर्षा में तीव्रता आएगी, एशिया की कृषिभूमियाँ बाढ़ग्रस्त हो जाएँगी। उत्तरी अमेरिका को अधिक गहन सूखे का सामना करना होगा और फसल के रोग नए परिमाणों तक विस्तारित हो जाएँगे।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और निर्णायक संदेश इस परिच्छेद द्वारा दिया गया है? (2018)

(a) फसल आनुवंशिक विविधता को सुरक्षित रखना जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के विरुद्ध बीमा है।

(b) बहुत अधिक जोखिम होने के बावजूद, विश्व में खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने का एकमात्र उपाय एकधान्य कृषि ही है।

(c) अधिक से अधिक आनुवंशिक तौर पर रूपांतरित फसलें ही केवल सन्निकट खाद्य कमी से विश्व की रक्षा कर सकती हैं।

(d) जलवायु परिवर्तन और तद्जनित खाद्य की कमी से एशिया और उत्तरी अमेरिका सबसे बुरी तरह आक्रांत होंगे।

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए दो परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

सस्ते और प्रचुर मांस की तलाश के परिणामस्वरूप फैक्टरी फार्म बनाए गए हैं जहाँ अधिक से अधिक पशुओं को क्रूर और शोचनीय दशाओं में छोटी-छोटी ढेरियों में ठूंसा जाता है। इस प्रकार के प्रचलनों के परिणामस्वरूप विश्व की अनेक स्वास्थ्य संबंधी देशांतरगामी महामारियाँ उठ खड़ी हुई हैं, जैसे कि एवियन फ्लू । विश्वभर में पशुधन का पालन लगातार बढ़ती हुई क्रूर और तंग दशाओं में किया जा रहा है, जहाँ पशु अपना लघु जीवन कृत्रिम प्रकाश, प्रतिजैविकों और वृद्धि हॉर्मोनों के ठसाठस इस्तेमाल के बीच वध होने के दिन तक व्यतीत करते हैं। मांस उत्पादन जल की अत्यधिक खपत माँगता है। मांस के प्रत्येक किलोग्राम के लिए 15000 लीटर जल की आवश्यकता होती है जबकि 1 किलोग्राम धान के लिए 3400 लीटर, 1 किलोग्राम अंडों के लिए 3300 लीटर और 1 किलोग्राम आलू के लिए 255 लीटर जल की आवश्यकता होती है।

24. इस परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक संदेश कौन-सा है? (2018)

(a) औद्योगिक पशुपालन (इंडस्ट्रियल फार्मिंग) से बड़े पैमाने पर मांस का उत्पादन करना सस्ता होता है और यह गरीब देशों को प्रोटीन पोषण प्रदान करने के लिए उपयुक्त है।

(b) मांस उत्पादन उद्योग पशुओं के प्रति क्रूरता के विरुद्ध कानूनों का उल्लंघन करता है।

(c) औद्योगिक पशुपालन के द्वारा बड़े पैमाने पर मांस उत्पादन अवांछनीय है और इसको तुरंत रोक देना चाहिए।

(d) मांस उत्पादन की पर्यावरणीय लागत अधारणीय होती है जब इसका उत्पादन औद्योगिक पशुपालन से किया जाता है।

परिच्छेद-2

एक नर बाघ को पेंच बाघ अभयारण्य (टाइगर रिजर्व) से हटाकर पन्ना राष्ट्रीय पार्क में ले जाकर रखा गया। बाद में, इस बाघ ने अपने घर की ओर 250 मील लंबी दूरी तय की। इस अकेले बाघ की यह यात्रा एक संकट पर प्रकाश डालती है। कई वन्य जीव अभयारण्य मानवता के विशाल सागर के बीच भंगुर आवास के द्वीपों के रूप में विद्यमान हैं। फिर भी कोई बाघ शिकार, जोड़े और अपने क्षेत्र की तलाश में सौ मील के परास में घूम सकता है। भारत के लगभग एक-तिहाई बाघ, बाघ अभयारण्यों के बाहर रहते हैं। यह स्थिति मानव और पशु दोनों के लिए ही संकटपूर्ण है। बाघ और उसके शिकार तभी अलग रह सकते हैं यदि अभयारण्यों के बीच भूमि के मान्य गलियारे हों, ताकि वे बिना छेड़छाड़ के आ-जा सकें।

25. इस परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक संदेश निम्नलिखित में से कौन-सा है? (2018)

(a) मनुष्य और वन्य जीव के बीच संघर्ष को सुलझाया नहीं जा सकता चाहे हम जो भी प्रयत्न करें।

(b) संरक्षित क्षेत्रों के बीच सुरक्षित वन्य जीव गलियारे, संरक्षण के प्रयत्नों का आवश्यक पहलू है।

(c) भारत के लिए आवश्यक है कि वह और अधिक संरक्षित क्षेत्रों की घोषणा करे तथा और अधिक बाघ अभयारण्यों की स्थापना करे।

(d) भारत के राष्ट्रीय पार्कों और बाघ अभयारण्यों का व्यावसायिक (प्रोफेशनल) प्रबंधन होना चाहिए।

26. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई है : (2018)

1. एक संरक्षित क्षेत्र से दूसरे संरक्षित क्षेत्र में स्थान- परिवर्तन हुए वन्य जीव के संरक्षण करने की रणनीति प्रायः सफल नहीं होती है।
2. भारत में बाघों की सुरक्षा के लिए उपयुक्त कानून नहीं हैं और इसके संरक्षण के प्रयास असफल हो गए हैं जिसके कारण बाघ संरक्षित क्षेत्रों से बाहर रहने पर बाध्य हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

2019

आगे आने वाले 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित सात परिच्छेदों को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के बाद आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल संबंधित परिच्छेद पर आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

इसमें कोई संदेह नहीं कि राजनीतिक सिद्धांतकारों को अन्याय, जैसे कि अस्पृश्यता, के इतिहास को गंभीरता से लेना चाहिए। ऐतिहासिक अन्याय की अवधारणा में अनेक प्रकार के ऐतिहासिक अपकारों को विचार में लिया गया है, जो किसी न किसी रूप में वर्तमान में भी हो रहे हैं, और उनकी प्रवृत्ति ही ऐसी है कि उनमें सुधार न हो पाए । सुधार न होने देने के पीछे दो कारण कहे जा सकते हैं। एक तो यह, कि केवल इतना ही नहीं कि अन्याय की जड़ें इतिहास में गहरी जमी हुई हैं, बल्कि अन्याय स्वयं भी शोषण की आर्थिक संरचनाओं, भेदभाव की विचारधाराओं और प्रतिनिधित्व की रीतियों को संरचित करता है। दूसरा यह, कि ऐतिहासिक अन्याय की कोटि आम तौर पर बहुत से अपकारों, जैसे कि आर्थिक वंचन, सामाजिक भेदभाव और मान्यता के अभाव, के आर-पार फैली होती है । यह कोटि जटिल होती है, केवल इसलिए नहीं कि इसमें बहुत से अपकारों के बीच कोई स्पष्ट सीमा रेखा नहीं होती, बल्कि इसलिए कि किसी न किसी अपकार की, आम तौर पर भेदभाव की, प्रवृत्ति दूसरे अपकारों से आंशिक रूप में स्वायत्तता हासिल कर लेने की होती है । यह भारत में सुधार के इतिहास से सिद्ध हुआ है।

116

1. इस परिच्छेद से कौन-सा मुख्य विचार अनुगत होता है ? (2019)

(a) भारत में अस्पृश्यता को राजनीतिक सिद्धांतकारों ने गंभीरता से नहीं लिया है।

(b) ऐतिहासिक अन्याय किसी भी समाज में अपरिहार्य है और सुधार से सदैव परे है।

(c) सामाजिक भेदभाव और वंचन की जड़ें दोषपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं में हैं ।

(d) ऐतिहासिक अन्याय की प्रत्येक अभिव्यक्ति का सुधार करना, यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है।

2. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2019)

1. आर्थिक भेदभाव मिटा देने से सामाजिक भेदभाव मिटता है।

2. लोकतांत्रिक राज्यव्यवस्था ऐतिहासिक अपकारों के सुधार का सबसे अच्छा मार्ग है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है / हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, और न ही 2

परिच्छेद-2

शिक्षा जीवन में महान बदलाव लाने की भूमिका निभाती है, खास कर इस तेजी से बदलते और वैश्वीकरण की तेज गति वाले विश्व में । विश्वविद्यालय बौद्धिक पूँजी के अभिरक्षक और संस्कृति तथा विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान के प्रवर्तक हैं । संस्कृति, चिंतन की क्रियाशीलता, और सौंदर्य तथा मानवीय भावनाओं की ग्रहणशीलता होती है । केवल बहुत सी जानकारियों से युक्त व्यक्ति ईश्वर की धरती पर सिर्फ एक उबाऊ इंसान भर है। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति तैयार किए जाएँ जिनके पास संस्कृति और विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान, दोनों हों। उनका विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान उन्हें आगे बढ़ने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करेगा और उनकी संस्कृति उन्हें दर्शन की गहराइयों और कला की ऊँचाइयों तक ले जाएगी। साथ मिल कर यह मानवीय अस्तित्व को अर्थ प्रदान करेगा।

3. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)

1. सुशिक्षित व्यक्तियों से रहित समाज आधुनिक समाज में रूपांतरित नहीं हो सकता।

2. संस्कृति अर्जित किए बिना, किसी भी व्यक्ति की शिक्षा पूर्ण नहीं होती।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, और न ही 2

परिच्छेद- 3

मृदा, जिसमें हमारे लगभग सभी खाद्य पदार्थ उगते हैं, एक जीवंत संसाधन है जिसके बनने में वर्षों लगते हैं । तथापि, यह मिनटों में नष्ट हो सकती है । प्रति वर्ष 75 अरब (बिलियन) टन उर्वर मृदा क्षरण के और कारण नष्ट हो जाती है। यह चिंताजनक है-केवल खाद्य उत्पादकों के लिए ही नहीं । मृदा विशाल मात्रा में कार्बन डाइ ऑक्साइड को कार्बनिक (ऑर्गेनिक) कार्बन के रूप में रोके रख सकती है और वायुमंडल में उन्मुक्त हो जाने से बचाए रख सकती है।

117

4. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)

1. बड़े पैमाने पर मृदा का क्षरण विश्व में व्यापक खाद्य असुरक्षा का प्रमुख कारण है।
2. मृदा का क्षरण मुख्यत: मानवोद्भविक (ऐंथ्रोपोजेनिक) है।
3. मृदा के धारणीय प्रबंधन से जलवायु परिवर्तन का सामना करने में मदद मिलती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं ?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद - 4

असमानता न केवल दिखाई देती है, बल्कि अनेक उदाहरणों में सांख्यिकीय रूप से मापी जा सकती है, किंतु इसे संचालित करने वाली आर्थिक शक्ति न तो दिखाई देती है और न ही मापी जा सकती है । गुरुत्व बल की ही तरह, शक्ति असमानता का संघटक सिद्धांत है, चाहे वह आय, या संपत्ति, लिंग, वंश, धर्म और क्षेत्र, किसी की भी हो । इसके प्रभाव सभी क्षेत्रों में व्यापक रूप से दिखते हैं, किंतु जिन रीतियों से आर्थिक शक्ति दृश्यमान आर्थिक चरों को तोड़ती-मरोड़ती है वे अदृश्य रूप से अस्पष्ट बने रहते हैं ।

5. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ. बनाई गई हैं: (2019)

1. किसी समाज में असमानता के होने के लिए आर्थिक शक्ति ही एकमात्र कारण है ।
2. आय, संपत्ति, आदि विभिन्न प्रकार की असमानता शक्ति को सुदृढ़ करती है।
3. आर्थिक शक्ति को प्रत्यक्ष आनुभविक विधियों की अपेक्षा उसके प्रभावों के माध्यम से बेहतर विश्लेषित किया जा सकता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध हैं/हैं ?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद - 5

जलवायु परिवर्तन के कारण वास्तव में कुछ पादपों को वर्धन - काल अधिक लंबे हो जाने और अधिक कार्बन डाइ-ऑक्साइड मिलने का लाभ पहुँच सकता है । तथापि, अपेक्षाकृत अधिक उष्ण विश्व के अन्य प्रभावों, जैसे कि नाशक जीव, सूखा और बाढ़ के अधिक हो जाने का अहानिकर होना कम हो जाएगा। विश्व कैसे अनुकूलन करेगा? अनुसंधानकर्ता यह अनुमान करते हैं कि 2050 तक मक्का, आलू, चावल और गेहूँ, इन चार पण्य वस्तुओं की उपयुक्त शस्य-भूमियाँ बदल जाएँगी, जिनसे कुछ जगहों पर किसानों को बाध्य होकर नई फसलों का रोपण करना पड़ेगा। तापन से कुछ कृषि भूमियों को लाभ पहुँच सकता है, कुछ को नहीं। एकमात्र जलवायु ही उपज को निर्धारित नहीं करती; राजनीतिक परिवर्तन, विश्वव्यापी माँग, और कृषि पद्धतियाँ इस बात को प्रभावित करेंगी कि भविष्य में कृषि भूमियाँ कैसा निष्पादन करेंगी।

6. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2019)

(a) भविष्य में वे किसान लाभ की स्थिति में होंगे जो अपनी पद्धतियों को आधुनिक बनाएँगे और अपने खेतों में विविध फसलें उगाएँगे।
(b) जलवायु परिवर्तन शस्य- विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा।
(c) प्रमुख फसलों को नई शस्य-भूमियों में स्थानांतरित करने से कृषि के अधीन सकल क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि होगी और इस प्रकार समग्र कृषि उत्पादन बढ़ेगा।
(d) जलवायु परिवर्तन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है जो भविष्य में कृषि अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा।

परिच्छेद-6

चमगादड़ के पंख चमड़ी की परतों की तरह दिखाई दे सकते हैं। किंतु अंदर-अंदर चमगादड़ की ठीक वैसे ही पाँच उँगलियाँ होती हैं जैसे ऑरेन्ग-उटैन या मनुष्य की होती हैं, साथ ही वैसे ही कलाई जुड़ी होती है कलाई की हड्डियों के गुच्छ से जो कि बाँह की लम्बी हड्डियों से जुड़ी होती है । इस बात से अधिक विलक्षण और क्या हो सकता है कि मनुष्य के हाथ, जो कस कर पकड़ने के लिए बने हैं, खोदने के लिए बने छछूंदर के. हाथ, घोड़े के पाँव, सूँस के पाद, और चमगादड़ के पंख, ये सब एक ही प्रतिरूप में बने हों?

7. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत, वैज्ञानिक और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2019)

(a) हाथ की समान संरचना वाली विभिन्न जातियों (स्पीशीज) का होना जैव-विविधता का उदाहरण

(b) विभिन्न जातियाँ (स्पीशीज) हाथ-पैरों का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए करती हैं, यह जैव-विविधता का उदाहरण है ।

(c) मनुष्य और उपर्युक्त जंतुओं के हाथ-पैरों में समान संरचना का होना क्रम विकास में हुए संयोग का उदाहरण है।

(d) मनुष्य और उपर्युक्त जंतुओं के क्रम विकास का साझा इतिहास है।

परिच्छेद-7

लगभग 56 मिलियन वर्ष पूर्व, अटलांटिक महासागर पूरी तरह फैला हुआ नहीं था और जंतु, जिनमें शायद हमारे प्राइमेट पूर्वज भी शामिल थे, एशिया से यूरोप होते हुए उत्तरी अमेरिका तक पूरे ग्रीनलैंड में चल कर जा सकते थे। पृथ्वी आज की अपेक्षा अधिक उष्ण थी, किंतु जैसे-जैसे पुरानूतन युग समाप्त हुआ और आदिनूतन युग प्रारंभ होने लगा, यह और अधिक, बल्कि तेजी से और आमूल रूप से, उष्ण होने वाली थी। कारण था कार्बन का अति विशाल रूप से भूवैज्ञानिकत: अकस्मात् निर्मुक्त होना। पुरानूतन आदिनूतन ऊष्मीय महत्तम (पैलियोसीन इओसीन थर्मल मैक्सीमम) या PETM कही जाने वाली इस अवधि के दौरान, वायुमंडल में उतना कार्बन अंत:क्षिप्त हुआ जितना आज मनुष्य द्वारा पृथ्वी के कोयले, तेल और प्राकृतिक गैस के सारे भंडारों को जला देने पर अंत: क्षिप्त होता। PETM लगभग 1,50,000 वर्षों तक बनी रहीं जब तक कि कार्बन की अतिशय मात्रा पुन: अवशोषित नहीं हो गई। इससे सूखा, बाढ़, कीट प्लेग और कतिपय विलोपन हुए। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व बना रहा-वास्तव में, यह फला-फूला-लेकिन इसमें घोर भिन्नता आ गई।

8. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)

1. भूमंडलीय तापन का इस ग्रह के जैव विकास पर प्रभाव पड़ता है।
2. भू-संहतियों के पृथक् होने से वायुमंडल में कार्बन की विशाल मात्राएँ निर्मुक्त होती हैं।
3. पृथ्वी के वायुमंडल का तापन बढ़ने से इसके वनस्पतिजात और प्राणिजात की संरचना में परिवर्तन हो सकता है।
4. वर्तमान मानव-कृत भूमंडलीय तापन से अंतत: ठीक वैसी ही स्थितियाँ हो जाएँगी जैसी 56 मिलियन वर्ष पहले हुई थीं।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

(a) 1 और 2 (b) 3 और 4

(c) 1 और 3 (d) 2 और 4

आगे आने वाले 8 (आठ) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित छह परिच्छेदों को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के बाद आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल संबंधित परिच्छेद पर आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

अल्प साधन युक्त (लो-एंड) IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) उपकरण सस्ती वस्तुएँ हैं : इनमें सुरक्षा के साधन शामिल करने से इनकी लागत बढ़ जाती है । इस श्रेणी की वस्तुएँ नए अनुप्रयोगों (एप्लिकेशन्स) के साथ-साथ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो रही हैं; अनेक गृह- उपयोगी साधित्र (अप्लासेस), तापस्थापी (थर्मोस्टैट्स), सुरक्षा और मॉनीटरन अनुप्रयुक्तियाँ (डिवाइसेस) और वैयक्तिक सुविधा अनुप्रयुक्तियाँ IoT की श्रेणी में आती हैं । इसी प्रकार स्वस्थता पर दृष्टि रखने वाली अनुप्रयुक्तियाँ, कतिपय चिकित्सकीय अंतर्रोप (इम्प्लांट्स) और कारों (ऑटोमोबाइल्स) में प्रयुक्त होने वाली कम्प्यूटर जैसी अनुप्रयुक्तियाँ भी इसी श्रेणी में आती हैं। उम्मीद है कि IoT कई गुनी रफ्तार से बढ़ेंगे-किंतु सुरक्षा की नई चुनौतियाँ निरुत्साहित कर रही हैं।

9. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2019)

(a) भारत में समर्थकारी (एनेब्लिंग) प्रौद्योगिकियों का विकास इसके निर्माण क्षेत्रक के लिए बड़ा बढ़ावा बन सकता है।

(b) आसन्न सुरक्षा चुनौतियों को देखते हुए, भारत IoT को अपनाने के लिए अभी पूरी तरह तैयार नहीं है।

(c) सस्ती लो-एंड IoT अनुप्रयुक्तियों के विकसित होने से जीवन और अधिक आरामदेह बन जाता है।

(d) जैसे-जैसे हम डिजिटल होते जा रहे हैं, कतिपय IoT अनुप्रयुक्तियों से इंटरनेट सुरक्षा को होने वाले भारी खघ्तरे को पहचानना आवश्यक है।

परिच्छेद-2

जैसे-जैसे डिजिटल परिघटना अधिकांश सामाजिक क्षेत्रकों को पुनर्संरचित कर रही है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि विश्वस्तरीय व्यापार वार्ताएँ अब डिजिटल क्षेत्र पर दृष्टि डाल रही हैं; इस प्रयास के साथ कि इसका एकांतिक रूप से उपनिवेशन करें। विकासशील देशों से बड़े आँकड़े (बिग डेटा) मुक्त रूप से संग्रहीत या खनित किए जाते हैं और उन्हें विकसित देशों में डिजिटल आसूचना में रूपांतरित कर दिया जाता है । यह आसूचना विभिन्न क्षेत्रकों को नियंत्रित करना और एकाधिकारपरक किराया वसूल करना शुरू कर देती है । उदाहरण के लिए, टैक्सी (कैब) की सेवा प्रदान करने वाली एक बड़ी विदेशी कंपनी कारों और चालकों का नेटवर्क नहीं हैं; यह आने-जाने, लोक परिवहन, सड़कों, यातायात, नगर की घटनाओं, यात्रियों और चालकों की वैयक्तिक व्यवहारपरक विशिष्टताओं आदि से संबंधित डिजिटल आसूचना ही है।

THE CORE IAS

10. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण उपनिगमन है? (2019)

(a) वैश्वीकरण भारत के हितों के अनुकूल नहीं है, क्योंकि यह इसकी सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं को क्षति पहुँचाता है।

(b) विश्वस्तरीय व्यापार वार्ताओं में भारत को अपने डिजिटल प्रभुत्व को बचाए रखने के लिए सावधान रहना चाहिए।

(c) भारत को बहुराष्ट्रीय कंपनियों से बड़े आँकड़ों के बदले एकाधिकार किराया प्रभारित करना चाहिए।

(d) भारत से बड़े आँकड़ों की हानि इसके विदेशी व्यापार की मात्रा /मान के समानुपाती है।

11. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद से सर्वाधिक निश्चयात्मक रूप से उपलक्षित होता है? (2019)

(a) डिजिटल दिक्स्थान में बड़े आँकड़े (बिग डेटा) मुख्य संसाधन होते हैं।

(b) बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से बड़े आँकड़े सृजित होते हैं।

(c) बड़े आँकड़ों तक पहुँच विकसित देशों का विशेषाधिकार है।

(d) बड़े आँकड़ों तक पहुँच और स्वामित्व विकसित देशों की विशिष्टता है।

परिच्छेद-3

भारत समेत पूरे विश्व के ग्रामीण निर्धनों का मानव-कृत जलवायु परिवर्तन में नगण्य योगदान रहा है, तथापि इसके प्रभावों का सामना करने में वे अग्रिम पंक्ति में हैं । कृषक अब वर्षा और तापमान के ऐतिहासिक औसतों पर भरोसा नहीं कर सकते, और अधिक बारंबार होने वाली आत्यंतिक मौसमी घटनाएँ, जैसे सूखा और बाढ़, महाविपदाओं के रूप में परिणामित हो सकती हैं। और नए खघ्तरे सामने हैं, जैसे कि समुद्र स्तर में वृद्धि और जल-पूर्ति पर पिघलते हुए हिमनदों का प्रभाव । छोटे कृषि फार्म कितने महत्त्वपूर्ण हैं? पूरे विश्व में लगभग दो अरब (बिलियन) लोग अपने भोजन और आजीविका के लिए उन पर निर्भर हैं। भारत में छोटी जोत वाले किसान देश का 41 प्रतिशत खाद्यान्न और अन्य खाद्य-पदार्थ उत्पादित करते हैं जिसका स्थानीय एवम् राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में योगदान है।

12. उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण उपनिगमन कौन-सा है? (2019)

(a) छोटे किसानों को प्रोत्साहन देना पर्यावरणीय रूप से धारणीय विकास के बारे में किसी भी कार्यावली का महत्त्वपूर्ण भाग है।

(b) भूमंडलीय तापन के न्यूनीकरण में निर्धन देशों की कोई भूमिका नहीं होती।

(c) बड़ी संख्या में किसान परिवारों के होने के कारण भारत को, जहाँ तक भविष्य का अनुमान किया जा सकता है, खाद्य सुरक्षा की समस्या नहीं होगी।

(d) भारत में केवल छोटी जोत वाले किसान खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं।

13. उपर्युक्त परिच्छेद उपलक्षित करता है कि (2019)

1. भारत में खाद्य असुरक्षा की संभावित समस्या है।
2. भारत को अपनी आपदा प्रबंधन की क्षमताएँ मजबूत करनी होंगी।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं ? .

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, और न ही 2

परिच्छेद-4

बदलती जलवायु, और इससे निपटने के लिए सरकारों के (चाहे वे कितनी भी अनिच्छुक हों) अंतिम प्रयासों का निवेशकों के प्रतिफल पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है । वे कंपनियाँ जो बड़ी मात्रा में जीवाश्म ईंधनों का उत्पादन या उपयोग करती हैं, उच्चतर करों और नियामक बोझ का सामना करेंगी। कुछ ऊर्जा उत्पादकों के लिए अपने ज्ञात भंडारों को उपयोग में लाना असंभव होगा, और उनके पास सिर्फ "अवरुद्ध संपदा" (स्ट्रेन्डेड असेट्स) तेल और कोयले के वे निक्षेप जिन्हें जमीन में छोड़ देना पड़ता है-बचे रहेंगे। अन्य उद्योग, अपेक्षाकृत और अधिक आत्यंतिक मौसम तूफान, बाढ़, ऊष्णता लहर और सूखा-से होने वाले आर्थिक नुकसान से प्रभावित हो सकते हैं।

14. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)

1. जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए सरकारों और कम्पनियों को पर्याप्त रूप से तैयार होने की आवश्यकता है।
2. आत्यंतिक मौसम की घटनाओं से भविष्य में सरकारों और कंपनियों का आर्थिक विकास कम हो जाएगा।
3. जलवायु परिवर्तन की उपेक्षा करना निवेशकों के लिए भारी जोखिम है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं ?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-5

विद्यालयी उम्र में आने वाले बच्चों की विद्यालयी शिक्षा तक पहुँच होना लगभग विश्वव्यापी है, किंतु गुणतायुक्त शिक्षा तक पहुँच होने में सामाजिक-आर्थिक स्थिति के. आधार पर एक तीव्र ढाल दिखाई देती है। गैर-सरकारी विद्यालयों में कमजोर वर्गों के लिए कोटा का उपबंध नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 द्वारा किया गया है। इन कोटाओं ने सामाजिक एकीकरण और शिक्षा में साम्य के उन मुद्दों पर एक बहस थोप दी है जिनसे गैर-सरकारी कर्ता काफी कुछ बचे हुए थे। समतावादी शिक्षा प्रणाली का विचार, जिसका मुख्य ध्येय अवसर की समानता हो, गैर-सरकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की सोच के दायरे से बाहर प्रतीत होता है। - इसलिए, कोटा अधिरोपित किए जाने से प्रतिरोध का सामना करना पड़ा है, जो कभी-कभी न्यायोचित भी होता है।

15. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)
    1. अवसर की समानता को एक वास्तविकता बना देना भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधारभूत लक्ष्य है।
    2. वर्तमान भारतीय विद्यालय प्रणाली समतावादी शिक्षा प्रदान करने में असमर्थ है।
    3. गैर-सरकारी विद्यालयों का उन्मूलन और अधिकाधिक सरकारी विद्यालयों की स्थापना ही समतावादी शिक्षा सुनिश्चित करने का एकमात्र मार्ग है।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं ?

    (a) केवल 1 और 2
    (b) केवल 2
    (c) केवल 2 और 3
    (d) केवल 3

परिच्छेद - 6

भारत में तपेदिक (TB) संक्रमित बहुसंख्य लोग . निर्धन हैं और उनको पर्याप्त पोषण, उपयुक्त आवास का अभाव है और बचाव के बारे में उनकी समझ न के बराबर है। ऐसे में, तपेदिक परिवारों का सर्वनाश कर देता है, निर्धनों को और निर्धन बनाता है, खघस तौर पर महिलाओं और बच्चों को ग्रस्त करता है, और उन्हें निर्वासन और रोजगार की बर्बादी की ओर ले जाता है। सच्चाई यह है कि यदि तपेदिक उन्हें न भी मारे, तब भी भूख और गरीबी से वे मर जाएँगे। दूसरी सच्चाई यह है कि इसका गहरा बैठा हुआ लांछन, परामर्श का अभाव, महँगा उपचार और साधन प्रदाताओं तथा परिवार से पर्याप्त संबल का अभाव, यंत्रणाकारी पार्श्व प्रभावों के साथ मिल कर रोगी को उपचार जारी रखने में हतोत्साहित करते हैं जिसके अनर्थकारी स्वास्थ्य संबंधी परिणाम होते हैं।

16. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक संदेश है? (2019)
    (a) भारतीय परिस्थितियों में तपेदिक साध्य रोग नहीं है।
    (b) तपेदिक को ठीक करने के लिए निदान और चिकित्सकीय उपचार से कहीं और अधिक की आवश्यकता होती है।
    (c) सरकार की निगरानी की क्रियाविधि त्रुटिपूर्ण है; और निर्धन लोगों की उपचार तक पहुँच नहीं है
    (d) भारत तपेदिक जैसे रोगों से केवल तभी मुक्त होगा जब इसके निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम प्रभावकारिता और सफलता से कार्यान्वित किए जाएँ।

आगे आने वाले 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित छह परिच्छेदों को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के बाद आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल संबंधित परिच्छेद पर आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

'आनुवंशिक रूपांतरण [जेनेटिक मॉडिफिकेशन (GM)]' प्रौद्योगिकी को व्यापक और सुविचारित रूप से अपनाने के मार्ग में जो गतिरोध है, वह है 'बौद्धिक संपदा अधिकार' की व्यवस्था, जो ऐसी प्रौद्योगिकियों के लिए गैर-सरकारी एकाधिकार सृजित करना चाहती है। यदि GM प्रौद्योगिकी अधिकांशत: कंपनी चालित हो, तो यह लाभ को अधिकतम करना चाहती है और वह भी थोड़ी ही अवधि में। यही कारण है कि कंपनियाँ शाकनाशी सहिष्णु और नाशक जीव- प्रतिरोधी फसलों के लिए बड़े निवेश करती हैं। ऐसे गुणधर्म थोड़े समय के लिए ही बने रह पाते हैं, क्योंकि काफी जल्दी ही नाशक जीव और खरपतवार विकसित होने लगेंगे और ऐसे प्रतिरोध पर काबू पा लेंगे। कंपनियों को यह अनुकूल ठहरता है। राष्ट्रीय किसान आयोग ने यह बात उठाई थी कि आनुवंशिक रूपांतरण में प्राथमिकता ऐसे जीन के समावेशन को दी जानी चाहिए जो सूखा, लवणता और अन्य कष्टकर प्रभावों के लिए प्रतिरोध प्रदान करने में सहायक हों।

17. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक संदेश है? (2019)

(a) लोक अनुसंधान संस्थाओं को GM प्रौद्योगिकी में अग्रणी होना चाहिए और इस प्रौद्योगिकी की प्राथमिकताओं को तय करना चाहिए।

(b) विकासशील देशों को यह मुद्दा WTO में उठाना चाहिए और बौद्धिक संपदा अधिकारों का समापन सुनिश्चित करना चाहिए।

(c) गैर-सरकारी कंपनियों को भारत में कृषि व्यवसाय (ऐग्री- बिजनेस) करने, खास कर बीज का व्यापार करने की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

(d) वर्तमान भारतीय परिस्थितियाँ आनुवंशिकत: रूपांतरित फसलों की कृषि के पक्ष में नहीं हैं।

18. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं। (2019)

1. कृषि से संबंधित प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव के मुद्दे पर GM प्रौद्योगिकी कंपनियों द्वारा समुचित विचार नहीं किया जा रहा है।

2. अंततोगत्वा, GM प्रौद्योगिकी भूमंडलीय तापन के कारण उत्पन्न होने वाली कृषि समस्याओं का समाधान नहीं कर पाएगी।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं ?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, और न ही 2

परिच्छेद-2

अधिकांश आक्रामक जातियाँ (इन्वेसिव स्पीशीज) न तो घोर रूप से सफल हैं, न ही अत्यंत नुकसानदेह हैं । ब्रिटेन के आक्रामक पादप न तो व्यापक रूप से फैले हैं, न ही खास तेजी से फैलते हैं, और अक्सर ब्रैकेन की तरह के प्रबल प्राकृत पादपों की अपेक्षा कम परेशान करने वाले हैं। नई जातियों का आगमन लगभग हमेशा ही किसी क्षेत्र में जैव-विविधता को बढ़ा देता है; बहुत से मामलों में नवागंतुकों की बाढ़ किसी भी प्राकृत जाति को विलोपन की तरफ नहीं ले जाती। इसका एक कारण यह है कि आक्रामक पादप प्रदूषित झीलों और उद्योगोत्तर व्यर्थ भूमि की तरह के विक्षुब्ध पर्यावासों को, जहाँ और कुछ भी जीवित नहीं रहता, उपनिवेशित करने की ओर प्रवृत्त होते हैं। वे प्रकृति के अवसरवादी हैं।

19. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2019)

(a) आक्रामक जातियों का उपयोग किसी देश के मरु क्षेत्रों और व्यर्थ भूमियों के पुनर्वासन के लिए किया जाना चाहिए।

(b) विदेशी पादपों के सन्निवेशन के विरुद्ध कानून अनावश्यक हैं।

(c) कभी-कभी, विदेशी पादपों के विरुद्ध मुहिम चलाना निरर्थक होता है।

(d) विदेशी पादपों का उपयोग किसी देश की जैव-विविधता बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए।

परिच्छेद- 3

भारतीय बच्चों में प्रवाहिका (डायरिया) से होने वाली मौतें मुख्यत: खाद्य और जल के संदूषित हो जाने के कारण होती हैं । कृषि में संदूषित भौमजल और असुरक्षित रसायनों का उपयोग, खाद्य-पदार्थों का भंडारण और रख-रखाव अस्वास्थ्यकर तरीकों से किए जाने से ले कर खाद्य पदार्थों के अस्वास्थ्यकर परिवेश में पकाए और वितरित किए जाने तक; ऐसे असंख्य कारक हैं जिनके विनियमन और मॉनीटरन की आवश्यकता है । लोगों को मिलावट के बारे में और संगत प्राधिकारियों को शिकायत करने के तरीकघें के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है । खाद्य संक्रामक रोगों की निगरानी करने में अनेक सरकारी अधिकरण शामिल हैं और निरीक्षण कर्मियों के अच्छे प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इसका विचार करते हुए कि शहरी जनसंख्या का कितना भाग अपने दैनिक भोजन के लिए गली-नुक्कड़ पर बिकने वाले भोजन पर निर्भर है, गली-नुक्कड़ पर भोजन बेचने वालों के प्रशिक्षण और शिक्षण में निवेश करना बड़े महत्त्व का है।

20. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)

1. खाद्य सुरक्षा एक जटिल मुद्दा है जिसके अनेक विध समाधानों की आवश्यकता है।
2. निगरानी और प्रशिक्षण के लिए जनशक्ति बढ़ाने में भारी निवेश करने की आवश्यकता है।
3. भारत को खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को नियंत्रित करने हेतु पर्याप्त विधि-निर्माण करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध हैं / हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद - 4

हमारे नगरों की आयोजना में ऐतिहासिक रूप से कामगार और निर्धन लोगों के हितों की उपेक्षा की जाती रही है । हमारे नगर वर्धमान रूप से असहिष्णु, असुरक्षित और अधिसंख्य नागरिकों के लिए न रहने योग्य स्थान बनते जा रहे हैं, तथापि हमने पुराने तरीकों - स्थिर विकास योजना-से ही योजना बनाना जारी रखा हुआ है, जो लोगों के जीवन अनुभवों और आवश्यकताओं से दूरी बनाए रखते हुए, और बहुत सारे लोगों, स्थानों, कार्यकलाप और प्रथाओं को, जो किसी नगर का अविच्छिन्न भाग होते हैं, सक्रिय रूप से शामिल न रखते हुए, अनन्यत: तकनीकी विशेषज्ञता से लिए जाते हैं।

21. यह प्रतीत होता है कि इस परिच्छेद में (2019)

(a) भवन निर्माताओं के एकाधिकार तथा संभ्रांत समूहों के हितों के विरुद्ध तर्क प्रस्तुत किया गया है।
(b) विश्वस्तरीय और सुव्यवस्थित (स्मार्ट) नगरों की आवश्यकता के विरुद्ध तर्क प्रस्तुत किया गया है।
(c) मुख्यत: कामगार वर्ग और निर्धन लोगों के लिए नगरों की योजना बनाने के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया गया है।
(d) नगर आयोजना में जनता के समूहों की भागीदारी के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया गया है।

परिच्छेद-5

भारत के लोग बहुत अधिक संख्या में निर्धन हैं, और मुश्किल से सिर्फ 10 प्रतिशत व्यक्ति संगठित क्षेत्र में नियोजित हैं। हमें विश्वास दिलाया जा रहा है कि प्रबल आर्थिक संवृद्धि से पर्याप्त रोजगार उत्पन्न हो रहे हैं। लेकिन ऐसा है नहीं। जब हमारी अर्थव्यवस्था 3 प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़ रही थी, तब संगठित क्षेत्र में रोजगार 2 प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़ रहा था । ज्यों ही अर्थव्यवस्था 7 8 प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़नी शुरू हुई, संगठित क्षेत्र में रोजगार बढ़ने की दर वास्तव में घट कर 1 प्रतिशत प्रतिवर्ष रह गई।

22. उपर्युक्त परिच्छेद का निहितार्थ यह प्रतीत होता है कि (2019)

1. अधिकांश आधुनिक आर्थिक संवृद्धि प्रौद्योगिकीय प्रगति पर आधारित है।
2. काफी मायने में आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था श्रम-प्रधान, प्राकृतिक संसाधन - आधारित आजीविका के साथ पर्याप्त सहजीवी संबंध को प्रोत्साहन नहीं देती।
3. भारत में सेवा क्षेत्र बहुत श्रम - प्रधान नहीं है।
4. साक्षर ग्रामीण जनसंख्या संगठित क्षेत्र में प्रवेश करने की इच्छुक नहीं है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं ?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 3 और 4

(c) केवल 1, 2 और 3

(d) 1, 2, 3 और 4

परिच्छेद-6

भारत में ऐसे बैंकिंग संपर्क हैं, जो दूर-दराज के पिछड़े क्षेत्रों के लोगों को बैंकिंग के दायरे में लाने में मदद करते हैं। वे ऐसा कर सकें, इसके लिए बैंक लागतों में कोई कमी नहीं कर सकते। वे वित्तीय शिक्षा और साक्षरता में निवेश करने की उपेक्षा भी नहीं कर सकते। बैंकिंग संपर्क एक तरह से इतने कम हैं कि उन्हें व्यवस्थागत जोखिम के रूप में नहीं देखा जा सकता। तथापि, भारत के बैंकिंग नियामक ने प्रतिबंध लगा रखा है कि वे केवल एक बैंक के लिए कार्य करें, संभवतः अंतर - पणन (आर्बिट्रेज) से बचाव के लिए। बैंकिंग तक पूरी पहुँच लाने के प्रयासों में तभी सफलता मिल सकती है, जब दूर-दराज में काम करने वाले आखिरी छोर के ऐसे कार्यकर्ताओं के लिए और उन प्रबंधकों के लिए भी, जो न केवल आधारभूत बैंक लेखाओं को, बल्कि दुर्घटना एवम् जीवन बीमा तथा लघु पेंशन योजनाओं जैसे उत्पादों को भी सुनिश्चित करते हैं, काम करने में बेहतर प्रोत्साहन उपलब्ध हों।

23. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सकता है ? (2019)

(a) भारत के दूर-दराज के पिछड़े क्षेत्रों के लोगों को बैंकिंग के दायरे में लाने के प्रयास सफल नहीं हुए हैं।

(b) सार्थक वित्तीय समावेशन के लिए, भारत की बैंकिंग प्रणाली में और अधिक संख्या में बैंकिंग संपर्कियों तथा आखिरी छोर के ऐसे अन्य कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है।

(c) भारत में सार्थक वित्तीय समावेशन के लिए इस बात की आवश्यकता है कि बैंकिंग संपर्कियों के पास विविध कौशल हों।

(d) बैंकिंग तक बेहतर पहुँच तब तक असंभव होगी जब तक कि प्रत्येक बैंकिंग संपर्की को अनेक बैंकों के लिए काम करने की अनुमति न हो।

आगे आने वाले 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित पाँच परिच्छेदों को पढ़िए और प्रत्येक परिच्छेद के बाद आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल संबंधित परिच्छेद पर आधारित होने चाहिए ।

परिच्छेद-1

भारत का आर्थिक पदछाप (फुटप्रिंट), इसकी जनसंख्या को देखते हुए, अभी भी US, यूरोपीय संघ या चीन की तुलना में कम है। अन्य अर्थव्यवस्थाओं से सीखने के लिए इसके पास काफी कुछ है, तथापि इसे उन समाधानों को ही कार्यान्वित करना चाहिए जो इसकी अनूठी परिस्थितियों के अनुरूप हैं। भारत को वर्तमान अधोगामी उपागम की बजाय एक सहयोग आधारित प्रभावी दीर्घकालिक नियामक व्यवस्था की खास तौर पर आवश्यकता है । विनियम वांछित परिणाम लाने का प्रयास करते हैं, तथापि ये किसी न किसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक उपकरण के रूप में बार-बार इस्तेमाल किए जाते हैं।

प्राय: विनियम रोजगार और आर्थिक संवृद्धि पर पड़ने वाले असर या कम प्रतिबंधी विकल्पों का विचार करने में असफल रह जाते हैं। विनियमों का इस्तेमाल भविष्य में और अधिक व्यापक रूप से साझी होने वाली समृद्धि की कीमत पर स्थानीय बाजारों को बचाने में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, विनियमों के अनिवार्य रूप से अनेक अनैच्छिक परिणाम होते हैं। आज की अति प्रतियोगी वैश्विक अर्थव्यवस्था में विनियमों को ऐसे ष्हथियारोंष के रूप में देखा जाना चाहिए जो अधिकांश नागरिकों के आर्थिक कल्याण को समुन्नत करते हुए लागत के औचित्य के साथ सामाजिक और पर्यावरणीय लाभ लाने का प्रयास करें।

24. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2019)

(a) एक बेहतर नियामक व्यवस्था भारत को इसकी जनसंख्या के यथा- उपयुक्त आमाप की अर्थव्यवस्था प्राप्त करने में सहायक होगी।

(b) प्रतियोगी वैश्विक अर्थव्यवस्था में, भारत को विनियमों का युक्तिपूर्वक ही इस्तेमाल करना चाहिए।

(c) भारत में विनियम आज की अति प्रतियोगी वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ अपने एकीकरण का समर्थन नहीं करते।

(d) भारत की नियामक व्यवस्था के विकास में रोजगार के सृजन और आर्थिक संवृद्धि के विचार को प्रबल रूप से रखा जाना चाहिए।

25. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2019)

आजकल की वैश्विक अर्थव्यवस्था में,

1. विनियमों का प्रभावी इस्तेमाल स्थानीय बाजारों को बचाने के लिए नहीं किया गया है।
2. विनियमों का कार्यान्वयन करते समय सामाजिक एवं पर्यावरणीय सरोकारों की पूरे विश्व में सरकारों द्वारा आमतौर पर उपेक्षा की जाती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं ?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, और न ही 2

परिच्छेद-2

किसी अध्ययन में, वैज्ञानिकों ने अल्प- पोषित तथा सुपोषित शिशुओं और छोटे बच्चों के सूक्ष्मजीवोमों (माइक्रोबायोम्स) की तुलना की । कुपोषित और स्वस्थ बच्चों के मल के नमूनों से आहार नली के रोगाणुओं को अलग किया गया । एक ही उम्र के स्वस्थ बच्चों में पाए गए सुविकसित परिपक्व सूक्ष्मजीवोम की तुलना में कुपोषित बच्चों में सूक्ष्मजीवोम "अपरिपक्व" और कम विविध पाया गया । कुछ अध्ययनों के अनुसार, माँ के दूध के रासायनिक संघटन में एक आपरिवर्तित शर्करा (सायलीलेटेड ओलिगोसैक्कराइड्स) पाई गई हैं । इसका शिशु द्वारा अपने खुद के पोषण के लिए उपयोग नहीं किया जाता । तथापि, शिशु का सूक्ष्मजीवोम संरचित करने वाले जीवाणु इस शर्करा पर, जो उनके खाद्य की तरह काम आता है, फलते-फूलते हैं। कुपोषित माताओं के दूध में इस शर्करा की मात्रा कम होती है। परिणामस्वरूप, उनके शिशुओं के सूक्ष्मजीवोम परिपक्व होने में विफल हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप शिशुओं में कुपोषण पाया जाता है।

26. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2019)

(a) यदि बच्चों में कुपोषण की दशा आहार नली के जीवाणुओं के कारण होती है, तो इसका उपचार नहीं किया जा सकता ।

(b) कुपोषित शिशुओं की आहार नलियों में परिपक्व सूक्ष्मजीवोम संरोपित किए जाने चाहिए।

(c) कुपोषित माताओं के शिशुओं को माँ के दूध की जगह डेरी का सायलीलेटेड ओलिगोसेक्कराइड्स से प्रबलित दूध पिलाया जाना चाहिए।

(d) पोषण पर आहार नली के जीवाणुओं के अहानिकर प्रभावों पर अनुसंधान के नीतिगत निहितार्थ हैं।

27. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2019)

1. अपरिपक्व आहार नली जीवाणु संघटन के कारण कुपोषण से ग्रस्त बच्चों के उपचार के लिए एक समाधान प्रसंस्कृत जीवाणुयुक्त (प्रोबायोटिक) खाद्य पदार्थ हैं।
2. कुपोषित माताओं के शिशुओं में आमतौर पर कुपोषित होने की प्रवृत्ति होती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है / हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, और न ही 2

परिच्छेद- 3

पश्चिमी अंटार्कटिक प्रायद्वीप पर तापमान पिछले पाँच दशकों में भूमंडलीय औसत से लगभग पाँच गुना तेजी से बढ़े हैं । अनुसंधानकर्ताओं को अब पता लगा है कि पिघलते हुए हिमनदों के कारण अंटार्कटिक प्रायद्वीप के तटीय जलों में नितल जीवजात (बेंथोस) के बीच कुछ जाति विविधता नष्ट हो रही है, जिसका प्रभाव समग्र समुद्र अधस्तल पारितंत्र पर पड़ रहा है। उनका विश्वास है कि जल में निलंबित अवसाद के बढ़े हुए स्तर ही तटीय क्षेत्र में क्षीयमाण जैव-विविधता का कारण है।

28. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2019)

1. भूमंडलीय तापन के कारण अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा हिमनदों के क्षेत्र तेजी से गर्म होते हैं।
2. भूमंडलीय तापन के परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में समुद्र अधस्तलीय अवसादन हो सकता है।
3. पिघलते हुए हिमनद कुछ क्षेत्रों में समुद्री जैव-विविधता को कम कर सकते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3

(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद - 4

किसी अनुसंधान दल ने उल्लू के एक दीर्घकालीन बसेरे की परीक्षा की। उल्लू छोटे स्तनपायी जंतुओं का शिकार करते हैं, और दीर्घकाल में एकत्रित होने वाले उन आहारों के उत्सर्जित अवशिष्टों से हमें पूरी पिछली सहस्राब्दि में छोटे स्तनपायी जंतुओं की बनावट और संरचना की समझ मिलती है। इस अनुसंधान से यह संकेत मिला है कि जब पृथ्वी लगभग 13,000 वर्ष पूर्व तीव्र तापन की अवधि से गुजरी, तब छोटे स्तनपायी जंतुओं का समुदाय स्थिर और प्रतिस्कन्दी बना रहा। किन्तु, उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश से पर्यावरण में मानव-कृत कारणों से हुए परिवर्तनों के परिणामस्वरूप जैवमात्रा और ऊर्जा प्रवाह में बहुत बड़ी गिरावट आती गई । ऊर्जा प्रवाह में इस नाटकीय गिरावट का अर्थ यह है कि आधुनिक पारितंत्रों में उतनी सहजता से अनुकूलन नहीं हो रहा है जितनी सहजता से अतीत में करता था।

29. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2019)

1. भूमंडलीय तापन बारंबार होने वाली एक प्राकृतिक घटना है।
2. आसन्न भूमंडलीय तापन का छोटे स्तनपायी जंतुओं पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।
3. पृथ्वी के प्राकृतिक प्रतिस्कंदन में कमी के लिए मनुष्य उत्तरदायी है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3

(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-5

खाद्य की किस्मों का पूरे विश्व में विलोपन हो रहा है और यह तेजी से हो रहा है। उदाहरण के लिए, उन्नीसवीं शताब्दी में उगाई जाने वाली सेब की 7,000 किस्मों में से 100 से भी कम बची हैं। फिलिपींस में कभी धान की हजारों किस्में फल-फूल रही थीं; किन्तु अब मुश्किल से सौ किस्में तक ही उपजायी जा रही हैं। चीन में मात्र एक शताब्दी पूर्व खेती में प्रयुक्त होने वाली गेहूँ की किस्मों में से 90 प्रतिशत किस्में विलुप्त हो चुकी हैं। विगत समय में किसानों ने बहुत परिश्रम से अपने स्थानीय जलवायु और पर्यावरण की विलक्षणताओं के काफी अनुरूप फसलों को उपजाया और विकसित किया। हाल के पिछले वर्षों में, कुछ थोड़ी सी भारी उपज वाली किस्मों पर और खाद्य के प्रौद्योगिकी-चालित उत्पादन तथा वितरण पर हमारी भारी निर्भरता के कारण खाद्य फसलों की विविधता में कमी हो रही है। यदि कोई उत्परिवर्तनकारी फसल रोग या भावी जलवायु परिवर्तन उन कुछ फसल पादपों का संहार कर दे, जिन पर हम अपनी बढ़ती जनसंख्या का पेट भरने के लिए निर्भर हो चुके हैं, तो हमारे लिए उन कुछ किस्मों की घोर आवश्यकता हो सकती है, जिन्हें हमने विलुप्त हो जाने दिया।

30. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2019)

1. पादप जातियों के बड़े पैमाने पर विलोपन होने का प्रमुख कारण मनुष्य ही रहे हैं।
2. मुख्यत: स्थानीय रूप से उपजायी जा रही फसलों के उपभोग से फसल विविधता सुनिश्चित होती है।
3. खाद्य उत्पादन और वितरण की वर्तमान शैली अंततोगत्वा निकट भविष्य में खाद्य की कमी की समस्या की ओर ले जाएगी।
4. हमारी खाद्य सुरक्षा, स्थानीय रूप से उपजायी जा रही फसलों की किस्मों को बचाए रखने की हमारी योग्यता पर निर्भर हो सकती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

(a) 1 और 3
(b) 2 और 4
(c) 2 और 3
(d) 1 और 4

2020

निम्नलिखित 6 (छ:) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए पाँच परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

भारत में, पिछले दशक अथवा उसके आसपास, श्रमिक कृषि से हट रहे हैं, परंतु वे केवल निर्माण तथा गैर पंजीकृत विनिर्माण में, जो कि स्पष्टत: बेहतर रोजगार अवसर नहीं है, जा रहे हैं। सेवाएँ, जहाँ श्रम की प्रवृत्ति अधिक उत्पादनकारी होती है, अतिरिक्त रोजगार अवसर उत्पन्न नहीं कर रही हैं जिनकी देश को आवश्यकता है। भारत को अगले दशक में लगभग 24 मिलियन नौकरियों की आवश्यकता होगी। नया सेक्टर, ई-व्यापार, रोजगार के अंतर को अधिक-से-अधिक आधा ही भर पाएगा। केवल वे सेक्टर, जो घरेलू माँग को बढ़ावा देते हैं, जैसे स्वास्थ्य तथा शिक्षा, शेष आधे भाग को सुगमतापूर्वक भर सकते हैं।

1. परिच्छेद में निम्नलिखित में से कौन-सा एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है? (2020)

(a) ग्रामीण से शहरी क्षेत्र में श्रमिकों का प्रवसन कम करने के लिए कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है।
(b) निर्माण तथा गैर पंजीकृत विनिर्माण में कार्य करने की स्थितियों में सुधार लाना चाहिए।
(c) सेवा सेक्टर बेरोजगारी की समस्या को कम करता रहा है।
(d) बड़े पैमाने पर रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए सामाजिक क्षेत्र में खर्च का बढ़ना आवश्यक है।

परिच्छेद-2

भारत में निजता के अधिकार पर वर्तमान फोकस डिजिटल युग की कुछ नवीन वास्तविकताओं पर आधारित है। कोई भी अधिकार वास्तविक अधिकार तभी होता है यदि वह सभी स्थितियों में प्रभावी हो और सभी के लिए हो । उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति का अपने शोषण के विरुद्ध सुरक्षा की वास्तविक उपलब्धता के बिना स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अधिकार अर्थहीन है, जो कि यह सुनिश्चित करे कि उसके इस अधिकार को गैर-सरकारी शक्ति के प्रयोग से निष्फल न किया जा सके। इसलिए राज्य की भूमिका आधिकारिक स्वतंत्र अभिव्यक्ति में रुकावट पैदा करने से बचना मात्र ही नहीं है अपितु यह भी सक्रिय रूप से सुनिश्चित करना है कि गैर-सरकारी पक्षकार इसको अवरुद्ध करने में सक्षम न हों।

2. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. डिजिटल समाज में राज्य के पास ऐसी संस्थाएँ होनी चाहिए जो इसकी समुचित भूमिका को सुनिश्चित कर सकें।
2. राज्य को सुनिश्चित करना चाहिए कि गैर-सरकारी पक्षकार नागरिकों की निजता के अधिकार का हनन न करें।
3. डिजिटल अर्थव्यवस्था नागरिकों की निजता का हनन न करने के विचार से सुसंगत नहीं है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) 1 और 2
(b) केवल 3
(c) 1 और 3
(d) केवल 2

परिच्छेद-3

जल के साथ एक सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि यह नदियों एवं अन्य आर्द्रभूमियों से आता है। इसके बावजूद उसे, उनसे पृथक् माना जाता है। यद्यपि जल का प्रयोग एक संसाधन या वस्तु के रूप में किया जाता है, लोक नीति सदैव यह नहीं समझ पाती कि यह प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र का एक हिस्सा है। अतएव जल प्रणाली निर्माण के प्रयास, जल की आपूर्ति में अभिवृद्धि के प्रयास हैं न कि पारिस्थितिक प्रणाली की क्षमताओं को मजबूत बनाने के।

3. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है ? (2020)

(a) रामसर समझौते के अंतर्गत नदियों एवं अन्य आर्द्रभूमियों को संरक्षित किया जाना चाहिए।
(b) जल प्रणालियों के निर्माण का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए और आगे अभिवृद्धित किया जाना चाहिए।
(c) आर्द्रभूमियों को जल के मुक्त स्रोत के रूप से कहीं अधिक प्रबलित करना चाहिए ।
(d) जल की आपूर्ति नि:शुल्क नहीं होनी चाहिए ताकि इसके दुरुपयोग और अति उपयोग को रोका जा सके।

परिच्छेद - 4

हमारे निवेश निर्णयों में से सबसे महत्त्वपूर्ण होता है संपत्ति का विनिधान, और दु:ख की बात है कि हम में से अधिकांश इस निर्णय को उतना महत्त्व नहीं देते जितना वांछित है। हम अपने भविष्य की पूर्वानुमेयता तलाशने के लिए अडिग हैं। हमारी सोच जोखिम भरी संपत्तियों में निवेश के लिए अत्यधिक चपल एवं मूल्य क्षयण के प्रति अभिमुखित है। हम निवेश के अस्थिर प्रतिफल एवं नियंत्रण - लोप को भी पसंद नहीं करते। हम सोचते हैं कि हमारे धन का निष्क्रिय, अनुत्पादक रहना बेहतर है, पर वह सुरक्षित रहे। परंतु ऐसी कोई संपत्ति नहीं है जो जोखिम - मुक्त हो । हम अपने रोजगार खो सकते हैं, हमारे घर अपना मूल्य खो सकते हैं, हमारे बैंक दिवालिये हो सकते हैं, हमारे बॉन्ड भुगतान से चूक सकते हैं, सरकार गिर सकती है और हमारे मन मुताबिक चुनी हुई कम्पनियों का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। पर हम यह मानकर जीवन नहीं जी सकते कि ये सभी चरम घटनाएँ और वो भी सभी एक साथ घटित होने के लिए तैयार बैठीं हैं। हम जानते हैं कि जोखिम के ये सभी चरम स्वरूप एक साथ प्रकट नहीं होंगे।

4. निम्न कथनों में से कौन-सा एक परिच्छेद के लेखक द्वारा दी गई सलाह को श्रेष्ठ रूप से निहित करता है? (2020)

(a) अपने धन को विभिन्न प्रकार की संपत्तियों में इस प्रकार बाँटें कि आपका जोखिम न्यूनीकृत हो सके।

(b) यदि आप धन कमाना चाहते हैं, तो जोखिम उठाने वाला व्यवहार आपके व्यक्तित्व का एक आवश्यक घटक होना चाहिए।

(c) निवेश करते समय, एक ऐसे भरोसेमंद संपत्ति - प्रबंधन संगठन / संस्था को खोजिए जो आपके लिए आपके धन का ठीक प्रबंधन कर सके।

(d) आपको जानना चाहिए कि आपके धन का निवेश एक जोखिम भरा व्यवसाय है।

परिच्छेद-5

यद्यपि आजकल उगायी जाने वाली अधिकतर आनुवंशिकत: रूपांतरित (जी० एम०) फसलें एकल लक्षण के लिए आनुवंशिकत: अभिरचित हैं, भविष्य में फसलों का एक से अधिक लक्षणों के लिए आनुवंशिकत: अभिरचित होना सामान्य मानक होगा । अत: कृषि में जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका और उसके नियमन को, अकेले जी० एम० फसलों की वर्तमान पीढ़ी के प्रसंग में नहीं समझा जा सकता। बल्कि विभिन्न पहलुओं को जिनमें सामाजिक-आर्थिक प्रभाव सम्मिलित हैं, ध्यान में रखते हुए एक व्यापक अवलोकन की आवश्यकता है, ताकि नकारात्मक प्रभावों को न्यूनीकृत करते हुए प्रौद्योगिकी की क्षमता का उपयोग किया जा सके। उन किस्मों के विकास में, जो जलवायु परिवर्तन के प्रशमन और अनुकूलन में मददगार हैं, जैव प्रौद्योगिकी के महत्त्व के आलोक में, जलवायु परिवर्तन की कार्य-योजना के एक अंश के रूप में जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग न करना, एक विकल्प नहीं हो सकता। जैव प्रौद्योगिकी के घरेलू नियमन को व्यापार नीति और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संधियों तथा सम्मेलनों के अंतर्गत दायित्वों से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

5. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. जैव प्रौद्योगिकी नियमन एक विकासशील प्रक्रिया है।
2. जैव प्रौद्योगिकी नियमन के विषय में नीति निर्णय के लिए लोगों की भागीदारी की आवश्यकता है।
3. जैव प्रौद्योगिकी नियमन के निर्णयन में सामाजिक-आर्थिक पहलुओं को भी ध्यान में रखना चाहिए।
4. जैव प्रौद्योगिकी नियमन में राजनैतिक कार्यपालिका का व्यापक रूप में शामिल होना देश की व्यापार नीतियों और अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों को निपटाने की प्रभाविता में सुधार लाता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

(a) केवल 1, 2 और 4

(b) केवल 1 और 3

(c) केवल 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

6. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन परिच्छेद के मर्म को श्रेष्ठ रूप से अंतर्निहित करता है? (2020)

(a) जी० एम० फसलों के विकास पर वर्तमान विमर्श में सतर्कता सिद्धांत को महत्त्व नहीं दिया गया है।

(b) वर्तमान में जलवायु परिवर्तन प्रशमन और अनुकूलन क्रियाविधियों में जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग नहीं किया जाता है।

(c) जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका जी० एम० फसलों के विकास के लिए आज की प्राथमिकता तक सीमित नहीं है।

(d) जैव प्रौद्योगिकी के नकारात्मक परिणाम ठीक ढंग से नहीं समझे गए हैं।

निम्नलिखित 7 (सात) प्रश्नांशों के लिए निर्देश

नीचे दिए गए पाँच परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

THE CORE IAS

परिच्छेद-1

निजी निवेश सामान्यत: चपल है। विदेशी निजी निवेश और भी अधिक चपल है क्योंकि उनके लिए उपलब्ध निवेश विकल्प काफी अधिक हैं (अर्थात्, समूचा संसार)। इसलिए रोजगार देने का दायित्व विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) पर नहीं छोड़ा जा सकता। सांप्रतिक FDI अंतर्वाह सभी समय और सभी सेक्टरों तथा क्षेत्रों के संदर्भ में चपल होता है, जो उनके अधिकतम प्रतिफल की तलाश का आवश्यक परिणाम है। अस्थिर रोजगार और आय एवं क्षेत्रीय असमानताओं का प्रबलन उसके दुष्परिणाम हैं। विदेशी निवेश का एक संभावित सकारात्मक परिणाम है नई प्रौद्योगिकी का अंतर्बहन और उसका अनुवर्ती विसरण। तथापि, प्रौद्योगिकी विसरण एकदम सुनिश्चित नहीं है, क्योंकि विसरण के लिए भारत में भौतिक एवं मानवीय पूँजी की वर्तमान स्थिति अपर्याप्त साबित हो सकती है।

7. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2020)
   1. दीर्घकाल में विदेशी निवेश पर भरोसा करना आर्थिक रूप से एक सही नीति नहीं है।
   2. ऐसी नीतियों को अपनाया जाना चाहिए जो विदेशी निजी निवेश में चपलता को कम कर सकें।
   3. घरेलू निजी निवेश को सशक्त बनाने वाली नीतियाँ अपनायी जानी चाहिए।
   4. निजी निवेश की अपेक्षा सार्वजनिक निवेश को अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए।
   5. शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में पर्याप्त सार्वजनिक निवेश किया जाना चाहिए।

   उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
   (a) 1, 2 और 4
   (b) 1, 3 और 5
   (c) 2, 4 और 5
   (d) केवल 3

परिच्छेद-2

प्रतिवर्ष जून से सितम्बर के चार महीनों के दौरान होने वाले मानसूनी प्रवाहों के अत्यधिक विषम, ऋतुनिष्ठ एवं स्थानिक वितरण के उपयोग के कई अवसरों को खोया जा चुका है। चूँकि इन कुछ महीनों में ही अधिकांश वृष्टि होती है एवं परिणामत: स्वच्छ जल उपलब्ध होता है, जलाशयों में वर्षा के जल के संचयन की आवश्यकता और बाद में वर्ष भर उपयोग हेतु छोड़ना, एक ऐसी अनिवार्यता है जिसकी कोई उपेक्षा नहीं कर सकता। जलवायु परिवर्तन मौसम की स्थितियों को सदा प्रभावित करता रहेगा और जल की अल्पता तथा इसके आधिक्य को उत्पन्न करेगा। जहाँ लाखों लोग सूखे एवं बाढ़ से पीड़ित होते हैं वहीं देश की कई नदियों में पानी अप्रयुक्त बहता रहता है और प्रत्येक वर्ष समुद्र में बह जाता है।

8. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा भारत की दृष्टि से सर्वाधिक तर्कसंगत एवं व्यावहारिक निहितार्थ हो सकता है? (2020)
   1. नदियों के अंत:संबंधन को प्रारंभ किया जाना चाहिए।
   2. जल के यथोचित वितरण के लिए पूरे देश में बाँधों एवं नहरों के नेटवर्क का निर्माण किया जाना चाहिए।
   3. कृषकों को बोरवेल की खुदाई के लिए सुलभ ऋण दिया जाना चाहिए।
   4. कृषि में जल के प्रयोग को कानूनी रूप से नियंत्रित किया जाना चाहिए।
   5. केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में नदियों के जल के वितरण को नियंत्रित किया जाना चाहिए।

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   (a) 1 और 2
   (b) 2, 4 और 5
   (c) 1, 3 और 4
   (d) 2, 3 और 5

परिच्छेद-3

जब शिक्षा से मिलने वाले लाभ का उपयोग करने की आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी, तभी लोग शिक्षा में निवेश करेंगे। इस प्रत्यक्ष कारण की वजह से आर्थिक स्वतंत्रता के स्तर में वृद्धि के साथ ही शिक्षा से प्राप्त होने वाला लाभ भी बढ़ जाता है। निम्न कर दरों के कारण जब लोगों को शिक्षा के प्रत्येक बढ़ते स्तर से प्राप्त बढ़ी हुई आय के अधिकांश भाग को अपने पास रखने की अनुमति होती है तब शिक्षा में निवेश एक अच्छी सूझ-बूझ की बात होती है। दूसरी ओर जब सरकार शिक्षित व्यक्तियों की बढ़ी हुई आय पर और ऊँची दरों पर कर लगाने का निर्णय लेती है, तब स्वयं को अधिक शिक्षित करने में निवेश करना समझदारी की बात नहीं लगती। यही प्रोत्साहन उन अभिभावकों पर भी लागू होता है जिन्हें यह निर्णय लेना है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा पर निवेश करें या नहीं।

9. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. किसी देश में निम्न कर दर निरपवाद रूप से उच्च शिक्षा में अधिक निवेश के लिए परिणत हो जाती हैं
2. बच्चों की शिक्षा में निवेश उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित करता है।
3. आर्थिक स्वतंत्रता का मानव पूँजी निर्माण पर सकारात्मक प्रभाव होता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद- 4

जब तक वित्तीयन तंत्र स्थापित न हो जाए तब तक हमारे शहरी निकाय संभवत: हमारे शहरों में जलापूर्ति की धारणीय व्यवस्था सुनिश्चित नहीं कर सकते । जलापूर्ति के लिए प्राकृतिक स्रोतों से जल संचित करने, उसे पीने योग्य बनाने की अभिक्रिया, तथा उपभोक्ताओं तक उसकी आपूर्ति करने के लिए पाइपों के जल- वितरण नेटवर्क बिछाने में भारी निवेश की आवश्यकता होती है। उसमें मल प्रबंधन अध: संरचना एवं मल जल अभिक्रिया संयंत्रों में भी निवेश की आवश्यकता होती है, जिससे मल-प्रणाल अपशिष्ट जल को इन संयंत्रों तक ले जा सकें और यह सुनिश्चित किया जा सके कि असंसाधित मल जल प्राकृतिक जल निकायों में बिलकुल ही नहीं छोड़ा जाए। यदि हमारे शहर इतने समृद्ध होते कि वो पूरी लागत को वहन कर सकते तो जल की नि:शुल्क पूर्ति की जा सकती है। वे ऐसे नहीं हैं।

10. परिच्छेद द्वारा संप्रेषित सर्वाधिक तार्किक और निर्णायक संदेश क्या है? (2020)

(a) शहरी स्थानीय निकायों को उपभोक्ता शुल्कों के माध्यम से लागत वसूलनी चाहिए।

(b) शहरी स्थानीय निकाय हमारे शहरों की जल आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त रूप से दक्ष नहीं हैं।

(c) हमारे शहरों में जल का अभाव एक चिरस्थायी समस्या है जिसका समाधान सम्भव नहीं है।

(d) हमारे शहरों में जल संकट की दृष्टि से यह बहुत आवश्यक है कि शहरों में जनसंख्या का एक अधिकतम आकार निर्धारित कर शहरों की जनसंख्या को सीमित किया जाए।

11. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. केवल धनी शहर ही जल की धारणीय आपूर्ति को सुनिश्चित कर सकते हैं।
2. शहरों में जल की धारणीय आपूर्ति का अर्थ कुटुम्बों को जल की आपूर्ति करने से कहीं अधिक है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद - 5

भारत में, अभी भी लगभग पचास प्रतिशत कामगार कृषि में विनियोजित हैं, तथा लगभग 85 प्रतिशत खेत छोटे और सीमांत हैं। चीन और वियतनाम की तुलना में, जहाँ तेज गति से संरचनात्मक और ग्रामीण परिवर्तन हुए, भारत की कहानी धीमे परिवर्तन की है। परिणामस्वरूप भारत में गरीबी - ह्रास, चीन और वियतनाम की तुलना में, 1988-2014 के बीच बहुत धीमी गति का था। भारत का गरीबी-हास 1988-2005 के बीच धीमा था, परंतु 2005-2012 के दौरान यह नाटकीय गति से बढ़ा - पूर्व के काल की तुलना में तीन गुना तेज गति से । इस काल में भारत ने क्या किया? शोध से पता चलता है कि सापेक्ष कीमतों का दृश्यलेख, बढ़ती वैश्विक कीमतों के परिणामस्वरूप, कृषि के पक्ष में महत्त्वपूर्ण ढंग से परिवर्तित हुआ है (50% से भी अधिक)। इससे कृषि में निजी निवेश 50% से भी अधिक बढ़ा। परिणामस्वरूप, कृषि - जी० डी० पी० की वृद्धि ने 2002-2007 के 2.4% के मुकाबले 2007-2012 में 4.1% के स्तर को छुआ । कृषि - व्यापार के निवल अधिशेष ने 2013-2014 में +25 बिलियन के स्तर को छुआ; वास्तविक कृषि मजदूरी 7% प्रति वर्ष की दर से बढ़ी। इन सबके कारण गरीबी में अभूतपूर्व गिरावट आई।

12. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)
    1. जब कृषि जोत मूलत: छोटे और सीमांत हों तब संरचनात्मक और ग्रामीण परिवर्तन असंभव है।
    2. अच्छी कीमत प्रोत्साहन कृषि में निवेश को प्रेरित कर सकती है।
    3. भारत के लिए उच्च मूल्य के कृषि उत्पादों, जैसे कि पशुधन और बागवानी, के लिए मूल्य श्रृंखलाओं (value chains) को बनाने की आवश्यकता है।
    4. कृषि - माल की उच्च वैश्विक कीमतें भारत के गरीबी - ह्रास के लिए आवश्यक हैं।

    उपर्युक्त में से कौन - सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

    (a) 1 और 3
    (b) 2 और 4
    (c) 2 और 3
    (d) 3 और 4

13. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन परिच्छेद के क्रांतिक संदेश का सर्वोत्तम प्रेषण करता है? (2020)
    (a) निकट भविष्य में भारत की गरीबी कम करने के लिए बड़े पैमाने पर कृषीतर ग्रामीण रोजगार सृजित करना चाहिए।
    (b) भारत को बड़े पैमाने पर कृषक उत्पाद कंपनियाँ सृजित करनी चाहिए।
    (c) कृषि में लोक निवेश की तुलना में निजी निवेश को प्राथमिकता देनी चाहिए।
    (d) निकट भविष्य में गरीबी कम करने के लिए समावेशी कृषि विकास मुख्य समाधान है।

निम्नलिखित 6 (छः) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए पाँच परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

स्पैनिश जहाज 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पहली बार दक्षिण अमेरिका से आलू कंद यूरोप लाए, जिससे कि प्रारंभिक 19वीं शताब्दी में यह विशेषकर ठंडे आयरलैंड की वर्षा से तर भूमि में धान्य फसलों का विश्वसनीय पूर्तिकर हो गया। आयरलैंड - वासी शीघ्र ही लगभग पूर्णत: प्रधान खाद्य के रूप में आलू पर निर्भर हो गए। और वे मुख्य रूप से उसकी एक बृहदाकार किस्म, श्लम्परश आलू को उगाने लगे, जिसकी आनुवंशिक भंगुरता को एक कवक श्फाइटोफ्थोरा इन्फेस्टेन्स (Phytophthora infestans)' ने आने वाले समय में निर्ममता से अनावृत कर दिया। 1845 में इस घातक कवक के बीजाणुओं ने समूचे देश में फैलना आरम्भ कर दिया और अपने पथ में आने वाले लगभग सभी लम्परों को नष्ट कर दिया। इसके परिणामस्वरूप हुए अकाल ने कई मिलियन लोगों को मार दिया या विस्थापित किया।

14. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन परिच्छेद के क्रांतिक संदेश का सर्वोत्तम प्रेषण करता है? (2020)

(a) किसी विदेशी पादप को किसी देश में समाविष्ट करने के लिए उस देश की भूमि और जलवायु दशाएँ उपयुक्त होनी चाहिए।

(b) किसी देश के प्रधान खाद्य के रूप में आलू जैसी कंद वाली फसलें, धान्य फसलों का स्थान नहीं ले सकतीं।

(c) पादपों के कुछ कवक संक्रमणों को बड़े क्षेत्रों में फैलने से बाधित किया या रोका नहीं जा सकता ।

(d) किसी समांगी खाद्य स्रोत पर निर्भर होना वांछनीय नहीं है।

परिच्छेद-2

भारत सबसे तीव्र विकसित होने वाली वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में से है, फिर भी यह विश्व में सबसे अधिक कुपोषित बच्चों का घर है । ऐसे भी क्षेत्र हैं जहाँ कुपोषण अपवाद नहीं अपितु सामान्य है 1 और सारे देश में, हर वर्ष अपना पाँचवाँ जन्मदिन मनाने से पूर्व मरने वाले 1.3 मिलियन बच्चों में से लगभग आधे बच्चों की मृत्यु का कारण कुपोषण है। वे बच्चे जो जीवित रह जाते हैं, स्थायी रूप से उस क्षति से ग्रसित रहते हैं जो उनके शरीर और मन में उपयुक्त खाद्यों एवं पोषकों के पर्याप्त मात्रा में न मिलने से हो चुकी होती है। 5 वर्ष से कम आयु के लगभग 44 मिलियन बच्चे अविकसित हैं। इससे उनको विद्यालय में सीखने और वयस्क होने पर जीविका कमाने में कठिनाई होती है। उनकी जीवनकालीन उपार्जन क्षमता उनके स्वस्थ समकक्षों से लगभग एक चौथाई कम होती है।

15. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन - सा/से सर्वाधिक तर्कसंगत एवं व्यावहारिक निहितार्थ है/हैं? (2020)

1. भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली को केन्द्र सरकार द्वारा मॉनीटर किया जाना चाहिए।
2. बालिकाओं को विवाह एवं प्रथम गर्भ विलम्बित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ।
3. जन्म के तुरंत बाद नवजात को स्तनपान कराने हेतु माताओं को प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. सभी के लिए सुरक्षित पेय जल एवं उपयुक्त स्वच्छता सुविधाओं की आपूर्ति सुनिश्चित करनी चाहिए।
5. प्राधिकारियों को यथानिर्धारित टीकाकरण सुनिश्चित करना चाहिए।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) 1, 2, 3 और 4

(b) 2, 3, 4 और 5

(c) केवल 1

(d) केवल 3 और 5

THE CORE IAS

परिच्छेद-3

दलहन की प्रजाति 'पूसा अरहर 16' को पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के धान उगाने वाले क्षेत्रों और अंततः सम्पूर्ण भारत में उगाए जा सकने की संभावना है। उसकी उत्पादकता (लगभग 2000 कि० ग्रा० / हेक्टेयर) उपलब्ध प्रजातियों की तुलना में महत्त्वपूर्ण रूप से अधिक होगी और चूँकि उसके आकार में एकरूपता होगी, उसकी कटाई मशीनों से भी संभव होगी एवं उत्तरी भारत के उन कृषकों, जो आजकल इस तकनीक का प्रयोग धान के लिए करते हैं, के लिए एक आकर्षक विशेषता होगी। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि अरहर का पुआल, धान के पुआल के विपरीत, हरा होता है और उसे मृदा में वापस जोता जा सकता है। धान के पुआल में परेशानी यह है कि सेलखड़ी (silica) की मात्रा अधिक होती है जो आसानी से उसका अपघटन नहीं होने देती। अरहर में कंबाइन कटाई के बाद भी कृषक को बचे हुए पुआल को छोटे टुकड़ों में काटने के लिए केवल रोटोवेटर चलाने की आवश्यकता होती है जिन्हें वापस जोता जा सकता है और जो बहुत तेजी से अपघटित हो जाते हैं। यह कार्य धान के बचे हुए डंठलों के साथ कठिन है जिन्हें आसानी से निकाला या वापस नहीं जोता जा सकता। इसलिए, कृषक साधारणतः इसे जलाने का आसान रास्ता चुनते हैं।

16. निम्नलिखित में से कौन-से ऐसे सर्वाधिक तर्कसंगत निष्कर्ष हैं जो उपर्युक्त परिच्छेद से निकाले जा सकते हैं? (2020)

1. धान की तुलना में दलहन उगाने से कृषकों की आय अधिक होगी।
2. दलहन उगाना, धान उगाने की तुलना में कम प्रदूषण उत्पन्न करता है।
3. दलहन के पुआल का प्रयोग मृदा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए किया जा सकता है।
4. उत्तरी भारत की कृषि के संदर्भ में, धान के की कोई पुआल उपयोगिता नहीं है।
5. मशीनीकृत खेती ठूंठ जलाने का प्रमुख कारक है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 2, 3 और 5
(b) 1, 4 और 5
(c) केवल 2 और 3
(d) केवल 1 और 4

परिच्छेद- 4

भारत में, प्राधिकारी मानसून ऋतु में जलाशयों में अधिकतम जल संचय करने की कोशिश करते हैं, जिसे गर्मी के महीनों में सिंचाई एवं विद्युत् उत्पादन के लिए प्रयोग में लाया जाता है। मानसून ऋतु आने के समय जलाशय में जल को एक निश्चित स्तर से नीचे बनाए रखना एक अंतर्राष्ट्रीय रूप में स्वीकार्य प्रथा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब मानसून की वर्षा होती है तो अतिरेक वर्षा जल के संचयन के लिए जगह हो तथा जल को नियंत्रित रूप में छोड़ा भी जा सके। परंतु प्राधिकारी मानसून के समाप्त होने से पहले ही जलाशयों में अधिक-से-अधिक जल संचय कर लेते हैं, जिससे अधिक विद्युत् उत्पादन एवं सिंचाई सुनिश्चित की जा सके।

17. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. जलाशयों में अधिकतम जल संचयन में होने वाले भारी जोखिम, जलशक्ति परियोजनाओं पर हमारी अत्यधिक निर्भरता के कारण है।
2. बाँधों की संग्रहण क्षमता का मानसून ऋतु के पूर्व अथवा दौरान पूर्ण उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।
3. भारत में बाढ़ नियंत्रण के लिए बाँधों की भूमिका को कम करके आँका गया है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2
(c) केवल 3
(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-5

भारत में आर्थिक उदारीकरण का स्वरूप अधिकतर सरकार की आर्थिक समस्याओं से तय हुआ था न कि जनता की आर्थिक प्राथमिकताओं से अथवा दीर्घकालीन विकास के उद्देश्यों से। अत:, संकल्पना एवं रूपरेखा की सीमाएँ थीं जो बाद में अनुभव से पुष्ट हुई। आर्थिक उदारीकरण के प्रारंभ से रोजगार-विहीन वृद्धि, सतत गरीबी और बढ़ती असमानता समस्याओं के रूप में उभरी हैं। और इन सभी वर्षों के बाद में, चार मौन संकट अर्थव्यवस्था के सम्मुख खड़े हुए हैं; कृषि, अधोसंरचना, उद्योगीकरण एवं शिक्षा; जो देश के भावी परिदृश्य में बंधनकारक हैं। यदि आर्थिक वृद्धि को बनाए रखना है और उसे सार्थक विकास में रूपांतरित करना है, तो इन समस्याओं का निराकरण होना ही चाहिए।

18. इस परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा/से सर्वाधिक तर्कसंगत और तार्किक निष्कर्ष निकाला/निकाले जा सकता/सकते है/हैं? (2020)

1. विकास की तलाश में यह अनिवार्य है कि राज्य की आर्थिक भूमिका पर पुनर्विचार किया जाए एवं उसे पुनर्परिभाषित किया जाए।
2. भारत ने अपने सामाजिक क्षेत्रों में न तो नीतियों का प्रभावी निष्पादन किया और न ही उनमें पर्याप्त निवेश किया।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

19. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक अर्थव्यवस्था से अत्यधिक समेकित करने की आवश्यकता है ताकि रोजगार का बड़ी संख्या में सृजन किया जा सके तथा इसके वृद्धि संवेग को बनाए रखा जा सके।
2. आर्थिक उदारीकरण से बृहत् आर्थिक वृद्धि होगी जिससे दीर्घकाल में गरीबी घटेगी और रोजगार का पर्याप्त सृजन होगा।

उपर्युक्त में से कौन - सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

निम्नलिखित 6 (छः) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए पाँच परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

औद्योगिक सेक्टर को मिलने वाले बैंक ऋण में संकुचन प्रारंभ हो गया है । इसमें कमी गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि ऋण का प्रसार निवेश को पुनर्जीवित करने के लिए आवश्यक है। समस्या के उद्गम पिछले 25 वर्षों के अपूर्ण सुधारों में निहित हैं। 1991 के सुधारों के उपरांत बैंकों के लिए समाधान निगम की स्थापना का एक संस्थागत परिवर्तन होना चाहिए था। तेजी और मंदी वाली एक बाजार अर्थव्यवस्था में बैंकों को स्थापित करने एवं उन्हें असफल होने की अनुमति होनी चाहिए। आज हम बैंकों को बंद नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें बंद करने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। कमजोर, हानि में रहने वाले बैंकों को निरंतर अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है।

20. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष निकाला जा सकता है ? (2020)

(a) भारतीय बैंकिंग व्यवस्था देश की आर्थिक विकास में मदद नहीं कर पा रही है।
(b) 1991 में प्रारंभ किए गए आर्थिक सुधारों ने अर्थव्यवस्था के अपेक्षित स्तर तक सुधार में सहायता नहीं की है।
(c) भारत में बैंकों की असफलता से निपटने के लिए संस्थागत प्रक्रिया नहीं है।
(d) औद्योगिक सेक्टर में विदेशी निवेश को प्रोत्साहन देना उस सेक्टर के बैंक ऋण के ऊपर निर्भरता का एक अच्छा विकल्प है।

परिच्छेद-2

भारत में सौर ऊर्जा की विशाल संभावना है। हम सभी यह अनुभव करते हैं कि हमें अपनी ऊर्जा प्राप्त करने के लिए फॉसिल इंधनों को जलाना रोकना होगा। परंतु कुछ नवीकरणीय संसाधन वांछित उत्पादन-स्तर को प्राप्त करने के लिए अभी भी अपने लागत वक्रों एवं प्रवीणता वक्रों से गुजर रहे हैं। भारत सरकार 2030 तक उत्सर्जन को 33 प्रतिशत कम करने के अपने लक्ष्य से दृढ़ रूप से प्रतिबद्ध है तथा उस दिशा में उसने गैस पर आधारित अर्थव्यवस्था को एक सशक्त प्रोत्साहन दिया है और नवीकरणीय ऊर्जा में भारी निवेश भी किया है। परंतु व्यापारी घराने, ऐसे समय में जब तकनीक अभी तक तैयार नहीं है, नवीकरणीय ऊर्जा में भारी निवेश करने में हिचकिचा रहे हैं।

21. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष निकाला जा सकता है ? (2020)

(a) उत्सर्जन को 33% घटाने की भारत की प्रतिबद्धता को प्राप्त करना असम्भाव्य है।

(b) भारत को नवीकरणीय संसाधनों में निवेश करने के बजाय गैस का आयात करना चाहिए ।

(c) नवीकरणीय संसाधनों को बहुत जल्दी बाजार में लाना महँगा हो सकता है।

(d) भारत को प्राकृतिक गैस की खोज में अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

22. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. सरकार प्राय: ऐसी तकनीक पर अक्षम एवं महँगी आर्थिक सहायता देती है जो निकट भविष्य के लिए तैयार नहीं हो सकती।
2. 2030 तक उत्सर्जन में 33% कटौती की भारत की प्रतिबद्धता गैस-आधारित अर्थव्यवस्था पर निर्भर होगी।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद-3

जीनोम संपादन, जीनोम रूपांतरण से भिन्न है। जीनोम संपादन विशेष रूप से पादप जीनोम के उस भाग का पता लगाने से संबंधित है जिसको परिवर्तित किया जा सके जिससे रोग की भेद्यता कम की जा सके या कुछ शाकनाशियों के विरुद्ध प्रतिरोधी बनाया जा सके या उत्पादकता बढ़ाई जा सके। शोधकर्ता जीनोम का विच्छेदन करने के लिए श्आण्विक कैंचीश का उपयोग करते हैं और इसकी मरम्मत करते हैं जो कि पादपों में होने वाली वह प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो पादप रोगों के आक्रमण के अधीन होने पर नए उत्परिवर्तनों को उत्पन्न कर सकती है, जो कि उस पादप को भविष्य में होने वाले आक्रमणों से बचे रहने में सक्षम बनाता है। अब जबकि प्रयोगशालाओं में पादप जीनोम का विस्तार से परीक्षण करना संभव है और संगत जीनों को सुस्पष्ट रूप में परिवर्तित करने की क्रियाविधि का सृजन किया जा सकता है, इस विकास प्रक्रिया में प्रभावी रूप से तेजी लाई जा सकती है।

23. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2020)

1. जीनोम संपादन में एक पादप से दूसरे पर जीनों के स्थानांतरण की आवश्यकता नहीं है।
2. जीनोम संपादन के द्वारा चुनी हुई जीनों को सही रूप में एक प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है जिससे पौधों को पर्यावरण तत्त्वों के साथ अनुकूलित होने में सहायता मिलती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद- 4

बहुत से लोग ठोस अपशिष्ट प्रबंधन एवं स्वास्थ्य का संबंध ठोस कचरे के उपेक्षित ढेर के परिणाम के रूप में समझते हैं जो मक्खियों और कीड़े-मकोड़ों का घर बनते हैं। किन्तु एक दूसरा पक्ष भी है जिसे सही रूप में समझा नहीं जाता, कि क्या परिणाम होता है जब अवैज्ञानिक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के साथ ही जल निकास व्यवस्था खराब होती है और असंसाधित मल-जल को बारिश के पानी को ले जाने वाले नालों में छोड़ दिया जाता है। उसका परिणाम होता है नालों का अवरुद्ध हो जाना जिनमें रुका हुआ पानी भरा रहता है, मच्छर पैदा होते हैं तथा जल जनित रोग फैलते हैं।

24. भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन परिच्छेद के क्रांतिक संदेश का सर्वोत्तम प्रेषण करता है? (2020)

(a) भारत में जल निकासी तंत्र बारिश के पानी एवं मल-जल के लिए अलग-अलग नहीं हैं।

(b) शहरी स्थानीय निकायों के पास अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याओं से निपटने के लिए पर्याप्त संसाधन एवं विधायी शक्तियाँ नहीं हैं।

(c) ठोस अपशिष्ट प्रबंधन को जल निकासी और मल - जल निकासी तंत्र के अनुरक्षण के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए।

(d) हमारी नगरपालिकाओं द्वारा ठोस अपशिष्ट एवं मल - जल प्रणालियों का खराब प्रबंधन हमारे शहरों में पेय जल की कमी के लिए जिम्मेदार है।

परिच्छेद-5

संविधान के भाग III में, जो जनसाधारण को कुछ मौलिक अधिकारों के प्रति आश्वस्त करता है, अनुच्छेद 25 उद्घोषणा करता है कि "सभी व्यक्तियों को अंत:करण की स्वतंत्रता का और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण करने और प्रचार करने का समान हक होगा", लेकिन जिस बात पर लोग प्राय: ध्यान नहीं देते हैं वह है इस उद्घोषणा का इन शब्दों वाला उपसर्ग, "लोक व्यवस्था, सदाचार, स्वास्थ्य तथा इस भाग के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए"। यह उपसर्ग किसी समुदाय के धार्मिक आचरण के वैधानिक संरक्षण की पूर्व शर्तें निर्धारित करता है। अनुच्छेद 25 की इस प्रारंभिक शर्त के अंतिम शब्द वस्तुत: एक अधीनस्थ खण्ड की संरचना करते हैं जिसके अनुसार भाग III में वर्णित अन्य मौलिक अधिकारों को धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के ऊपर प्रधानता मिलती है। उन अन्य मौलिक अधिकारों में विधि के समक्ष समता का अधिकार और स्वयं विधियों के भी समान संरक्षण का अधिकार है - जिनका प्रारंभ में ही आश्वासन है तथा बाद के अनुच्छेदों में इस अर्थ के साथ विस्तार है कि, अन्य बातों के साथ, राज्य किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को केवल धर्म के आधार पर विधियों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा।

25. उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक निष्कर्ष क्या है ? (2020)

(a) राज्य नागरिकों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

(b) संविधान में दी गई धार्मिक स्वतंत्रता में राज्य हस्तक्षेप कर सकता है।

(c) नागरिकों की धार्मिक स्वतंत्रता मौलिक अधिकारों के दायरे में नहीं आती।

(d) किसी भी समुदाय के धार्मिक आचरण राज्य के कानूनों से प्रतिरक्षित हैं।

2021

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए चार परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए ।

परिच्छेद - 1

शोधकर्ताओं ने मटर के कीड़ों (पी-ऐफिड) और रस चूसने वाले कीड़ों से युक्त कृत्रिम तृण-भूखंडों को रात में स्ट्रीट लाइट के अनुरूप आलोकित किया । इन्हें दो अलग-अलग प्रकार के प्रकाश में रखा गया नवीनतर वाणिज्यिक LED प्रकाश के सदृश श्वेत प्रकाश और सोडियम स्ट्रीट लैंपों के सदृश एंबर प्रकाश । मटर कुल के जंगली पौधे जो कि तृणभूमि में मटर के कीड़ों के लिए खाद्य के स्रोत हैं इन पौधों पर निम्न तीव्रतायुक्त एंबर प्रकाश डालने पर यह देखा गया कि इससे पुष्पण प्रेरित होने की बजाय, बाधित होता है । प्रकाश के प्रभाव के अंतर्गत, सीमित मात्रा में खाद्य उपलब्ध होने के कारण कीड़ों (ऐफिड) की संख्या में भी उल्लेखनीय कमी आई।

1. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर प्रतिपादित, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है ? (2021)

(a) उच्च तीव्रतायुक्त प्रकाश की तुलना में निम्न तीव्रतायुक्त प्रकाश का पौधों पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(b) प्रकाश प्रदूषण का किसी पारिस्थितिक तंत्र पर स्थायी रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

(c) पौधों के पुष्पण के लिए अन्य रंगों के प्रकाश की तुलना में श्वेत रंग का प्रकाश बेहतर है।

(d) किसी पारिस्थितिक तंत्र में उपयुक्त तीव्रता का प्रकाश न केवल पौधों के लिए बल्कि प्राणियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।

परिच्छेद - 2

सभी पुष्पधारी पौधों की जातियों में से लगभग 80 प्रतिशत में परागण प्राणियों द्वारा होता है, जिसमें पक्षी और स्तनधारी प्राणी शामिल हैं, किंतु कीट मुख्य परागणकारी हैं । परागण हमें पौधों से उत्पन्न कई औषधियों के साथ-साथ विविध प्रकार के खाद्य उपलब्ध कराने के लिए उत्तरदायी है । विश्व की कम-से-कम एक तिहाई कृषि फसलें परागण पर निर्भर हैं । परागण के लिए मक्षिका सर्वाधिक प्रभावी वर्ग हैं और ये चार सौ से भी अधिक फसलों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं । परागण एक ऐसी अनिवार्य व्यवस्था है जो पौधों और प्राणियों के बीच जटिल संबंधों का परिणाम है, और इनमें से किसी की भी कमी या ह्रास होने से दोनों का अस्तित्व प्रभावित होता है । प्रभावी परागण के लिए मूल प्राकृतिक वनस्पति के आश्रय जैसे संसाधनों की आवश्यकता है।

2. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2021)

1. परागणकारी प्राणियों की विविधता के बिना भारत के अनाज खाद्यान्न का संधारणीय उत्पादन संभव नहीं है।
2. उद्यान फसलों की एकधान्य कृषि, कीटों के अस्तित्व के लिए बाधक है ।
3. प्राकृतिक वनस्पति से विहीन कृषि क्षेत्रों में परागणकारियों की अत्यधिक कमी हो जाती है ।
4. कीटों में विविधता, पौधों में विविधता लाती।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं ?

(a)केवल 1

(b) केवल 2, 3 और 4

(c) केवल 1 और 2

(d) केवल 3 और 4

परिच्छेद- 3

तमिलनाडु की कावेरी नदी घाटी पर क्षेत्रीय जलवायु मॉडलों का उपयोग करते हुए जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर किए गए अध्ययन में अधिकतम और न्यूनतम तापमानों में वृद्धि की प्रवृत्ति और वर्षा के दिनों की संख्या में कमी देखी गई। इन जलवायवी परिवर्तनों का इस क्षेत्र के जलीय चक्रों पर प्रभाव पड़ेगा, परिणामस्वरूप अधिक मात्रा में जल बह जाएगा और जल के पुनर्भरण (रीचार्ज) में कमी आएगी, तथा भौमजल-स्तर प्रभावित होंगे । इसके अतिरिक्त, राज्य में सूखा पड़ने की बारंबारता में वृद्धि हुई है । इसके कारण, फसलें बचाने के लिए भौमजल संसाधनों पर किसानों की निर्भरता बढ़ी है।

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के मूल भाव को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है? (2021)

(a) क्षेत्रीय जलवायु मॉडलों का विकास जलवायु-अनुकूल (क्लाइमेट-स्मार्ट) कृषि पद्धतियों का चयन करने में सहायक है।

(b) शुष्क भूमि कृषि पद्धतियाँ अपनाकर भौमजल संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता को कम किया जा सकता है।

(c) जलवायु परिवर्तन से जल संसाधनों का महत्त्व बढ़ा है, जबकि साथ ही साथ इन पर संकट भी बढ़ा है।

(d) जलवायु परिवर्तन के कारण, किसानों को अधारणीय आजीविका और जोखिमपूर्ण साधक - रणनीतियाँ अपनानी पड़ती हैं।

परिच्छेद - 4

शोधकर्ता पर्यावरणीय प्रदूषक बिस्फीनॉल । (BPA) के तंत्रिआविषी (न्यूरोटॉक्सिक) प्रभावों का पता लगाने के लिए स्टेम कोशिकाओं का उपयोग करने में सफल रहे । उन्होंने मानव में हृदय रोग, मधुमेह और परिवर्धन अपसामान्यताओं के लिए जिम्मेदार माने जाने वाले यौगिक BPA के अनुप्रयोग के द्वारा मूषक की भ्रूणीय स्टेम कोशिकाओं के विभेदन के दौरान जीन अभिव्यक्ति प्रोफाइल की जाँच के लिए जैव-रासायनिक और कोशिका - आधारित आमापन के संयोजन का उपयोग किया । वे अंत:त्वचा और बाह्यत्वचा जैसे प्राथमिक जनन स्तरों (जर्म लेयर) के सही विनिर्देशन के लिए ठच आविषालुता (टॉक्सिसिटी) का पता लगाने और आमापन करने, तथा तंत्रिका प्रजनक कोशिकाएँ सृजित करने में सफल रहे।

4. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2021)

1. BPA, जीवों में (इन वीवो) भ्रूणीय विकास को परिवर्तित कर सकता है।
2. प्रदूषण से होने वाले रोगों के उपचारों की खोज करने में जैव-रासायनिक और कोशिका-आधारित आमापन उपयोगी हैं ।
3. पर्यावरणीय प्रदूषकों के शरीर क्रियात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए भ्रूणीय स्टेम कोशिकाएँ मॉडल के रूप में कार्य कर सकती हैं ।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ मान्य हैं ?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए चार परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

अंजीर (जीनस फाइकस) के वृक्षों को भारत, पूर्वी एशिया और अफ्रीका में पवित्र माना जाता है और ये कृषि और शहरी क्षेत्रों में सामान्य रूप से पाए जाते हैं, जहाँ अन्य बड़े वृक्ष नहीं होते हैं । प्राकृतिक वनों में, जब अन्य संसाधनों की कमी होती है, अंजीर के वृक्ष वन्य प्राणियों के लिए भोजन उपलब्ध कराते हैं, और विविध प्रकार के फलभक्षियों (फल खाने वाले प्राणियों) की घनी आबादी को सहारा देते हैं । यदि फलभक्षी पक्षी और चमगादड़ अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप वाले स्थानों पर लगे अंजीर के वृक्षों पर निरंतर रूप से जाते रहें, तो पवित्र अंजीर वृक्ष प्रचुर संख्या में फलभक्षियों को बढ़ावा दे सकते हैं । अनुकूल सूक्ष्म-जलवायु में, अंजीर वृक्षों के आस-पास अन्य जातियों के वृक्षों के असंख्य पौध उग सकते हैं।

5. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं (2021)

1. प्राकृतिक वनों में, अंजीर के वृक्ष प्राय: आधारिक जातियाँ (की- स्टोन स्पीशीज) हो सकती हैं ।
2. अंजीर के वृक्ष वहाँ भी उग सकते हैं, जहाँ अन्य बड़े काष्ठीय वृक्ष की जातियाँ नहीं उग सकती हैं ।
3. जैव-विविधता के संरक्षण में पवित्र वृक्षों की भूमिका हो सकती है।
4. अन्य वृक्ष जातियों के बीजों के प्रकीर्णन में अंजीर वृक्षों की भूमिका है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं ?

(a)केवल 1 और 2 (b) केवल 3

(c) केवल 2 और 4 (d) केवल 1, 3 और 4

परिच्छेद - 2

कृषि पारिस्थितिकी के मूल में यह अवधारणा है कि कृषि पारिस्थितिक तंत्रों को प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों के जैव-विविध ता स्तरों और कार्य-प्रणाली का अनुकरण करना चाहिए । ऐसी कृषि अनुकृतियाँ (मिमिक्स), अपने प्राकृतिक मॉडलों की तरह उत्पादक, पीड़क-प्रतिरोधी, पोषक-संरक्षक, तथा प्रघात और तनाव के प्रति समुत्थानशील (रिजिलिअंट) हो सकती हैं । पारिस्थितिक तंत्रों में कुछ भी श्व्यर्थश नहीं जाता है, और पोषक तत्त्वों का अनंत काल तक पुनः चक्रण होता है । कृषि पारिस्थितिकी का उद्देश्य पोषक लूपों को बंद करना है, अर्थात, मिट्टी से निकल चुके सभी पोषक तत्त्वों को फार्मयार्ड खाद के अनुप्रयोग जैसे तरीकों के द्वारा मिट्टी में पुनः वापस पहुँचाना है । इसके अंतर्गत, प्राकृतिक प्रक्रियाओं का उपयोग पीड़क नियंत्रण के लिए तथा अंतर-सस्य कृषि (इंटर-क्रॉपिंग) के द्वारा मृदा को उर्वर बनाने के लिए भी किया जाता है । कृषि पारिस्थितिकी पद्धतियों में पशुधन और फसलों के साथ वृक्षों का एकीकरण शामिल है।

6. निम्नलिखित पर विचार कीजिए : (2021)

1. भूमि-संरक्षण-सस्य (कवर क्रॉप्स)
2. उर्वरक - सिंचाई (फर्टिगेशन)
3. जल संवर्धन
4. मिश्रित कृषि
5. बहु-सस्यन (पॉलीकल्चर)
6. ऊर्ध्वाधर कृषि (वर्टिकल फार्मिंग)

परिच्छेद के अनुसार, उपर्युक्त में से कौन-सी कृषि पद्धतियाँ कृषि पारिस्थितिकी के अनुकूल हो सकती हैं ?

(a)केवल 1, 4 और 5

(b) केवल 2, 3, 4 और 5

(c) केवल 1, 2, 3 और 6

(d) केवल 4 और 6

परिच्छेद- 3

न केवल क्रेडिट कार्ड के विवरण और डाटाबेस जैसे अमूर्त डाटा के साथ कंप्यूटरों का संबंध उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है, बल्कि भौतिक वस्तुओं की वास्तविक दुनिया और संवेदनशील मानव शरीर के साथ भी यह संबंध बढ़ रहा है । एक आधुनिक कार, पहियों पर एक कंप्यूटर है; एक विमान, पंखों पर एक कंप्यूटर है । "इंटरनेट ऑफ थिंग्स" के आगमन से सड़क चिह्नों और एम.आर.आई. स्कैनरों से लेकर कृत्रिम अंगों (प्रॉस्थेटिक्स) और इंसुलिन पंपों तक प्रत्येक वस्तु में कंप्यूटर शामिल हो जाएगा। इस बात का प्रमाण नगण्य है कि ये उपकरण (गैजेट), इनके डेस्कटॉप समकक्षों की तुलना में अधिक विश्वासयोग्य होंगे। हैकर पहले ही यह प्रमाणित कर चुके हैं कि वे इंटरनेट से जुड़ी कारों और पेसमेकरों का दूरस्थ नियंत्रण (रिमोट कंट्रोल) कर सकते हैं।

7. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर प्रतिपादित, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है? (2021)

(a) कंप्यूटर पूरी तरह सुरक्षित नहीं हैं ।

(b) सॉफ्टवेयर बनाने वाली कंपनियाँ साइबर सुरक्षा को गंभीरता से नहीं लेती हैं ।

(c) डाटा सुरक्षा संबंधी कठोर नियमों की आवश्यकता है ।

(d) संचार प्रौद्योगिकी की वर्तमान प्रवृत्ति, भविष्य में हमारे जीवन को प्रभावित करेगी।

परिच्छेद - 4

गरीबी, असमानता, अस्वास्थ्यकर और अस्वच्छता की दशाओं से जूझता सामाजिक और भौतिक वातावरण संक्रामक रोगों का खघ्तरा उत्पन्न करता है । स्वास्थ्य विधि (हाइजीन) के भिन्न-भिन्न स्तर हैं : व्यक्तिगत, घरेलू और सामुदायिक स्वास्थ्य विधि । इसमें कोई संदेह नहीं है कि व्यक्तिगत सफाई रखने से संक्रामक रोगों की दर में कमी आती है । किंतु इस क्षेत्र में बाजार के प्रवेश ने सुरक्षा की झूठी भावना को जन्म दिया है, जो विज्ञापनों के आक्रामक प्रभाव द्वारा अनुकूलित होती है और प्रबल होती है । पश्चिम यूरोप का अनुभव यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत स्वास्थ्य विधि के साथ-साथ वातावरणीय दशाओं में सामान्य सुधार तथा स्वच्छ जल, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा जैसे घटकों से शिशु / बाल मृत्यु / संक्रमण की दरों में पर्याप्त कमी आई है । हाथों को स्वच्छ रखने के प्रति जुनून व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर बाजार के निरंतर प्रभाव को भी लाता है, जिससे पारिस्थितिकी पर इसके नकारात्मक प्रभाव की अवहेलना होती है अथवा उसे हाशिए पर डाल दिया जाता है और इससे प्रतिरोधी रोगाणुओं का प्रादुर्भाव होता है।

8. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2021)
   1. ऐसे लोग जिनमें व्यक्तिगत स्वास्थ्य-विधि का जुनून होता है, वे सामुदायिक स्वास्थ्य - विधि पर ध्यान नहीं देते हैं ।
   2. व्यक्तिगत स्वच्छता से बहु-औषधि प्रतिरोधी रोगाणुओं के प्रादुर्भाव का निवारण किया जा सकता है।
   3. स्वास्थ्य-विधि के क्षेत्र में बाजार के प्रवेश से संक्रामक रोगों का खतरा बढ़ा है ।
   4. संक्रामक रोगों के बोझ को कम करने के लिए वैज्ञानिक और सूक्ष्म-स्तरीय हस्तक्षेप पर्याप्त नहीं हैं ।
   5. यह जन स्वास्थ्य उपायों के माध्यम से कार्यान्वित सामुदायिक स्वास्थ्य-विधि है, जो संक्रामक रोगों के विरुद्ध लड़ाई में वास्तव में कारगर है।

   उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ मान्य हैं ?

   (a)केवल 1 और 2
   (b) केवल 3 और 4
   (c) केवल 4 और 5
   (d) केवल 1, 2 और 4

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए चार परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए ।

परिच्छेद - 1

ऊर्जा और जलवायु संबंधी नीति-निर्माण के क्षेत्र में भारत चुनौतीपूर्ण आसन्न भविष्य का सामना कर रहा है । समस्याएँ कई हैं : जीवाश्मी ईंधन की उत्पादन क्षमताओं में अस्थिरता; सबसे गरीब लोगों के लिए बिजली और खाना पकाने के आधुनिक ईंध न की सीमित पहुँच; अस्थिर वैश्विक ऊर्जा के संदर्भ में ईंधन के आयात में वृद्धि; बिजली के निरंतर मूल्य निर्धारण और शासन की चुनौतियों के फलस्वरूप बिजली की अत्यधिक कमी अथवा अतिरिक्त आपूर्ति; केवल यही नहीं, भूमि, जल तथा वायु पर बढ़ता हुआ पर्यावरणीय विवाद । किंतु यह सब इतना निराशाजनक भी नहीं है : बढ़ते हुए ऊर्जा दक्षता कार्यक्रम; एकीकृत शहरीकरण और परिवहन नीति पर चर्चा; ऊर्जा तक पहुँच और ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के लिए ठोस प्रयास; और नवीकरणीय ऊर्जा हेतु साहसिक पहल, भले ही इनकी पूरी संकल्पना तैयार नहीं है, तथापि ये परिवर्तन की आशा की ओर संकेत करते हैं।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक निर्णायक संदेश प्रस्तुत करता है? (2021)
   (a) भारत के ऊर्जा निर्णयन की प्रक्रिया सदैव जटिल और अंत: संबंधित है ।
   (b) भारत की ऊर्जा और जलवायु नीति संधारणीय विकास के लक्ष्यों के लिए अत्यधिक सुसंगत है ।
   (c) भारत की ऊर्जा और जलवायु संबंधी कार्रवाई, इसके व्यापक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों के लिए अनुकूल नहीं हैं ।
   (d) भारत के ऊर्जा निर्णयन की प्रक्रिया सीधे तौर पर आपूर्ति-उन्मुख है और माँग पक्ष की उपेक्षा करती है।

परिच्छेद - 2

ऐसी रिपोर्ट आई हैं कि बाजार में बेची जाने वाली कुछ प्रतिजैविक औषधियाँ (ऐन्टिबायोटिक्स) वृद्धिकारक (ग्रोथ प्रोमोटर) के रूप में कुक्कुट (पोल्ट्री) और अन्य पशुधन को खिलाई जाती हैं । इन औषधियों के अति-प्रयोग से ऐसे सुपरबग और रोगाणु उत्पन्न हो सकते हैं, जो बहु-औषधियों के लिए प्रतिरोधी हों और जो मनुष्यों में भी प्रवेश कर सकते हैं । इससे सचेत होकर, कुछ कुक्कुट पालन कंपनियों ने कुक्कुटों का तेजी से वजन बढ़ाने के लिए औषधियों का प्रयोग बंद कर दिया है । 1990 के दशक से जब डेनमार्क ने प्रतिजैविक वृद्धिकारक (ग्रोथ प्रोमोटर ऐन्टिबायोटिक) के प्रयोग पर रोक लगाई है, प्रमुख शूकर-मांस निर्यातक का कहना है कि अधिक संख्या शूकर पैदा हो रहे हैं और पशुओं में भी रोग कम हो रहे हैं।

10. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक निर्णायक संदेश प्रस्तुत करता है? (2021)

(a) लोगों को पशु-पालन उत्पादों के सेवन से बचना चाहिए।

(b) पशुओं से उत्पन्न खाद्य पदार्थों के स्थान पर पौधों से उत्पन्न खाद्य पदार्थों का उपयोग करना चाहिए।

(c) पशुओं पर प्रतिजैविक औषधियों (ऐन्टिबायोटिक्स) के प्रयोग पर प्रतिबंध होना चाहिए ।

(d) प्रतिजैविक औषधियों का प्रयोग केवल रोगों के उपचार के लिए ही किया जाना चाहिए।

परिच्छेद- 3

नीति-निर्माताओं और जन-संचार माध्यमों (मीडिया) ने खाद्य पदार्थों की आसमान छूती कीमतों के लिए कई कारकों को दोषी ठहराया है, जिसमें ईंधन की उच्च कीमतें, प्रमुख खाद्य उत्पादक देशों में खराब मौसम और खाद्येतर पदार्थों के उत्पादन के लिए भूमि का उपयोग शामिल है । फिर भी, सर्वाधिक आबादी वाली उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं से खाद्य पदार्थों की माँग में वृद्धि पर अधिक बल दिया गया है । इससे इस बात की बहुत अधिक संभावना बनती है कि इन देशों में अत्यधिक खपत से खाद्य संकट उत्पन्न हो सकता है।

11. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2021)

1. खाद्य पदार्थों के उच्च मूल्यों का एक कारण तेल उत्पादक देश हैं।
2. यदि निकट भविष्य में, विश्व में खाद्य संकट उत्पन्न होता है, तो वह उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में होगा ।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं ?

(a)केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद - 4

आधुनिक विकास अर्थशास्त्र का मुख्य संदेश आय में वृद्धि को महत्त्व देना है, जिसका आशय सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में वृद्धि से है । सिद्धांतत:, बढ़ती हुई जी.डी.पी., रोजगार और निवेश के अवसर सृजित करती है । जब किसी ऐसे देश की आय में वृद्धि होती है, जिसकी जी.डी.पी. का स्तर कभी निम्न था, तब परिवार, समुदाय और सरकार अच्छे जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन हेतु कुछ निधि को अलग रखने में उत्तरोत्तर समर्थ होते हैं। आज विकास शब्दावली (डेवलपमेंट लेक्सिकॉन) में, जी.डी.पी. ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान पर आ गया है कि यदि कोई "आर्थिक वृद्धि" का उल्लेख करता है, तो हम जान जाते हैं कि उनका आशय जी.डी.पी. में वृद्धि से है।

143

12. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2021)

1. बढ़ती हुई जी. डी. पी. किसी देश को विकसित देश बनने के लिए अनिवार्य है।
2. बढ़ती हुई जी.डी.पी. सभी परिवारों में आय का समुचित वितरण सुनिश्चित करती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं ?

(a)केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए चार परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

तथाकथित धार्मिक संप्रदायों के संबंध में, यदि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का आकलन करने के लिए कहा जाए, तो धर्म के रूप में ऐसी कोई बात नहीं होगी जो गलत हो; किंतु यदि वे एक-दूसरे के धर्म का आकलन करते हैं, तो धर्म के रूप में ऐसी कोई बात नहीं होगी जो सही हो, और इसलिए धर्म के संदर्भ में, संपूर्ण विश्व सही है या संपूर्ण विश्व गलत है।

13. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, सर्वाधिक तर्कसंगत पूर्वधारणा कौन-सी हो सकती है? (2021)

(a) कोई भी व्यक्ति किसी धार्मिक संप्रदाय का अनुयायी बने बिना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता।

(b) प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने धार्मिक संप्रदाय का प्रसार करे।

(c) धार्मिक संप्रदायों में मनुष्य की एकता की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति होती है।

(d) लोग अपने धार्मिक संप्रदाय को नहीं समझते हैं।

परिच्छेद - 2

यह निश्चित है कि राजद्रोह, युद्ध, और विधि (लॉ) की अवहेलना अथवा उल्लंघन को प्रजा की अनैतिकता पर उतना नहीं मढ़ा जा सकता, जितना कि उस अधिराज्य (डोमिनियन) की बुरी स्थिति पर । क्योंकि, मनुष्य जन्मजात रूप से नागरिकता के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं, अपितु उन्हें नागरिकता के लिए उपयुक्त बनाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, मनुष्य में नैसर्गिक मनोभाव सर्वत्र समान होते हैं; और यदि अनैतिकता अधिक प्रबल होती है, और किसी राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ) में, दूसरे राष्ट्रमंडल की तुलना में अधिक अपराध होते हैं, तो यह निश्चित है कि पूर्ववर्ती राष्ट्रमंडल ने एकता के लक्ष्य के लिए पर्याप्त रूप से न तो प्रयास किया है, और न ही पूर्व-विचार करके अपनी विधि बनाई है; और इसीलिए, वह राष्ट्रमंडल के रूप में अपने अधिकार को बेहतर बनाने में विफल रहा है।

14. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (2021)

(a) प्रत्येक अधिराज्य में राजद्रोह, युद्ध और विधि के उल्लंघन अपरिहार्य हैं ।

(b) किसी अधिराज्य में सभी समस्याओं के लिए संप्रभु (सॉविन) उत्तरदायी होता है, न कि जनता।

(c) वह अधिराज्य सर्वोत्तम है जो एकता के लक्ष्य के लिए प्रयास करता है और जिसके पास सु-नागरिकता (गुड सिटिजनशिप) के लिए विधि (लॉ) है।

(d) लोगों द्वारा अच्छा अधिराज्य स्थापित कर पाना असंभव है।

परिच्छेद- 3

असमानता इस मूल लोकतांत्रिक प्रतिमानक का उल्लंघन करती है कि सभी नागरिक समान हैं । समानता वह संबंध है, जो कुछेक मूलभूत विशेषताओं के संबंध में व्यक्तियों के बीच होती है, जिसे वे सामान्य रूप से साझा करते हैं । नैतिकता की दृष्टि से कहें तो समानता एक स्वत: निर्धारित सिद्धांत है । इसलिए प्रजाति, जाति, लिंग, संजातीयता, नि:शक्तता, या वर्ग जैसे आधारों पर व्यक्तियों के बीच भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए । मानवीय स्थिति की ये विशेषताएँ नैतिक दृष्टि से संगत नहीं हैं । यह विचार कि व्यक्तियों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए, न केवल इस कारण से कि इनमें से कुछेक व्यक्तियों के पास कुछ असाधारण विशेषताएँ अथवा प्रतिभा होती है, जैसे, इनमें से कुछेक व्यक्ति कुशल क्रिकेट खिलाड़ी, प्रतिभाशाली संगीतकार, अथवा विख्यात साहित्यकार होते हैं, बल्कि इसलिए भी कि वे सभी मनुष्य हैं, अब सामान्यबुद्धि-नीति का अंग बन गया है।

15. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2021)

1. समानता, लोगों के लिए समाज के बहुविध व्यवहारों में आत्मविश्वास के साथ भाग लेने की एक पूर्वापेक्षा है।
2. असमानता का होना लोकतंत्र के अस्तित्व के लिए हानिकारक है।
3. सभी नागरिकों के समान होने का विचार ऐसा है, जिसे किसी लोकतंत्र में भी वास्तव में कार्यान्वित नहीं किया जा सकता है ।
4. समानता के अधिकार को हमारे मूल्यों और दिन-प्रतिदिन की राजनीतिक शब्दावली में समाविष्ट किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ मान्य हैं ?

(a)केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 4

(d) केवल 3 और 4

परिच्छेद - 4

अभिजातीय शासन स्वयं को उस दायरे में अत्यधिक रूप से सीमाबद्ध करके विनष्ट कर लेता है, जिस दायरे में सत्ता सीमित होती है; अल्पतंत्रीय शासन तात्कालिक धन प्राप्ति के लिए असावधानीपूर्वक संघर्ष कर स्वयं को विनष्ट करता है । यहाँ तक कि, लोकतंत्र के अतिरेक से लोकतंत्र भी स्वयं को विनष्ट करता है । इसका मूलभूत सिद्धांत यह है कि पद धारण करने और लोक नीति निर्धारण करने का सबको समान अधिकार है। प्रथम दृष्टि में, यह एक सुखद व्यवस्था है; किंतु यह विनाशकारी बन जाता है, क्योंकि लोग समुचित रूप से शिक्षित नहीं होते हैं कि वे उत्तम शासकों और सर्वाधिक विवेकपूर्ण मार्ग का चयन कर सकें। लोगों में समझ नहीं होती है और वे केवल वही दोहराते हैं जो उनके शासक उन्हें कहना पसंद करते हैं । ऐसा लोकतंत्र, निरंकुश शासन या स्वेच्छाचारी शासन होता है।

16. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के मर्म को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है? (2021)

(a) मानव समाज शासन के भिन्न-भिन्न रूपों के साथ प्रयोग करते हैं।

(b) अपने मूलभूत सिद्धांत के अतिरेक के कारण शासन के किसी भी रूप का अपकर्ष हो जाता है।

(c) सभी नागरिकों की शिक्षा ही पूर्ण, कार्यात्मक और धारणीय लोकतंत्र को सुनिश्चित करती है ।

(d) शासन का अस्तित्व एक अपरिहार्य बुराई है, क्योंकि शासन के सभी रूपों में निरंकुशता अंतर्निहित होती है।

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

नीचे दिए गए चार परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

नैसर्गिक राज्य में ऐसा कुछ भी विद्यमान नहीं हो सकता, जिसे सामान्य सहमति से अच्छा या बुरा कहा जा सके, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जो नैसर्गिक राज्य में रहता है, वह केवल अपने ही लाभ का ध्यान रखता है, और अपनी पसंद के अनुसार तथा जहाँ तक कि उसके अपने लाभ का संबंध है, अच्छे या बुरे का निर्णय करता है, और स्वयं को किसी भी विधि (लॉ) के अंतर्गत अपने सिवा अन्य किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं मानता है; और इसलिए, नैसर्गिक राज्य में अपराध की कल्पना नहीं की जा सकती, केवल सिविल राज्य में ही ऐसा संभव है, जहाँ सामान्य सहमति से अच्छे या बुरे का निर्णय किया जाता है, और प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को राज्य के प्रति उत्तरदायी मानता है।

17. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के मूल विचार को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है? (2021)

(a) क्या सही या गलत है-ये अवधारणाएँ राज्य के निर्माण के कारण अस्तित्व में हैं।

(b) क्या सही या गलत है-इस बारे में जब तक कोई शासक प्राधिकारी निर्णय नहीं लेता, कोई भी व्यक्ति नैतिक रूप से सही नहीं हो सकता।

(c) नैसर्गिक राज्य में व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अनैतिक और स्वार्थी होता है ।

(d) क्या सही या गलत है-यह विचार मानव जाति की उत्तरजीविता के लिए आवश्यक है।

परिच्छेद - 2

आसन्न भविष्य में, हम कई नई प्रौद्योगिकियाँ कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) एवं रोबोटविज्ञान (रोबोटिक्स), 3D विनिर्माण, ग्राहकों की माँग के अनुसार निर्मित जैविक एवं औषधीय उत्पादों, घातक स्वचालित शस्त्रों एवं चालकरहित कारों का बढ़ता पण्यकरण (कमोडिफिकेशन) देखेंगे । इससे विकट समस्याएँ उत्पन्न होंगी । इस नैतिक प्रश्न पर प्राय: विचार किया गया है कि चालकरहित कार नियम न मानने वाले पदातिक (जेवॉकर) को टक्कर मारने एवं अचानक एक ओर मुड़कर कार को क्षतिग्रस्त करने के बीच में निर्णय कैसे लेगी । इसका उत्तर दोनों है, सरल मानव-जीवन को बचाना, और जटिल भी । कितने कोण पर कार को मुड़ना चाहिए क्या केवल उस नियम को न मानने वाले पदातिक को बचाने भर या उससे अधिक ? यदि चालकरहित कार डबलिन में होगी, तो निर्णय कौन करेगा ? उसका निर्णय आइरिश सरकार करेगी, या कैलिफोर्निया में मौजूद कार का मूल कूटलेखक करेगा, या फिर हैदराबाद में मौजूद वह सॉफ्टवेयर प्रोग्रामर करेगा, जिसे कार का अनुरक्षण कार्य सौंपा गया है ? यदि भिन्न-भिन्न राष्ट्रीय क्षेत्राधिकारों में मानव जीवन को प्राथमिकता देने के बारे में भिन्न-भिन्न सूक्ष्म नियम (फाइन प्रिंट) होंगे, तो यह पारराष्ट्रीय (ट्रांसनेशनल) निर्णयों सहित बीमा एवं निवेश संबंधी निर्णयों को किस तरह प्रभावित करेगा?

18. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित में से कौन-से कथन विवेकपूर्ण, युक्तियुक्त एवं व्यावहारिक निहितार्थों को बेहतर दर्शाते हैं? (2021)

1. अत्यधिक वैश्वीकरण किसी भी देश के सर्वोत्तम हित में नहीं है।
2. आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ आर्थिक सीमाओं को तेजी से मिटा रही हैं ।
3. नवाचार और पूँजी ने राज्य के अधिकार-क्षेत्र पर अतिक्रमण कर लिया है ।
4. प्रत्येक देश की सार्वजनिक नीति अपनी निजी आपूर्ति श्रृंखलाओं (सप्लाई चेन) के विकास पर केंद्रित होनी चाहिए।
5. भू-राजनीति को कई अस्पष्टताओं और अनिश्चितताओं का निराकरण करना होगा ।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1, 4 और 5

(b) केवल 1, 2, 3 और 4

(c) केवल 2, 3 और 5

(d) 1, 2, 3, 4 और 5

परिच्छेद - 3

दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (कोड) के अनुसार भारतीय बैंकों के दिवालिया मामलों का समाधान किया जाए, तो वह अनर्जक परिसंपत्ति (एन.पी.ए.) स्थिति को कुछ सीमा तक नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है । राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण द्वारा किए जाने वाले समाधानों की गति धीमी होने के बावजूद, यह संहिता भावी ऋण-चक्रों में बैंक बहियों को शोधित (क्लीन अप) करने में सहायक हो सकती है । सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का पुनः पूँजीकरण भी बैंकों के गुंजाइश पूँजी (कैपिटल कुशन) को बढ़ाने और उन्हें अधिक ऋण देने और आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करने में सहायक हो सकता है । किंतु, अशोध्य कर्ज का समाधान और पुनः पूँजीकरण, इस समाधान का एक अंगमात्र ही हैं, क्योंकि वे उस अनियंत्रित ऋण को रोकने में बहुत कम ही सहायक हो सकते हैं, जिसने भारतीय बैंकिंग प्रणाली को उसकी वर्तमान दयनीय अवस्था में ला खड़ा किया है । जब तक अधारणीय ऋण की समस्या के समाधान के लिए प्रणालीगत सुधार नहीं किए जाते हैं, तब तक भावी ऋण-चक्र बैंकिंग प्रणाली पर दबाव डालते रहेंगे।

19. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और व्यावहारिक सुझाव को बेहतर दर्शाता है? (2021)

(a) बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋण का सघन अनुवीक्षण (मॉनीटर) और सघन विनियमन केंद्र सरकार को करना चाहिए ।

(b) ब्याज की दरें निम्न रखी जानी चाहिए, जिससे कि अधिक ऋण देने, ऋण वृद्धि को प्रोत्साहित करने और इसके जरिए आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए बैंकों को प्रेरित किया जा सके।

(c) कई बैंकों का कुछ बड़े बैंकों में विलय करना ही बैंकों को लाभकारी बनाने और उनके खराब निष्पादन को रोकने का दीर्घकालिक समाधान है।

(d) अशोध्य ऋण की समस्या के दीर्घकालिक समाधान के रूप में, भारतीय बैंकिंग प्रणाली में संरचनात्मक सुधार आवश्यक हैं।

परिच्छेद - 4

भारत में, समष्टि आर्थिक नीति का उद्देश्य लोगों के आर्थिक कल्याण को बढ़ाना है, और ऐसी समष्टि आर्थिक नीति की किसी भी शाखा (विंग), मौद्रिक हो या राजकोषीय, दूसरी शाखा के सक्रिय समर्थन के बिना, स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर सकती।

20. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन, उपर्युक्त परिच्छेद के उप-सिद्धांत को बेहतर दर्शाता है? (2021)

(a) केंद्रीय बैंक सरकार से स्वतंत्र होकर कार्य नहीं कर सकता।

(b) सरकार को वित्तीय बाजारों और संस्थाओं का सघन विनियमन करना चाहिए।

(c) बाजार अर्थव्यवस्था सरकार की समाजवादी नीतियों के संगत नहीं है।

(d) लोगों के आर्थिक कल्याण को बढ़ाने के लिए वित्तीय क्षेत्र में सुधार आवश्यक हैं।

परिच्छेद - 1

हार्वर्ड और एम.आई.टी. जैसे सर्वोत्तम विश्वविद्यालय, उनके वेतन पत्रक (पे-रोल) पर वास्तव में कुछ उत्कृष्ट अध्यापकों की सुविधा होने के बावजूद, "फ्लिप कक्षा" (थ्सपचचमक बसेंतववउ) प्रारूप को तेजी से अपना रहे हैं, जहाँ विद्यार्थी घर बैठे वीडियो व्याख्यान सुनते हैं, और कक्षा के समय में अपने ज्ञान का अनुप्रयोग, समस्याओं का समाधान, उदाहरणों पर चर्चा, इत्यादि करते हैं । प्रोफेसर उस चर्चा को संचालित करते हैं और आवश्यकतानुसार अपने विचार देते हैं, उन अंशों को स्पष्ट करते हैं, जो विद्यार्थियों को अस्पष्ट प्रतीत होते हैं और उन्हें ऐसे उन्नत विचारों से अवगत कराते हैं जो प्रासंगिक हों । इन विश्वविद्यालयों ने अपने वीडियो व्याख्यानों को पूरे विश्व में सबके लिए निःशुल्क उपलब्ध किया है। वे संपूर्ण विश्व के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को इन ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को एकीकृत करके अपने अध्यापन में शामिल करने, अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त खंडों को लेकर उसके आधार पर पैकेज तैयार करने के लिए भी प्रोत्साहित कर रहे हैं।

147

21. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद के केंद्रीय विचार को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है? (2021)

(a) पारंपरिक पद्धति की तुलना में कक्षा शिक्षण संचालित करने की ऑनलाइन पद्धति से विश्वविद्यालयों की क्षमता बेहतर होगी।

(b) विषय-वस्तु में कोई कमी किए बिना उच्चतर शिक्षा सहजता से और कम व्यय में उपलब्ध कराई जा सकेगी।

(c) हमें उच्चतर शिक्षा से संबंधित आधारिक संरचना में अधिक निवेश करने की आवश्यकता नहीं है और तब भी, हम बेहतर मानवीय और सामाजिक पूँजी विकसित कर सकते हैं।

(d) उच्चतर शिक्षा में निजी क्षेत्र के संस्थानों के साथ-साथ कोचिंग संस्थान इस अवसर का लाभ ले सकते हैं और फल-फूल सकते हैं।

परिच्छेद - 2

हमारे नगर, जनसंख्या के अधिक संकेन्द्रण और अपर्याप्त आधारिक संरचनाओं के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक सुभेद्य हैं। इसके अतिरिक्त, उनमें जनसंख्या घनत्व बढ़ रहा है, किंतु हमने जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के निराकरण के लिए अभी तक कोई प्रणाली विकसित नहीं की है। जी.डी.पी. में. हमारे नगरों का योगदान 65% है, किंतु उनमें जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त सुविधाएँ से संबंधित समस्याओं पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है, जो कि संधारणीय समाधान ढूँढ़ने के लिए अत्यावश्यक हैं । हमें नगर योजना बनाने के कार्य में नागरिकों को सम्मिलित करने की आवश्यकता है और ऐसे पारिस्थितिक तंत्र का सृजन करना होगा जो लोगों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

22. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर प्रतिपादित, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष हो सकता है? (2021)

(a) हमारे नगरों में पर्याप्त स्वायत्तता के साथ सुस्पष्ट प्रशासनिक व्यवस्था का होना आवश्यक है ।

(b) निरंतर बढ़ता हुआ जनसंख्या घनत्व, संधारणीय विकास करने के हमारे प्रयासों में बाधक है ।

(c) हमारे नगरों के रख-रखाव और विकास के लिए हमें संधारणीयता संबंधी हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है।

(d) भारत की आधारिक संरचना और संधारणीयता संबंधी समस्याओं के लिए विकास की सार्वजनिक-निजी भागीदारी पद्धति व्यवहार्य दीर्घावधि समाधान है।

निम्नलिखित 2 (दो) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए दो परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

क्या कोई लोकतंत्र दीर्घ समय तक कल्याणकारी राज्य होने से बच सकता है ? जन कल्याण को पूर्ण रूप से बाजार पर क्यों नहीं छोड़ा जा सकता है ? बाजार और लोकतंत्र के बीच अंतर्निहित तनाव विद्यमान है । बाजार एक व्यक्ति-एक-मत (वोट) के सिद्धांत पर कार्य नहीं करते हैं, जैसा कि लोकतंत्र में होता है । कोई व्यक्ति बाजार से क्या ले पाता है, यह उसकी प्रतिभा, कौशल, क्रय-शक्ति तथा माँग और आपूर्ति की क्षमता पर निर्भर करता है । बाजार व्यक्ति के प्रयासों और कौशल का प्रतिफल देते हैं, और बहुत से लोगों को समाज के निचले पायदान से ऊपर भी उठा सकते हैं, किंतु कुछ लोगों को ऐसे कौशलों के विकास के लिए कभी अवसर ही नहीं मिल पाता है, बाजार में जिनकी माँग है; ऐसे लोग सामान्यत: बहुत गरीब होते हैं और बहुत अक्षम होते हैं; अथवा इनमें कौशल विकसित करने में काफी समय लगता है । बाजार नौकरियाँ सृजित करके अकुशल लोगों की भी सहायता कर सकते हैं, किंतु पूँजीवाद हमेशा से बेरोजगारी - विस्फोट का साक्षी रहा है ।

23. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2021)

1. आधुनिक लोकतंत्र बाजार की शक्तियों पर निर्भर करते हैं ताकि वे कल्याणकारी राज्य बन सकें।
2. लोकतंत्रों को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक पर्याप्त आर्थिक वृद्धि को बाजार सुनिश्चित करते हैं।
3. आर्थिक विकास में पीछे छूट गए लोगों के लिए सरकारी कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा / पूर्वधारणाएँ मान्य है/हैं?

(a)केवल 1 और 3 (b) केवल 3

(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद - 2

हमारे विद्यालयों में, हम अपने बच्चों को भौतिकी, गणित और इतिहास तथा हमारे पास जो कुछ ज्ञान है, उनके बारे में सब कुछ पढ़ाते हैं जिन्हें जानने की आवश्यकता है । किंतु क्या हम उन्हें देश में महामारी की तरह फैले जातिभेद की कड़वाहट के बारे में, हमारी भूमि के बहुत बड़े हिस्से को ग्रसित करने वाले सूखे के दुष्परिणामों के बारे में, महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता (जेंडर सेंसिटिविटी) के बारे में, विकल्प के रूप में निरीश्वरवाद की संभावना, आदि के बारे में शिक्षा देते हैं ? यह भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है कि क्या हम उन्हें प्रश्न पूछने की शिक्षा देते हैं, अथवा उन्हें केवल निष्क्रिय रहकर हमारे प्रज्ञान ग्रहण करने की शिक्षा देते हैं? विद्यालय की संवृत (कोकून्ड) दुनिया से निकलकर, अचानक ही, किशोर / किशोरी स्वयं को विश्वविद्यालय की उन्मुक्त दुनिया में पाता / पाती है। यहाँ वह विचारों, प्रभावों और विचारधाराओं के द्वंद्व में बह जाता / जाती है। यह संक्रमण उसके लिए कष्टदायी हो सकता है, जिसे प्रश्न पूछने और राय कायम करने के लिए हतोत्साहित किया गया है।

24. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद केंद्रीय विचार को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है? (2021)

(a) विद्यालयी पाठ्यक्रम बच्चों और अभिभावकों की अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं है ।

(b) शैक्षिक उपलब्धियों पर बल देने से व्यक्तित्व और कौशल के विकास के लिए समय मिलता है।

(c) बच्चों को बेहतर नागरिक बनने के लिए तैयार करना, शिक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

(d) बेहतर नागरिक बनने के लिए, वर्तमान विश्व व्यवस्था शैक्षिक विषय-वस्तु के अतिरिक्त, सामाजिक और जीवन-साधक कौशल की माँग भी करती है।

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

नीचे दिए गए दो परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए । इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

मध्ययुगीन व्यापारी चीन के बाजारों तक पहुँचने के लिए रेशम मार्ग (सिल्क रोड) के खतरों का जोखिम उठाते थे; 15वीं शताब्दी में, हल्के पाल वाले पुर्तगाली जहाजों ने ज्ञान की अपेक्षा स्वर्ण और मसालों की खोज में परिचित विश्व की सीमाओं से परे यात्रा की। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो हमेशा संसाधनों की खोज ही सरहदों की खोज करने के लिए प्रेरक रहा है । विज्ञान और जिज्ञासा कमजोर प्रेरक हैं। चाहे सौर मंडल हो अथवा अंतरातारकीय अंतरिक्ष, आर्थिक इंजन का निर्माण ही अंतरिक्ष को उन्मुक्त करने का एकमात्र साधन है और संसाधनों का निष्कर्षण ही वह इंजन है।

25. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वोत्तम सार है? (2021)

(a) किसी भी मानवीय प्रयास का प्राथमिक उद्देश्य धन का सृजन करना होता है।

(b) अंतरिक्ष हमारी भावी अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करेगा, चाहे वह सौर मंडल में विद्यमान अंतरिक्ष अथवा अंतरातारकीय अंतरिक्ष।

(c) मनुष्य मुख्यत: आर्थिक प्रतिफल के लिए नई सरहदों की खोज करने के लिए प्रेरित होते हैं।

(d) कुछ लोगों के जोखिम लेने का व्यवहार ही धन सृजन का आधार होता है।

परिच्छेद - 2

अधिकांश लोग सहमत होंगे कि शायद ऐसी कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर, जहाँ सत्य बोलने से अधिक हानि होगी, जान-बूझकर असत्य बोलना गलत है। यहाँ तक कि सर्वाधिक सत्यवादी लोग संभवत: बहुत सारे असत्य बोलते हैं, जिन्हें अर्थ-विषयक (सिमेंटिक) असत्य माना जा सकता उनके शब्द प्रयोग में कुछ मात्रा में असत्य होता है, जो कमोबेश सोचा-समझा होता है।"

149

26. इस परिच्छेद के प्रथम अंश में, किस विचार का उल्लेख किया गया है? (2021)

(a) असत्य बोलने के संबंध में सहमति

(b) असत्य बोलने के संबंध में असहमति

(c) सत्य बोलने के संबंध में असहमति

(d) सत्य बोलने से होने वाली हानि के संबंध में असहमति

27. निम्नलिखित में से कौन-सी आदत अच्छे लोगों में बहुधा पाई जाती है? (2021)

(a)सत्य और असत्य को मिश्रित करना

(b) सत्य को असत्य के साथ साभिप्राय मिश्रित करना

(c) तथ्यों का मिथ्याकरण

(d) सत्य का संपूर्ण छिपाव

2022

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित **दो परिच्छेदों** को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

मानव विकास की प्रगति बनाए रखने के सामने सबसे बड़ा खतरा इस रूप में दिखाई देता है कि उत्पादन और उपभोग के स्वरूप में दिनोदिन अधारणीयता बढ़ती जा रही है। वर्तमान उत्पादन मॉडल जीवाश्म ईंधनों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। अब हम जानते हैं कि यह स्वरूप अधारणीय है, क्योंकि ये संसाधन सीमित हैं। मानव विकास को सही अर्थों में धारणीय बनाने के लिए आर्थिक संवृद्धि और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के बीच की घनिष्ठ संबद्धता को पृथक् करने की जरूरत है। कुछ विकसित देशों ने पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) का प्रसार कर और सार्वजनिक परिवहन तथा आधारिक संरचना में निवेश कर इनके अति दुष्प्रभावों को कम करना आरंभ कर दिया है। किन्तु अधिकांश विकासशील देशों को परिष्कृत ऊर्जा स्रोत की ऊँची कीमतों और अल्प उपलब्धता के कारण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। विकसित देशों को चाहिए कि वे विकासशील देशों के धारणीय मानव विकास की ओर जाने में सहायक बनें।

1. निम्नलिखित में से किसके / किनके कारण उत्पादन के स्वरूप में अधारणीयता है? (2022)

1. जीवाश्म ईंधनों पर भारी निर्भरता
2. संसाधनों की सीमित उपलब्धता
3. पुनर्चक्रण का प्रसार

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए : (2022)

विकसित देश, विकासशील देशों के धारणीय मानव विकास की ओर जाने में सहायक हो सकते हैं

1. कम लागत पर परिष्कृत ऊर्जा स्रोत उपलब्ध करा कर
2. उनके सार्वजनिक परिवहन के सुधार के लिए नाममात्र ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध करा कर
3. उन्हें अपने उत्पादन और उपभोग के स्वरूपों को बदलने के लिए प्रोत्साहित कर

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा /से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-2

जब तक उन शक्तियों और प्रवृत्तियों को, जो देश के पर्यावरण को नष्ट करने के लिए उत्तरदायी हैं, निकट भविष्य में नियंत्रित नहीं किया जाता, और अनाच्छादित क्षेत्रों में वृहद् पैमाने पर वनरोपण आरंभ नहीं किया जाता, विषम जलवायु दशाएँ और पवन तथा जल के द्वारा होने वाला भू-क्षरण इस सीमा तक बढ़ जाएगा कि धीरे-धीरे कृषि, जो हमारे लोगों का मुख्य आधार है, असंभव हो जाएगी। विश्व के मरुस्थलीय देश और राजस्थान के हमारे अपने मरु प्रदेश, वृहद् पैमाने पर हुए वनोन्मूलन के दुष्परिणामों की भयावह याद दिलाते हैं। मरु सदृश भू-दृश्य अब गंगा- सतलुज के मैदानों और दक्कन पठार समेत देश के अन्य भागों में अनेक स्थानों पर दिखाई देने लगे हैं। जहाँ कुछ ही दशक पूर्व बारहमासी सरिताओं और सोतों के साथ हरे-भरे वन हुआ करते थे, वहाँ अब, सिर्फ वर्षा ऋतु को छोड़कर, सूखी सरिताएँ और सूखे सोते, और हरियाली से रिक्त भूरे मैदान दिखाई देते हैं।

3. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, वनोन्मूलन और अनाच्छादन के अंततोगत्वा निम्नलिखित में से क्या परिणाम होंगे? (2022)

1. मृदा संसाधन का क्षरण
2. आम आदमी के लिए जमीन की कमी
3. कृषि के लिए जल की कमी

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

THE CORE IAS

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

" जूते गाँठने जैसे साधारण से काम के लिए हम सोचते हैं कि कोई विशेष प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति ही हमारे इस काम को कर सकेगा, लेकिन राजनीति में हम मान लेते हैं कि हर कोई जो मत (वोट) प्राप्त करना जानता है, वह राज्य का शासन करना जानता है। बीमार पड़ने पर हमें एक प्रशिक्षित चिकित्सक की आवश्यकता होती है, जिसकी डिग्री उसकी खास तैयारी और तकनीकी क्षमता की गारंटी होती है-हमारी तलाश यह नहीं होती कि चिकित्सक सबसे सुंदर हो, या सबसे अच्छा वक्ता हो तो फिर, जब पूरा राज्य ही बीमार है, तो क्या हमें इसकी तलाश नहीं होनी चाहिए कि हमें सबसे बुद्धिमान और सबसे उत्तम व्यक्ति की सेवा और मार्गदर्शन मिले?"

4. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक इस परिच्छेद के लेखक के संदेश को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिम्बित करता है? (2022)

(a) हम मान लेते हैं कि गणतंत्र में कोई भी राजनीतिज्ञ देश का शासन चलाने के योग्य है।

(b) राजनीतिज्ञों को प्रशासन में प्रशिक्षित लोगों में से चुना जाना चाहिए।

(c) हमें कोई ऐसी पद्धति सोच निकालने की जरूरत है, जिससे सार्वजनिक पद से अयोग्यता को दूर रखा जा सके।

(d) चूँकि मतदाता अपने प्रशासकों को चुनते हैं, राज्य का प्रशासन करने की राजनीतिज्ञों की योग्यता पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता।

परिच्छेद-2

गरीबी रेखा नितांत असंतोषजनक हो जाती है, जब यह समझने की बात आती है कि भारत में गरीबी का प्रसार कहाँ तक है। यह केवल इसलिए नहीं है कि इसकी परिभाषा बहुत ही संकीर्ण है कि श्गरीब कौन हैश और गरीब की गणना करने की क्रिया-पद्धति विवादास्पद है, बल्कि यह इसके अंदर निहित अपेक्षाकृत अधिक मूलभूत धारणा के कारण है। यह गरीबी को अपर्याप्त आय या अपर्याप्त क्रयशक्ति के रूप में समझने पर अनन्य रूप से निर्भर है। इसे बेहतर रूप में आय-निर्धनता कहकर वर्गीकृत किया जा सकता है। यदि गरीबी अंततोगत्वा उन चीजों से वंचित होना है, जो मनुष्य के सुख - स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं, तो आय-निर्धनता इसका केवल एक पहलू है । जीवन निर्धनता, हमारे विचार में, सिर्फ वह कंगाली की दशा में नहीं है, जिसमें व्यक्ति वास्तव में रहता है, किन्तु दूसरी तरह के जीवन के विकल्प चुनने के लिए वास्तविक अवसर के अभाव में भी है जो सामाजिक बाधाओं और साथ ही साथ वैयक्तिक परिस्थितियों द्वारा प्रदत्त है। निम्न आय की प्रासंगिकता, अपने पास कम चीजों का होना, और वे अन्य पहलू भी जिन्हें मानक रूप से आर्थिक निर्धनता के रूप में देखा जाता है, अंततोगत्वा सामर्थ्य को कम करने की, अर्थात् जिन चीजों के विकल्प चुनने से लोग विविधतापूर्ण और मूल्यवान जीवन जीते हैं, उन्हें अत्यधिक सीमित कर देने की उनकी भूमिका से संबंधित होते हैं।

5. भारत में अपनाई गई 'गरीब' की गणना की क्रिया-पद्धति विवादास्पद क्यों है? (2022)

(a) इसके बारे में थोड़ी उलझन है कि कौन-सी चीजें 'गरीबी रेखा' को बनाती हैं।

(b) ग्रामीण और शहरी गरीब की दशा के बीच बहुत अधिक असमानताएँ हैं।

(c) आय-निर्धनता मापने का कोई एकसमान विश्वव्यापी मानक नहीं है।

(d) यह गरीबी को अपर्याप्त आय या अपर्याप्त क्रयशक्ति के रूप में प्रस्तुत करने पर आधारित है।

6. आय-निर्धनता 'गरीब' की गणना की एकमात्र माप क्यों है? (2022)

(a) यह अन्य सभी की उपेक्षा कर केवल एक प्रकार के वंचन की बात करती है।

(b) मानव जीवन में अन्य वंचनाओं का क्रयशक्ति की कमी से कुछ भी लेना-देना नहीं है।

(c) आय-निर्धनता कोई स्थायी दशा नहीं है, यह समय-समय पर बदलती रहती है।

(d) आय-निर्धनता मानवीय विकल्प चयन को किसी खास समय पर आकर ही सीमित करती है।

7. 'जीवन - निर्धनता' से लेखक का क्या तात्पर्य है? (2022)

(a) मानव जीवन में वे सभी वंचनाएँ जो केवल आय की कमी से ही नहीं, बल्कि वास्तविक अवसरों की कमी से उत्पन्न होती हैं

(b) ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गरीब लोगों की कंगाली की दशा

(c) विविध व्यक्तिगत परिस्थितियों में छूटे हुए अवसर

(d) मानव जीवन में वस्तुपरक, साथ ही साथ अवस्तुपरक वंचनाएँ, जो मनुष्य के विकल्प - चयन को स्थायी रूप से सीमित कर देती हैं

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़िए और उसके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इस परिच्छेद पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद

विश्व में कुछ जगहों पर चावल और गेहूँ जैसे प्रमुख खाद्यान्नों कीउत्पादकता स्थिरता की सीमा तक पहुँच गई है। उपज को न तो नई किस्में और न ही अनोखे कृषि रसायन बढ़ा रहे हैं। न ही अब ऐसी काफी जमीनें बची हैं जिन पर खेती न हुई हो और उन पर कृषि करना उपयुक्त हो। यदि वैश्विक तापमान का बढ़ना जारी रहा, तो कुछ स्थान कृषि के लिए अनुपयुक्त हो जाएँगे। प्रौद्योगिकी का उपयोग इन समस्याओं को दूर करने में सहायक हो सकता है। कृषि प्रौद्योगिकी बहुत तेजी से बदल रही है। बहुत-सा यह परिवर्तन पश्चिमी जगत/अमरीका के संपन्न किसानों द्वारा लाया जा रहा है। पश्चिम में विकसित तकनीकें कुछ स्थानों पर उष्णकटिबंधीय फसलों को अधिक उत्पादक बनाने के लिए अपनाई जा रही हैं। प्रौद्योगिकी का कोई उपयोग नहीं, अगर वह लागू न की जाए। विकासशील विश्व में यह वर्तमान कृषि तकनीकों पर उतना ही लागू है जितना यह आनुवंशिक रूपांतरण में आई नवीनतम तरक्की पर लागू है। आज की श्रेष्ठतम कृषि प्रणालियों को अफ्रीका और एशिया के कम जोत वाले और निर्वाह के लिए कृषि करने वाले कृषकों तक, सरल मामलों में भी कि कितना और कब उर्वरक प्रयुक्त करना चाहिए, पहुँचाया जाए, तो इससे मानवता के लिए अत्यधिक खाद्यान्न उपलब्धता हो सकेगी। इसी तरह बेहतर सड़कें और भंडारण सुविधाएँ जैसी चीजें भी बढ़ेंगी, जिससे अधिशेष खाद्यान्न की बाजारों तक ढुलाई की जा सके और उनकी बर्बादी को कम किया जा सके।

8. उपर्युक्त परिच्छेद पर आधारित, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2022)

1. कृषि प्रौद्योगिकी का विकास, विकसित देशों तक सीमित है।
2. कृषि प्रौद्योगिकी, विकासशील देशों में नहीं अपनाई गई है।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सा / से वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

9 उपर्युक्त परिच्छेद पर आधारित, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2022)

1. गरीब देशों को अपनी वर्तमान कृषि तकनीकों में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।
2. विकसित देशों के पास बेहतर आधारिक संरचना है और वे खाद्यान्न की कम बर्बादी करते हैं ।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सा / से वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

THE CORE IAS

153

10. उपर्युक्त परिच्छेद पर आधारित, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं : (2022)

1. भावी पीढ़ियों के लिए पर्याप्त खाद्यान्न उपजाना चुनौतीपूर्ण कार्य होगा।
2. कॉर्पोरेट कृषि, गरीब देशों में खाद्यान्न सुरक्षा के लिए लाभप्रद विकल्प है।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सा / से वैध है / हैं ?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद - 1

प्राकृतिक वरण (नैचुरल सिलेक्शन) पृथ्वी पर भावी पर्यावरणों का पूर्वानुमान नहीं कर सकता। इसलिए वर्तमान जीव-समुच्चय पर्यावरणीय महाविपत्तियों के लिए, जो जीवन की राह में खड़ी हैं, पूरी तरह कभी भी तैयार नहीं हो सकते। इसका परिणाम यह है कि वे प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएँगी जो पर्यावरणीय प्रतिकूलता से पार नहीं पा सकतीं । उत्तरजीविता की इस विफलता का उत्तरदायी, आधुनिक शब्दों में, उन जीनोम को कहा जा सकता है, जो भूवैज्ञानिक विक्षोभ या जैविक दुर्घटनाओं (संक्रमण, रोग आदि) को झेल पाने में असमर्थ हैं। पृथ्वी पर जीवों के विकास (ईवोल्यूशन) में प्रजातियों का विलुप्त होना एक प्रमुख विशेषता रही है। वर्तमान में पृथ्वी पर एक करोड़ तक प्रजातियाँ हो सकती हैं, तथापि 90% से अधिक प्रजातियाँ, जो कभी पृथ्वी पर थीं, अब विलुप्त हो चुकी हैं। एक बार फिर सृष्टि शून्यवादी सिद्धांत इस बात का संतोषजनक समाधान देने में असफल हो जाते हैं कि क्यों एक दिव्य सृष्टिकर्ता पहले तो लाखों प्रजातियों का सृजन करता है और फिर उन्हें समाप्त हो जाने देता है। विलुप्त जीवन के बारे में डार्विनवादी व्याख्या एक बार फिर सरल, सुचारु और एकदम युक्तियुक्त हो जाती हैख़ जीवों का जीवन उन पर्यावरणीय या जैविक हमलों की क्रिया के रूप में विलुप्त हो जाता है, जिनके सामने उनका वंशानुक्रम उनको पर्याप्त रूप से तैयार नहीं समझता है । इसलिए, तथाकथित डार्विनवादी विकास सिद्धांत वास्तव में सिद्धांत है ही नहीं । विकास होता हैख़ यही सत्य है। विकास की क्रियाविधि (डार्विन ने प्राकृतिक वरण प्रस्तुत किया) का पर्याप्त समर्थन वैज्ञानिक आँकड़ों से हो जाता है। वास्तव में, अभी तक डार्विन के दो केन्द्रीय विचारों में से किसी का भी किसी जन्तुवैज्ञानिक, वनस्पतिवैज्ञानिक, भूवैज्ञानिक, जीवाश्मीय, आनुवंशिक या भौतिक साक्ष्यों ने खंडन नहीं किया है। यदि धर्म का विचार न करें, तो डार्विन के नियम ठीक-ठीक कोपरनिकस, गैलिलियो, न्यूटन और आइंस्टाइन द्वारा प्रस्तावित नियमों की तरह ही स्वीकार्य हैंख़कि ये प्राकृतिक नियम- समुच्चय हैं जो भूमंडल में प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या करते हैं।

11. परिच्छेद के अनुसार, प्राकृतिक वरण पृथ्वी पर भावी पर्यावरणों का पूर्वानुमान नहीं कर सकता है, क्योंकि (2022)

1. जो प्रजातियाँ अपनी राह में खड़े पर्यावरणीय परिवर्तनों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं हैं, वे विलुप्त हो जाएँगी
2. सभी वर्तमान प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएँगी, क्योंकि उनके जीनोम जैविक दुर्घटनाओं को नहीं झेल पाएँगे
3. पर्यावरणीय परिवर्तनों को झेल पाने में जीनोम की अक्षमता के परिणामस्वरूप विलोपन हो जाएगा
4. प्रजातियों का विलोपन एक आम लक्षण है

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) 1, 2 और 3 (b) 2, 3 और 4

(c) 1, 3 और 4 (d) 1, 2 और 4

12. यह परिच्छेद यह सुझाता है कि विकास का डार्विनवादी सिद्धांत कोई सिद्धांत है ही नहीं, क्योंकि (2022)
    (a) यह सृष्टि-शून्यवादी सिद्धांत को संतुष्ट नहीं करता
    (b) विलोपन, पर्यावरणीय और जैविक हमलों की क्रिया है
    (c) इसके खंडन के लिए कोई साक्ष्य नहीं हैं
    (d) जीवों के अस्तित्व का श्रेय सृष्टिकर्ता को है

13. इस परिच्छेद के सन्दर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2022)
    1. केवल वे प्रजातियाँ जीवित रहेंगी और कायम रहेंगी जिनमें पर्यावरणीय महाविपत्ति से पार पाने की क्षमता होगी।
    2. पर्यावरण में उग्र परिवर्तनों के कारण पृथ्वी पर 90% से अधिक प्रजातियाँ विलुप्त हो जाने के खतरे में हैं।
    3. डार्विन का सिद्धांत सभी प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या करता है।

    उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सा/से वैध है/हैं?
    (a) केवल 1
    (b) केवल 1 और 2
    (c) केवल 3
    (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-2

स्थिर आर्थिक संवृद्धि, उच्चतर साक्षरता और बढ़ते हुए कौशल स्तर के साथ भारतीय मध्यवर्गीय परिवारों की संख्या अत्यधिक तेजी से बढ़ी है। इस संपन्नता के सीधे परिणाम ये हुए हैं कि आहार प्रतिरूपों और ऊर्जा उपभोग स्तरों में बदलाव आए हैं। लोग दुग्ध उत्पाद, मछली और मांस जैसे उच्चतर प्रोटीन आधारित आहार लेने लगे हैं, जिन सभी के उत्पादन में अनाज- आधारित आहार के उत्पादन की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। इलेक्ट्रॉनिक और विद्युत् मशीनों / औजारों और मोटर वाहनों के बढ़ते हुए उपयोग के लिए अधिकाधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, और ऊर्जा के जनन के लिए जल की आवश्यकता होती है।

14. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक इस परिच्छेद के मर्म को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिम्बित करता है? (2022)
    (a) लोगों को मुख्यतः भारतीय पारम्परिक अनाज- आधारित आहारों को ही लेते रहने के लिए राजी किया जाना चाहिए।
    (b) आने वाले वर्षों में भारत को कृषि उत्पादकता और अधिक ऊर्जा-जनन क्षमता विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।
    (c) आधुनिक प्रौद्योगिकीय विकास लोगों के सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवहार में बदलाव लाता है।
    (d) आने वाले वर्षों में भारत में जल प्रबंधन प्रणालियों में नाटकीय बदलाव लाने की आवश्यकता है।

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

पिछली दो या तीन पीढ़ियों से व्यक्तियों की सतत बढ़ती हुई संख्या मनुष्यों की तरह नहीं, वरन् केवल कामगारों की तरह जीवन जीती रही है। अत्यधिक मात्रा में श्रम करना आज समाज के हर क्षेत्र में एक नियम बन गया है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि व्यक्ति में आध्यात्मिक तत्त्व की संपन्नता नहीं हो पाती है। वह अपने थोड़े से अवकाश समय को किसी गम्भीर गतिविधि में लगाने में अत्यधिक कठिनाई महसूस करता है। वह मनन करना नहीं चाहता; या यदि वह चाहे तो कर भी नहीं पाता। वह

155

तलाश करता है, पर आत्मोन्नति की नहीं बल्कि मनोरंजन की, जो उसे इस लायक बनाता है कि वह मानसिक रूप से खाली हो और अपनी सामान्य गतिविधियों को भूल जाए। इसलिए हमारे युग की तथाकथित संस्कृति, नाट्यकला की अपेक्षा चलचित्र पर, गम्भीर साहित्य की अपेक्षा समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और अपराध कथाओं पर, अधिक आधारित है।

15. यह परिच्छेद इस विचार पर आधारित है कि (2022)

(a) मनुष्य को कठिन श्रम नहीं करना चाहिए

(b) हमारे युग की सबसे बड़ी बुराई अत्यधिक कार्य-तनाव है

(c) मनुष्य अच्छी तरह मनन नहीं कर सकता

(d) मनुष्य अपने आध्यात्मिक कल्याण का ध्यान नहीं रख सकता

16. मनुष्य आत्मोन्नति की तलाश नहीं करता, क्योंकि (2022)

(a) वह बौद्धिक रूप से सक्षम नहीं है

(b) उसके पास इसके लिए समय नहीं है

(c) उसे भौतिकवाद ने विभ्रमित कर दिया है

(d) उसे मनोरंजन प्रिय है और वह मानसिक रूप से खाली है

परिच्छेद-2

जनांकिकीय लाभांश का अवसर, जो भारत में शुरू हो चुका है और जिसके और कुछ दशकों तक चलने की संभावना है, एक बहुत बड़ा संभावना समय है। जनांकिकीय लाभांश बुनियादी तौर पर कार्यकारी आयु जनसंख्या में स्फीति है, जिसका विलोमत: अर्थ है कि अति युवा और अति वृद्ध आयु का सापेक्ष अनुपात, कुछ समय के लिए, गिरावट पर रहेगा। आयरलैंड और चीन के अनुभव से हम जानते हैं कि यह ऊर्जा का स्रोत और आर्थिक संवृद्धि का इंजन हो सकता है। जनांकिकीय लाभांश की प्रवृत्ति किसी देश की बचत दर को बढ़ाने की होती है, क्योंकि किसी भी देश में कार्यकारी आयु जनसंख्या ही मुख्य बचतकर्ता होती है। और चूँकि बचत दर संवृद्धि का महत्त्वपूर्ण चालक होती है, इससे हमारी संवृद्धि दर को बढ़ाने में मदद मिलनी चाहिए। तथापि, जनांकिकीय लाभांश के लाभ कार्यकारी आयु जनसंख्या की गुणता पर निर्भर होते हैं। और इसका निहितार्थ है शिक्षा, कौशल अर्जन और मानव पूँजी की महत्ता का स्मरण दिलाना।

17. जब जनांकिकीय लाभांश शुरू हो जाता है, तब किसी देश में निम्नलिखित में से क्या अवश्य घटित होगा/ होंगे? (2022)

1. निरक्षर लोगों की संख्या घटेगी।
2. अति वृद्ध और अति युवा आयु का अनुपात कुछ समय के लिए घटेगा।
3. जनसंख्या वृद्धि दर शीघ्र स्थिर हो जाएगी।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

18. इस परिच्छेद का सन्दर्भ लेते हुए निम्नलिखित में से कौन-सा / से अनुमान निकाला जा सकता है/निकाले जा सकते हैं? (2022)

1. जनांकिकीय लाभांश किसी देश के लिए तेजी से इसकी आर्थिक संवृद्धि दर बढ़ाने के लिए एक अनिवार्य दशा है।
2. उच्च शिक्षा की उन्नति किसी देश के लिए तेजी से इसकी आर्थिक संवृद्धि बढ़ाने के लिए एक अनिवार्य दशा है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए ।

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

किसी आर्थिक संगठन में, मानव को मशीनों की उत्पादकता से लाभान्वित होने का अवसर मिले, तो यह उसे फुरसत के बहुत अच्छे जीवन की ओर ले जा सकती है, और बौद्धिक गतिविधियों तथा रुचियाँ रखने वाले लोगों को छोड़कर, मानव के लिए अधिक फुरसत उबाऊ हो सकती है। अगर फुरसत में जीने वाली जनसंख्या को खुश रहना है, तो इसे आवश्यक रूप से शिक्षित जनसंख्या होनी चाहिए, और आनन्द लेने की दृष्टि से तथा साथ ही साथ तकनीकी ज्ञान की प्रत्यक्ष उपादेयता की दृष्टि से शिक्षित होनी चाहिए।

19. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक इस परिच्छेद के अन्तर्निहित स्वर को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिम्बित करता है? (2022)

(a) केवल शिक्षित जनसंख्या ही आर्थिक प्रगति के लाभों का सर्वोत्तम उपयोग कर सकती है।

(b) सभी आर्थिक विकास का लक्ष्य फुरसत का निर्माण होना चाहिए।

(c) किसी देश की शिक्षित जनसंख्या में वृद्धि इसके लोगों को उनमें खुशी की वृद्धि की ओर ले जाती है।

(d) मशीनों के उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि इससे फुरसत में जीने वाली बड़ी जनसंख्या का सृजन हो।

THE CORE IAS

परिच्छेद-2

अगर उपहार अब, जबकि हम बड़े हो चुके हैं, हममें कम रोमांच पैदा करते हैं, तो शायद यह इसलिए है कि हमारे पास पहले से ही बहुत कुछ है; या शायद यह इसलिए है कि हम देने के आनंद की पूर्णता को, और इसके साथ ही पाने के आनंद की पूर्णता को भी, खो चुके हैं। बच्चों के डर पैने होते हैं, उनके दु:ख तीव्र होते हैं, लेकिन वे बहुत आगे तक या बहुत पीछे तक नहीं देख पाते। उनके आनंद स्पष्ट और पूर्ण होते हैं, क्योंकि अभी उन्होंने हर विचारार्थ विषय पर हमेशा शकिन्तुश जोड़ना नहीं सीखा है। सम्भवत: हम अत्यधिक सावधान, अत्यधिक आशंकित, अत्यधिक संशयी हैं। शायद हमारी कुछ परेशानियाँ घट जाएँ अगर हम उनके विषय में कम सोचें, और अपने मार्ग में आने वाली खुशी का आनंद अधिक एकनिष्ठ होकर उठाए।

20. इस परिच्छेद का सन्दर्भ लेते हुए निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सही है? (2022)

(a) वयस्कों के लिए उपहारों से रोमांचित महसूस करना संभव नहीं है।

(b) उपहारों से वयस्कों के कम रोमांचित महसूस करने के एक से अधिक कारण हो सकते हैं।

(c) लेखक को यह पता नहीं है कि वयस्क उपहारों से कम रोमांचित क्यों महसूस करते हैं।

(d) वयस्कों में प्रेम करने या प्रेम किए जाने के आनंद को महसूस करने की कम क्षमता होती है।

157

21. इस परिच्छेद का लेखक किसके विरुद्ध है? (2022)

(a) अतीत और भविष्य के बारे में अत्यधिक चिन्ता करना

(b) उपहारों के बारे में सोचने की आदत के वशीभूत होना

(c) नई चीजों से रोमांचित न होना

(d) केवल आंशिक रूप में आनंद देना या प्राप्त करना

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

अधिकांश लोग, जो अपनी जरूरतों के लिए पर्याप्त धन संचित करने में असफल रहते हैं, सामान्य तौर पर दूसरों की राय से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। वे अपने लिए सोचने का काम समाचार-पत्रों और गपोड़िये पड़ोसियों पर छोड़े रहते हैं। राय पृथ्वी पर सबसे सस्ती वस्तु है। हर किसी के पास, किसी के भी चाहने पर देने के लिए, जो भी उन्हें मानने को तैयार हो, राय का जखीरा तैयार रहता है। जब आप किसी निर्णय पर पहुँचते समय लोगों की राय से प्रभावित होते हैं, तो आप किसी भी उपक्रम में सफल नहीं हो सकेंगे।

22. इस परिच्छेद से निम्नलिखित में से क्या उपलक्षित है? (2022)

(a) अधिकांश लोग अपनी जरूरतों के लिए धन संचित नहीं करते।

(b) अधिकांश लोग अपनी जरूरतों के लिए धन संचित करने में कभी असफल नहीं रहते।

(c) ऐसे लोग भी हैं जो अपनी जरूरतों के लिए धन संचित करने में असफल रह जाते हैं।

(d) धन संचित करने की कोई जरूरत नहीं है।

23. इस परिच्छेद का मुख्य विचार क्या है? (2022)

(a) लोगों को दूसरों की राय से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

(b) लोगों को यथासम्भव अधिकाधिक धन संचित करना चाहिए।

(c) लोगों को न तो राय देनी चाहिए, न ही लेनी चाहिए।

(d) लोग किसी भी उपक्रम में सफल हो जाएँगे, अगर वे कोई भी राय बिलकुल न लें।

परिच्छेद-2

"सामाजिक व्यवस्था एक पवित्र अधिकार है जो अन्य सभी अधिकारों का आधार है। तथापि, यह अधिकार प्रकृति से नहीं आता, और इसलिए इसको परिपाटियों पर आधारित होना चाहिए।"

24. उपर्युक्त परिच्छेद का सन्दर्भ लेते हुए निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं? (2022)

1. परिपाटियाँ मनुष्य के अधिकारों के स्रोत हैं।
2. मनुष्य के अधिकारों का केवल तभी प्रयोग किया जा सकता है, जब एक सामाजिक व्यवस्था हो।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित दो परिच्छेदों को पढ़िए और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

अनुसंधान को प्रोत्साहित करना किसी विश्वविद्यालय के कार्यों में से एक है। समकालीन विश्वविद्यालयों ने अनुसंधान को प्रोत्साहित किया है, न केवल उन मामलों में जहाँ अनुसंधान आवश्यक है, बल्कि सभी प्रकार के पूर्ण अलाभकर विषयों में भी। वैज्ञानिक अनुसंधान संभवत: कभी भी पूरी तरह मूल्यहीन नहीं होता । यह जितना भी मूर्खतापूर्ण और महत्त्वहीन लगे, अनुसंधानकर्ताओं का श्रम जितना भी यांत्रिक और अबौद्धिक हो, एक ऐसा मौका हमेशा ही रहता है कि प्रतिभा के अन्वेषक के लिए उसके परिणाम महत्त्व के हों, जो प्रेरणाहीन किन्तु मेहनती अनुसंधानकर्ताओं द्वारा अपने लिए एकत्रित तथ्यों को किसी सारभूत सामान्यीकरण के आधार के रूप में इस्तेमाल कर सके। किन्तु, जहाँ अनुसंधान मौलिक नहीं है, और सिर्फ विद्यमान सामग्रियों को फिर से व्यवस्थित करने के रूप में बना है, जहाँ इसका उद्देश्य वैज्ञानिक न होकर साहित्यिक या ऐतिहासिक है, तो यह आशंका है कि यह पूरा कार्य निरर्थक बन कर रह जाए।

25. वैज्ञानिक अनुसंधान के बारे में लेखक की पूर्वधारणा यह है कि (2022)
(a) यह कभी भी बहुत मूल्यवान नहीं होता
(b) यह कभी-कभी बहुत मूल्यवान होता है
(c) यह कभी भी कुछ-न-कुछ मूल्य के बिना नहीं होता
(d) यह हमेशा ही बहुत मूल्यवान होता है

26. लेखक के अनुसार (2022)
(a) किसी प्रबुद्ध अन्वेषक के लिए बहुत से अनुसंधान परिणाम महत्त्व के नहीं हो सकते
(b) किसी प्रबुद्ध अन्वेषक के लिए कोई भी अनुसंधान परिणाम हमेशा ही महत्त्व का होता है
(c) किसी प्रबुद्ध अन्वेषक के लिए कोई भी अनुसंधान परिणाम महत्त्व का हो सकता है
(d) किसी प्रबुद्ध अन्वेषक के लिए कोई भी अनुसंधान परिणाम हमेशा ही कुछ महत्त्व का होना चाहिए

THE CORE IAS

परिच्छेद-2

बाढ़ और सूखे की समस्याओं का सबसे अच्छा समाधान कैसे किया जा सकता है कि नुकसान कम-से-कम हों और तंत्र लचीला बन जाए? इस प्रसंग में एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु, जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए, वह यह है कि भारत में 120 दिनों (जून से सितम्बर तक) के दौरान 'अत्यधिक' (वार्षिक वर्षा का 75%) जल प्राप्त होता है, और शेष 245 दिनों के दौरान 'अत्यल्प' जल प्राप्त होता है। जल उपलब्धता की इस विषम स्थिति को इस तरह प्रबंधित और विनियमित किया जाना है, ताकि वर्ष भर जल का उपभोग बना रहे।

27. निम्नलिखित में से कौन-सा एक व्यावहारिक, तर्कसंगत और टिकाऊ समाधान को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिम्बित करता है? (2022)
(a) पूरे देश में कंक्रीट की विशाल भण्डारण टंकियों और नहरों का निर्माण करना
(b) फसल लेने के स्वरूपों और कृषि प्रथाओं में बदलाव लाना
(c) पूरे देश में नदियों को आपस में जोड़ना
(d) बाँधों और जलभरों के जरिए जल का सुरक्षित भण्डार (बफर) रखना

2023

निम्नलिखित 5 (पाँच) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित तीन परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीच आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लि आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

भारत में, नगरीय अपशिष्ट का स्रोत पर पृथक्करण दुर्लभ है। पुनर्चक्रण अधिकांशत: अनौपचारिक क्षेत्रक के पास है। नगरपालिका बजट का तीन-चौथाई से अधिक अंश संग्रहण और परिवहन में चला जाता है, जिससे प्रसंस्करण/संसाधन पुनर्प्राप्ति और निपटान के लिए अत्यंत कम अंश बचता है। इन सब में अपशिष्ट-से-ऊर्जा कहाँ उपयुक्त जगह पाती है? आदर्श रूप से, यह शृंखला में पृथक्करण (गीले अपशिष्ट और अन्य के बीच), संग्रहण, पुनर्चक्रण के पश्चात् और भराव क्षेत्र में जाने से पहले उपयुक्त जगह पाती है। अपशिष्ट को ऊर्जा में बदलने की कौन-सी प्रौद्योगिकी सर्वाधिक उपयुक्त है, यह इस पर निर्भर है कि अपशिष्ट में क्या है (अर्थात् घटक जैवनिम्नीकरणीय है या नहीं हैं) और उसका कैलोरी मान क्या है। भारत के नगरीय ठोस अपशिष्ट का जैवनिम्नीकरणीय घटक 50 प्रतिशत से किंचितमात्र ज्यादा है, और जैवमेथैनन (बायोमेथैनेशन) से इसके प्रसंस्करण के लिए एक बड़ा हल मिल सकता है।

1. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं (2023)

   1. नगरीय अपशिष्ट का संग्रहण, प्रसंस्करण और पृथक्करण सरकारी एजेंसियों के पास होना चाहिए।
   2. संसाधन पुनर्प्राप्ति और पुनर्चक्रण को प्रौद्योगिकीय आगतों की अपेक्षा होती है जिन्हें निजी क्षेत्र के उद्यम सर्वोत्तम रूप से प्रबंधित कर सकते हैं।

   उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सी सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

2. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद के मर्म को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

   (a) नगरीय ठोस अपशिष्ट से ऊर्जा का जनन महँगा नहीं है।

   (b) जैवमेथैनन, नगरीय ठोस अपशिष्ट से ऊर्जा के जनन का सर्वाधिक आदर्श तरीका है।

   (c) नगरीय ठोस अपशिष्ट का पृथक्करण, अपशिष्ट-से-ऊर्जा संयंत्रों की सफलता को सुनिश्चित करने में पहला कदम है।

   (d) भारत के नगरीय ठोस अपशिष्ट का जैवनिम्नीकरणीय घटक अपशिष्ट से ऊर्जा दक्ष/प्रभावी रूप से उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त नहीं है।

परिच्छेद-2

ऐसा दावा किया जाता है कि जैविक खेती अन्तर्निहित रूप से अपेक्षाकृत सुरक्षित और स्वास्थ्यकर है। वास्तविकता यह है कि चूँकि जैविक खेती उद्योग भारत में अभी भी काफी नया है और ठीक से विनियमित नहीं है, किसान और उपभोक्ता, समान रूप से, न केवल भ्रमित हैं कि कौन-से उत्पाद उनके लिए सबसे अच्छे हैं, बल्कि कभी-कभी उत्पादों का ऐसे तरीकों से इस्तेमाल करते हैं जो कि उन्हीं को हानि पहुँचा सकते हैं। उदाहरण के लिए, चूँकि भारत में जैविक उर्वरकों का बड़े पैमाने पर प्राप्त होना कठिन है, अत: किसान प्राय: खेतों की खाद का इस्तेमाल करते हैं, जिनमें आविषालु (टॉक्सिक) रसायन और भारी धातु हो सकते हैं। कतिपय पादप फुहारों, उदाहरण के लिए धतूरा फूल और पत्तियों के फुहारों में ऐट्रोपीन नाम का तत्त्व होता है। यदि इसका इस्तेमाल ठीक-ठीक मात्रा में न हो, तो यह उपभोक्ता के स्नायु तंत्र पर प्रभाव डाल सकता है। दुर्भाग्य से, इसे कितना और कब इस्तेमाल करना है, इन मुद्दों पर पर्याप्त अनुसंधान या विनियमन नहीं हुआ है।

3. उपर्युक्त परिच्छेद पर आधारित, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2023)

1. जैविक खेती अन्तर्निहित रूप से किसानों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए असुरक्षित है।
2. किसानों और उपभोक्ताओं को पर्यावरण-हितैषी खाद्य-पदार्थ के बारे में शिक्षित होने की जरूरत है।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सी सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

4. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद के लेखक द्वारा व्यक्त सर्वाधिक युक्तियुक्त, तर्कसंगत और व्यावहारिक सन्देश को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) भारत में, जैविक खेती को पारंपरिक खेती के स्थानापन्न के रूप में प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए।
(b) रासायनिक उर्वरकों के लिए कोई सुरक्षित जैविक विकल्प नहीं हैं।
(c) भारत में, किसानों को उनकी जैविक खेती को धारणीय बनाने के लिए दिशा-निर्देशन और सहायता की जरूरत है।
(d) जैविक खेती का लक्ष्य ढेर सारा लाभ प्राप्त करने के लिए नहीं होना चाहिए, क्योंकि अभी भी इसके उत्पादों के लिए कोई वैश्विक बाजार नहीं है।

परिच्छेद-3

पिछले कुछ दशकों के दौरान भारत में खाद्य उपभोग के स्वरूप पर्याप्त रूप से बदल गए हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि ज्वार-बाजरा जैसे अनेक पोषक खाद्यपदार्थ लुप्त हो गए हैं। हालाँकि स्वतन्त्रता के बाद से अब तक खाद्यान्न का उत्पादन पाँच गुने से अधिक बढ़ गया है, फिर भी इससे कुपोषण की समस्या का पर्याप्त रूप से समाधान नहीं हुआ है। लंबे समय तक, कृषि क्षेत्र का ध्यान खाद्यान्न, विशेष कर प्रधान खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि पर रहा, जिसके परिणामस्वरूप देशी पारंपरिक फसलों/अनाजों, फलों व अन्य सब्जियों के उत्पादन व उपभोग में कमी आई, और इस प्रक्रिया में खाद्य और पोषण सुरक्षा प्रभावित हुई है। इसके अतिरिक्त, गहन, एकधान्य कृषि प्रथाओं से भूमि, जल और उनसे प्राप्त खाद्य की गुणता निम्नीकृत होती है, जिसके कारण खाद्य और पोषण सुरक्षा की समस्या चिरस्थायी हो सकती है।

THE CORE IAS

5. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2023)

1. सतत विकास लक्ष्यों को कार्यान्वित करने के लिए और भुखमरी को पूरी तरह मिटाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एकधान्य कृषि प्रथाएँ अपरिहार्य हैं, भले ही इनसे कुपोषण का समाधान न हो।
2. कुछ ही फसलों पर निर्भरता से मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए नकारात्मक परिणाम होते हैं।
3. खाद्य आयोजना विषयक सरकारी नीतियों में पोषण की सुरक्षा का समावेशन आवश्यक है।
4. वर्तमान एकधान्य कृषि प्रथाओं के लिए किसान अनेक तरीकों से उपदान (सब्सिडी) और सरकार द्वारा अनाजों के लिए दी जाने वाली लाभप्रद कीमतें प्राप्त करते हैं और इसलिए वे फसल विविधता पर विचार करने के लिए प्रवृत्त नहीं होते।

उपर्युक्त में से कौन-कौन सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

(a) केवल 1, 2 और 4
(b) केवलं 2 और 3
(c) केवल 3 और 4
(d) 1, 2, 3 और 4

161

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित तीन परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

शहरों में प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए नीति-निर्माता यह सोचते हैं कि वाहनों के लिए सम-विषम संख्या योजना (ऑड-ईवेन स्कीम) के अस्थायी प्रयोग, विद्यालयों, फैक्टरियों, निर्माण कार्यकलाप को बंद करने, और कुछ प्रकार के वाहनों पर प्रतिबन्ध लगाने जैसे कठोर कदम आगे बढ़ने की राह हैं। इस पर भी हवा शुद्ध नहीं है। 15 वर्ष से अधिक पुराने वाहन कुल वाहनों का एक प्रतिशत हैं; और उन्हें सड़कों से हटा दें तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। कतिपय ईंधनों और कुछ प्रकार की कारों पर मनमाना प्रतिबन्ध लगा देना उपयुक्त नहीं है। पेट्रोल या ब्छळ इंजनों की अपेक्षा डीजल इंजन अधिक PM 2-5 और कम CO, उत्पन्न करते हैं । इसके विपरीत, पेट्रोल इंजनों की तुलना में डीजल और CNG इंजन दोनों अधिक NO, उत्सर्जित करते हैं। किसी ने भी CNG इंजनों से उत्सर्जित हो रहे NO के परिमाण को मापा नहीं है। जो वाहन अनिवार्य दुरुस्ती परीक्षण (फिटनेस टेस्ट) और आवधिक प्रदूषण परीक्षण से पारित हो चुके हैं, उन पर मनमाना प्रतिबन्ध लगाना अनुचित है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रदूषकों के स्रोतों के बारे में वैज्ञानिक और विश्वसनीय सूचना निरंतर आधार पर उपलब्ध हो, और वे प्रौद्योगिकियाँ हों जो उनसे प्रदूषण को कम करने की दिशा में काम करें।

6. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद द्वारा व्यक्त सर्वाधिक युक्तियुक्त और तर्कसंगत निहितार्थ को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) प्रदूषण कम करने के लिए वाहनों पर मनमाने नियंत्रण को कार्यान्वित करना मुश्किल है।

(b) तुरत-फुरत सूझे तरीके से की गई प्रतिक्रियाओं से प्रदूषण की समस्या हल नहीं हो सकती, बल्कि साक्ष्य-आधारित उपागम अधिक प्रभावशाली होगा।

(c) आवधिक प्रदूषण जाँच के बिना गाड़ी चलाने वालों पर भारी जुर्माना लगाया जाना चाहिए।

(d) प्रदूषण की समस्याओं का सामना करने के कानून के अभाव में प्रशासन की प्रवृत्ति मनमाने निर्णय लेने की होती है।

परिच्छेद-2

सुचारु निगम शासन (कॉरपोरेट गवर्नेस) संरचनाएँ कंपनियों को उत्तरदायित्व और नियंत्रण उपलब्ध कराने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। एक आधारभूत कारण, कि निगम शासन क्यों पूरे विश्व में आर्थिक और राजनीतिक एजेंडा की ओर उन्मुख हुआ है, अंतर्राष्ट्रीय पूँजी बाजारों में त्वरित संवृद्धि है । प्रभावी निगम शासन, प्रतिष्ठानों के बाह्य वित्तपोषण की ओर पहुँच को बढ़ाता है, जिसके परिणामस्वरूप अपेक्षाकृत अधिक निवेश, उच्चतर संवृद्धि और रोजगार होते हैं। निवेशक ऐसी जगह निधीयन का प्रयत्न करते हैं, जहाँ प्रकटन के मानक, समय से और सटीक वित्तीय रिपोर्टिंग, और सभी हितधारियों के प्रति समान व्यवहार किए जाते हैं।

7. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद द्वारा व्यक्त युक्तियुक्त अनुमान को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) अच्छे बाह्य वित्तपोषण तक पहुँच सुनिश्चित करना विश्व भर में देशों का महत्त्वपूर्ण एजेंडा है।

(b) सुचारु निगम शासन प्रतिष्ठानों की विश्वसनीयता को बढ़ाता है।

(c) अंतर्राष्ट्रीय पूँजी बाजार यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रतिष्ठान अच्छा निगम शासन बनाए रखें।

(d) सुचारू निगम शासन मजबूत पूर्ति श्रृंखला की सुकर बनाता है।

परिच्छेद-3

हाथी दृश्यभूमि के वास्तुकार हैं, ये वन में वृक्ष-विहीन स्थल निर्मित करते है, कतिपय पादप प्रजातियों के अतिवर्धन की रोकथाम करते हैं और अन्य पादपों के पुनर्जनन के लिए स्थान प्रदान करते हैं, जिससे कि आगे अन्य शाकाहारी पशुओं को निर्वाह उपलब्ध होता है। हाथी पादप, फल और बीज खाते हैं, और अपने आने-जाने के दौरान चलते हुए मलत्याग के साथ इन बीजों का प्रसार करते जाते हैं। हाथी का गोबर पादपों और पशुओं के लिए पोषण प्रदान करता है और कीटों के लिए प्रजनन स्थल की तरह काम करता है। सूखा पड़ने के समय ये धरती में गड्ढे खोद कर जल तक पहुँच बनाते हैं, जो दूसरे वन्यजीवों को लाभ पहुँचाता है।

8. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद द्वारा निगमित हो सकने वाले सर्वाधिक युक्तियुक्त और तर्कसंगत अनुमान को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) यह आवश्यक है कि हाथियों का निवास क्षेत्र समृद्ध जैव-विविधता वाला सुविस्तृत क्षेत्र हो।

(b) हाथी कुंजीशिला (की-स्टोन) प्रजाति हैं और वे जैव-विविधता को लाभ पहुँचाते हैं।

(c) वनों में समृद्ध जैव-विविधता हाथियों की मौजूदगी के बिना नहीं बनाए रखी जा सकती।

(d) हाथियों में क्षमता होती है कि अपनी आवश्यकता के अनुरूप प्रजातियों वाले वनों को फिर से बना लें।

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित तीन परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

जो उत्सर्जन मनुष्य वर्तमान समय में वायुमंडल में डालते हैं, वे जलवायु को इस सदी के मध्य में और उसके आगे प्रभावित करेंगे। इसी बीच, प्रौद्योगिकीय परिवर्तन के द्वारा भविष्य में जीवाश्म ईंधन से अलग विकल्प सस्ता हो सकता है या शायद न हो, जिससे दुनिया के पास यही भयावह विकल्प रह जाएगा कि या तो भारी लागत पर तेजी से उत्सर्जन को कम किया जाए या ज्यों के त्यों तापन के दुष्प्रभाव से पीड़ित होते रहें। जो व्यवसाय अनिश्चित परिणामों के खतरों से बचाव नहीं करते, वे विफल हो जाते हैं। विश्व जलवायु परिवर्तन के बारे में ऐसी लापरवाही बर्दाश्त नहीं कर सकती।

9. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद के लेखक द्वारा व्यक्त निर्णायक सन्देश को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) जो व्यवसाय उत्सर्जन करते हैं, जरूरत है कि या तो वे बंद हो जाएँ या भविष्य में प्रदूषण की कीमत चुकाएँ।

(b) एकमात्र हल यही है कि जलवायु परिवर्तन के मुद्दों से संबंधित प्रौद्योगिकीय विकास हो।

(c) जब तक प्रौद्योगिकी में सुधार न आए, तब तक कार्बन उत्सर्जन से निपटने की प्रतीक्षा करते रहना बुद्धिमत्तापूर्ण रणनीति नहीं है।

(d) चूँकि भविष्य का प्रौद्योगिकीय परिवर्तन अनिश्चित है, नए उद्योगों को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर आधारित किया जाना चाहिए।

परिच्छेद-2

पर्यावरणीय समस्याओं से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ जन्म लेती हैं। जीवन शैली में सारगर्भित बदलावों से पर्यावरणीय या स्वास्थ्य की समस्याएँ कम हो सकती हैं, किन्तु इस विचार को अपनाना लगभग असंभव लगता है पर्यावरणीय समस्याओं के सन्दर्भ में, व्यक्तिगत प्रयास नगण्य प्रभाव वाले प्रतीत होते हैं और इसलिए जड़ता की ओर ले जाते हैं। दूसरी ओर स्वास्थ्य के विषय में व्यक्तिगत विकल्प-चयन वस्तुत: जीवन और मृत्यु के बीच का फर्क ला सकते हैं। तथापि, कुछ एक को छोड़कर, अपने विकल्पों को चुनने में वही सामूहिक, अकर्मण्यता ही दिखाई देती है।

10. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद से निकाली जा सकने वाली सर्वाधिक तार्किक पूर्वधारणा को सर्वोत्तम रूप से उपलक्षित करता है? (2023)

(a) हमें संभवत: रोकथाम की अपेक्षा उपचार पर अधिक धन खर्च करना पड़ सकता है।

(b) हमारी पर्यावरणीय और लोक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को हल करना सरकार का काम है।

(c) स्वास्थ्य की रक्षा की जा सकती है, भले ही पर्यावरणीय समस्याओं पर ध्यान न दिया जाए।

(d) पारंपरिक जीवन-शैली के लोप और पाश्चात्य मूल्यों के प्रभाव से जीवन जीने के कतिपय अस्वास्थ्यकर तौर-तरीके विकसित हो गए हैं।

परिच्छेद-3

बहुत से लोग सही आहार नहीं ले रहे हैं। कुछ का तो बस यही निर्णय है कि वही भोजन लेंगे जो उन्हें अच्छा लगता है, लेकिन जो बहुत स्वास्थ्यप्रद नहीं है। इससे असंक्रामक रोगों में बढ़ोतरी हो रही है। इसके फलस्वरूप हमारी स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्थाओं पर बहुत बड़ा बोझ आ जाता है, जिसमें उस आर्थिक प्रगति को, जो गरीबों के लिए उनके जीवन स्तर को उन्नत करने हेतु आवश्यक है, अस्त-व्यस्त कर देने की संभावना है। अन्य लोगों के लिए, समस्या पौष्टिक भोजन तक सीमित पहुँच अथवा पहुँच की गुंजाइश न होने की है, जिससे एकरस खानपान बन जाता है जो उनके पूर्ण विकास के लिए आवश्यक दैनिक पोषक तत्त्व प्रदान नहीं करता। पूरी दुनिया में पोषण पर खतरा होने का कारण आंशिक रूप से यह है कि हमारी खाद्य पद्धतियाँ समुचित रूप से हमारी पोषण जरूरतों के अनुरूप नहीं हैं। खेत से थाली तक के लंबे सफर में चिंताजनक विचलन हो रहे हैं।

11. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद के मर्म को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) सार्वभौम बुनियादी आय योजना को गरीबी उन्मूलन के एक तरीके के रूप में दुनिया भर में कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

(b) हमें खाद्य आधारित पोषण को अपने नीति विषयक विचार-विमर्श के केंद्र में रखना चाहिए।

(c) उपयुक्त आनुवंशिकत: रूपांतरित फसलों के जनन द्वारा खाद्यपदार्थ का पोषण स्तर समुन्नत किया जाना चाहिए।

(d) आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों का प्रयोग कर हमें खाद्य वस्तुओं में अपेक्षित पोषक तत्त्वों को शामिल कर उन्हें पुष्ट करना चाहिए।

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित तीन परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

हम अकसर भारत में विभिन्न राज्यों के बीच नदी जल को ले कर विवाद होने के बारे में सुनते रहते हैं। 20 प्रमुख नदी तंत्रों में से, 14 में पहले से ही जल की तंगी है; 75% जनसंख्या जल की तंगी वाले क्षेत्रों में रहती है, जिनमें से एक-तिहाई लोग उन क्षेत्रों में रहते हैं जहाँ जल का अभाव है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती जनसंख्या की माँगें और कृषि द्वारा इनको पूरा करने की आवश्यकता, तथा तेजी से बढ़ रहे शहरीकरण एवं औद्योगीकरण जल की तंगी को और बढ़ाएँगे। भारत के संविधान के अनुसार, 'राज्यों के बीच नदियों के विनियमन को छोड़ कर, जले राज्य का विषय है, केंद्र का नहीं। इसके विभिन्न हितधारियों की आपस में होड़ लेती माँगों के बीच संतुलन सुनिश्चित करने की कुंजी इस बात में है, कि द्रोणी (बेसिन) पर आधारित रीति से संघटक क्षेत्रों के और राज्यों के बीच जल का बँटवारा किया जाए। उन्हें जल का उचित भाग देने के लिए इन सब वस्तुनिष्ठ मापदंडों के आधार पर आकलन किया जाना आवश्यक है, कि नदी द्रोणी की क्या विशिष्टताएँ हैं, उस पर कितनी बड़ी जनसंख्या निर्भर है, जल का वर्तमान उपयोग क्या है और माँग कितनी है, कितना दक्षतापूर्ण उपयोग किया जा रहा है, भविष्य में कितने उपयोग की आवश्यकता होगी, आदि, और साथ-साथ नदी और जलभर की पर्यावरणीय जरूरतों को भी सुनिश्चित करना आवश्यक है।

12. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, विभिन्न हितधारियों को जल का उचित और साम्यिक बँटवारा सुनिश्चित करने के लिए सर्वाधिक युक्तियुक्त, व्यावहारिक और तात्कालिक कार्रवाई को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) जल के बँटवारे का एक राष्ट्रीय, व्यावहारिक, विधिक और नीतिपरक ढाँचा बनाया जाना चाहिए।

(b) देश के सभी नदी तंत्र जोड़े जाने चाहिए और विशाल जलभरों का निर्माण किया जाना चाहिए।

(c) जल के आधिक्य वाले क्षेत्रों और जल की कमी वाले क्षेत्रों के बीच नहरें बनाई जानी चाहिए।

(d) जल संकट को दूर करने के लिए, कृषि और उद्योग जैसे क्षेत्रकों की जल की माँग कम की जानी चाहिए।

परिच्छेद-2

श्रमयोग्य आयु की लगभग आधी से अधिक भारतीय महिलाएँ और लगभग एक चौथाई भारतीय पुरुष अनीमिया से ग्रस्त हैं । अध्ययनों के अनुसार, इसके परिणामस्वरूप वे जितना उत्पादनशील हो सकते थे, उससे कहीं 5% से 15% तक कम उत्पादनशील हैं। भारत में दुनिया के सबसे अधिक यक्ष्मा (ट्यूबरकुलोसिस) से ग्रस्त लोगों का बोझ भी है, जिससे देश में वार्षिक रूप से 17 करोड़ श्रम दिवसों की हानि होती है। किन्तु, आज जितनी महत्त्वपूर्ण उत्पादकता की हानि है, भविष्य में होने वाली क्षमता की हानि उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। यह दिनोंदिन अधिक स्पष्ट होता जा रहा है कि कुपोषित भारतीय बच्चे संज्ञानात्मक योग्यता के अनेक मापनों पर, अपने साथ के भली-भाँति सुपोषित बच्चों की तुलना में, दो या तीन गुना कम निष्पादन करते हैं। एक ऐसी अर्थव्यवस्था के लिए, जो अत्यधिक कुशल कामगारों पर अपेक्षाकृत अधिक निर्भर होगी, इससे एक महत्त्वपूर्ण चुनौती सामने आती है। और भारत के जनांकिकीय दृष्टिकोण से, यह एक ऐसी चुनौती है जिससे वास्तव में निपटना चाहिए।

13. इस परिच्छेद के निहितार्थ को निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) शिक्षा प्रणाली को ग्रामीण क्षेत्रों में अवश्य सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

(b) कौशल विकास कार्यक्रम का बड़े पैमाने पर और प्रभावी कार्यान्वयन आज के वक्त की जरूरत है।

(c) आर्थिक विकास के लिए, केवल कौशल-कामगारों के स्वास्थ्य और सुपोषण पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

(d) जिस तीव्र आर्थिक संवृद्धि की हमें अपेक्षा है, उसके लिए लोगों के स्वास्थ्य और सुपोषण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

परिच्छेद-3

भारत में, अधिकांश किसान सीमांत और छोटे कृषक हैं, कम शिक्षित हैं और संभवत: ऋण और दूसरी बाध्यताओं के कारण उनमें जलवायु परिवर्तन के अनुरूप अनुकूलन करने की कम क्षमताएँ हैं । इसलिए, यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि जलवायु परिवर्तन के प्रति स्वत: अनुकूलन होगा। यदि यह संभव भी होता, तो भी यह जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसानों की भरपाई करने के लिए पर्याप्त नहीं होता। इससे निपटने हेतु, दुष्प्रभावों को कम करने की तीव्र प्रतिक्रिया करने के साथ-साथ, जलवायु परिवर्तन के अनुरूप अनुकूलन करते जाना सबसे महत्त्वपूर्ण है। दूसरा समाधान यह है, कि एक सुनियोजित या नीति-निर्देशित अनुकूलन किया जाए, जिसके लिए जरूरी होगा कि सरकार की तरफ से नीतिपरक अनुशंसाएँ लाई जाएँ। अनुकूलन के लिए प्रत्यक्षण (परसेप्शन) एक पूर्व शर्त है। किसान जलवायु परिवर्तन के अनुरूप कृषि प्रथाओं को अपना रहे हैं या नहीं, यह इस बात पर निर्भर है कि उन्हें इसका प्रत्यक्षण हो रहा है या नहीं। तथापि, यह हमेशा अनुकूलन के लिए पर्याप्त नहीं होता। महत्त्वपूर्ण यह है, कि कोई किसान जलवायु परिवर्तन के साथ जुड़े जोखिमों को किस तरह देखता है।

14. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद के लेखक द्वारा व्यक्त सर्वाधिक युक्तियुक्त और तर्कसंगत सन्देश को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) जलवायु परिवर्तन के अनुरूप अनुकूलन और दुष्प्रभावों को कम करने की कार्रवाई आधारभूत रूप से सरकार के दायित्व हैं।

(b) जलवायु परिवर्तन के कारण देश में भू-उपयोग प्रतिरूपों के संबंध में सरकारी नीतियों में परिवर्तन होता है।

(c) किसानों के जोखिम प्रत्यक्षण उन्हें अनुकूलन के च्ववत निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु महत्त्वपूर्ण हैं।

(d) चूँकि, दुष्प्रभावों को कम करना संभव नहीं है, सरकारों को चाहिए कि जलवायु परिवर्तन के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया हेतु नीतियाँ सामने लाएँ।

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित तीन परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

भारत में, यद्यपि बेरोजगारी दर अर्थव्यवस्था के अल्प निष्पादन हेतु बार-बार प्रयुक्त किया जाने वाला मानदंड है, फिर भी स्कूल और कॉलेज में बढ़ते नामांकन की दशाओं के अंतर्गत, इससे गलत तस्वीर चित्रित होती है। बताई गई बेरोजगारी दर प्रभावी रूप से उन युवा भारतीयों के अनुभव पर आधारित है, जिन्हें उच्चतर रोजगार चुनौतियों का सामना करना होता है और जो अधिक उम्र वाले समकक्षों की अपेक्षा सही कार्य के लिए प्रतीक्षा करने में अधिक तत्परता दिखाते हैं। माध्यमिक अथवा उच्चतर शिक्षा वाले लोगों के लिए बेरोजगारी की चुनौती कहीं अधिक है, और बढ़ते हुए शिक्षा के स्तर बेरोजगारी की चुनौतियों को और बढ़ा देते हैं।

15. इस परिच्छेद का लेखक जो कहना चाहता है, उसे निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, सर्वाधिक संभावित रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) स्कूलों और कॉलेजों में नामांकन उच्च है लेकिन शिक्षा में गुणवत्ता का अभाव है।

(b) बेरोजगारी को युवा भारतीयों में निश्चित रूप से बढ़ती हुई शिक्षा और आकांक्षाओं के फलन के रूप में देखा जाना चाहिए।

(c) विशाल संख्या में बेरोजगार लोगों को समायोजित करने के लिए कोई श्रम- गहनता वाले उद्योग नहीं हैं।

(d) शिक्षा प्रणाली को समुचित रूप से अभिकल्पित किया जाना चाहिए ताकि शिक्षित लोगों के लिए स्व-रोजगार सुकर हो।

परिच्छेद-23

"विज्ञान स्वयं में पर्याप्त नहीं है, विज्ञानों के बाहर भी एक बल और नियम व्यवस्था होना आवश्यक है जो विज्ञानों का समन्वय करे और उन्हें एक लक्ष्य की ओर निर्देशित करे। कोई भी पाठ्यक्रम ठीक तौर से चलाया नहीं जा सकता, अगर खुद लक्ष्य ही सही तौर पर निर्धारित नहीं किया गया हो। विज्ञान को जिसकी आवश्यकता वह है दर्शन वैज्ञानिक पद्धतियों का विश्लेषण और वैज्ञानिक प्रयोजनों और परिणामों का समन्वय इसके बिना कोई भी विज्ञान सतही ही होगा। ठीक विज्ञान की ही तरह, सरकार को भी दर्शन के अभाव के कारण भुगतना पड़ता है। दर्शन का विज्ञान के साथ ठीक वही संबंध है, जो राजमर्मज्ञता का राजनीति के साथ है : सकल ज्ञान और परिप्रेक्ष्य से निर्देशित होते चलना, न कि लक्ष्यहीन और वैयक्तिक प्रयत्न करते हुए। ठीक जैसे, मनुष्य की वास्तविक जरूरतों और जीवन से पृथक् होकर ज्ञान का अनुसरण पांडित्यवाद बन जाता है, उसी तरह विज्ञान और दर्शन से पृथक् होकर राजनीति का अनुसरण एक विनाशक अव्यवस्था में बदल जाता है।

16. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद द्वारा व्यक्त सर्वाधिक तार्किक, युक्तियुक्त और व्यावहारिक संदेश को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) आधुनिक राजमर्मज्ञों को वैज्ञानिक पद्धति और दार्शनिक चिंतन में भली-भाँति प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी भूमिकाओं, दायित्वों और लक्ष्यों के बेहतर परिप्रेक्ष्य मिल सकें।

(b) यह वांछनीय नहीं है कि सरकारें अनुभव-सिद्ध राजमर्मज्ञों द्वारा प्रबंधित हों, जब तक कि दूसरे ऐसे लोग भी उसमें न मिलें जिनमें ज्ञान-प्राप्ति की अभिवृत्ति हो और जिनसे बुद्धिमत्ता प्रतिबिंबित होती हो।

(c) चूँकि राजमर्मज्ञ/नौकरशाह समाज के ही उत्पाद हैं, समाज में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का होना वांछनीय है जो अपने नागरिकों को बहुत कम उम्र से ही वैज्ञानिक पद्धति और दार्शनिक चिंतन में प्रशिक्षण देने पर केन्द्रित हो।

(d) यह वांछनीय है कि सभी वैज्ञानिकों का दार्शनिक होना भी आवश्यक हो, ताकि उनके कार्य लक्ष्य-अभिमुख हों और इस प्रकार समाज के लिए प्रयोजनपूर्ण तथा उपयोगी हों।

परिच्छेद-3

"राज्य का अंतिम लक्ष्य लोगों पर प्रभुत्व रखना नहीं है, न ही उनको डरा कर नियंत्रित रखना है; बल्कि ऐसा होना है जिसमें हर व्यक्ति भय से मुक्त हो, ताकि वह पूरी सुरक्षा के साथ, और खुद को या अपने पड़ोसी को क्षति पहुँचे बिना, जी सके व कार्य कर सके। मैं फिर दोहराता हूँ, राज्य का लक्ष्य बुद्धिसंगत प्राणियों को बुद्धिहीन पशुओं और मशीनों में बदल देना नहीं है। यह लक्ष्य है, उनके शरीरों को और उनके मन को सुरक्षापूर्वक कार्य करने में सुकर बनाना। यह लक्ष्य है, लोगों को स्वतंत्र विवेक के अनुसार जीने, और उसे व्यवहार में लाने की ओर ले जाना: ताकि वे अपनी शक्ति को घृणा, क्रोध और छल-कपट में नष्ट न करें, न ही एक-दूसरे के प्रति अन्यायपूर्वक कार्य करें।"

17. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पदों में से कौन-सा एक, राज्य के परम लक्ष्य को सर्वोत्तम रूप में व्यक्त करता है? (2023)

(a) व्यक्ति सुरक्षा

(b) शरीर और मन का स्वास्थ्य

(c) सामुदायिक समरसता

(d) स्वतंत्रता

निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित चार परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के ने आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

विकल्प के विरोधाभास को बूरिदा) की गधे कहानी के द्वारा समझाया गया है । 14वीं शताब्दी दार्शनिक ज्यां बूरिदां (Jean Buridan) ने स्वतं इच्छा-शक्ति और अनेकों विकल्पों और अनिश्चितताओं कारण चयन करने की असमर्थता के बारे में लिखा है। इस कहानी में, एक गधा भूसे के दो समान रूप से आकर्ष ढेरियों के बीच खड़ा है। वह कौन-सी ढेरी को खाए, य निर्णय करने में असमर्थ हो कर वह भूखा ही मर जाता है। प्रौद्योगिकी और नवप्रवर्तन, जैसे कि स्मार्ट फोन औ टैबलेट, में आने वाले बदलाव हमारे विकल्पों की बहुतायत को केवल तीव्र ही करते हैं। सतत कनेक्टिविटी और सद्य अनुक्रिया दत्त का अति-उपभोग तथा सोशल मीडिया आत्म-चिंतन और विश्राम के लिए कोई जगह ही नही छोड़ते, जिससे निर्णयन और अधिक कठिन हो जाता है। जीवन का रूप विकल्पमय है। अनेक लोगों के पास जीवन के आकर्षक विकल्पों की बहुतायत है, फिर भी वे खुद को दुखी और चिंताग्रस्त पाते हैं।

18. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छे में निहित सर्वाधिक तर्कसंगत सन्देश को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) आधुनिक प्रौद्योगिकी सामाजिक संरचना को कमजोर करती है और जीवन को कठिन बना देती है।

(b) आधुनिक जीवन अनिश्चितताओं और अनंत कठिन विकल्पों से भरा है।

(c) हम दूसरों की राय से प्रभावित होते हैं और हममें अपने दृढ़ विश्वास का अनुसरण करने की हिम्मत नहीं होती।

(d) हमारे जीवन में, अत्यंत कम विकल्प होना शायद अच्छी चीज नहीं हो, किन्तु बहुत अधिक विकल्प होना भी उतना ही कठिन हो सकता है।

परिच्छेद-2

भारत में घरेलू वित्त बेजोड़ है। हमारी प्रवृत्ति स्वर्ण और संपदा जैसी भौतिक परिसंपत्तियों में भारी निवेश करने की है। बचत के वित्तीयकरण को बढ़ावा देने के कदम सोचनीय हैं। परंपरागत तौर-तरीकों का अभ्यस्त जनसाधारण, आसानी से वित्तीयकरण में नहीं कूद पड़ेगा। बदलाव के सामने जो रुकावटें हैं, वे हैं दुर्वह नौकरशाही, संगठित वित्तीय संस्थाओं के प्रति संशय, इस बारे में आधारभूत सूचना का अभाव कि हर परिवार के लिए असंख्य सेवाओं और सेवा प्रदाताओं में से कौन-सी सबसे अच्छी है, और यदि आवश्यक हो, तो उनमें पारगमन कर सकते हैं या नहीं, और (कर सकते हैं तो) कैसे कर सकते हैं।

19. घरेलू बचतों के वित्तीयकरण के संबंध में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-कौन से, इस परिच्छेद में निहित हलों को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करते हैं? (2023)

1. हलों को विकसित करने के लिए एक लचीला वातावरण आवश्यक है।
2. परिवारों के अनुसार बने हुए हलों की आवश्यकता है।
3. वित्तीय प्रौद्योगिकी में नवप्रवर्तन आवश्यक हैं।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-3

औषधीय पेटेंट, पेटेंट कराने वाले को पेटेंट अवधि के लिए संरक्षण प्रदान करते हैं। पेटेंट कराने वालों को यह स्वतन्त्रता मिलती है, कि वे दवाओं की कीमत निर्धारित करें, जो एकाधिकार की अवधि तक के लिए समय-सीमित हो, किन्तु हो सकता है जनता खर्च झेल न पाए। यह विश्वास किया जाता है कि पेटेंट कराने वालों को दिया गया ऐसा पेटेंट संरक्षण जनता को एक लंबी अवधि के दौरान नवप्रवर्तनों तथा अनुसंधान और विकास (R&D) के माध्यम लाभकारी होगा, यद्यपि इसके लिए एक कीमत देनी होती हैं, जो कि पेटेंट की हुई दवा के लिए अपेक्षाकृत अधिक कीमत के रूप में होती है। यद्यपि यह पेटेंट व्यवस्था और कीमत संरक्षण, पेटेंट रहने के दौरान दवा की कानूनी रूप से वैध ऊँची कीमत के माध्यम से, पेटेंट कराने वाले को नवप्रवर्तन और अनुसंधान पर आई लागतों का प्रतिफल प्राप्त करने के लिए एक वैध क्रियापद्धति उपलब्ध कराते हैं।

20. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2023)

1. पेटेंट कराने वालों को दिए गए पेटेंट संरक्षण के कारण, पेटेंट वाली दवाएँ सुलभ करने में जनसाधारण की क्रय शक्ति पर भारी बोझ पड़ता है।
2. औषधीय उत्पादों के लिए अन्य देशों पर निर्भरता, विकासशील और गरीब देशों के लिए भारी बोझ है।
3. अनेक देशों में लोक-स्वास्थ्य नीति अभिकल्पित करने के दौरान, जनसाधारण को खर्च वहन करने योग्य कीमतों पर दवाएँ उपलब्ध कराना मुख्य लक्ष्य होता है।
4. सरकार के लिए यह आवश्यक है कि वह पेटेंट कराने वालों के अधिकारों और रोगियों की आवश्यकताओं के बीच उपयुक्त संतुलन बनाए।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-कौन सी वैध हैं?

(a) 1 और 2

(b) 1 और 4

(c) 3 और 4

(d) 2 और 3

परिच्छेद- 4

भारत को, नागरिकों के वैयक्तिक दत्त (डेटा) निरापद और संरक्षित रखते हुए, डिजिटल अर्थव्यवस्था की संवृद्धि को सुनिश्चित करना चाहिए। कोई भी, ऐसे वातावरण में जहाँ निगरानी होती है, या ऐसी जगह में जहाँ किसी व्यक्ति की निजी जानकारियाँ संकट में हों, नवप्रवर्तन नहीं करेगा। दत्त का मूलभूत नियंत्रण उन्हीं व्यक्तियों के पास होना चाहिए जिनसे ये सृजित होते हैं; उन्हें ही उनको, जैसा वे चाहें, उपयोग के लिए सुलभ, प्रतिबंधित या मुद्रीकृत करना चाहिए। इसलिए, दत्त संरक्षण कानूनों द्वारा सही प्रकार का नवप्रवर्तन, जो प्रयोक्ता केन्द्रित और निजता-संरक्षी हो, सुकर होना चाहिए।

21. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2023)

1. निजता का संरक्षण मात्र अधिकार नहीं है, बल्कि इसका अर्थव्यवस्था के लिए मूल्य है।
2. निजता और नवप्रवर्तन के बीच एक आधारभूत कड़ी है।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सी वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित तीन परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए द्य आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

कृषि भूमियों के साथ-साथ गैर-कृषि भूमियों (बनों, आर्द्र भूमियों, चरागाहों, आदि जैसी कृषीतर पद्धतियों) को खाद्य का स्रोत बनाना खाद्य उपभोग के प्रति एक तंत्रानुसारी उपागम को सुकर बनाता है। यह ग्रामीण और जनजातीय समुदायों को पूरे वर्ष निर्वाह करने और नैसर्गिक आपदाओं तथा मौसम के कारण होने वाली कृषिजन्य खाद्य की कमियों से बचे रहने में सहायक होता है। चूँकि, वार्षिक फसलों की अपेक्षा, प्रतिकूल मौसम दशाओं में वृक्षों में पनपने की प्राय: अधिक क्षमता होती है, फसल न होने के कारण हुए खाद्य के अभाव की अवधियों में वन आधारित खाद्य प्राय: एक सुरक्षा जाल प्रदान करते हैं; वन आधारित खाद्य मौसमी फसल उत्पादन अंतरालों के बीच भी महत्त्वपूर्ण योगदान करते हैं।

22. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद के लेखक द्वारा दिए गए सर्वाधिक युक्तियुक्त और तर्कसंगत सन्देश को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों और समुदाय के स्वामित्व वाली जमीनों के अन्य वृक्षों को खाद्य देने वाले वृक्षों से बदल देना चाहिए।

(b) भारत में वर्तमान परंपरागत कृषि प्रथा से खाद्य पैज्म् सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

(c) भारत में गरीबों की मदद के लिए बंजर भूमियों और निम्नीकृत क्षेत्रों को कृषि वानिकी पद्धतियों में बदल देना चाहिए।

(d) परंपरागत कृषि के अतिरिक्त अथवा उसके साथ-साथ कृषि पारितंत्र भी विकसित किए जाने चाहिए।

परिच्छेद - 2

प्रतिजैविकों के उपयोग /दुरुपयोग और अपसेवन के बारे में जागरूकता आम जानकारी है, जैसे यह कि मुर्गे- मुर्गियों को प्रतिजैविक खिलाने का क्या असर होता है। प्रतिजैविक-निर्माता कम्पनियों द्वारा अपने अपशिष्ट को उपचारित न कराने से पर्यावरण पर जो असर होते हैं, उनके विषय में अभी तक कुछ भी विस्तार या गंभीरता से बहुत कम चर्चा की गई है। प्रतिजैविक फैक्टरियों से होने वाला प्रदूषण औषध प्रतिरोधी संक्रमणों को बढ़ा रहा है। औषध निर्माण संयंत्रों के चारों तरफ औषध प्रतिरोधी जीवाणुओं के होने का सबको संज्ञान है।

23. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद द्वारा दिए गए सर्वाधिक युक्तियुक्त और व्यावहारिक सन्देश को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) उपयुक्त बहिः प्रवाही उपचार प्रोटोकॉल लगाना आवश्यक है।

(b) लोगों में पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाना आवश्यक है।

(c) औषध प्रतिरोधी जीवाणुओं के प्रसार को खघ्त्म नहीं किया जा सकता क्योंकि यह आधुनिक चिकित्सा देखभाल में अन्तर्निहित है।

(d) औषध निर्माण कंपनियों को भीड़भरे कस्बों और शहरों से बाहर दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित किया जाना चाहिए।

परिच्छेद-3

उच्च गुणवत्ता की विद्यालयी शिक्षा के लाभ तभी प्राप्त होते हैं, जब विद्यार्थी शिक्षा पूरी कर गेटवे कौशल प्राप्त करने के उपरांत विद्यालय छोड़ते हैं। जैसे कोई दौड़ने से पहले चलना सीखता है, उसी तरह कोई आधारभूत कौशलों को प्राप्त करने के बाद ही उच्चतर कौशलों को प्राप्त करता है। ज्ञान अर्थव्यवस्था के आगमन से नई चुनौतियाँ सामने आई हैं, और अशिक्षित कार्यबल रखने के गंभीर दुष्परिणामों में से एक यह है कि हम वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ कदम मिला कर चलने में अक्षम होंगे। प्राथमिक स्तर पर सशक्त अधिगम की बुनियाद बनाए बिना, उच्चतर शिक्षा या कौशल विकास में कोई उन्नति नहीं हो सकती।

24. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद के मर्म को सर्वोत्तम रूप से प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) विश्व-शक्ति बनने के लिए, भारत को सार्वभौमिक गुणवत्ता शिक्षा में निवेश करने की आवश्यकता है।

(b) भारत एक विश्व-शक्ति नहीं बन सकता क्योंकि वह ज्ञान अर्थव्यवस्था पर न तो ध्यान दे रहा है और न ही उसे संवर्धित कर रहा है।

(c) हमारी शिक्षा प्रणाली में उच्चतर शिक्षा के दौरान कौशल प्रदान करने पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

(d) विद्यालयों के अनेक बच्चों के माता-पिता निरक्षर हैं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लाभों के प्रति जागरूक नहीं हैं।

निम्नलिखित 3 (तीन) प्रश्नांशों के लिए निर्देश :

निम्नलिखित तीन परिच्छेदों को पढ़िए और परिच्छेदों के नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के लिए आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद-1

वैज्ञानिकों ने वसंत-गवाक्ष शीतऋतु से लेकर फसल आने के मौसम तक की अंतरण अवधि का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि कम बर्फ वाली अपेक्षाकृत गर्म शीतऋतु के परिणामस्वरूप वसंत घटनाओं के बीच अपेक्षाकृत दीर्घ पश्चता अवधि और दीर्घकालिक वसंत-गवाक्ष घटित हुए। वसंत की समय-सारणी के इस परिवर्तन से कृषि, मत्स्य पालन और पर्यटन पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रभावित होते हैं। चूँकि बर्फ कुछ पहले ही पिघल जाती है, इसलिए पक्षी वापस नहीं लौटते, जिससे वसंत काल की पारिस्थितिक घटनाएँ देर से होती हैं या उनकी अवधि में बढ़ोतरी होती है।

25. उपर्युक्त परिच्छेद के सन्दर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं: (2023)

1. भूमंडलीय तापन के कारण वसंत पहले आने लगा है और अधिक लंबे समय तक रहता है।
2. वसंत का पहले आना और लंबे समय तक रहना पक्षी समष्टि के लिए अच्छा नहीं है।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद - 2

नाइट्रोजन उपयोग दक्षता इसकी माप कि कोई पौधा उगने में नाइट्रोजन की कितनी मात्रा का उपयोग करता है, इसके विरुद्ध कि पीछे प्रदूषण के रूप में क्या बचता है-के एक वैश्विक विश्लेषण में बताया गया है कि बहुत अधिक उर्वरक इस्तेमाल करने से जलमार्गों और वायु में प्रदूषण बढ़ेगा। एक अध्ययन में कहा गया है कि वर्तमान में नाइट्रोजन उपयोग दक्षता का वैश्विक औसत लगभग 0.4 है, इसका यह अर्थ है कि खेत में मिलाए गए कुल नाइट्रोजन का 40 प्रतिशत उगाई गई फसल में जाता है, जबकि 60 प्रतिशत वायुमंडल में खो जाता है। विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या का पोषण उस फसल से होता है जो उच्च फसल उत्पादन पाने के लिए संश्लिष्ट नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों के उपयोग से उगाई गई है। पादपों को बढ़ने के लिए जितनी नाइट्रोजन चाहिए वे ले लेते हैं, और अतिरिक्त नाइट्रोजन भूमि, जल और वायु में रह जाता है। इसके परिणामस्वरूप नाइट्रस ऑक्साइड का बहुत अधिक उत्सर्जन होता है, जो एक प्रबल ग्रीनहाउस गैस और ओजोन अवक्षयकारी गैस है, और अन्य प्रकार का नाइट्रोजन प्रदूषण होता है, जिनमें झीलों और नदियों का सुपोषण (यूट्रोफिकेशन) और नदी जल का संदूषण शामिल है।

26. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद में निहित सर्वाधिक तर्कसंगत, युक्तियुक्त और निर्णायक संदेश को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) खाद्य उत्पादन और पर्यावरण दोनों के लिए नाइट्रोजन का अधिक दक्ष उपयोग अनिवार्य है।

(b) संश्लिष्ट नाइट्रोजन उर्वरकों का उत्पादन बंद नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

(c) अधिक मात्रा में नाइट्रोजन का प्रयोग करने वाली फसलों के विकल्पों का अभिज्ञान कर उनकी खेती करनी चाहिए।

(d) संश्लिष्ट उर्वरकों के उपयोग वाली परंपरागत खेती करने की जगह कृषि-वानिकी (एग्रोफॉरेस्ट्री), कृषि - पारितंत्र (एग्रोईकोसिस्टम्स) और जैविक खेती की जानी चाहिए।

परिच्छेद-3

पर्यावरण विषयक शब्दावली में धारणीय जीवन-शैलियों और साथ-साथ जलवायु न्याय को महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों के रूप में माना जाता है। ये दोनों सिद्धांत राष्ट्र के राजनीतिक और आर्थिक विकल्पों को प्रभावित करते हैं। अभी तक, हमारी जलवायु परिवर्तन शिखर वार्ताओं और करारों में ये दोनों सिद्धांत राष्ट्रों के न्यायिक अर्थ बीच सर्वसम्मति नहीं बना पाए हैं। न्याय, में तो सुपरिभाषित है। तथापि, जलवायु परिवर्तन के सन्दर्भ में, इसके वैज्ञानिक और साथ ही सामाजिक-राजनीतिक अभिप्राय हैं। अगले कुछ-एक वर्षों में यह निर्णायक प्रश्न खड़ा होगा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पीड़ित व्यक्तियों को अवलंब देने के लिए संसाधन, प्रौद्योगिकियाँ और विनियम किस प्रकार उपयोग में लाए जाएँगे। जलवायु के विषय में न्याय, दुष्प्रभावों को कम करने की कार्रवाइयों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जलवायु परिवर्तन के अनुरूप अनुकूलन के लिए अवलंब और हानियों और नुकसानों के लिए क्षतिपूर्ति, की कहीं अधिक व्यापक धारणा शामिल है।

27. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद द्वारा व्यक्त सर्वाधिक युक्तियुक्त, तर्कसंगत और निर्णायक संदेश को सर्वोत्तम रूप में प्रतिबिंबित करता है? (2023)

(a) जलवायु न्याय सभी नई जलवायु करारों / समझौतों के नियमों में विस्तार से बसा हुआ होना चाहिए।

(b) पर्यावरणीय संसाधन पूरे विश्व में असमान रूप से वितरित हैं और उनका दोहन हुआ है।

(c) वृहद् संख्या में जलवायु परिवर्तन के शिकार लोगों जलवायु शरणार्थियों की समस्याओं का निपटारा करने का एक आसन्न मुद्दा सामने है।

(d) जलवायु परिवर्तन, सभी अभिप्रायों में, अधिकतर विकसित देशों के कारण हुए हैं, इसलिए इसके भार वहन का उनका अंश अपेक्षाकृत अधिक होना चाहिए।

PYQ 2011-2023 (Answer Key)

2011

1. Answer: (a)
2. Answer: (d)
3. Answer: (c)
4. Answer: (d)
5. Answer: (d)
6. Answer: (c)
7. Answer: (c)
8. Answer: (c)
9. Answer: (c)
10. Answer: (a)
11. Answer: (d)
12. Answer: (d)
13. Answer: (b)
14. Answer: (b)
15. Answer: (b)
16. Answer: (c)
17. Answer:(a)
18. Answer: (c)
19. Answer:(c)
20. Answer:(d)
21. Answer:(d)
22. Answer:(c)
23. Answer: (d)
24. Answer: (b)
25. Answer: (d)
26. Answer: (c)
27. Answer: (d)

2012

1. Answer: (a)
2. Answer: (c)
3. Answer: (c)
4. Answer: (c)
5. Answer: (b)
6. Answer: (d)
7. Answer: (b)
8. Answer: (c)
9. Answer: (c)
10. Answer: (a)
11. Answer: (a)
12. Answer: (b)
13. Answer: (d)
14. Answer: (d)
15. Answer: (b)
16. Answer: d)
17. Answer: d)
18. Answer: (d)
19. Answer: (a)
20. Answer: (c)
21. Answer: (b)
22. Answer: (d)
23. Answer: (c)
24. Answer: (a)
25. Answer: (b)
26. Answer: (c)
27. Answer: (b)
28. Answer: (c)
29. Answer: (b)
30. Answer: (c)
31. Answer: (b)
32. Answer: (c)

2013

1. Answer: (c)
2. Answer: (d)
3. Answer: (a)
4. Answer: (a)
5. Answer: (c)
6. Answer: (b)
7. Answer: (c)
8. Answer: (b)
9. Answer: (b)
10. Answer: (c)
11. Answer: (d)
12. Answer: (a)
13. Answer: (b)
14. Answer: (c)
15. Answer: (c)
16. Answer: (b)
17. Answer: (b)
18. Answer: (b)
19. Answer: (c)
20. Answer: (b)
21. Answer: (d)
22. Answer: (d)
23. Answer: (a)

2014

1. Answer: (c)
2. Answer: (c)
3. Answer: (d)
4. Answer: (b)
5. Answer: (a)
6. Answer: (b)
7. Answer: (c)
8. Answer: (c)
9. Answer: (d)
10. Answer: (b)
11. Answer: (b)
12. Answer: (a)
13. Answer: (d)
14. Answer: (b)
15. Answer: (b)
16. Answer: (a)
17. Answer: (c)
18. Answer: (c)
19. Answer:(b)
20. Answer: (c)
21. Answer: (c)
22. Answer: (c)
23. Answer: (c)
24. Answer: (b)
25. Answer: (c)
26. Answer: (a)

2015

1. Answer. (a)
2. Answer. (d)
3. Answer. (b)
4. Answer. (c)
5. Answer. (c)
6. Answer. (a)
7. Answer. (a)
8. Answer. (d)
9. Answer. (a)
10. Answer. (d)
11. Answer. (a)
12. Answer. (b)
13. Answer. (c)
14. Answer. (d)
15. Answer. (c)
16. Answer. (b)
17. Answer. (b)
18. Answer. (d)
19. Answer. (c)
20. Answer. (b)
21. Answer. (b)
22. Answer. (d)
23. Answer. (b)
24. Answer. (d)
25. Answer. (d)
26. Answer. (a)
27. Answer. (c)
28. Answer. (c)
29. Answer. (a)
30. Answer. (a)

2016

1. Answer .(c)
2. Answer .(a)
3. Answer .(d)
4. Answer .(d)
5. Answer .(a)
6. Answer .(c)
7. Answer .(d)
8. Answer .(b)
9. Answer .(c)
10. Answer .(a)
11. Answer .(d)
12. Answer .(c)
13. Answer .(d)
14. Answer .(a)
15. Answer .(d)
16. Answer .(b)
17. Answer .(d)
18. Answer .(b)
19. Answer: (b)
20. Answer .(a)
21. Answer .(b)
22. Answer .(b)
23. Answer .(d)
24. Answer .(b)
25. Answer .(d)
26. Answer .(c)
27. Answer .(b)

2017

1. Answer : (c)
2. Answer : (a)
3. Answer : (d)
4. Answer : (b)
5. Answer : (b)
6. Answer : (b)
7. Answer : (a)
8. Answer : (c)
9. Answer : (d)
10. Answer: (c)
11. Answer : (d)
12. Answer : (a)
13. Answer : (d)
14. Answer : (b)
15. Answer : (d)
16. Answer : (a)
17. Answer : (c)
18. Answer : (b)
19. Answer : (a)
20. Answer : (c)
21. Answer : (d)
22. Answer : (b)
23. Answer : (a)
24. Answer : (c)
25. Answer : (c)
26. Answer : (a)
27. Answer : (c)
28. Answer : (a)
29. Answer : (b)
30. Answer : (b)

2018

1. Answer:(a)
2. Answer:(a)
3. Answer:(b)
4. Answer:(d)
5. Answer:(c)
6. Answer:(a)
7. Answer:(d)
8. Answer:(c)
9. Answer:(d)
10. Answer:(a)
11. Answer:(d)
12. Answer:(b)
13. Answer:(c)
14. Answer:(c)
15. Answer:(b)
16. Answer:(c)
17. Answer:(d)
18. Answer:(a)
19. Answer:(b)
20. Answer:(c)
21. Answer:(b)
22. Answer:(d)
23. Answer:(a)
24. Answer:(d)
25. Answer:(b)
26. Answer:(a)

2019

1. Answer:(d)
2. Answer:(d)
3. Answer:(b)
4. Answer:(b)
5. Answer:(b)
6. Answer:(a)
7. Answer:(d)
8. Answer:(c)
9. Answer:(d)
10. Answer:(b)
11. Answer:(a)
12. Answer:(a)
13. Answer:(c)
14. Answer:(c)
15. Answer:(b)
16. Answer:(b)
17. Answer:(a)
18. Answer:(a)
19. Answer:(c)
20. Answer:(a)
21. Answer:(d)
22. Answer:(c)
23. Answer:(c)
24. Answer:(b)
25. Answer:(d)
26. Answer:(d)
27. Answer:(b)
28. Answer:(c)
29. Answer:(b)
30. Answer:(b)

2020

1. Answer:(d)
2. Answer:(a)
3. Answer:(c)
4. Answer:(a)
5. Answer:(b)
6. Answer:(c)
7. Answer:(b)
8. Answer:(a)
9. Answer:(c)
10. Answer:(a)
11. Answer:(b)
12. Answer:(c)
13. Answer:(d)
14. Answer:(d)
15. Answer:(b)
16. Answer:(c)
17. Answer:(d)
18. Answer:(c)
19. Answer:(d)
20. Answer:(c)
21. Answer:(c)
22. Answer:(a)
23. Answer:(c)
24. Answer:(c)
25. Answer:(b)

2021

1. Answer:(b)
2. Answer:(d)
3. Answer:(c)
4. Answer:(c)
5. Answer:(d)
6. Answer:(a)
7. Answer:(a)
8. Answer:(c)
9. Answer:(a)
10. Answer:(d)
11. Answer:(d)
12. Answer:(d)
13. Answer:(c)
14. Answer:(c)
15. Answer:(c)
16. Answer:(b)
17. Answer:(a)
18. Answer:(c)
19. Answer:(d)
20. Answer:(a)
21. Answer:(b)
22. Answer:(c)
23. Answer:(b)
24. Answer:(d)
25. Answer:(c)
26. Answer:(d)
27. Answer:(b)

2022

1. Answer: (a)
2. Answer: (a/d)
3. Answer: (c)
4. Answer: (b)
5. Answer: (d)
6. Answer: (a)
7. Answer: (a)
8. Answer: (d)
9. Answer: (a)
10. Answer: (d)
11. Answer: (c)
12. Answer: (c)
13. Answer: (a)
14. Answer: (d)
15. Answer: (b)
16. Answer: (b)
17. Answer: (b)
18. Answer: (d)
19. Answer: (a)
20. Answer: (b)
21. Answer: (a)
22. Answer: (c)
23. Answer: (a)
24. Answer: (c)
25. Answer: (c)
26. Answer: (c)
27. Answer: (d)

2023

1. Answer: (d)
2. Answer: (c)
3. Answer: (d)
4. Answer: (c)
5. Answer: (b)
6. Answer: (b)
7. Answer: (c)
8. Answer: (b)
9. Answer: (c)
10. Answer:(a/c)
11. Answer: (b)
12. Answer: (a)
13. Answer: (d)
14. Answer: (c)
15. Answer: (b)
16. Answer: (c)
17. Answer: (d)
18. Answer: (a)
19. Answer: (a)
20. Answer: (b)
21. Answer: (c)
22. Answer: (d)
23. Answer: (a)
24. Answer: (a)
25. Answer: (c)
26. Answer: (a)
27. Answer: (a)

OUR CLASSROOM RESULTS NOT OF INTERVIEW

JATIN JAIN
(Rank-91) UPSC CSE-2022

SHRUSTI
(Rank 165) UPSC CSE-2022

DAMINI DIWAKAR
(Rank 435) UPSC CSE-2022

AKANSHA
(Rank 702) CSE-2022

UPSC 2021-RANK 152
NEHA JAIN

ABHI JAIN
(Rank 282) 2021

VASU JAIN
(Rank 67) 2020

AKASH SHRISHRIMAL
(Rank 94) 2020

DARSHAN
(Rank 138) 2020

SHREYANSH SURANA
(Rank 269) 2020

ARPIT JAIN
(Rank 279) 2020

SANDHI JAIN
(Rank 329) 2020

RAJAT KUMAR PAL
(Rank 394)

SANGEETA RAGHAV
(Rank 2)-2018 UPPSC

PANKHURI JAIN
2018 UPPSC

ABHISHEK KUMAR
(Rank 38) 2018 UPPSC

THE CORE IAS

Scan here for Testimonial

103, B-5/6 II Floor, Himalika Commercial Complex Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 09

53/18, Old Rajinder Nagar, New Delhi, 110060

011-41008973, 8800141518, 9873833547